जैन कल्याणक क्षेत्र

सीमा जैन-धीरज जैन

श्री गणेशवर्णी दिगम्बर जैन संस्थान
नरिया, वाराणसी

श्री गणेशप्रसाद वर्णी ग्रन्थमाला–58

जैन कल्याणक क्षेत्र

सीमा जैन – धीरज जैन

श्री गणेशवर्णी दिगम्बर जैन संस्थान
नरिया, वाराणसी

प्रथम संस्करणः
श्रुत पंचमी; 24 मई, 2023

ISBN: 978-81-945059-2-1

मूल्यः ₹500.00

प्रकाशकः

श्री गणेश वर्णी दिगम्बर जैन संस्थान
नरिया, वाराणसी – 221005

मुद्रणः

गीता ऑफसेट प्रिंटर्स प्रा. लि.
ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1
नई दिल्ली–110020

विषय–सूची

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
क	उद्देश्य	5
ख	तीर्थ क्षेत्रों पर करने योग्य कार्य	6
ग	कुछ आवश्यक बातें जो हम निस्संदेह ही धार्मिक क्षेत्रों पर पालन करेगें	8
घ	प्रकाशकीय	10
ड	प्रस्तावना	12
1	भूमिका	14
2	तीर्थंकर	18
3	अष्ट प्रातिहार्य	47
4	कल्याणक – एक परिचय	55
5	श्री सम्मेदशिखरजी	64
6	अयोध्या	90
7	हस्तिनापुर	97
8	मिथिलापुरी	105
9	वाराणसी	109
10	चम्पापुर	124
11	सारनाथ (सिंहपुरी)	131
12	चन्द्रावती (चन्द्रपुरी)	135
13	कम्पिल	140

14	श्रावस्ती	145
15	रौनाही (रतनपुरी)	151
16	काकन्दी	156
17	राजगीर (राजगृही)	162
18	कुण्डलपुर (कुण्डग्राम)	175
19	गिरनार	189
20	भोंदल (भद्दिलापुरी)	198
21	कोल्हुआ पहाड़	201
22	पावापुरी	206
23	प्रयाग	216
24	कौशाम्बी	224
25	प्रभाषगिरि	230
26	शौरीपुर	235
27	अहिक्षेत्र (अहिच्छत्र)	241
28	कैलाश पर्वत	252
29	जैन कल्याणक क्षेत्र प्रश्नोत्तरी	262
30	जैन भजन–पाठ	266
31	संदर्भ सूची	273
32	आभार	275
33	लेखकों का परिचय	277

उद्देश्य

दिट्ठे तुम्मि जिणवर, चम्ममएणाच्छिण्णा वि तं पुण्णं।
जं जणइ पुरो–केवल, दंसणणाणाइ णयणाइ।।16।।

(आचार्य पद्मनंदी कृत पद्मनंदी पंचविंशतिका)

अन्वयार्थ : हे प्रभो! जो मनुष्य, इस चर्म–नेत्र से आपको देखता है, उस मनुष्य को अपूर्व पुण्य की प्राप्ति होती है, जो आगे केवल दर्शन तथा केवल ज्ञानरूपी नेत्रों को उत्पन्न करता है ।

यद्यपि तीर्थंकर भगवंतों के कल्याणक क्षेत्रों के बारे में जानकारियां विभिन्न ग्रंथों में उपलब्ध हैं तथापि इस पुस्तक को लिखने के पीछे का मुख्य उद्देश्य उन सभी जानकारियों को एक ही स्थान पर एकत्रित कर सभी जीवों को इन भव्य कल्याणक तीर्थ क्षेत्रों की वंदना करने हेतु प्रेरित करने का है। वर्तमान में काफी साधर्मी जन बहुत सारे कल्याणक क्षेत्रों से अपरिचित हैं, कभी जानकारी के अभाव में, कभी अन्य किसी कारणों से सभी 24 तीर्थंकर भगवान के कल्याणक क्षेत्रों की एकसाथ वन्दना नहीं कर पाते। तो बस इसी भावना से इस पुस्तक को लिखने का भाव आया था कि सभी जीव कम से कम एक बार अपने जीवन में इन सभी चौबीस तीर्थंकर भगवन्तों के सभी कल्याणक क्षेत्रों की वंदना अवश्य करें।

इस पुस्तक में वर्णित जानकारी विभिन्न ग्रंथों के अलावा कुछ पुस्तकों, इंटरनेट, वेबसाइट, सोशल मीडिया आदि के माध्यम से भी ली गई है। चूंकि हम अति अल्प ज्ञान के धारी हैं, अतः अज्ञानवश जो त्रुटियाँ रह गई हों, कषायवश, भूलवश या प्रमादवश अक्षर, मात्रा, स्वर आदि में जो चूक हुई हो, कोई जानकारी गलत लिख दी गई हो, जिनागम की परिपाटी से विपरीत लिखी गई हो, तो उसके लिए हम अपराधी हैं और करबद्ध क्षमाप्रार्थी हैं। सुधीजन सुधार कर पढ़ें और हमें निम्न पतों पर अवगत कराकर कृतार्थ करें ताकि भविष्य में उन त्रुटियों को दूर करा जा सके।

दूरभाष: 9868449890
Email: jainmandir.org@gmail.com

तीर्थ क्षेत्रों पर करने योग्य कार्य

1. इन पवित्र क्षेत्रों पर जिनवाणी का स्वाध्याय अवश्य करेंगे।
2. अधिक से अधिक समय तत्त्व चर्चा, वस्तु स्वरुप को जानने समझने में लगाएंगे, चार प्रकार की विकथाओं से बचेंगे।
3. यथा शक्ति एकासन, उपवास आदि भी करेंगे।
4. तीर्थ क्षेत्रों पर ब्रह्मचर्य का अवश्य ही पालन करेंगे।
5. जिन भी तीर्थ क्षेत्रों की वंदना करेंगे, उनके आसपास यदि कोई अन्य जैन मंदिर जी हों तो उनके दर्शन भी अवश्य करेंगे।
6. यात्रा में प्रतिदिन णमोकार मंत्र का जाप कर पंच परमेष्ठी के स्वरुप का चिंतन जरुर करेंगे।
7. श्रावक, जिनेंद्र प्रभु का जलाभिषेक और प्रासुक अष्टद्रव्यों से पूजन अवश्य करेंगे।
8. श्राविकाजन प्रासुक अष्टद्रव्यों से जिनेंद्र प्रभु की पूजन अवश्य करेंगे।
9. मौनपूर्वक ही भोजन करेंगे, भोजन करने से पूर्व और पश्चात् नौ बार णमोकार मंत्र के द्वारा पंच परमेष्ठी भगवान के स्वरुप का ध्यान अवश्य करेंगे।
10. जिन जिन भगवन्तों से जुड़ा हुआ तीर्थक्षेत्र हो, उनके बारे में चौबीस तीर्थंकर महापुराण के माध्यम से भी स्वाध्याय करने का प्रयास करना चाहिए।

11. शुद्ध भोजन ही करेगें, होटल आदि का अमर्यादित, अभक्ष्य भोजन बिल्कुल नहीं करेंगे।

12. सामायिक, ध्यान आदि भी करेगें ।

13. दर्शन करते समय ऐसी भावना अवश्य भाएंगे कि हे भगवन, जिस निर्ग्रंथ दिगंबर मुनिदशा को धारण कर आपने मोक्ष की प्राप्ति की है वैसी निर्ग्रंथ दिगंबर मुनिदशा हमारी भी शीघ्र हो और हम भी अल्पकाल में मोक्ष की प्राप्ति करें।

कुछ आवश्यक बातें जिनका हम निस्संदेह ही धार्मिक क्षेत्रों पर पालन करेंगे

वैसे तो प्रत्येक जैन श्रावक का इन सभी नियमों का आजीवन पालन होना ही चाहिए। यदि नहीं है तो कम से कम इन पवित्र तीर्थ क्षेत्रों पर निम्न नियमों का अवश्य ही पालन करेगें।

1. तीर्थ क्षेत्रों पर गुटखा, पान मसाला, शराब आदि नशाकारक वस्तुओं का त्याग ही रखेंगे।

2. बाह्य गंदगी जैसे प्लास्टिक बॉटल, पॉलिथीन आदि और अंतरंग गंदगी (कषाय व खोटे परिणाम) नहीं करेगें।

3. तीर्थक्षेत्रों पर रात्रि भोजन, जमीकंद का, कोल्ड ड्रिंक्स, फास्ट फूड का त्याग करेंगे।

4. पवित्र तीर्थ क्षेत्र की वंदना करते समय जूते चप्पल का त्याग।

5. अनछने जल का त्याग करेंगे।

6. अश्लील अमर्यादित वेशभूषा का त्याग, फिल्मी गाने, मूवी आदि देखने सुनने का त्याग।

7. तीर्थ क्षेत्रों पर ब्रह्मचर्य का पालन व तीर्थक्षेत्रों में हनीमून आदि के प्रयोजन से जाने का त्याग।

8. तीर्थ क्षेत्रों पर शॉपिंग आदि के प्रयोजन में नही जायेंगे।

9. तीर्थ क्षेत्रों पर मन्दिर जी आदि में भगवान को पीठ दिखाते हुए फोटो, अमर्यादित फोटो आदि नहीं खिंचायेंगे।

10. शक्ति अनुसार व्रत, पूजन अभिषेक, स्वाध्याय जरूर करेंगे।

11. तीर्थ क्षेत्रों पर सप्त व्यसन का त्याग {सप्त व्यसन इस प्रकार हैं: जुआ खेलना, मांस का सेवन, मद्य (शराब) पीना, वेश्यागमन, शिकार खेलना, चोरी करना और परस्त्री सेवन}।

प्रकाशकीय

श्री गणेश वर्णी दि० जैन संस्थान, वाराणसी अपना स्वर्ण जयंती वर्ष मना रहा है। इसके साथ ही इसमें समाहित श्री गणेश वर्णी ग्रंथमाला का यह अमृत काल है। भारतवर्ष भी अपनी आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। दोनों संस्था के 50 वर्ष एवं 75 वर्ष पूर्ण होने पर हर्ष स्वरूप हम सभी ने पूरे वर्ष कार्यक्रम किये। इसी श्रृंखला में, इस पुस्तक का प्रकाशन, हमारे स्थापना दिवस, श्रुतपंचमी पर किया जा रहा है।

यह एक अनूठी कृति है। धर्म प्रेमी श्री धीरज जैन तथा उनकी पत्नी श्रीमती सीमा जैन ने इसे अत्यधिक श्रमपूर्वक एवं श्रद्धापूर्वक तैयार, किया है। प्रत्येक तीर्थंकर के पाँच कल्याणक होते हैं। इस प्रकार 24 तीर्थंकरों के 120 कल्याणक जिन–जिन स्थानों पर तथा किन–किन तिथियों को हुए, यह जन साधारण को भी अक्सर ज्ञात नहीं होता है। इस पुस्तक में लेखक द्वय ने सभी तीर्थंकरों के कल्याणक क्षेत्रों का, एक क्रमबद्ध रूप से, आकर्षक एवं सचित्र विवरण प्रस्तुत किया है। सभी क्षेत्रों पर कैसे पहुँचें, क्या सुविधायें उपलब्ध हैं, इत्यादि विवरण भी दिए हैं। यह एक अनूठा प्रयास है। इसके लिये लेखक द्वय हार्दिक बधाई के पात्र हैं। पुस्तक के मुद्रण आदि में भी उनका पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है। उसके लिये संस्थान के सभी सदस्य अपना आभार व्यक्त करते हैं। प्रो. वीर सागर जैन ने अपनी विद्वत्तापूर्ण प्रस्तावना से पुस्तक की शोभा बढ़ायी है, हम उनको हार्दिक धन्यवाद देते हैं।

सुचारू संचालन हेतु हमारे विद्वान सं.मंत्री प्रो. अशोक कुमार जैन (B.H.U.) को मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। वे अखिल भारतवर्षीय दि. जैन विद्वत परिषद के अध्यक्ष हैं, तथा इस वर्ष अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किये गये

हैं। उनका हार्दिक अभिनन्दन है। संस्थान की व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने में पं. मनीष कुमार जैन एवं श्री अमित जैन को भी मैं अनेक धन्यवाद देता हूँ।

संस्थान कार्यकारिणी के सभी सदस्य एवं पदाधिकारियों का भी मैं पुनः पुनः धन्यवाद करता हूँ ।

दि. 24 मई, 2023
श्रुत पंचमी

प्रो. अशोक कुमार (रुड़की)
मंत्री
श्री गणेश वर्णी
दि. जैन संस्थान, वाराणसी

प्रस्तावना

रयणत्तयसंजुत्तो जीवो वि हवदि उत्तमं तित्थं।
संसारं तरइ जदो रयणत्तय–दिव्व–णावाए।।

–कार्तिकेयानुप्रेक्षा, गाथा 191

अर्थ– रत्नत्रय से युक्त जीव (आत्मा) ही वास्तव में उत्तम तीर्थ है, क्योंकि वही अपनी रत्नत्रयरूपी दिव्य नौका से संसार–सागर पार करता है।

जैन दर्शन में तीर्थ की व्याख्या निश्चय और व्यवहार दोनों ही दृष्टियों से की गई है। निश्चय तीर्थ अपना आत्मा है और व्यवहार तीर्थ देव–शास्त्र–गुरु आदि हैं तथा उनसे सम्बन्धित सभी क्षेत्रों और कालों को भी तीर्थ माना गया है, क्योंकि वे भी हमें संसार–सागर से तिरने की प्रबल प्रेरणा देते हैं। इनमें भी तीर्थक्षेत्रों को अनेक प्रकार से विभाजित करके विस्तारपूर्वक समझाया गया है– सिद्ध क्षेत्र, कल्याणक क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र आदि।

जैन संस्कृति में तीर्थों का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। आध्यात्मिक दृष्टि से ये आत्मसाधना के उत्कृष्ट निमित्त माने गये हैं। सांस्कृतिक दृष्टि से ये कला और साहित्य के अद्भुत केंद्र रहे हैं। इसी प्रकार ऐतिहासिक, भौगोलिक आदि अनेक दृष्टियों से भी जैन तीर्थों का विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान है। स्वास्थ्य–विज्ञान, पर्यावरण आदि की दृष्टि से भी जैन तीर्थ शोध–अध्ययन के उत्तम विषय हैं। तीर्थों पर जाने से मनुष्य का सामाजिक, शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक सभी प्रकार का विकास होता है। इनकी महिमा वचन–अगोचर है। यही कारण है कि प्रायः सभी लोग इन तीर्थों की यात्रा करते रहते हैं। जो नहीं करते हैं, उन्हें भी अवश्य करना चाहिए। प्रस्तुत कृति

इसीलिए लिखी गई है। इसका सन्देश है कि लोगों को सभी तीर्थों की भली भांति जानकारी हो और वे उनकी अच्छी तरह से यात्रा भी करें, उन्हें किसी प्रकार की कोई असुविधा न हो।

श्रीमान धीरज जैन और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सीमा जैन ने अथक परिश्रम करके इस कृति को तैयार किया है। इस कृति में सभी तीर्थंकरों के सभी कल्याणकों से सम्बन्धित तीर्थक्षेत्रों का चित्र सहित परिचय दिया है, साथ ही वहाँ की सभी व्यवस्थाओं एवं टेलीफोन नम्बर आदि से भी अवगत कराया है। मुझे विश्वास है कि इस कृति से सभी को बहुत लाभ होगा। मैं इतनी महत्त्वपूर्ण कृति का निर्माण करने के लिए दोनों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

—प्रो. वीरसागर जैन
श्री लालबहादुर शास्त्री
राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
दिल्ली

1. भूमिका

1. तीर्थं करोति इति तीर्थंकरः जो धर्मतीर्थ का प्रवर्तन करते हैं वह तीर्थंकर कहलाते हैं। तीर्थंकर भगवंतों के गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान और निर्वाण ये पाँच कल्याणक होते हैं। तीर्थंकर भगवंतों के बारे में आचार्यों ने कहा है कि तीर्थंकर भगवान श्रेष्ठों में भी श्रेष्ठ पुरुष होते हैं। निर्मल सोलहकारण भावना भाकर जिनको तीर्थंकर नाम प्रकृति का बंध हुआ होता है वो तीर्थंकर होते हैं। तीर्थंकर भगवान से जुड़े हुए स्थान अर्थात् जिन जिन क्षेत्रों में भगवान के गर्भ, जन्म, तप, केवलज्ञान और निर्वाण कल्याणक हुए हों, वे सभी क्षेत्र अति पवित्र और वंदनीय हो जाते हैं। उन्हीं पवित्र कल्याणक क्षेत्रों के बारे में इस पुस्तक के माध्यम से हम जानेंगे।

2. वर्तमान में जिन चौबीस तीर्थंकरों के कल्याणक क्षेत्रों के बारे में हम जानेंगे, वे इस हुण्डावसर्पिणी काल के तीर्थंकर हैं जो कि जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र के आर्यखण्ड में हुए हैं। यूँ तो प्रत्येक अवसर्पिणी–उत्सर्पिणी में प्रत्येक चौबीस तीर्थंकर भगवान शाश्वत जन्मभूमि अयोध्या में जन्म लेकर शाश्वत निर्वाणभूमि सम्मेदशिखर से मोक्ष प्राप्त करते हैं। परन्तु वर्तमान में हुण्डावसर्पिणी कालदोषवश पाँच तीर्थंकर ही अयोध्या नगरी में जन्मे और शेष उन्नीस तीर्थंकर अलग–अलग स्थानों पर जन्मे और 20 तीर्थंकर सम्मेदशिखर से तथा 4 तीर्थंकर अलग अलग स्थानों से मोक्ष गए, जिनका विस्तृत वर्णन हमें पुराण ग्रंथों से प्राप्त होता है। मंगलाष्टक स्तोत्र में आता है:

कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम्
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु ते मंगलम्।

अन्वयार्थ: भगवान ऋषभदेव की निर्वाण भूमि कैलाश पर्वत पर है। महावीर स्वामी की पावापुर में है। वासुपूज्य स्वामी की चम्पापुरी में है। नेमिनाथ स्वामी की ऊर्जयन्त पर्वत (गिरनार जी) के शिखर पर और शेष बीस तीर्थंकरों की निर्वाणभूमि श्री सम्मेदशिखर पर्वत पर है, जिनका अतिशय और वैभव विख्यात है। ऐसी ये सभी निर्वाण भूमियाँ हमें निष्पाप बना दें और हमें सुखी करें।

3. **24 तीर्थंकर – 120 कल्याणक – 24 स्थान:**

24 तीर्थंकरों के 120 कल्याणक जिन 24 स्थानों पर हुए हैं उनका विवरण इस प्रकार है:

क्रमांक	राज्य	जिला	कल्याणक स्थान	कल्याणकों की संख्या
1	झारखंड	गिरिडीह	श्री सम्मेदशिखरजी	20
2	उत्तर प्रदेश	अयोध्या	अयोध्या	18
3	उत्तर प्रदेश	मेरठ	हस्तिनापुर	12
4	बिहार	सीतामढ़ी	मिथिलापुरी	8
5	उत्तर प्रदेश	वाराणसी	वाराणसी	6
6	बिहार	भागलपुर	चम्पापुर व मंदारगिरि	5
7	उत्तर प्रदेश	वाराणसी	सारनाथ (सिंहपुरी)	4
8	उत्तर प्रदेश	वाराणसी	चन्द्रावती (चन्द्रपुरी)	4
9	उत्तर प्रदेश	फर्रुखाबाद	कम्पिल	4

10	उत्तर प्रदेश	श्रावस्ती	श्रावस्ती	4
11	उत्तर प्रदेश	अयोध्या	रौनाही (रतनपुरी)	4
12	उत्तर प्रदेश	देवरिया	कांकदी	4
13	बिहार	नालंदा	राजगीर (राजगृही)	4
14	बिहार	नालंदा	कुण्डलपुर (कुण्डग्राम)	3
15	गुजरात	जूनागढ़	गिरिनार	3
16	झारखंड	चतरा	भोंदल (भद्विलापुरी)	2
17	झारखंड	चतरा	कोल्हुआ पहाड़	2
18	बिहार	नालंदा	पावापुरी	2
19	उत्तर प्रदेश	प्रयागराज	प्रयागराज	2
20	उत्तर प्रदेश	कौशाम्बी	कौशाम्बी	2
21	उत्तर प्रदेश	कौशाम्बी	प्रभाषगिरि	2
22	उत्तर प्रदेश	आगरा	शौरीपुर	2
23	उत्तर प्रदेश	बरेली	अहिक्षेत्र	2
24	उत्तराखंड	चमोली	कैलाश पर्वत	1

4. उपरोक्त में कई स्थान ऐसे हैं जो बहुत ही कम दूरी पर हैं, जैसे कि **अयोध्या** से **रतनपुरी** सिर्फ **25** किमी। **वाराणसी** से **सारनाथ** व

चन्द्रपुरी केवल **7** व **25** किमी की ही दूरी पर हैं। इसी प्रकार से कंपिल जी तथा अहिच्छत्र (अहिक्षेत्र) की दूरी बहुत अधिक नहीं है किंतु दुर्भाग्य की बात है कि जानकारी के अभाव में काफी जीव इन भव्य तीर्थ क्षेत्रों की वंदना से वंचित रह जाते हैं।

5. अभी यहाँ भरत क्षेत्र में पंचमकाल चल रहा है, अतः हमें साक्षात रूप से तीर्थंकरों के दर्शन तो सुलभ नहीं है फिर भी आचार्यों ने हमारे लिए मुनि एवं श्रावक धर्म के उपदेश प्रदान किए हैं जिन्हें यथाशक्ति पालन कर हम सभी मोक्षमार्ग के पथिक बन सकते हैं। इन कल्याणक क्षेत्रों की भूमि में जाकर हम यह चिंतन करें कि जिन दर्शनविशुद्धि आदि सोलह कारण भावनाओं को भाकर इन महान जीवों ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध किया है वैसे ही उत्तम भाव हमारे भी हों और हम भी शीघ्र इस संसार सागर से पार हों।

6. ये 120 कल्याणक क्षेत्र इन पवित्र महा पुण्यशाली तीर्थंकर भगवंतों से संबद्ध हैं, उनके गर्भ, जन्म, तप, केवलज्ञान और निर्वाण कल्याणक स्थली हैं तथा हम सबको इस संसार सागर से मुक्त होने की प्रेरणा देती हैं। प्रत्येक जैन श्रावक का यह प्रयास होना चाहिए कि जीवन में कम से कम एकबार इन सभी 120 कल्याणक क्षेत्रों पर जाकर अपने पवित्र आत्म स्वरुप का चिंतन करके अपने जन्म मरण के चक्र से मुक्त होने की भावना को दृढ़ करें।

सीमा जैन, धीरज जैन
श्रुत पंचमी; 24 मई, 2023
दिल्ली

2. तीर्थंकर

1.1 जो कर्म शत्रुओं को जीते वे 'जिन' कहलाते हैं और जिन के उपासक "जैन" कहलाते हैं। यह जैनधर्म अनादिनिधन है और जन जन का हित करने वाला होने से "सार्वभौम" धर्म है। इसी प्रकार से जो जीवों को संसार के दुःख से निकालकर उत्तम सुख में पहुँचावे, वह 'धर्म' है। **'धर्म तीर्थं करोति इति तीर्थंकरः"** इस व्याख्या के अनुसार जो ऐसे धर्मतीर्थ को करते हैं अर्थात् प्रवर्तन करते हैं वे "तीर्थंकर" कहलाते हैं। जो धर्म तीर्थ के कर्ता होते है, समवशरण आदि विभूति से युक्त होते है एवं जिनके तीर्थंकर नाम कर्म नाम का महा पुण्य का उदय होता है उन्हे तीर्थंकर कहते है।

1.2 आचार्य प्रवर श्री सूर्यसागर जी मुनिराज अपने ग्रंथ सद्बोध मार्तंड में तीर्थंकर भगवंतों का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि–

"तीर्थंकर केवली उन्हें कहते हैं जिन्होंने पूर्वभव में सोलह कारण भावनाएं भाकर महान पुण्य उपजाकर सब जीवों से वात्सल्यता धारणकर उनका हित करना चाहा, इसलिये उन आत्माओं ने ऐसा तीर्थंकर पद प्राप्त किया जिससे तीन लोक के जीवों ने अपना भला किया। जिनके जन्म समय नारकी जीवों को भी सुख मिला। विशेष रूप से इनकी विभूति का नमूना तो सांसारिक दशा में होता ही है पर समोसरण के देखने से मालूम किया जाता है। इनके द्वारा उपदिष्ट पदार्थ के श्रवण से भव्यात्माओं का कल्याण होता है। इनके गणधर होते हैं। इनका मुख्य चिन्ह समोसरण ही होता है। इनके आगे–आगे धर्म चक्र चलता है।

1.3 **कल्याणं करोति इति कल्याणकः** इस व्युत्पत्ति के अनुसार जो स्व और पर का कल्याण करने में समर्थ होते हैं वे तीर्थंकर महापुरुष पंचकल्याणकों से समन्वित होते हैं। अथवा यूँ भी कहा जा सकता है कि जिस

भव्यात्मा ने पूर्व जन्म में किसी तीर्थंकर के पादमूल में दर्शनविशुद्धि–आदि सोलहकारण भावनाओं को भाकर तीर्थंकर प्रकृति का बंध कर लिया है, वह पुनः उस भव से मरण कर स्वर्गों में या सर्वार्थसिद्धि आदि विमानों में जन्म लेते हैं। वहाँ की आयु पूर्ण कर जब वह जीव माता के गर्भ में आता है। उनके गर्भावतरण, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञानोत्पत्ति व निर्वाण इन पाँच अवसरों पर महान् उत्सव होते हैं जिन्हें पंच कल्याणक कहते हैं।

1.4 इन कल्याणकों को तीनों लोकों के जीव भक्तिभाव से मनाते हैं। गर्भावतरण से पूर्व के छः मासों से ही इनके माता–पिता के भवनों पर रत्नों और स्वर्ण की वर्षा होने लगती है। ये जन्म से ही मति, श्रुत और अवधिज्ञान के धारक होते हैं तथा आठ वर्ष की अवस्था में देशव्रती हो जाते हैं। *(महापुराण 12. 96–97, 163, 14. 165, 53.35, हरिवंशपुराण 43.78)*

1.5 तीर्थंकर बनने के संस्कार षोडशकारण रूप अत्यंत विशुद्ध भावनाओं द्वारा उत्पन्न होते हैं, उसे तीर्थंकर प्रकृति का बँधना कहते हैं। ऐसे परिणाम केवल मनुष्य भव में और वहाँ भी किसी तीर्थंकर व केवली के पादमूल में होने संभव है। ऐसे व्यक्ति प्रायः देवगति में ही जाते हैं। फिर भी यदि पहले से नरकायु का बंध हुआ हो और पीछे तीर्थंकर प्रकृति बंधे तो वह जीव केवल तीसरे नरक तक ही उत्पन्न होते हैं, उससे अनंतर भव में अवश्य मुक्ति को प्राप्त करते हैं। भरत और ऐरावत क्षेत्र में इनकी संख्या चौबीस–चौबीस होती है और विदेह क्षेत्र में बीस। (महापुराण 2.117)

1.6 अवसर्पिणी काल में हुए चौबीस तीर्थंकर ये हैं – ऋषभदेव, अजितनाथ, संभवनाथ, अभिनंदननाथ, सुमतिनाथ, पद्‌मप्रभ, सुपार्श्वनाथ, चंद्रप्रभ, पुष्पदंतनाथ, शीतलनाथ, श्रेयांसनाथ, वासुपूज्य, विमलनाथ, अनंतनाथ, धर्मनाथ, शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरनाथ, मल्लिनाथ, मुनिसुव्रतनाथ, नमिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ

और महावीर (सन्मति और वर्धमान)। (*महापुराण 2.127–133 हरिवंशपुराण 2.18, वीरवर्द्धमान चरित्र 18.101–108*)

1.7 उत्सर्पिणी के दुखमा–सुखमा काल में भी जो चौबीस तीर्थंकर होंगे वे हैं; महापद्म, सुरदेव, सुपार्श्व, स्वयंप्रभ, सर्वात्मभूत, देवपुत्र, कुलपुत, उदंक, प्रोष्ठिल, जयकीर्ति, मुनिसुव्रत, अरनाथ, अपाय, निष्कषाय, विपुल, निर्मल, चित्रगुप्त, समाधिगुप्त, स्वयंभू, अनिवर्ती, विजय, विमल, देवपाल और अनंतवीर्य। इनमें प्रथम तीर्थंकर सोलहवें कुलकर होंगे। सौ वर्ष उनकी आयु होगी और सात हाथ ऊँचा शरीर होगा। अंतिम तीर्थंकर की आयु एक करोड़ वर्ष पूर्व होगी और शारीरिक अवगाहना पांच सौ धनुष ऊँची होगी। (*महापुराण 76. 477–481, हरिवंशपुराण 66.558–562*)

1.8 तीर्थंकर भगवंतों का वर्णन हो और सोलह कारण भावनाओं का वर्णन ना हो तो उचित प्रतीत नहीं होता। अतः प्रसंग पाकर इन महान 16 कारण भावनाओं के नाम और उनके बारे में संक्षिप्त जानकारी आगम आधार से नीचे दी जा रही है।

1.8.1 षोडश कारण भावनाओं का नाम निर्देशः

षट्खंडागम 8/3/सू.41/79

दंसणविसुज्झदाए विणयसंपण्णदाए सीलव्वदेसु णिरदिचारदाए आवासएसु अपरिहीणदाए खण–लवपडिबुज्झणदाए लद्धिसंवेगसंपण्णदाए जधाथामे तधातवे, साहूणं पासुअपरिचागदाए साहूणं समाहिसंधारणाए साहूणं वेज्जावच्चजोगजुत्तदाए अरहंतभत्तीए बहुसुदभत्तीए पवयणभत्तीए पवयणवच्छलदाए पवयणप्पभावणदाए अभिक्खणं णाणोवजोगजुत्तदाए इच्चेदेहि सोलसेहि कारणेहि जीवा तित्थयरणामगोदं कम्मं बंधंति। 41।

=दर्शन विशुद्धता, विनय संपन्नता, शीलव्रतों में निरतिचारता, छह

आवश्यकों में अपरिहीनता, क्षणलवप्रतिबोधनता, लब्धिसंवेगसंपन्नता, यथाशक्ति तप, साधुओं को प्रासुक परित्यागता, साधुओं को समाधिसंधारणा, साधुओं की वैयाव्रत्ययोगयुक्तता, अरहंतभक्ति, बहुश्रुतभक्ति, प्रवचनभक्ति, प्रवचनवत्सलता, प्रवचनप्रभावनता और अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगयुक्तता, इन सोलह कारणों से जीव तीर्थंकर नाम–गोत्रकर्म को बाँधते हैं।

तेरे पाँच हुए कल्याणक प्रभो

तेरे पाँच हुए कल्याणक प्रभो, इक बार मेरा कल्याण कर दों।
अन्तर्यामी–अन्तर्ज्ञानी, प्रभु दूर मेरा अज्ञान कर दों।। टेक।।

गर्भ समय में रत्न जो बरसें, उनमें से एक रतन नहीं चाहूँ।।
जन्म समय क्षीरोदधि जल से, इन्द्रों ने किया वो न्हवन नहीं चाहूँ।
जो चित्त को निर्मल शान्त करे, वही गन्धोदक मुझे दान कर दो...।। १।।

धार दिगम्बर वेश किया तप, तपकर विषय विकार को त्यागा।
निर्ग्रन्थों का पथ अपनाकर, निज आतम को ही आराधा।
अपने लिए बरसों ध्यान किया, मेरी ओर थोड़ा–सा ध्यान कर लो।। २।।

केवलज्ञान की खिल गई ज्योति, लोकालोक दिखानेवाली।
समवशरण में खिरती वाणी, सबकी समझ में आने वाली।
हे वीतराग सर्वज्ञ प्रभो, मुझे मेरा दरश आसान कर दो ।। ३।।

तीर्थंकर होकर तुम प्रगटे, स्वाभाविक ही मुक्ति तुम्हारी।
सिद्धालय में बैठ प्रभु ने, शाश्वत सुख की धारा पाली।
यहाँ कौन है ऐसा तेरे सिवा, औरों को जो अपने समान कर दो ।। ४।।

2. जैन धर्म के वर्तमान 24 तीर्थंकरों का विवरण निम्न प्रकार है;

क्रसं	तीर्थंकर	परिचय	भगवान का अर्घ्य
1	श्री ऋषभदेव जी **चिह्न:** 	**माता:** मरूदेवी, **पिता:** राजा नाभिराय **गर्भ:** आषाढ़ कृष्णा 2 **जन्म:** चैत्र कृष्णा 9 **तप:** चैत्र कृष्णा 9 **केवलज्ञान:** फागुन कृष्णा 11 **निर्वाण:** माघ कृष्णा 14 **जन्मस्थली:** अयोध्या **निर्वाणस्थली:** अष्टापद (कैलाशपर्वत) **आयु:** 84 लाख पूर्व वर्ष, **ऊंचाई:** 500 धनुष **चिह्न:** बैल **वर्ण:** स्वर्ण/कंचन	शुचि निरमल नीरं गंध सुअक्षत, पुष्प चरु ले मन हरशाय। दीप धूप फल अर्ध्य सु लेकर नाचत ताल मृदंग बजाय श्री आदिनाथ के चरण–कमल पर, बलि–बलि जाऊँ मन–वच–काय। हे करुणानिधि ! भव–दु:ख मेटो, यातैं मैं पूजूँ प्रभु पाय।। ऊँ ह्रीं श्री आदिनाथ–जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रसं	तीर्थंकर	परिचय	भगवान का अर्ध्य
2	श्री अजितनाथ जी **चिह्न:** 	**माता:** रानी विजय, **पिता:** राजा जीतशत्रु **गर्भ:** ज्येष्ठ कृष्णा 15 **जन्म:** माघ शुक्ल 10 **तप:** माघ शुक्ल 10 **केवलज्ञान:** पौष शुक्ल 11 **निर्वाण:** चैत्र शुक्ल 5 **जन्मस्थली:** अयोध्या **निर्वाणस्थली:** सम्मेद शिखर **आयु:** 72 लाख पूर्व वर्ष **ऊंचाई:** 450 धनुष **चिह्न:** हाथी **वर्ण:** स्वर्ण/कंचन	जलफल सब सज्जै, बाजत बज्जै, गुनगनरज्जै मनमज्जै। तुअ पदजुगमज्जे सज्जन जज्जै, ते भव भज्जै निजकज्जै श्री अजितजिनेशं, नुतनक्रेशं, चक्रधरेशं खग्गेशं। मनवाँछितदाता त्रिभुवनत्राता, पूजों ख्याता जग्गेशं।। ऊँ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

क्रसं	तीर्थंकर	परिचय	भगवान का अर्घ्य
3	श्री संभवनाथ जी **चिह्न:** 	**माता:** रानी सुसेना, **पिता:** राजा जितारी **गर्भ:** फाल्गुन शुक्ल 8 **जन्म:** कार्तिक शुक्ल 15 **तप:** मार्गशीर्ष शुक्ल 15 **केवलज्ञान:** कार्तिक कृ कृष्णा 4 **निर्वाण:** चैत्र शुक्ल 6 **जन्मस्थली:** श्रावस्ती **निर्वाणस्थली:** सम्मेद शिखर **आयु:** 60 लाख पूर्व वर्ष, **ऊंचाई:** 400 धनुष **चिह्न:** घोडा/अश्व **वर्ण:** स्वर्ण/कंचन	जल चंदन तन्दुल पुष्प चरु, दीप धूप फल अर्घ्य किया। तुमको अरपों भावभगतिधर, जै जै जै शिवरमनिपिया संभवजिनके चरन चरचतें, सब आकुलता मिट जावै। निज निधि ज्ञान–दरश–सुख–वीरज, निराबाध भविजन पावै।। ऊँ ह्रीं श्री संभवनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रसं	तीर्थंकर	परिचय	भगवान का अर्घ्य
4	श्री अभिनन्दन नाथ जी **चिह्नः** 	**माताः** रानी संवर, **पिताः** राजा सिद्धार्थ **गर्भः** वैशाख शुक्ल 6 **जन्मः** माघ शुक्ल 12 **तपः** माघ शुक्ल 12 **केवलज्ञानः** पौष शुक्ल 14 **निर्वाणः** वैशाख शुक्ल 6 **जन्मस्थलीः** अयोध्या **निर्वाणस्थलीः** सम्मेद शिखर **आयुः** 50 लाख पूर्व वर्ष, **ऊंचाईः** 350 धनुष **चिह्नः** बन्दर/वानर **वर्णः** स्वण/कंचन	अष्टद्रव्य संवारि सुन्दर, सुजस गाय रसाल ही। भचत रचत जजों चरन जुग, नाय नाय सुभाल ही कलुशताप निकन्द श्री अभिनन्द अनुपम चन्द है। पदवंद वृन्द जजे प्रभु भवदन्द–फन्द निकन्द है ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रसं	तीर्थंकर	परिचय	भगवान का अर्घ्य
5	श्री सुमतिनाथ जी **चिह्न:** 	**माता:** रानी सुमंगला, **पिता:** राजा मेघप्रभ **गर्भ:** श्रावण शुक्ल 2 **जन्म:** माघ शुक्ल 12 **तप:** बैशाख शुक्ल 9 **केवलज्ञान:** पौष शुक्ल 15 **निर्वाण:** चैत्र शुक्ल 10 **जन्मस्थली:** अयोध्या **निर्वाणस्थली:** सम्मेद शिखर **आयु:** 40 लाख पूर्व वर्ष, **ऊंचाई:** 300 धनुष **चिह्न:** चकवा **वर्ण:** स्वर्ण/कंचन	जल चंदन तन्दुल प्रसून चरु, दीप धूप फल सकल मिलाय। नाचि राचि शिरनाय समरचों, जय जय जय जय जिनराय हरिहर वंदित पापनिकंदित, सुमतिनाथ त्रिभुवन के राय। तुम पदपद्म सद्मशिवदायक, जजत मुदितमन उदित सुभाय।। ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रसं	तीर्थंकर	परिचय	भगवान का अर्घ्य
6	श्री पद्मप्रभ जी **चिह्न:** 	**माता:** रानी सुषमा, **पिता:** राजा श्रीधर **गर्भ:** माघ कृष्णा 6 **जन्म:** कार्तिक शुक्ल 13 **तप:** कार्तिक शुक्ल 13 **केवलज्ञान:** चैत्र शुक्ल 15 **निर्वाण:** फाल्गुन कृष्णा 4 **जन्मस्थली:** कौशाम्बी **निर्वाणस्थली:** सम्मेद शिखर **आयु:** 30 लाख पूर्व वर्ष, **ऊंचाई:** 250 धनुष **चिह्न:** लाल कमल **वर्ण:** लाल	जल फल आदि मिलाय गाय गुन, भगति भाव उमगाय। जजो तुमहिं शिवतियवर जिनवर, आवागमन मिटाय मन वच तन त्रय धार देत ही, जनम जरा मृत जाय।। पूजों भावसों श्री पद्मनाथपद सार, पूजों भावसों ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रसं	तीर्थंकर	परिचय	भगवान का अर्घ्य
7	श्री सुपार्श्वनाथ जी **चिह्नः** 	**माताः** रानी पृथ्वी, **पिता :** राजा सुप्रतिष्ठ **गर्भः** भाद्रपद शुक्ल 6 **जन्मः** जयेष्ठ शुक्ल 12 **तपः** जयेष्ठ शुक्ल 12 **केवलज्ञानः** फाल्गुन कृष्णा 6 **निर्वाणः** फाल्गुन कृ कृष्णा 7 **जन्मस्थलीः** वाराणसी (बनारस) **निर्वाणस्थलीः** सम्मेद शिखर **आयुः** 20 लाख पूर्व वर्ष, **ऊंचाईः** 200 धनुष **चिह्नः** स्वस्तिक **वर्णः** स्वर्ण / कंचन	आठों दरब साजि गुनगाय, नाचत राचत भगति बढ़ाय। दयानिधि हो, जय जगबन्धु दयानिधि हो तुम पद पूजों मनवचकाय, देव सुपारस शिवपुरराय। दयानिधि हो जय जगबन्धु दयानिधि हो ऊँ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रसं	तीर्थंकर	परिचय	भगवान का अर्घ्य
8	श्री चन्द्रप्रभ जी **चिह्न:** 	**माता:**–रानी लक्ष्मणा, **पिता:**– राजा महासेन **गर्भ:** चैत्र कृष्णा 5 **जन्म:** पौष कृष्णा 11 **तप:** पौष कृष्णा 11 **केवलज्ञान:** फाल्गुन कृष्णा 7 **निर्वाण:** फाल्गुन शुक्ल 7 **जन्मस्थली:** चंद्रपुरी **निर्वाणस्थली:** सम्मेद शिखर **आयु:** 10 लाख पूर्व वर्ष, **ऊंचाई:** 150 धनुष **चिह्न:** चन्द्रमा **वर्ण:** श्वेत	सजि आठों दरब पुनीत, आठों अंग नमों। पूजों अष्टम जिन मीत, अष्टम अवनि गमों !! श्री चन्द्रनाथ दुति चंद, चरनन चंद लगे। मनवचतन जजत अमंद, आतमजोति जगै ऊँ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रसं	तीर्थंकर	परिचय	भगवान का अर्घ्य
9	श्री पुष्पदंत जी **चिह्नः** 	**माताः** रानी रामा (सुप्रिया), **पिताः** राजा सुग्रीव **गर्भः** फाल्गुन कृष्णा 9 **जन्मः** मार्गशीर्ष शुक्ल 1 **तपः** मार्गशीर्ष शुक्ल 1 **केवलज्ञानः** कार्तिक शुक्ल 2 **निर्वाणः** आश्विन शुक्ल 8 **जन्मस्थलीः** काकन्दी **निर्वाणस्थलीः** सम्मेद शिखर **आयः** 2 लाख पूर्व वर्ष, **ऊंचाईः** 100 धनुष **चिह्नः** मगर **वर्णः** श्वेत	जल फल सकल मिलाय मनोहर मनवचतन हुलसाय। तुम पद पूजौं प्रीति लायकै जय जय त्रिभुवनराय मेरी अरज सुनीजे, पुष्पदन्त जिनराय ऊँ ह्रीं श्री पुष्पदंतजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रसं	तीर्थंकर	परिचय	भगवान का अर्घ्य
10	श्री शीतलनाथ जी **चिह्न:** 	**माता:** रानी सुनंदा, **पिता:** राजा दृढ़रथ **गर्भ:** चैत्र कृष्णा 8 **जन्म:** माघ कृष्णा 12 **तप:** माघ कृष्णा 12 **केवलज्ञान:** पौष कृ कृष्णा 14 **निर्वाण:** अश्विन शुक्ल 8 **जन्मस्थली:** भद्रिकापुरी **निर्वाणस्थली:** सम्मेद शिखर **आयु:** 1 लाख पूर्व वर्ष, **ऊंचाई:** 90 धनुष **चिह्न:** कल्प वृक्ष **वर्ण:** स्वर्ण/कंचन	श्रीफलादि वसु प्रासुक द्रव्य साजै। नाचे रचे मचत बज्जत सज्ज बाजे रागादिदो । मलमर्दन हेतु येवा। चर्चों पदाब्ज तव शीतलनाथ देवा ऊँ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रसं	तीर्थंकर	परिचय	भगवान का अर्घ्य
11	श्री श्रेयांसनाथ जी **चिह्न:** 	**माता:** रानी विष्णुश्री, **पिता:** राजा विष्णुराज **गर्भ:** जयेष्ठ कृष्णा 6 **जन्म:** फाल्गुन कृष्णा 11 **तप:** फाल्गुन कृष्णा 11 **केवलज्ञान:** फागुन कृष्णा 11 **निर्वाण:** श्रावण शुक्ल 15 **जन्मस्थली:** सिंहपुरी **निर्वाणस्थली:** सम्मेद शिखर **आयु:** 84 लाख वर्ष, **ऊंचाई:** 80 धनुष **चिह्न:** गेंडा **वर्ण:** स्वर्ण/कंचन	जलमलय तंदुलसुमनचरु अरु दीपधूप फलावली। करि अर्घ्य चरचों चरनजुग प्रभु मोहि तार उतावली।। श्रेयाँसनाथ जिनन्द त्रिभुवन वन्द आनन्दकन्द हैं। दुख दन्दफन्द निकन्द पूरनचन्द जोति अमन्द हैं।। ऊँ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रसं	तीर्थंकर	परिचय	भगवान का अर्घ्य
12	श्री वासुपूज्य जी **चिह्न:** 	**माता:** रानी विजय, **पिता:** राजा वासु **गर्भ:** आषाढ कृष्णा 6 **जन्म:** फाल्गुन कृष्णा 14 **तप:** फाल्गुन कृष्णा 14 **केवलज्ञान:** भाद्रपद कृ कृष्णा 2 **निर्वाण:** भाद्रपद शुक्ल 14 **जन्मस्थली:** चम्पापुरी **निर्वाणस्थली:** चम्पापुरी **आयु:** 70 लाख पूर्व वर्ष, **ऊंचाई:** 70 धनुष **चिह्न:** भैंसा **वर्ण:** लाल	जलफल दरब मिलाय गाय गुन, आठों अंग नमाई। शिवपदराज हेत हे श्रीपति ! निकट धरों यह लाई वासुपूज वसुपूज तनुज पद, वासव सेवत आई। बालब्रह्मचारी लख जिनको, शिवतिय सनमुख धाई ऊँ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रसं	तीर्थंकर	परिचय	भगवान का अर्घ्य
13	श्री विमलनाथ जी **चिह्न** 	**माता:** रानी जयश्यामा, **पिता:** राजा कृतवर्मा **गर्भ:** जयेष्ठ कृष्णा 10 **जन्म:** माघ शुक्ल 14 **तप:** माघ शुक्ल 14 **केवलज्ञान:** माघ शुक्ल 6 **निर्वाण:** आषाढ कृष्णा 6 **जन्मस्थली:** कम्पिल **निर्वाणस्थली:** सम्मेद शिखर **आयु:** 60 लाख वर्ष, **ऊंचाई:** 60 धनुष **चिह्न:** सूकर/सूअर **वर्ण:** स्वर्ण/कंचन	आठों दरब संवार, मनसुखदायक पावने। जजों अर्घ्य भर थार, विमल विमल शिवतिय रमन ऊँ ह्रीं श्री विमलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रसं	तीर्थंकर	परिचय	भगवान का अर्घ्य
14	श्री अनंतनाथ जी **चिह्नः** 	**माताः** रानी सुयशा **पिताः** राजा सिंहसेन **गर्भः** कार्तिक कृष्णा 1 **जन्मः** जयेष्ठ कृष्णा 12 **तपः** जयेष्ठ कृष्णा 12 **केवलज्ञानः** चैत्र कृष्णा 15 **निर्वाणः** चैत्र कृष्णा 4 **जन्मस्थलीः** अयोध्या **निर्वाणस्थलीः** सम्मेद शिखर **आयुः** 30 लाख वर्ष, **ऊंचाईः** 50 धनुष **चिह्नः** सेही **वर्णः** स्वर्ण/कंचन	शुचि नीर चन्दन शालिशंदन, सुमन चरु दीवा धरो। अरु धूप जुत मैं अरघ करि, करजोर जुग विनती करों जगपूज परमपुनीत मीत, अनन्त संत सुहावनों। शिवकंतवंत महंत ध्यावों, भ्रन्ततंत नशावनों ऊँ ह्रीं श्री अनन्तनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रसं	तीर्थंकर	परिचय	भगवान का अर्घ्य
15	श्री धर्मनाथ जी **चिह्न:** 	**माता:** रानी सुव्रता, **पिता:** राजा भानु **गर्भ:** वैशाख शुक्ल 8 **जन्म:** माघ शुक्ल 13 **तप:** माघ शुक्ल 13 **केवलज्ञान:** पौष शुक्ल 15 **निर्वाण:** जयेष्ठ शुक्ल 4 **जन्मस्थली:** रत्नपुरी **निर्वाणस्थली:** सम्मेद शिखर **आयु:** 10 लाख पूर्व वर्ष, **ऊंचाई:** 45 धनुष **चिह्न:** वज्रदण्ड **वर्ण:** स्वर्ण/कंचन	आठों दरब साज शुचि चित्तहर, हरषि गुन गाई। बाजत दृमदृम दृम मृदंगगत, नाचत ता थेई थाई परमधरम–सिमरन धरम–जिन अशरन शरन तिहारी। पूजूँ पाय गाय गुन सुन्दर, नाचूँ दै दै तारी ऊँ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रसं	तीर्थंकर	परिचय	भगवान का अर्घ्य
16	श्री शांतिनाथ जी **चिह्न:** 	**माता:** रानी अचिरा, **पिता:** राजा विश्वसेन **गर्भ:** भाद्रपद कृष्णा 7 **जन्म:** ज्येष्ठ कृष्णा 14 **तप:** ज्येष्ठ कृष्णा 14 **केवलज्ञान:** पौष शुक्ल 10 **निर्वाण:** ज्येष्ठ कृष्णा 14 **जन्मस्थली:** हस्तिनापुर **निर्वाणस्थली:** सम्मेद शिखर **आयु:** 1 लाख वर्ष, **ऊंचाई:** 40 धनुष **चिह्न:** हिरण **वर्ण:** स्वर्ण/कंचन	वसु द्रव्य संवारी, तुम ढिंग धरी, आनन्दकारी दृग प्यारी। तुम हो भवतारी, करुनाधारी, यातै थारी शरनारी।। श्री शान्तिजिनेशं, नुतशक्रेशं, वृशचक्रेशं चक्रेशं। हनि अरिचक्रेशं हे गुनधेशं दयामृतेशं मक्रेशं।। ऊँ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रसं	तीर्थंकर	परिचय	भगवान का अर्घ्य
17	श्री कुन्थुनाथ जी **चिह्न:** 	**माता:** रानी श्रीदेवी, **पिता:** राजा सूर्या **गर्भ:** श्रावण कृष्णा 10 **जन्म:** वैशाख शुक्ल 1 **तप:** वैशाख शुक्ल 1 **केवलज्ञान:** चैत्र शुक्ल 3 **निर्वाण:** वैशाख शुक्ल 1 **जन्मस्थली:** हस्तिनापुर **निर्वाणस्थली:** सम्मेद शिखर **आयु:** 95,000 वर्ष, **ऊंचाई:** 35 धनुष **चिह्न:** बकरा **वर्ण:** स्वर्ण/कंचन	जल चन्दन तन्दुल प्रसून चरु, दीप धूप लेरी। फलजुतजजन करों मन सुख धरी, हरो जगत फेरी कुन्थु सुन अरज दासकेरी, नाथ सुनि अरज दासकेरी। भवसिन्धु परय्यो हों नाथ, निकारो बाँह पकर मेरी।। ऊँ ह्रीं श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रसं	तीर्थंकर	परिचय	भगवान का अर्घ्य
18	श्री अरनाथ जी **चिह्न:** 	**माता:** रानी मित्रा, **पिता:** राजा सुदर्शन **गर्भ:** फाल्गुनशुक्ल 3 **जन्म:** मार्गशीर्ष शुक्ल 14 **तप:** मार्गशीर्ष शुक्ल 14 **केवलज्ञान:** कार्तिक शुक्ल 12 **निर्वाण:** चैत्र शुक्ल 11 **जन्मस्थली:** हस्तिनापुर **निर्वाणस्थली:** सम्मेद शिखर **आयु:** 84,000 वर्ष, **ऊंचाई:** 30 धनुष **चिह्न:** मछली **वर्ण:** स्वर्ण/कंचन	शुचि स्वच्छ पठीरं, गंधगहीरं, तंदुलशीरं पुष्प चरुं। वर दीपं धूपं, आनन्दरूपं, लै फल भूपं अर्घ्य करूँ।। प्रभु दीनदयालं अरिकुलकालं, विरदविशालं सुकुमाल्म। हनि मम जंजालं, हे जगपालं, अनगुनमालं वरमालम्।। ऊँ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रसं	तीर्थकर	परिचय	भगवान का अर्ध्य
19	श्री मल्लिनाथ जी **चिह्न:** 	**माता:** रानी रक्षिता, **पिता:** राजा कुम्भ **गर्भ:** चैत्र शुक्ल 1 **जन्म:** मार्गशीर्ष शुक्ल 11 **तप:** मार्गशीर्ष शुक्ल 11 **केवलज्ञान:** पौष कृकृणा 2 **निर्वाण:** फाल्गुन शुक्ल 5 **जन्मस्थली:** मिथिला **निर्वाणस्थली:** सम्मेद शिखर **आयु:** 55,000 वर्ष, **ऊंचाई:** 25 धनुष **चिह्न:** कलश **वर्ण:** नीला	जल फल अरघ मिलाय गाय गुन पेजों भगति बढ़ाई। शिवपदराज हेत हे श्रीधर, शरन गही मैं आई राग द्वेष मद मोह हरन को, तुम ही हौ वरबीरा। यातें शरन गही जगपतिजी, वेग हरो भवपीरा।। ऊँ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रसं	तीर्थकर	परिचय	भगवान का अर्घ्य
20	श्री मुनिसुव्रतनाथ जी **चिह्न:** 	**माता:** रानी पद्मावती, **पिता:** राजा सुमित्र **गर्भ:** श्रावण कृष्णा 2 **जन्म:** वैशाख कृष्णा 10 **तप:** वैशाख कृष्णा 10 **केवलज्ञान:** वैशाख कृ कृष्णा 9 **निर्वाण:** फाल्गुन कृ कृष्णा 12 **जन्मस्थली:** राजगृही **निर्वाणस्थली:** सम्मेद शिखर **आयु:** 30,000 वर्ष, **ऊंचाई:** 20 धनुष **चिह्न:** कछुआ **वर्ण:** काला	जलगंध आदि मिलाय आठों, दरब अरघ सजों वरूँ। पूजों चरनरज भगत जुत, जातें जगत सागर तरूँ शिवसाथ करत सनाथ सुव्रतनाथ मुनि गुनमाल है। तसु चरन आनन्दभरन तारन, तरन विरद विशाल है।। ऊँ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रसं	तीर्थंकर	परिचय	भगवान का अर्घ्य
21	श्री नमिनाथ जी **चिह्न:** 	**माता:** रानी वप्रा, **पिता:** राजा विजय **गर्भ:** अश्विन कृष्णा 2 **जन्म:** आषाढ़ कृष्णा 10 **तप:** आषाढ़ कृष्णा 10 **केवलज्ञान:** मार्गशीर्ष शुक्ल 11 **निर्वाण:** वैशाख कृष्णा 14 **जन्मस्थली:** मिथिला **निर्वाणस्थली:** सम्मेद शिखर **आयु:** 10,000 वर्ष, **ऊंचाई:** 15 धनुष **चिह्न:** नील कमल **वर्ण:** स्वर्ण/कंचन	जल फलादि मिलाय मनोहरं, अरघ धारत ही भय भौ हरं। जजतु हौं नमिके गुन गायकें, जुगपदांबुज प्रीति लगायकें ॥ ऊँ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रसं	तीर्थंकर	परिचय	भगवान का अर्घ्य
22	श्री नेमिनाथ जी **चिह्न:** 	**माता:** रानी शिवादेवी, **पिता:** राजा समुद्रविजय **गर्भ:** कार्तिक शुक्ल 6 **जन्म:** श्रावण शुक्ल 6 **तप:** श्रावण शुक्ल 6 **केवलज्ञान:** अश्विन शुक्ल 1 **निर्वाण:** आषाढ शुक्ल 8 **जन्मस्थली:** सूर्यपुर (द्वारका) **निर्वाणस्थली:** गिरनार जी **आयु:** 1,000 वर्ष, **ऊंचाई:** 10 धनुष **चिह्न:** शंख **वर्ण:** काला	जलफल आदि साज शुचि लीने, आठों दरब मिलाय। अष्टमथितिके राजकरनकों जजों अंग वसु नाय दाता मोक्ष के, श्री नेमिनाथ जिनराय, दाता मोक्ष के।। ऊँ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

क्रसं	तीर्थंकर	परिचय	भगवान का अर्घ्य
23	श्री पार्श्वनाथ जी **चिह्न:** 	**माता:** रानी वामादेवी, **पिता:** राजा अश्वसेन **गर्भ:** वैशाख कृष्णा 2 **जन्म:** पौष कृष्णा 11 **तप:** पौष कृष्णा 11 **केवलज्ञान:** चैत्र कृष्णा 4 **निर्वाण:** श्रावण शुक्ल 7 **जन्मस्थली:** काशी (बनारस) **निर्वाणस्थली:** सम्मेद शिखरजी **आयु:** 100 वर्ष, **ऊंचाई:** 9 हाथ **चिह्न:** सर्प/सांप **वर्ण:** हरा	नीर गन्ध अक्षतान पुष्प चारु लीजिए। दीप–धूप–श्रीफलादि अर्घ्य तै जजीजिये।। पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा। दीजिए निवास मोक्ष, भूलिए नहीं कदा।। ऊँ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रसं	तीर्थंकर	परिचय	भगवान का अर्घ्य
24	श्री महावीर स्वामी जी **चिह्न:** 	**माता:** रानी त्रिशला, **पिता:** राजा सिद्धार्थ **गर्भ:** आषाढ शुक्ल 6 **जन्म:** चैत्र शुक्ल 13 **तप:** मार्गशीर्ष कृष्णा 10 **केवलज्ञान:** वैसाख शुक्ल 10 **निर्वाण:** कार्तिक कृष्णा 15 **जन्मस्थली:** कुण्डलपुर **निर्वाणस्थली:** पावापुरी **आयु:** 72 वर्ष, **ऊंचाई:** 7 हाथ **चिह्न:** सिंह/शेर **वर्ण:** स्वर्ण/कंचन	जलफल वसु सजि हिमथार, तनमन मोदधरों। गुण गाऊं भवदाधितार, पूजत पाप हरों श्री वीर महा अतिवीर सन्मतिनायक हो। जय वर्द्धमान गुणधीर सन्मतिदायक हो ह्रीं श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

3. अष्ट प्रातिहार्य

1. अष्ट प्रातिहार्य क्या है:

1.1 जिनेन्द्र भगवान की समवशरण स्थली में अनेक मंगल द्रव्य रूपी सम्पदायें होती हैं। अष्टमंगल प्रातिहार्य उन्हीं सम्पदाओं में से हैं। आचार्य मानतुंग जी ने भक्तामर स्तोत्र के श्लोक 28 से 35 में इन अष्ट प्रातिहार्य का अद्भुत वर्णन किया है। पांचवीं शताब्दी के महान दिंगबर आचार्य कुमुदचंद्र (अपरनाम आचार्य सिद्धसेन) रचित कल्याण मंदिर स्रोत में भी इनका बड़ा ही सुंदर वर्णन आता है। माघनंदि मुनिराज कृत अभिषेक पाठ में अभिषेक हेतु जिन प्रतिमा को विराजमान करते समय यह श्लोक बोलते हैं जिसमें इनका वर्णन आता है:–

भृंगार–चामर–सुदर्पण–पीठ–कुम्भ–ताल–ध्वजातप–निवारक–भूषिताग्रे।
वर्धस्व–नंद–जय–पाठपदावलीभिः, सिंहासने जिन! भवन्तमहं श्रयामी।।

2. अष्ट प्रातिहार्य का विवरण:

2.1 तीर्थंकर प्रकृति कर्म के उदय से अभिव्यक्त अर्हंत की विभूतियाँ। ये आठ होती हैं:

1. अशोकवृक्ष, 2. तीन छत्र, 3. सिंहासन, 4. दिव्यध्वनि, 5. दुंदुभि, 6. पुष्पवृष्टि, 7. भामंडल, और 8. चौसठ चमर

(महापुराण 7.293–302, 42.45, 54.231, पद्मपुराण 2.148–154, हरिवंशपुराण 3.31–39, वीरवर्द्धमान चरित्र 15.1–19)

3. **अष्ट प्रातिहार्य के प्रकार:** प्रातिहार्य आठ कहे गये हैं। जिनका वर्णन नीचे करते हैं। यह वर्णन भक्तामर स्तोत्र एवं कल्याण मंदिर स्त्रोत के आधार से लिया गया है।

3.1 अशोक वृक्ष

आचार्य कुमुदचंद्र विरचित कल्याण मंदिर स्त्रोत के आधार से अशोक प्रातिहार्य का यहां वर्णन करते हैं

धर्मोपदेश – समये सविधानु – भावा–,
दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः ।
अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहो•पि ।
किं वा विबोध – मुपयाति न जीवलोकः ।।19।।

अन्वयार्थ (धर्मोपदेशसमये) धर्मोपदेश के समय (ते) आपकी (सविधानु–भावात्) समीपता के प्रभाव से (जनः आस्ताम्) मनुष्य तो दूर रहे (तरुः अपि) वृक्ष भी (अशोक) अशोक/शोक रहित (भवति) हो जाता है। (वा) अथवा (दिनपतौ अभ्युद्गते 'सति') सूर्य के उदय होने पर (समहीरुहः अपि जीवलोकः) वृक्षों सहित समस्त जीवलोक (किम्) क्या (विबोधम्) विकास/विशेष ज्ञान को (न उपयाति) प्राप्त होते हैं।

भावार्थ – इस श्लोक में अशोक शब्द के दो अर्थ हैं एक अशोक वृक्ष और दूसरा शोक रहित। इसी तरह विबोध शब्द के भी दो अर्थ हैं एक विशेष ज्ञान और दूसरा हरा भरा तथा प्रफुल्लित होना। हे भगवन्! जब आपके पास मे रहने वाला वृक्ष भी अशोक हो जाता है तब आपके पास रहने वाला मनुष्य अशोक अर्थात् शोक रहित हो जावे इसमें क्या आश्चर्य है?

यह 'अशोक वृक्ष' प्रातिहार्य का वर्णन है ।

3.2 सिंहासन

आचार्य मानतुंग स्वामी विरचित भक्तामर स्तोत्र के श्लोक 29 के आधार से सिंहासन का वर्णन

सिंहासने मणि–मयूख–शिखा–विचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम्।
बिम्बं वियद्–विलस–दंशुलता–वितानं
तुङ्गोदयाद्रि–शिरसीव सहस्र–रश्मेः ।।29।।

अन्वयार्थ (मणि मयूख शिखा विचित्रे सिंहासने) मणियों की किरणों के अग्रभाग से विविध रंगवाले – चित्र–विचित्र सिंहासन पर (कनक अवदातम्) स्वर्ण जैसा सुन्दर (तव वपुः) आपकी दिव्य देह या सुन्दर शरीर (तुङ्ग उदयाद्रि शिरसि) उन्नत उदयाचल के शिखर पर (वियत् विलसत् अंशु लता – वितानम्) जिसकी किरणों का वल्लरि–विस्तार आकाश में शोभायमान हो रहा है – ऐसे (सहस्र – रश्मेः) सूर्य के (बिम्बं इव विभ्राजते) बिम्ब के समान सुशोभित हो रहा है।

3.3 भामंडल

भक्तामर स्त्रोत में आचार्य मानतुंग देव भामंडल का वर्णन इस प्रकार करते हैं कि

शुम्भत्–प्रभा–वलय–भूरि–विभा–विभोस्ते,
लोक–त्रये–द्युतिमतां द्युति–माक्षिपन्ती।
प्रोद्यद्–दिवाकर–निरन्तर–भूरि–संख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोमसौम्याम् ।।34।।

अन्वयार्थ – (विभोः ते) हे प्रभो! आपके (शुम्भत्प्रभा–वलय– भूरि–विभा) अत्यन्त शोभनीक प्रभामंडल की अतिशय जगमगाती ज्योति (प्रोद्यत् दिवाकर – निरन्तर – भूरि– संख्या) प्रकृष्ट रूप से उदीयमान असंख्य सूर्य को सघन – अविरल जगमगाती हुई तेजयुक्त कान्ति के सदृश है। (लोकत्रये द्युतिमतां द्युतिम्) तीनों लोकों में जितने भी देदीप्यमान पदार्थ हैं उनकी द्युति को

(आक्षिपन्ती) लज्जित करती हुई, तिरस्कृत करती हुई (सोम–सौम्याम् अपि) चन्द्रमा सुदृश सौम्य –शीतल होने पर भी (दीप्त्या) अपनी कान्ति से (निशाम् अपि) रात्रि को भी (जयति) जीतती है।

3.4 तीन छत्र

उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ!
तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः ।
मुक्ता कलाप कलितोल्लसितातपत्र –
व्याजात्त्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ।।26।।
(कल्याण मंदिर स्त्रोत)

अन्वयार्थ (नाथ!) हे नाथ! (भवता भुवनेषु उद्योतितेषु दिन विद्यापीठ 'सत्सु') आपके द्वारा तीनों लोकों के प्रकाशित होने पर (विहताधिकारः) अपने अधिकार से भ्रष्ट तथा (मुक्ताकलाप – कलितोल्लसितातपत्र– व्याजात्) मोतियों के समूह से सहित अतएव शोभायमान सफेद छत्र के छल से (तारान्वितः) ताराओं से वेष्टित (अयम् विधुः) यह चन्द्रमा (त्रिधा धृततनुः) तीन–तीन शरीर धारण कर (ध्रुवम्) निश्चय से (त्वाम् अभ्युपेतः) आपकी सेवाओं में प्राप्त हुआ है।

भावार्थ– हे प्रभो ! जब आपने अपनी कांति व ज्ञान से तीनों लोकों को प्रकाशित कर दिया तब मानों चन्द्रमा का प्रकाश करने रूप अधिकार छीन लिया गया। इसलिए वह तीन छत्र का वेश धरकर आपकी सेवा में अपना अधिकार वापस चाहने के लिए उपस्थित हुआ है। छत्रों में जो मोती लगे हुए हैं वे मानों चन्द्रमा के परिवारस्वरूप तारागण हैं।

यह 'छत्रत्रय' प्रातिहार्य का वर्णन है ।

3.5 चँवर (चमर)

कल्याण मंदिर स्त्रोत में चँवर प्रातिहार्य का वर्णन कुछ इस प्रकार आता है

स्वामिन्! सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो,
मन्ये वदन्ति शुचयः सुरचामरौघाः ।
ये•स्मै नतिं विदधते मुनिपुङ्गवाय,
ते नून मूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः ।।22।।

अन्वयार्थ – (स्वामिन्!) हे स्वामिन्! (मन्ये) मैं मानता हूँ कि (सुदूरम्) नीचे को बहुत दूर तक (अवनम्य) नम्रीभूत होकर (समुत्पतन्तः) ऊपर को आते हुए (शुचयः) पवित्र (सुरचामरौघाः) देवों के चँवर– समूह (वदन्ति) लोगों से कह रहे हैं कि (ये) जो (अस्मै मुनिपुङ्गवाय) इन श्रेष्ठ मुनीन्द्र को (नतिम्) नमस्कार (विदधते) करते हैं, (ते) वे (नूनम्) निश्चय से (शुद्धभावाः) विशुद्ध परिणाम वाले होकर (ऊर्ध्वगतयः) ऊर्ध्वगति वाले (खलु भवन्ति) सचमुच हो जाते हैं अर्थात् स्वर्ग/मोक्ष को प्राप्त होते हैं ।

भावार्थ हे भगवन्! जब देवलोग आप पर चँवर ढोरते हैं तब वे चँवर पहले नीचे की ओर झुकते हैं और बाद में ऊपर को जाते हैं, सो मानों लोगों से यह कहते हैं कि भगवान् को झुककर नमस्कार करने वाले पुरुष हमारे समान ही ऊपर को जाते हैं अर्थात् स्वर्ग मोक्ष को पाते हैं ।

यह 'चॅवर' प्रातिहार्य का वर्णन है ।

3.6 पुष्प–वृष्टि कल्याण मंदिर स्त्रोत में अति सुंदर वर्णन आता है पुष्प वृष्टि प्रातिहार्य का, जिसको यहां वर्णित करते हैं

चित्रं विभो! कथमवाङ्मुख – वृन्तमेव।
विश्वक् पतत्य–विरला सुर–पुष्प – वृष्टिः
त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश !
गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि ।।20।।

अन्वयार्थ – (विभो!) हे स्वामिन्! (चित्रम्) आश्चर्य है कि (विश्वक्) सब ओर (अविरला) व्यवधान रहित (सुरपुष्पवृष्टिः) देवों के द्वारा की हुई पुष्पों की वर्षा (अवाङ्मुखवृन्तम् एव) नीचे डण्ठल और ऊपर को है पांखुरी जिसकी ऐसी ही (कथम्) क्यों (पतति) गिरती है? (यदि वा) अथवा ठीक ही है कि (मुनीश !) हे मुनियों के नाथ! (त्वद्गोचरे) आपके समीप (सुमनसाम्) पुष्पों अथवा विद्वानों के (बन्धनानि) डंठल अथवा कर्मों के बन्धन (नूनम् हि) निश्चय से (अधः एव गच्छन्ति) नीचे को ही जाते हैं।

भावार्थ – इस श्लोक में सुमनस् शब्द के दो अर्थ हैं – एक फूल और दूसरा विद्वान् या देव। इसी तरह बन्धन शब्द के भी दो अर्थ हैं – एक फूलों का बन्धन डंठल और दूसरा कर्मों के प्रकृति आदि चार तरह के बन्ध। हे भगवन्! जो आपके पास रहता है उसके कर्मों के बन्धन नीचे चले जाते हैं, नष्ट हो जाते हैं। इसलिए तो आपके ऊपर जो फूलों की वर्षा होती है उनमें फूलों के बन्धन नीचे होते हैं और पांखुरी ऊपर।

यह 'पुष्पवृष्टि' प्रातिहार्य वर्णन है।

3.7 देव–दुन्दुभि श्री भक्तामर स्तोत्र के इस श्लोक में देव–दुन्दुभि का बहुत ही सुन्दर विवरण है:

गम्भीर – तार–रव– पूरित–दिग्विभाग–
स्त्रैलोक्य–लोक–शुभ–संगम–भूति–दक्षः।
सद्धर्मराज – जय घोषण–घोषकः सन्।
खे दुन्दुभिर्ध्वनति ते यशसः प्रवादी ।।32।।

अन्वयार्थ – हे भगवान् ! (गम्भीर – तार – रवपूरित – दिग्विभागः) अपनी गम्भीर–स्पष्ट और मधुर ध्वनि से दिग्मण्डल को गुँजाता हुआ (त्रैलोक्य लोक शुभसङ्गम भूति – दक्ष) तीनों लोकों के प्राणियों को सत्समागम का वैभव प्राप्त कराने की घोषणा करता हुआ (सद्धर्मराज – जय घोषणघोषकः सन्) समीचीन जिनधर्म एवं उसके प्रणेता तीर्थंकर देवों की जय–जयकार करता हुआ (दुन्दुभिः) नगाड़ा (ते) आपके (यशसः) यश का (प्रवादी) विशदकथन करता हुआ (खे) गगन में (ध्वनति) गूँज रहा है।

3.8 दिव्य–ध्वनि

3.8.1 कल्याण मंदिर स्त्रोत में दिव्यध्वनि का अति सुंदर वर्णन आता है उसी को यहां वर्णित करते हैं

स्थाने गभीर – हृदयोदधि – सम्भवायाः,
पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति ।
पीत्वा यतः परम–सम्मद–सङ्ग–भाजो,
भव्या व्रजन्ति तरसाप्यजरा–मरत्वम् ।।21।।

अन्वयार्थ (गभीरहृदयोदधिसम्भवायाः) गम्भीर हृदयरूपी समुद्र से पैदा हुई (तव) आपकी (गिरः) वाणी के (पीयूषताम्) अमृतपने को लोग (स्थाने) ठीक ही (समुदीरयन्ति) प्रकट करते हैं (यतः) क्योंकि (भव्याः) भव्यजीव (ताम् पीत्वा) उसे पीकर (परमसम्मदसङ्गभाजः 'सन्तः') परमसुख के भागी होते हुए (तरसा अपि) बहुत ही शीघ्र (अजरामरत्वम्) अजर – अमरपने को (व्रजन्ति) प्राप्त होते हैं।

भावार्थ– लोक में प्रचलित है कि अमृत गहरे समुद्र से निकला था और उसका पान करने से देव लोग अत्यन्त आनन्दित होते हुए अजर– बुढ़ापा रहित तथा अमर – मृत्युरहित हो गये थे। भगवन्! आपकी वाणी भी आपके

गंभीर हृदयरूपी समुद्र से पैदा हुई है और उसके सेवन करने से लोक परम सुखी हो अजर–अमर हो जाते हैं– मुक्त हो जाते हैं ऐसी हालत में लोग यदि यह कहें कि आपकी वाणी अमृत है तो ठीक ही कहते हैं ।

यह 'दिव्यध्वनि' प्रातिहार्य का वर्णन है ।

4. कल्याणक – एक परिचय

1. जैनागम में तीर्थंकर के जीवनकाल में घटित पाँच अनुपम घटनाओं का उल्लेख मिलता है। उन्हें पंचकल्याणक के नाम से जाना जाता है, क्योंकि ये अवसर जगत के लिए अत्यन्त कल्याणकारी व मंगलकारी होते हैं। मंगलाष्टक पाठ में आता है कि

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां, जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो, यः केवलज्ञानभाक।
यः कैवल्यपुर–प्रवेश–महिमा संपादितः स्वर्गिभिः
कल्याणानि च तानि पंच सततं, कुर्वन्तु ते मंगलम्।।

अर्थः – तीर्थंकरों के गर्भकल्याणक, जन्माभिषेक कल्याणक, दीक्षा कल्याणक, केवलज्ञान कल्याणक और कैवल्यपुर प्रवेश (निर्वाण) कल्याणक के देवों द्वारा आयोजित महोत्सव हमें सर्वदा मंगलकारी रहें।

2. कौन–कौन से पाँच कल्याणकः गर्भकल्याणक, जन्मकल्याणक, तपकल्याणक (दीक्षाकल्याणक), ज्ञानकल्याणक एवं मोक्षकल्याणक। पंच कल्याणकों का नाम निर्देश (जंबूद्दीपपण्णत्तिसंगहा/13/93)

गब्भावयारकाले जम्मणकाले तहेव णिक्खमणे।
केवलणाणुप्पण्णे परिणिव्वाणम्मि समयम्मि ।93।

अर्थः– जो जिनदेव गर्भावतारकाल, जन्मकाल, निष्क्रमणकाल, केवल ज्ञानोत्पत्तिकाल और निर्वाणकाल, इन पाँच समयों में पाँच महा–कल्याणकों को प्राप्त होकर महाऋद्धियुक्त सुरेन्द्र इन्द्रों से पूजित हैं ।93–94।

3. पंच कल्याणक का संक्षिप्त परिचय

3.1 गर्भ कल्याणक

3.1.1 भगवान के गर्भ में आने से छह मास पूर्व से लेकर जन्म पर्यन्त 15 मास तक उनके जन्म स्थान में कुबेर द्वारा प्रतिदिन तीन बार 3.5 करोड़ रत्नों

की वर्षा होती रहती है। दिक्कुमारी देवियाँ माता की परिचर्या व गर्भ शोधन करती हैं। गर्भवाले दिन से पूर्व रात्रि को माता को 16 उत्तम स्वप्न दिखते हैं, जिन पर भगवान का अवतरण निश्चय कर माता–पिता प्रसन्न होते हैं। रत्नों की वृष्टि में तीर्थंकरों का पुण्य ही कारण है।

(पद्मपुराण/3/112–157) (हरिवंशपुराण 37/1–47) (महापुराण12/84–195)

तस्य शक्राज्ञया गेहे षण्मासान् प्रत्यहं मुहुः।
रत्नान्यैलविलस्तिस्रः कोटीः सार्धं न्यपतत् ।20।

अर्थातः उस महाभाग के स्वर्ग से पृथ्वी पर अवतार लेने के छह माह पूर्व से ही प्रतिदिन तीर्थंकर नामक पुण्य प्रकृति के प्रभाव से, जितशत्रु के घर में इन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने साढ़े तीन करोड़ रत्नों की वृष्टि की। उन रत्नों को याचक लोग बे–रोकटोक ले जाते थे।

तया पतन्त्या वसुधारयार्धभाकृत्रिकोटिसंख्यापरिमाणया जगत्।
प्रतर्पितं प्रत्यहमर्थि सर्वतः क्व पात्रभेदो॰स्ति धनप्रवर्षिणाम्।

अर्थातः वह धन की धारा प्रतिदिन तीन बार साढ़े तीन करोड़ की संख्या का परिमाण लिये हुए पड़ती थी और उसने सब ओर याचक जगत् को संतुष्ट कर दिया था। सो ठीक ही है, क्योंकि धन की वर्षा करने वालों को पात्र भेद कहाँ होता है। हरिवंशपुराण/37/3

3.1.2 यहां प्रसंग पाकर उन 16 स्वप्नों के नाम और उनके फल का वर्णन भी करते हैं। सभी बाल तीर्थंकर की माता इन्हीं सोलह स्वप्न को देखती हैं। यहां पर आदिनाथ भगवान की माता मरूदेवी, राजा नाभिराय से इन स्वप्नों का फल जान रहीं हैं और उत्तर में राजा नाभिराय कहते हैं कि

श्रृणु देवि महान् पुत्रो भविता ते गजेक्षणात् ।
समस्तभुवनज्येष्ठो महावृषभदर्शनात् ।155 ।
सिंहेनानंतवीर्यो•सौ दाम्ना सद्धर्मतीर्थकृत् ।
लक्ष्म्याभिषेकमाप्तासौ मेरोर्मूर्ध्नि सुरोत्तमैः ।156 ।
पूर्णेंदुना जनाह्लादी भास्वता भास्वरद्युतिः ।
कुंभाभ्यां निधिभागी स्यात् सुखी मत्स्ययुगेक्षणात् ।157 ।
सरसा लक्षणोद्भासी सो•ब्धिना केवली भवेत् ।
सिंहासनेन साम्राज्यम् अवाप्स्यति जगद्गुरुः ।158 ।
स्वर्विमानावलोकेन स्वर्गादवतरिष्यति ।
फणींद्रभवनालोकात् सो•वधिज्ञानलोचनः ।159 ।
गुणानामाकरः प्रोद्यद्रत्नराशिनिशामनात् ।
कर्मेंधनधगप्येष निर्धूमज्वलनेक्षणात् ।160 ।
वृषभाकारमादाय भवत्यास्यप्रवेशनात् ।
त्वद्गर्भे वृषभो देवः स्वमाधास्यति निर्मले ।161 ।

(महापुराण / 12 / 155–161)

(नाभिराय मरुदेवी से कहते हैं) हे देवी ! सुन,

1. हाथी के देखने से उत्तम पुत्र होगा
2. उत्तम बैल के देखने से समस्त लोक में ज्येष्ठ
3. सिंह के देखने से अनंत बल से युक्त
4. मालाओं के देखने से समीचीन धर्म का प्रवर्तक
5. लक्ष्मी के देखने से सुमेरु पर्वत के मस्तक पर देवों के द्वारा अभिषेक को प्राप्त
6. पूर्ण चंद्रमा को देखने से लोगों को आनंद देने वाला
7. सूर्य को देखने से दैदीप्यमान प्रभा का धारक
8. दो कलश युगल देखने से अनेक निधि को प्राप्त, और
9. मछलियों का युगल देखने से सुखी होगा ।155–157 ।

10. सरोवर को देखने से अनेक लक्षणों से शोभित
11. समुद्र को देखने से केवली और
12. सिंहासन देखने से जगद्गुरु होकर साम्राज्य प्राप्त करेगा।158।
13. देवों का विमान देखने से स्वर्ग में अवतीर्ण
14. नागेंद्र का भवन देखने से अवधिज्ञान से युक्त
15. चमकते रत्नों की राशि देखने से गुणों की खान
16. निर्धूम अग्नि देखने से कर्मरूपी ईंधन को जलाने वाला होगा।159–160।

तुम्हारे मुख में वृषभ ने प्रवेश किया है इसलिए तुम्हारे गर्भ में वृषभदेव प्रवेश करेंगे।161।

3.2 जन्म कल्याणक

3.2.1 भगवान का जन्म होने पर देवभवनों व स्वर्गों आदि में स्वयं घण्टे आदि बजने लगते हैं और इन्द्रों के आसन कम्पायमान हो जाते हैं जिससे उन्हें भगवान के जन्म का निश्चय हो जाता है। सभी इन्द्र व देव भगवान का जन्मोत्सव मनाने को बड़ी धूमधाम से पृथ्वी पर आते हैं। अहमिन्द्रजन अपने–अपने स्थान पर ही सात पग आगे जाकर भगवान को परोक्ष नमस्कार करते हैं। दिक्कुमारी देवियाँ भगवान के जातकर्म करती हैं। कुबेर नगर की अद्भुत शोभा करता है।

3.2.2 इन्द्र की आज्ञा से इन्द्राणी प्रसूतिगृह में जाती है, माता को माया निद्रा से सुलाकर उसके पास एक मायामयी पुतला लिटा देती है और बालक भगवान को लाकर इन्द्र की गोद में दे देती है, जो उनका सौन्दर्य देखने के लिए 1000 नेत्र बनाकर भी सन्तुष्ट नहीं होता।

3.2.3 ऐरावत हाथी पर भगवान को लेकर इन्द्र सुमेरुपर्वत की ओर चलता है। वहाँ पहुँचकर पाण्डुक शिला पर, भगवान का क्षीरसागर से देवों द्वारा लाये

गये जल के 1008 कलशों द्वारा, अभिषेक करता है। तदनन्तर बालक को वस्त्राभूषण से अलंकृत कर नगर में देवों सहित महान उत्सव के साथ प्रवेश करता है। बालक के अंगूठे में अमृत भरता है, और ताण्डव नृत्य आदि अनेकों मायामयी आश्चर्यकारी लीलाएँ प्रगट कर देवलोक को लौट जाता है। दिक्कुमारी देवियाँ भी अपने–अपने स्थानों पर चली जाती हैं।

(पद्मपुराण/3/158–214) (हरिवंशपुराण/38/54 तथा 31/15 वृत्तान्त), (म.पु/13/4–216) (जंबूद्वीपपण्णत्तिसंगहो/4/152 –291)।

3.2.4 प्रभु के जन्म कल्याणक के जलाभिषेक के पावन प्रसंग पर एक सुंदर भजन सहज ही यहां उद्धृत करने का भाव हो रहा है

सुरपति ले अपने शीश, जगत के ईश गये गिरिराजा;
जा पांडुक शिला विराजा ।।टेक।।
शिल्पी कुबेर वहाँ आकर के, क्षीरोदधि का जल लाकर के;
रचि पैडि ले आये, सागर का जल ताजा, फिर न्हवन कियो जिनराजा।।१।। १
नीलम पन्ना वैडूर्यमणी, कलशा लेकर के देवगणीय
इक सहस आठ कलशा लेकर नभ राजा, फिर न्हवन कियो जिनराजा।।२।। २
वसु योजन गहराई वाले, चहुँ योजन चौड़ाई वाले;
इक योजन मुख के कलश ढुरे जिनमाथा, नहीं जरा डिगे शिशुनाथा।।३।। ३
सौधर्म इन्द्र अरु ईशाना, प्रभु कलश करें धर युग पाना;
अरु सनत्कुमार महेन्द्र, दोय सुरराजा, शिर चमर दुरावे साजा।।४।। ४
फिर शेष दिविज जयकार किया, इन्द्राणी प्रभु तन पोंछ लिया;
शुभ तिलक दृगांजन शची कियो शिशुराजा, नाना भूषण से सजा।।५।।

ऐरावत पुनि प्रभु लाकर के माता की गोद बिठा करके;
अति अचरज ताण्डव नृत्य कियो दिविराजा, स्तुति करके जिनराजा ।।६।।
चाहत मन 'मुन्नालाल' शरण वसु कर्म जाल दुठ दूर करन;
शुभ आशीषमय वरदान देहु जिनराजा, मम न्हवन होय गिरिराजा।।७।। ७

3.3 तप कल्याणक

3.3.1 कुछ काल तक राज्य विभूति का भोग कर लेने के पश्चात् किसी एक दिन कोई कारण पाकर भगवान् को वैराग्य उत्पन्न होता है। उस समय ब्रह्म स्वर्ग से लौकांतिक देव भी आकर उनको वैराग्य वर्द्धक उपदेश देते हैं। इन्द्र उनका अभिषेक करके उन्हें वस्त्राभूषण से अलंकृत करता है। कुबेर द्वारा निर्मित पालकी में भगवान् स्वयं बैठ जाते हैं। इस पालकी को पहले तो मनुष्य कन्धों पर लेकर

कुछ दूर पृथ्वी पर चलते हैं और देव लोग लेकर आकाश मार्ग से चलते हैं।

3.3.2 तपोवन में पहुँचकर भगवान् वस्त्रालंकार का त्याग कर केशों का लुंचन कर देते हैं और दिगम्बर मुद्रा धारण कर लेते हैं। अनेकों राजा भी उनके साथ दीक्षा धारण करते हैं। इन्द्र उन केशों को एक मणिमय पिटारे में रखकर क्षीरसागर में क्षेपण करता है। दीक्षा स्थान तीर्थ स्थान बन जाता है।

3.3.3 भगवान् बेला तेला आदि के नियमपूर्वक 'नमः सिद्धेभ्यः' कहकर स्वयं दीक्षा ले लेते हैं क्योंकि वे स्वयं जगद्गुरु हैं। नियम पूरा होने पर आहारार्थ नगर में जाते हैं और यथाविधि आहार ग्रहण करते हैं। दातार के घर पंचाश्चर्य प्रगट होते हैं।

(पद्मपुराण/3/263–283 तथा 4/1–20), (हरिवंशपुराण/55/100–129) (महापुराण/17/46–253)।

3.4 केवलज्ञान कल्याणक

3.4.1 यथा क्रम ध्यान की श्रेणियों पर आरूढ़ होते हुए चार घातिया कर्मों का नाश हो जाने पर भगवान् को केवलज्ञान आदि अनन्तचतुष्टय लक्ष्मी प्राप्त होती है। तब पुष्प वृष्टि, दुन्दुभी शब्द, अशोक वृक्ष, चमर, भामण्डल, छत्रत्रय, स्वर्ण सिंहासन और दिव्यध्वनि ये आठ प्रातिहार्य प्रगट होते हैं।

3.4.2 इन्द्र की आज्ञा से कुबेर समवशरण रचता है; जिसकी विचित्र रचना से जगत चकित होता है। 12 सभाओं में यथास्थान देव, मनुष्य, तिर्यंच, मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका आदि सभी बैठकर भगवान् के उपदेशामृत का पान कर जीवन सफल करते हैं।

3.4.3 भगवान का विहार बड़ी धूमधाम से होता है। याचकों को किमिच्छक दान दिया जाता है। भगवान के चरणों के नीचे देव लोग सहस्रदल स्वर्ण कमलों की रचना करते हैं और भगवान् इनको भी न स्पर्श करके अधर आकाश में ही चलते हैं। आगे–आगे धर्मचक्र चलता है। बाजे नगाड़े बजते हैं। पृथ्वी ईति भीति रहित हो जाती है। इन्द्र राजाओं के साथ आगे–आगे जय–जयगान करते चलते हैं। मार्ग में सुन्दर क्रीड़ा स्थान बनाये जाते हैं। मार्ग अष्टमंगल द्रव्यों से शोभित रहता है। भामण्डल, छत्र, चमर स्वतः साथ–साथ चलते हैं। ऋषिगण पीछे–पीछे चलते हैं। इन्द्र प्रतिहार बनता है। अनेकों निधियाँ साथ–साथ चलती हैं। विरोधी जीव वैर विरोध भूल जाते हैं। अन्धे बहरों को भी दिखने सुनने लग जाता है। (पद्मपुराण/4/21–52) (हरिवंशपुराण/56/112–118; 57/1, 59/1–124) (महापुराण सर्ग 22 व 23 पूर्ण)।

3.5 निर्वाण कल्याणक (मोक्ष कल्याणक)

3.5.1 विदेहक्षेत्र की अपेक्षा भरतक्षेत्र में होने वाले केवलियों में जो फर्क होता है उसको बतलाते हुए **निर्जरासार ग्रंथ में आचार्य भगवान श्री सूर्यसागर जी मुनिराज** लिखते हैं कि–

(1) भरत और ऐरावत क्षेत्र में जो तीर्थंकर केवली होते हैं उनके तो पांच कल्याणक होते हैं, वहां तीन दो कल्याणक वाले तीर्थंकर नहीं ही होते हैं। पर विदेहक्षेत्र में कोई पांच कल्याणक के धारी होते हैं, कोई तीन के ही होते हैं, तो कोई दो ही होते हैं। जिनके गर्भ जन्म तप– ज्ञान और निर्वाण ऐसे पांच कल्याणक होते हैं उनमें इन्द्रादिदेव आकर उत्सव करते हैं।

(2) तीन कल्याणक के धारी वे होते हैं जो गृहस्थावस्था में सोलह कारण भावना को भाकर दीक्षा लेकर मुनि हुऐ हों, उनके तप, ज्ञान और निर्वाण ऐसे 3 कल्याणक होते हैं अर्थात् इनकी तीन क्रियाओं में इंद्रादिकदेव आकर उत्सव मनाते हैं।

(3) दीक्षा ले लेने बाद जो आठवें गुणस्थान के छट्ठे भाग में प्राप्त होकर सोलह कारण भावना भाकर तीर्थंकर गोत्र बांधते हैं वे दो कल्याणक के धारी तीर्थंकर हैं अर्थात् उनके केवलज्ञान और निर्वाण ऐसे दो कल्याणक ही होते हैं क्योंकि गर्भ जन्म और तप लेते समय तीर्थंकर प्रकृति का बंध तो था ही नहीं, दीक्षा लेने बाद तीर्थंकर प्रकृति का बंध किया, उसके बाद कल्याणक होते हैं, बिना तीर्थंकर प्रकृति के बांधे कल्याणक होते नहीं। ऐसे कल्याणक विदेह क्षेत्र में ही होते हैं।

3.5.2 अंतिम समय आने पर भगवान योग निरोध द्वारा ध्यान में निश्चलता कर चार अघातिया कर्मों का भी नाश कर देते हैं और निर्वाण धाम को प्राप्त होते

हैं। देव लोग निर्वाण कल्याणक की पूजा करते हैं। भगवान का शरीर काफूर की भाँति उड़ जाता है। इन्द्र उस स्थान पर भगवान् के लक्षणों से युक्त सिद्धशिला का निर्माण करता है। (हरिवंशपुराण/65/1–17); (महापुराण/47/343–354)।

3.5.3 पंच कल्याणकों में 16 स्वर्गों के देव व इन्द्र स्वयं आते हैं हरिवंशपुराण/8/131

स्वाम्यादेशे कृते तेन चेलुः सौधर्मवासिनः।
देवैश्चाच्युतपर्यन्ताः स्वयंबुद्धा सुरेश्वराः।131।

अर्थातः सेनापति के द्वारा स्वामी का आदेश सुनाये जाते ही सौधर्म स्वर्ग में रहने वाले समस्त देव चल पड़े। तथा अच्युत स्वर्ग तक के सर्व इन्द्र स्वयं ही इस समाचार को जान देवों के साथ बाहर निकले।

4. सभी कल्याणक क्षेत्रों का विवरण अगले अध्यायों में विस्तृत रूप से किया गया है।

5. श्री सम्मेद शिखरजी

यद्यपि इस पावन शाश्वत सिद्ध क्षेत्र के बारे में वर्णन करने में शब्द असमर्थ हैं इसकी महिमा अवचनीय है, तथापि इस तीर्थ क्षेत्र और इससे मुक्ति को प्राप्त अनंत सिद्ध भगवन्तों के चरणों में मन वच काय पूर्वक नमन करके इस सिद्ध क्षेत्र की महिमा को वर्णित करने का साहस कर रहे हैं।

1. सम्मेद शिखरजी के बारे में: सम्मेद शिखरजी या श्री शिखरजी या पारसनाथ पर्वत भारत के झारखंड राज्य के गिरीडीह जिले में छोटा नागपुर पठार पर स्थित एक पहाड़ी है जो विश्व का सबसे महत्वपूर्ण जैन तीर्थ स्थल है। 1,350 मीटर (4,430 फुट) ऊँचा यह पहाड़ झारखंड का सबसे ऊंचा स्थान भी है।

2. सम्मेदशिखरजी और जैन धर्म:

2.1 ‘श्री सम्मेद शिखरजी’ के रूप में चर्चित इस पुण्य क्षेत्र में भरत क्षेत्र की वर्तमान चौबीसी के 24 में से 20 तीर्थंकरों ने मोक्ष की प्राप्ति की।

2.2 **शाश्वत तीर्थ:** जैन ग्रंथों के अनुसार सम्मेद शिखर और अयोध्या का अत्यधिक महत्व है। अयोध्या तीर्थंकरों का शाश्वत जन्म क्षेत्र और श्री सम्मेद शिखर जी तीर्थंकरों का शाश्वत निर्वाण क्षेत्र है। जब सम्मेद शिखर तीर्थयात्रा शुरू होती है तो हर तीर्थयात्री का मन तीर्थंकरों का स्मरण कर अपार श्रद्धा, आस्था, उत्साह और खुशी से भरा होता है। जैन धर्म के सिरमौर कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य कुंदकुंद देव के द्वारा निर्वाण भक्ति में श्री सम्मेद शिखर जी का कुछ इस प्रकार वर्णन करते हैं:

वीसं तु जिणवरिंदा, अमरासुरवेदिदा धुव्वकिलेसा।
संमेदे गिरिसिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं।।2।।

अर्थ: जो देव और असुरों के द्वारा वंदित हैं तथा जिन्होंने समस्त क्लेशों को

नष्ट कर दिया है ऐसे बीस जिनेंद्र (तीर्थंकर) सम्मेदाचल के शिखर पर निर्वाण को प्राप्त हुए हैं, उन सबको नमस्कार हो।

2.3 जब माघ वदि चौदस विक्रम संवत् 1901 के दिन पंडित श्री दौलतराम जी ने सम्मेद शिखर जी की वंदना की तब उन्होंने इस पवित्र पर्वतराज की महिमा को कुछ इस तरह व्यक्त किया।

आज गिरिराज निहारा, धनभाग हमारा।
श्रीसम्मेद नाम है जाको भूपर तीरथ भारा।।आज.।।
तहां बीस जिन मुक्ति पधारे, अवर मुनीश अपारा।
आरजभूमिशिखामनि सोहै, सुरनरमुनि–मनप्यारा।।1।। आज.।।
तहं थिर योग धार योगीसुर, निज परतत्त्व विचारा ।
निज स्वभावमें लीन होयकर, सकल विभाव निवारा।। 2।। आज.।।
जाहि जजत भवि भावनतैं जब भवभवपातक टारा।
जिनगुन धार धर्मधन संचो, भव– दारिदहरतारा।। 3।। आज. ।।
इक नभ नवइक वर्ष माघवदि, चौदश बासर सारा।
माथ नाय जुत साथ 'दौल' ने, जय जय शब्द उचारा।। 4।। आज.।।

अर्थः आज गिरिराज (सम्मेदशिखर) के दर्शन किए हैं, अतः धन्य भाग्य हैं हमारे। इसका नाम सम्मेदशिखर हैं, जो इस पृथ्वी पर बहुत बड़ा तीर्थ है। यहाँ से बीस तीर्थंकर और अपार मुनिजन मुक्त हुए हैं। इस भूमि का कण–कण मिट्टी, पहाड़ों की चोटियाँ अत्यंत शोभित हैं जो देवों को, मनुष्यों को व मुनियों के मन को अत्यन्त प्यारी लगती हैं।

यहाँ मुनिजन स्थिर योग धारणकर भेद–ज्ञान का, स्व–पर का चिंतवन करते हैं और फिर अपने स्वभाव में मगन होकर, लीन होकर समस्त अन्य भावों को छोड़ देते हैं। भव्यजन भावसहित वंदना करके भव–भव के पापों का नाश करते हैं, उन्हें टाल देते हैं। जिनेन्द्र के समान गुणों को धारण कर धर्मरूपी संपत्ति का संचय करते हैं, जिससे भव–भव के दुःख–दारिद्र दूर हो जाते हैं।

माघ वदि चौदस विक्रम संवत् 1901 के दिन दौलतराम जी ने शीश नवाकर सबके साथ जय– जयकार किया अर्थात् भगवान ऋषभदेव के मोक्ष कल्याणक के दिन कवि ने इस तीर्थ की भक्तिपूर्वक वंदना की।

2.4 क्षेत्र के बारे में:

2.4.1 यह शाश्वत सिद्ध क्षेत्र अति ही मनोरम है अनंत भव्य जीव इस सम्मेदशिखर जी की धरा से मोक्ष गए हैं। इस पर्वत का कण कण निर्ग्रंथ दिगंबर मुनिराजों की साधना से पवित्र हुआ है। इस धरा का कण कण वीतरागता और भेद विज्ञान का द्योतक है ।

2.4.2 पवित्र पर्वत के शिखर तक श्रद्धालु पैदल या डोली से जाते हैं। जंगलों व पहाड़ों के दुर्गम रास्तों से गुजरते हुए वे नौ किलोमीटर की यात्रा तय कर शिखर पर पहुँचते हैं। सभी 24 तीर्थंकरों से जुड़े स्थलों के दर्शन के लिए नौ किलोमीटर चलते हैं। इन स्थलों के दर्शन के बाद वापस मधुबन आने के लिए नौ किलोमीटर चलते हैं। पूरी प्रक्रिया में 10 से 12 घंटे का समय लगता है जो पलक झपकते ही पूरा हो जाता है जरा सा भी भान नहीं होता कि कब वंदना शुरू हुई और कब समाप्त हो गई। यह सम्मेद शिखर जी की वंदना श्रद्धालुओं को काफी आनंद विभोर कर देती है। श्रद्धालुओं की टोली देखकर ऐसा भाव आता है जैसे भावी सिद्ध, वर्तमान के सिद्ध भगवंतों के दर्शन करने जा रहे हों। रास्ते में भी कई भव्य व आकर्षक मंदिरों की श्रृंखलाएँ देखने को मिलती हैं। मंदिर व धर्मशालाओं में की गई आकर्षक नक्काशी आगंतुकों को मंत्रमुग्ध कर देती है।

2.4.3 टोंको पर दर्शन कैसे करें:

सर्वप्रथम भक्तिभाव से जिन भी तीर्थंकर भगवान की टोंक है उनको नमन करें उनका अर्घ्य पढ़ें, अर्घ्य इस प्रकार से पढ़ें कि आसपास के साधर्मी जनों को किसी प्रकार की दर्शन, ध्यान आदि में बाधा ना आवे। यदि धोती पंचे आदि शुद्ध वस्त्र पहनें हों तो ही भगवान के चरण चिह्न आदि छुएं। टोंको की

पवित्रता का विशेष ध्यान रखें। वास्तव में जिस टोंक से भगवान का मोक्ष हुआ है उससे बिल्कुल ठीक ऊपर सिद्ध शिला में भगवान विराजमान हैं अतः भक्ति भाव से टोंक के बिल्कुल ऊपर की ओर भी देखकर भगवान को परोक्ष नमस्कार भी करें। सात तत्वों का चिंतन, अपनी शुद्धात्मा का चिंतन, अरिहंत भगवान के स्वरुप का चिंतन भी अवश्य करें। कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य श्री कुंदकुंद देव प्रवचनसार जी में कहते हैं कि

जो जाणदि अरहंतं दव्वत्तगुणत्तपज्जयत्तेहिं।
सो जाणदि अप्पाणं मोहो खलु जादि तस्स लयं।।80।।

अन्वयार्थः जो अरहन्त को द्रव्यपने गुणपने और पर्यायपने जानता है, वह (अपने) आत्मा को जानता है और उसका मोह अवश्य लय को प्राप्त होता है। सभी बातों का सार यही है कि वंदना करते समय अंतर में यह निर्मल भावना भाएं कि जिस प्रकार भगवान आपने अपने मोह का नाश किया है वैसे ही मेरे भी मोह का नाश हो, हे भगवान जिस प्रकार आप इस संसार के दुखों से मुक्त हुए हैं वैसे ही मैं भी निर्ग्रंथ दिगंबर मुनिदशा धारण कर अल्पकाल में मुक्त होऊं।

2.5 सम्मेद शिखर सम्पूर्ण वंदनाः

चोपड़ा कुंड अर्घ्यः

सम्मेदशिखर गिरिराज पे, चोपड़ा कुंड महान।
पारस चंदा बाहुबली, पूजूं मैं धरि ध्यान।

ॐ श्री सम्मेदशिखर चोपड़ा कुंड मध्ये पार्श्वनाथ, चन्द्रप्रभु, बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

2.5.1 **24 तीर्थंकरों के गणधरों की कूट** – 35 चरण हैं। 24 तीर्थंकरों के व 10 पारसनाथ भगवान के गणधर के सफेद वर्ण के है व गौतम गणधर के श्याम वर्ण के है। इस कूट की विशेषता है कि यह स्थान पर्वत पर समतल भूमि पर है इस कूट से एक साथ 9 टोंक के दर्शन और होते है पांच

टोंक दायी और व चार टोंक बाई और है। इस टोंक पर 35 चरण बने है जिसमें 34 श्वेत वर्ण के व एक श्याम वर्ण के है

चौबीसों जिनराज के, गण नायक हैं जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ऊँ ह्वीं श्री गौतम स्वामी आदि गणधर देव ग्राम के उद्यान आदि भिन्न–भिन्न स्थानों से निर्वाण पधारे हैं तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

2.5.2 **श्री कुंथुनाथ भगवान की टोंक (ज्ञानधर कूट)** – श्याम वर्ण के चरण है।

कुंथुनाथ जिनराज का, कूट ज्ञानधर जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ऊँ ह्वीं श्रीकुन्थुनाथ जिनेंद्रादि मुनि 96 कोड़ा–कोडी, 96 करोड़, 32 लाख, 96 हजार, 742 मुनि इस कूट से सिद्ध हुए, तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

2.5.3 **श्री नमिनाथ स्वामी की टोंक (मित्रधर कूट)** – श्याम वर्ण के चरण है।

नमिनाथ जिनराज का, कूट मित्रधर जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ऊँ ह्वीं श्रीनमिनाथ जिनेंद्रादि मुनि 9 कोड़ा–कोडी 1 अरब 45 लाख 7 हजार 942 मुनि इस कूट से सिद्ध हुए, तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

2.5.4 **श्री अरहनाथ स्वामी की टोंक (नाटक कूट)** – श्याम वर्ण के चरण है। इस कूट से एक कम एक अरब मुनि मोक्ष गये।

अरहनाथ जिनराज का, नाटक कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ऊँ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेंद्रादि मुनि 99 करोड़ 99 लाख 99 हजार 999 मुनि अर्थात 1 कम 1 अरब इस कूट से सिद्ध भये, तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

2.5.5 **श्री मल्लिनाथ स्वामी की टोंक (संवल कूट)** – श्याम वर्ण के चरण है। इस कूट से 96 करोड़ मुनि मोक्ष गये।

मल्लिनाथ जिनराज का, संवल कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ऊँ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेंद्रादि मुनि 96 करोड़ मुनि इस कूट से सिद्ध भये, तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

2.5.6 **श्री श्रेयांसनाथ स्वामी की टोंक (संकुल कूट)** – श्याम वर्ण के चरण

श्रेयांसनाथ जिनराज का, संकुल कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ऊँ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेंद्रादि मुनि 96 कोड़ा–कोडी 96 करोड़ 96 लाख 9 हजार 542 मुनि इस कूट से सिद्ध भये, तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो,जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

2.5.7 **श्री पुष्पदंत स्वामी की टोंक (सुप्रभ कूट)**– सफेद वर्ण के चरण। इस कूट की यह विशेषता है कि यह अकेली कूट है जो चारो तरफ से खुली है।

पुष्पदंत जिनराज का, सुप्रभ कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ऊँ ह्रीं श्रीपुष्पदंत जिनेंद्रादि मुनि 1 कोड़ा–कोडी 99 लाख 7 हजार 780 मुनि इस कूट से सिद्ध भये, तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

2.5.8 **श्री पद्मप्रभ स्वामी की टोंक (मोहन कूट)** – श्याम वर्ण के चरण। यह कूट तीन तरफ से खुली है।

पद्मप्रभ जिनराज का, मोहन कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ऊँ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ जिनेंद्रादि मुनि 99 करोड़ 87 लाख 43 हजार 757 मुनि इस कूट से सिद्ध भये, तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

2.5.9 **श्री मुनिसुव्रतनाथ स्वामी की टोंक (निर्जर कूट)**– श्याम वर्ण के चरण। इस कूट से ही सबसे ज्यादा मुनि मोक्ष गये है।

मुनिसुव्रत जिनराज का, निरजर कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ऊँ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेंद्रादि मुनि 99 कोड़ा कोडी 99 करोड़ 99 लाख 999 मुनि इस कूट से सिद्ध भये, तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

2.5.10 **श्री चन्द्रप्रभ स्वामी की टोंक (ललित कूट)** – श्याम वर्ण के चरण। इस कूट की यह विशेषता है कि दूर से देखने पर चन्द्रमा हमेशा इसी टोंक के उपर नजर आता है! और इस टोंक मे दो परिक्रमा है।

चन्द्रप्रभ जिनराज का, ललित कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ऊँ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेंद्रादि मुनि 984 अरब,12 करोड़,80 लाख, 84 हजार 555 मुनि इस कूट से सिद्ध भये, तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

2.5.11 **श्री आदिनाथ भगवान की टोंक** – कैलाश पर्वत से मोक्ष गये – सफेद वर्ण। विशेषताये– (i) सबसे बड़े चरण है क्योकि आदिनाथ भगवान की अवगाहना सबसे ज्यादा थी। (ii) चरण के बीच मे बैल का चिन्ह बना है।

(iii) श्वेत वर्ण के चरण है।

ऋषभदेव जिन सिद्ध भये, गिरी कैलाश से जोय।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ऊँ ह्रीं श्रीऋषभनाथ जिनेंद्रादि 10 हजार मुनि कैलाश पर्वत से सिद्ध भये, तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

2.5.12 **श्री शीतलनाथ स्वामी की टोंक (विद्युतवर कूट)**– (श्याम वर्ण के चरण है)। विशेषता– इस कूट की यह विशेषता है कि परिक्रमा लगाने पर सभी टोंको के दर्शन होते है।

शीतलनाथ जिनराज का, कूट विद्‌युतवर जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ऊँ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेंद्रादि मुनि 18 कोड़ा कोड़ी 42 करोड़ 32 लाख 42 हजार 905 मुनि इस कूट से सिद्ध भये, तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

2.5.13 **श्री अनंतनाथ स्वामी की टोंक (स्वयंभू कूट)** – श्याम वर्ण। विशेषता – इस कूट की भी यही विशेषता है कि परिक्रमा लगाने पर सभी टोंक के दर्शन होते है।

अनंतनाथ जिनराज का, कूट स्वयंभू वर जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ऊँ ह्रीं श्रीअनंतनाथ जिनेंद्रादि मुनि 96 कोड़ा कोड़ी 70 करोड़ 70 लाख 70 हजार 700 मुनि इस कूट से सिद्ध भये, तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

2.5.14 **श्री सम्भवनाथ स्वामी की टोंक (धवल कूट)**–श्वेत वर्ण के चरण।

सम्भवनाथ जिनराज का, धवल कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ऊँ ह्रीं श्रीसम्भवनाथ जिनेंद्रादि मुनि 9 कोड़ा कोड़ी 12 लाख 42 हजार 500 मुनि इस कूट से सिद्ध भये, तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो,जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

2.5.15 **श्री वासुपूज्य भगवान की टोंक** – चंपापुर से मोक्ष गये – श्वेत वर्ण के 5 चरण बने है।

वासुपूज्य जिन सिद्ध भये, चम्पापुर से जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ऊँ ह्रीं श्रीवासुपूज्यनाथ जिनेंद्रादि चम्पापुर मन्दारगिरी से 1 हजार मुनि सिद्ध भये, तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

2.5.16 **श्री अभिनन्दननाथ स्वामी की टोंक (आनंद कूट)** – श्याम वर्ण के चरण। विशेषता– इस टोंक पर बंदर हमेशा बैठे रहते है। अब इस टोंक के बाद जल मंदिर आता है।

अभिनन्दन जिनराज का, आनन्द कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ऊँ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ जिनेंद्रादि मुनि 72 कोड़ा कोड़ी 70 करोड़ 70 लाख 42 हजार 700 मुनि इस कूट से सिद्ध भये, तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

2.5.17– **श्री धर्मनाथ स्वामी की टोंक (सुदत्तवर कूट)** – श्याम वर्ण के चरण

धर्मनाथ जिनराज का, कूट सुदत्तवर है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ऊँ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेंद्रादि मुनि 29 कोड़ा कोड़ी 19 करोड़ 9 लाख 9 हजार 765 मुनि इस कूट से सिद्ध भये, तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

2.5.18 **श्री सुमतिनाथ स्वामी की टोंक (अविचल कूट)** – श्याम वर्ण के चरण

सुमतिनाथ जिनराज का, अविचल कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ऊँ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेंद्रादि मुनि 1 कोड़ा कोड़ी 84 करोड़ 72 लाख 81 हजार 701 मुनि इस कूट से सिद्ध भये, तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

2.5.19 **श्री शांतिनाथ स्वामी की टोंक (कुंदप्रभ कूट)** – श्याम वर्ण के चरण

शांतिनाथ जिनराज का, कुंदप्रभ कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ऊँ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेंद्रादि मुनि 9 कोड़ा कोड़ी 9 लाख 9 हजार 999 मुनि इस कूट से सिद्ध भये, तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

2.5.20 **श्री महावीर स्वामी की टोंक – सफेद वर्ण** – सबसे छोटे चरण है क्योंकि महावीर स्वामी की अवगाहना सबसे कम थी व सबसे छोटी टोंक है!

महावीर जिन सिद्ध भये, पावापुर से जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ऊँ ह्रीं श्री महावीर स्वामी पावापुर के पद्म सरोवर स्थान से 26 मुनि सहित सिद्ध भये, तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

2.5.21 **श्री सुपार्श्वनाथ स्वामी की टोंक (प्रभास कूट)** –श्याम वर्ण

विशेषता – इस टोक पर एक राजा ने ध्यान लगाया व इस कूट की रज को लगाने पर कोढ दूर हो गया। सुपार्श्वनाथ भगवान की इस टोंक की रज को बहुत चमत्कारिक माना जाता है।

सुपार्श्वनाथ जिनराज का, प्रभास कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ऊँ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेंद्रादि मुनि 49 कोड़ा कोड़ी 84 करोड़ 72 लाख 7 हजार 742 मुनि इस कूट से सिद्ध भये, तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

2.5.22 **श्री विमलनाथ स्वामी की टोंक (सुवीर कूट)** – श्याम वर्ण के

विमलनाथ जिनराज का, सुवीर कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ऊँ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेंद्रादि मुनि 70 कोड़ा कोड़ी 60 लाख 6 हजार 742 मुनि इस कूट से सिद्ध भये,तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

2.5.23 **श्री अजितनाथ स्वामी की टोंक (सिद्धवर कूट)** – श्वेत वर्ण के चरण। विशेषता – इस सम्मेद शिखर पर्वत से सबसे पहले मोक्ष जाने वाले अजित नाथ भगवान है।

अजितनाथ जिनराज का, सिद्धवर कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ऊँ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेंद्रादि मुनि 80 करोड़ 54 लाख मुनि इस कूट से सिद्ध भये, तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

2.5.24 **श्री नेमिनाथ स्वामी की टोंक (उर्जयन्त कूट)** – गिरनार जी (उर्ज्यंत पर्वत) से मोक्ष गये है 3 जोड़े श्वेत वर्ण के चरण बने है!

नेमिनाथ जिन सिद्ध भये, सिद्ध क्षेत्र गिरनार।
मन वच तन कर पूजहूँ, भव दधि पार उतार।।

ऊँ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेंद्रादि शम्बु प्रद्युम्न अनिरुद्ध इत्यादि 72 करोड़ 700 मुनि गिरनार पर्वत से मोक्ष गये, तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

2.5.25 **श्री पार्श्वनाथ स्वामी की टोंक (स्वर्णभद्र कूट)** – श्याम वर्ण के चरण विशेषता– इस टोंक मे दो परिक्रमा है। सबसे ऊंची टोंक है। स्वर्णभद्र कूट भी तीन तरफ से खुली है।

पार्श्वनाथ जिनराज का, स्वर्णभद्र है कूट।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ऊँ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेंद्रादि मुनि 82 करोड़ 84 लाख 45 हजार 742 मुनि परम पुनीत स्वर्णभद्र पर्वत से मोक्ष गये, तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच ,काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

2.5.26 सम्मेदशिखर जी में कुल 25 टोंक है। चौबीस तीर्थंकर की है व एक गौतम गणधर प्रभु की। 25 टोंको पर कुल 66 चरण हैं। 25 टोंको में से 17 टोंको के चरण काले वर्ण के हैं व 8 टोंको में श्वेत वर्ण के हैं, जो चार तीर्थंकर सम्मेद शिखर जी से मोक्ष नही गये उनके चरण श्वेत वर्ण के हैं। (आदिनाथ भगवान, वासूपूज्य भगवान, नेमिनाथ भगवान, बाल ब्र. भगवान महावीर स्वामी)

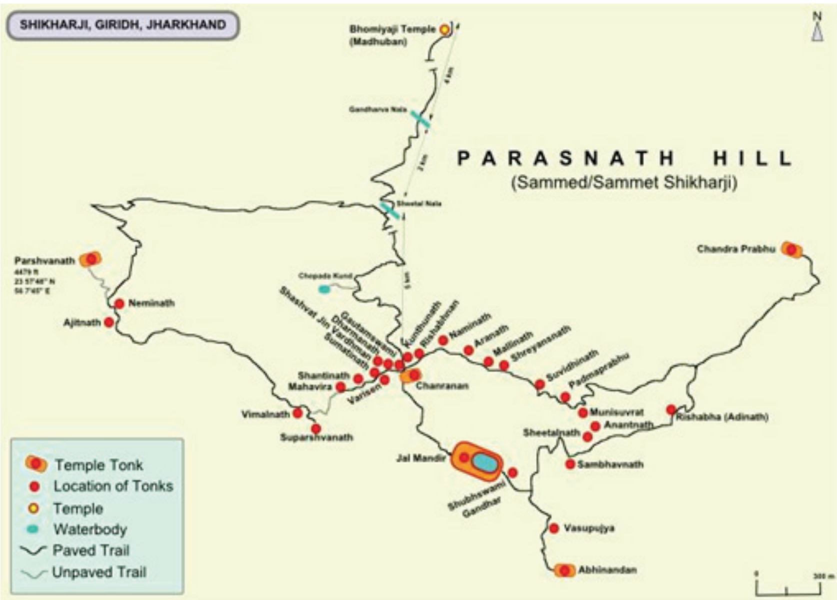

2.6 सम्मेद शिखर जी से वर्तमान में हुंडावसर्पिणी काल के दोष के कारण बीस तीर्थंकर ही इस शाश्वत सिद्ध भूमि से मोक्ष गये हैं, जबकि भविष्य काल में यहां से पूरे 24 तीर्थंकर ही मोक्ष जायेंगे, इसी कारण यहां पूरे 24 तीर्थंकर की टोंक बनी हुई है

2.7 सम्मेद शिखर पर्वत पर जहाँ इस युग के द्वितीय तीर्थंकर भगवान अजितनाथ ने सर्वप्रथम योगनिरोध करके मोक्ष प्राप्त किया, पार्श्वनाथ भगवान सम्मेदशिखर से मोक्ष जाने वाले तीर्थंकरों में अंतिम तीर्थंकर हैं। उनके मोक्ष जाने के बाद भावसेन नाम के राजा ने उस पर्वत की वंदना करके श्री प्रसन्नमुख मुनिराज की प्रेरणा से पार्श्वनाथ के स्वर्णभद्रकूट पर जिनमंदिर बनवाकर उसमें भगवान पार्श्वनाथ की नीलमणि वाली रत्नप्रतिमा विराजमान की थी, ऐसा वर्णन भी मिलता है।

2.8 तीर्थंकरों के निर्वाणक्षेत्र कुल पाँच हैं– कैलाशपर्वत, चम्पापुरी, पावापुरी, ऊर्जयन्त (गिरनार) और सम्मेदशिखर। कैलाश पर्वत से भगवान ऋषभदेव, चम्पापुरी से श्री वासुपूज्य स्वामी, गिरनार से नेमिनाथ स्वामी, पावापुरी से महावीर स्वामी ने मोक्ष को प्राप्त किया। सम्मेदशिखर से 20 तीर्थंकरों ने कठोर आत्म–साधना कर कर्मों को नाश कर अविनाशी अनंत सुख को प्राप्त किया। इस महान पर्वत का कण कण अति पवित्र है, इस भूमि से अनंतों जीव मोक्ष की प्राप्ति कर चुके हैं। इस पवित्र पर्वतराज की वंदना करते समय भावों में अत्यंत निर्मलता का अनुभव होता है।

2.9 शिखर जी की वंदना शुरू करते ही अत्यन्त आनंद और उल्लास का अनुभव होता है। साधर्मी जन भक्तिभाव से पंच परमेष्ठी भगवान के स्वरुप का चिंतन करते हुए, अत्यन्त सावधानी पूर्वक छोटे छोटे जीवों चींटी आदि की भी विराधना ना हो, इस प्रकार से देख–देख कर चलते हैं। साधर्मी जीव जैन धर्म के स्तुति, पाठ, णमोकार मंत्र आदि का हृदय में और वचनों से उच्चारण करते हुए, काफी जीव मौन पूर्वक भी वन्दना करते हैं। बहुतायत में श्रद्धालु छोटे छोटे नियम आदि भी लेते हैं। काफी साधर्मी सम्पूर्ण वंदना में निर्जल रहते हैं। अधिकतर साधर्मी जन अन्न जल आदि का त्यागपूर्वक ही संपूर्ण वंदना करते हैं। यह सब साधर्मी जनों की निर्मल भक्ति और आस्था को दर्शाता है। अनादि काल से ही यह शाश्वत सिद्ध भूमि सभी

जीवों के द्वारा वंद्य रही है। यहाँ का कण–कण वीतरागी दिगम्बर मुनिराजों के चरण कमलों के स्पर्श से पवित्र है। यात्रा के समय हृदय में जो हर्षोल्लास, प्रफुल्लता और सहज आनन्द की उपलब्धि होती है वह अन्यत्र दुर्लभ है। इस पावन तीर्थ की यात्रा, वंदना, दर्शन, सभी जीवों को आनंदकारी, संकटहारी, पुण्यकारी और पापनाशिनी और सर्व प्रकार से मंगलकारी है।

2.10 दिगम्बर जैन बीसपंथी कोठी से ढाई मील की दूरी पर गन्धर्व नाला आता है। यहाँ से 1 मील की दूरी पर सीता नाला बहता है। सीता नाला पर यात्री बंधुओं के लिए शुद्ध जल से पूजन–सामग्री धोने का जल बहता रहता है। इस नाले के पार से 1 मील दूर चोपड़ा कुण्ड है, जहाँ दिगम्बर जैन मंदिर है, वहाँ भगवान पार्श्वनाथ तथा भगवान चन्द्रप्रभ तथा बाहुबली स्वामी के अत्यंत मनोहारी जिनबिंब हैं। यहाँ से आधा किलोमीटर की दूरी पर देवाधिदेव कुन्थुनाथ स्वामी तथा गौतम गणधर स्वामी की टोंक शुरू होती है। ज्यों ज्यों दर्शन वंदन हेतु आगे बढ़ते जाते हैं त्यो त्यों आनन्द बढ़ता चला जाता है।

2.11 मधुबन से भगवान कुंथुनाथ जी की टोंक तक 9 किमी तथा ऊपर समस्त टोंको की वन्दना का घुमाव 9 किमी. तथा पार्श्वनाथ से नीचे धर्मशाला तथा आने में 9 किमी इस प्रकार 27 किमी की यात्रा अत्यन्त आनंददायक है। इस गिरिराज से असंख्यात चौबीसी और अनन्तानन्त मुनीश्वरों ने कर्म नाशकर मोक्ष पद प्राप्त किया है और भविष्य में भी करते रहेंगे।

2.12 ऐसे उस पावन तीर्थ सम्मेदशिखर जी एवं वहाँ से मुक्ति को प्राप्त हुए अनन्तानन्त सिद्ध भगवन्तों को मेरा अनन्तानन्त बार वंदन है और अन्त में यही भावना है– कि जिस प्रकार अनंतों भव्य जीव इस पावन सिद्ध भूमि से तिरे हैं वैसे ही हम भी अल्पकाल में अपने अष्टकर्मों का नाश कर अनुपम अचल शाश्वत सिद्ध पद को प्राप्त करें।

3. 20 कल्याणक की भूमि:

तीर्थंकर	कल्याणक	कौन सा
अजितनाथ, संभवनाथ, अभिनन्दन नाथ, सुमतिनाथ, पद्मप्रभ, सुपार्श्वनाथ, चंद्रप्रभ, पुष्पदंतनाथ, शीतलनाथ, श्रेयांसनाथ, विमलनाथ, अनंतनाथ, धर्मनाथ, शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरहनाथ, मल्लिनाथ, मुनिसुव्रतनाथ, नमिनाथ, पार्श्वनाथ	1 (प्रत्येक तीर्थंकर)	निर्वाण

4. श्री सम्मेद शिखरजी के जैन मंदिर:

4.1 श्री दिगंबर जैन सिद्धक्षेत्र, सम्मेद शिखरजी, मधुबन, तहसील – डुमरी, जिला– गिरिडीह (झारखंड) – 825329

4.2 श्री सम्मेदशिखर दिगंबर जैन बीसपंथी उपरैली कोठी, मधुबन, तहसील–डुमरी, जिला–गिरिडीह (झारखंड)–825329

09334385135, 8002120063, bpkmshikharji@gmail.com,
www.shikharjibispanthi.org

4.2.1 आज से 400 वर्ष पूर्व सर्वप्रथम श्री दिगम्बर जैन बीसपंथी कोठी के निर्माण का इतिहास मिलता है। श्री दिगम्बर जैन बीसपंथी कोठी में आदि मंदिर, तेरह जिन वेदियों का समूह एवं प्राचीनकालीन अतिशय भगवान पार्श्वनाथ बगीचा मंदिर तथा कोठी के अन्तर्गत कई अनेक मंदिर तथा संस्थाऐ है जैसे दि. जैन तीस चौबीसी मंदिर, आचार्य श्री विमलसागर समाधि स्थल, श्री पार्श्वनाथ समवसरण मंदिर, श्री दि. जैन बाहुबली चौबीस टोक मंदिर, श्री दि. जैन मध्य्लोक शोध संस्थान और आचार्य विमल सागर महाराज सरस्वती भवन पुस्तकालय है।

4.2.2 यहाँ यात्रियों के लिए आधुनिक सुख सुविधा से युक्त आवासीय व्यवस्था, भोजन व्यवस्था, जलपान व्यवस्था, निःशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा व्यवस्था, होम्योपैथिक चिकित्सा व्यवस्था तथा एलोपैथिक चिकित्सा और पारसनाथ रेलवे स्टेशन से आवागमन हेतु यातायात की व्यवस्था बीसपंथी कोठी के बस द्वारा की जाती है। कोठी में ठहरे यात्रियों के लिए वंदना करने के बाद वापस आते समय बीसपंथी कोठी में निःशुल्क जलपान की भी व्यवस्था है।

4.2.3 दिगम्बर जैन बीसपंथी कोठी के अंतर्गत अन्य संस्थाऐं कल्याण निकेतन पार्श्वनाथ चैत्यालय, श्री दिग. जैन बीसपंथी कोठी धर्मशाला (ईसरी बाजार), दि. जैन पार्श्वनाथ मंदिर (निमियांघाट धर्मशाला), दिगम्बर जैन पंचायती मंदिर धर्मशाला (पटना) है। दिगम्बर जैन बीसपंथी कोठी का अध्यक्षीय कार्यालय देवाश्रम, महादेवा रोड, आरा (बिहार) तथा महामंत्री कार्यालय, सी. पी. टैक, हीराबाग, मुम्बई में है।

4.3 श्री बगीचा मंदिर, श्री सम्मेदशिखर दिगंबर जैन बीसपंथी उपरैली कोठी, मधुबन, तहसील–डुमरी, जिला–गिरिडीह (झारखंड) –825329

श्री बगीचा मंदिर दिगम्बर जैन बीसपंथी कोठी के मुख्य द्वार से अन्दर आने के दाहिने दक्षिण दिशा में स्थित है। बगीचा मंदिर में दो चमत्कारी एवं अतिशय पार्श्वनाथ भगवान की वेदियां है। एक खड्गासन प्रतिमा तथा दूसरी पद्मासन प्रतिमा है। भगवान की दोनों प्रतिमा चतुर्थ कालीन प्रतिमा है।

संपर्क सूत्रः
जिनेन्द्र जी जैन
7004628449,
8827880731

4.4 श्री आदि मंदिर, श्री सम्मेदशिखर दिगंबर जैन बीसपंथी उपरैली कोठी, मधुबन, तहसील–डुमरी, जिला–गिरिडीह (झारखंड) – 825329

श्री आदि मंदिर दिगम्बर जैन बीसपंथी कोठी का सबसे पुराना और पहला मंदिर है इसी के कारण इसका नाम आदि मंदिर है। इस मंदिर के जमीन में सालो पुरानी चांदी के सिक्के लगे है जिसके कारण इस मंदिर को सिक्कों वाला मंदिर भी कहा जाता है। श्री आदि मंदिर के मूल वेदी में श्री पारसनाथ भगवान की मनमोहक प्रतिमा विराजमान है। इस मंदिर में मूल वेदी के अलावा 10 अन्य और भी वेदी है। जिनमे श्री आदिनाथ भगवान, पार्श्वनाथ भगवान, श्री पुष्पदंत भगवान आदि प्रमुख वेदियां हैं।

4.5 श्री दिगंबर जैन तेरापंथी कोठी जैन मंदिर, श्री सम्मेदशिखर जी तलहेटी, मधुबन, तहसील–डुमरी, जिला–गिरिडीह (झारखंड) –825108

4.6 श्री 1008 अनिन्दा पार्श्वनाथ जिनालय, श्री सम्मेदशिखर जी तलहेटी, मधुबन, तहसील–डुमरी, जिला– गिरिडीह (झारखंड) – 825108

4.7 श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगंबर जैन कलश मंदिर, श्री सम्मेदशिखर जी तलहेटी, मधुबन, तहसील–डुमरी, जिला–गिरिडीह (झारखंड)–825108

4.8 श्री आदिनाथ दिगंबर जैन कांच का मंदिर, श्री सम्मेदशिखर जी तलहेटी, मधुबन, तहसील–डुमरी, जिला–गिरिडीह (झारखंड) – 825108

4.9 श्री तीस चौबीसी दिगंबर जैन मंदिर, श्री सम्मेदशिखर जी तलहेटी, मधुबन, तहसील–डुमरी, जिला – गिरिडीह (झारखंड)– 825108

श्री तीस चौबीसी मंदिर श्री विमल सागर जी महाराज की प्रेरणा से निर्मित भव्य जिनालय है. इस मंदिर में रत्नों से बनी चौबीस तीर्थंकरों की अद्‌भुत प्रतिमा विराजमान है।

संपर्क सूत्रः सुभाष जैन 9523359232; उज्जवल जैन (राजा)–7004880359

4.10 श्री विमल सागर समाधि स्थल, श्री सम्मेदशिखर जी तलहेटी, मधुबन, तहसील–डुमरी, जिला–गिरिडीह (झारखंड) – 825108

आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज का समाधि स्थल है. यहाँ भव्य सुन्दर समाधि मंदिर बना हुआ है। इस समाधि में आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज का पद्‌मासन में प्रतिमा एवं जहाँ पर समाधि हुई है वहां पर चरण बनें हैं ।

संपर्क सूत्रः श्री उज्जवल जी जैन (राजा)–7004880359

4.11 श्री समवशरण दिगंबर जैन मंदिर, श्री सम्मेदशिखर जी तलहेटी, मधुबन, तहसील – डुमरी, जिला– गिरिडीह (झारखंड) – 825108

श्री समवशरण मंदिर वंदना पथ के मुख्य मार्ग में स्थित है। इस मंदिर का निर्माण परम पूज्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री 108 विमल सागर जी महाराज की सतत धर्म देशना एवं प्रेरणा से हुआ है। इसका पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव आचार्य श्री के संघ सानिध्य में फरवरी 1975 में संपन्न हुआ। यहाँ भगवान पार्श्वनाथ जी का भव्य समवशरण बना है। यह मंदिर कांच मंदिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। यहाँ मंदिर के पीछे में दस दिगपाल का मंदिर है। पुजारीः श्री संजय जी जैन 7779990661

4.12 श्री दिगम्बर जैन मध्यलोक शोध संस्थान, श्री सम्मेदशिखर जी तलहेटी, मधुबन, तहसील–डुमरी, जिला–गिरिडीह (झारखंड) –825108

दिगम्बर जैन मध्यलोक बीसपंथी कोठी के मुख्य द्वार के सामने है। मध्यलोक मंदिर में शिखरजी की सबसे बड़ी भगवान पारसनाथ का पद्मासन में प्रतिमा है। इस मंदिर का निर्माण परम पूज्य 108 आचार्य श्री वीर सागर जी महाराज की शिष्या आर्यिका इंदुमती माताजी की शिष्या पूज्य 105 गणनी आर्यिका सुपार्श्वमती माताजी संघ के निर्देश व प्रेरणा से 1996 में कराया गया।

4.13 श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर, उत्तर प्रदेश प्रकाश भवन, श्री सम्मेदशिखर जी तलहेटी, मधुबन, तहसील – डुमरी, जिला–गिरिडीह (झारखंड)–825108

4.14 श्री 1008 शीतलनाथ दिगंबर जैन मंदिर, श्री सम्मेदशिखर जी तलहेटी, मधुबन, तहसील–डुमरी, जिला–गिरिडीह (झारखंड)–825108

4.15 श्री 1008 चंद्रप्रभु दिगंबर जैन मंदिर, श्री गुणायतन परिसर, श्री सम्मेदशिखर जी तलहेटी, मधुबन, जिला–गिरिडीह (झारखंड)–825108

4.16 श्री गुणायतन तीर्थ, श्री सम्मेदशिखर जी तलहेटी, मधुबन, तहसील–डुमरी, जिला–गिरिडीह (झारखंड)– 825108

4.17 श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर, कुंद कुंद कहान नगर, मधुबन, तहसील–डुमरी, जिला–गिरिडीह (झारखंड)– 825108

4.18 श्री 1008 आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर, सिद्धायतन, श्री सम्मेदशिखर जी तलहेटी, मधुबन, तहसील–डुमरी, जिला–गिरिडीह (झारखंड)–825329

संपर्क सूत्रः (033) 4002 2880; https://www-siddhayatan-in/ श्री विकास जी कासलीवाल 70440 66643 / 7044061541 / 8420019670

4.19 चमत्कारिक पद्मप्रभ दिगंबर जैन मंदिर, मधुबन, तहसील–डुमरी, जिला–गिरिडीह (झारखंड) – 825108

4.20 आचार्य श्री शांति सागर धाम, श्री सम्मेदशिखर जी तलहेटी, मधुबन, तहसील–डुमरी, जिला–गिरिडीह (झारखंड) – 825108

4.21 जैन संग्रहालय, श्री सम्मेदशिखर जी तलहेटी, मधुबन, तहसील–डुमरी, जिला–गिरिडीह (झारखंड)– 825108

5. क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधाएँ: ठहरने और खाने की अच्छी सुविधा उपलब्ध है।

सम्मेद शिखर जी आवास व्यवस्था हेतु उपयोगी सम्पर्क सूत्र: (यह संकलन है इसमें कई परिवर्तन संभव है। स्वयं पुष्टि कर लें।)

बीस पंथी कोठी	–	9334385135, 9608459308
तेरह पंथी कोठी	–	9431532383, 9534210555
गुणायतन भवन	–	8969274940
सिद्धायतन	–	07004543209, 09993333074
यात्री निवास	–	08709991717, 09430309610
नाहर भवन	–	7004854708, 0943071524
कुंद कुंद भवन	–	07250536682
प्रकाश भवन	–	09939800471, 08789752150
मोदी भवन	–	08877117070, 08877112656, 09304925502
निहारिका भवन	–	08340298001, 09608188948
सुधीर जी अडिन्दा	–	09430165703, 080024 97515
अवलानी भवन	–	07738452208

(अनुरोध: दी गई जानकारी में परिवर्तन संभव है। कृपया पुष्टि कर लेवें।

कृपया परिवर्तित जानकारी से हमें भी अवगत कराएं जिससे भविष्य में संशोधित जानकारी प्रस्तुत की जा सके।)

6. आवागमन के साधन

6.1 रेल मार्गः पारसनाथ रेलवे स्टेशन (स्टेशन कोडः PNME) नाम का निकटतम रेलवे स्टेशन ईसरी बाजार, डुमरी, झारखंड में स्थित है। यह शिखरजी के तलहटी मधुबन से लगभग 25 किमी दूर है।

कुछ महत्वपूर्ण ट्रेनें: नई दिल्ली–हावड़ा राजधानी एक्सप्रेस (12302); पुरुषोत्तम एक्सप्रेस (12802); पूर्वा एक्सप्रेस (12382); नीलांचल ऍक्स्प (12876); कोलकाता मेल (12322); जोधपुर–हावड़ा सुपरफास्ट एक्सप्रेस (12308); मथुरा – हावड़ा चम्बल एक्सप्रेस (12178); गंगा सतलज एक्सप्रेस (13308)

6.2 सड़क मार्गः शिखरजी सड़क मार्ग से भली भांति जुड़ा हुआ है आप निकट के शहरों जैसे धनबाद, रांची से कार या टैक्सी के माध्यम से पहुँच सकते हैं

6.3 हवाई मार्गः पारसनाथ में हवाई अड्डा नहीं है। शिखरजी का निकटतम हवाई अड्डा देवघर (डीजीएच) है। दूसरा निकटतम हवाई अड्डा रांची हवाई अड्डा है जो कि 163 किमी दूर है।

7. समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र– पावापुरी – 200 किमी, राजगीर – 180 किमी, कुण्डलपुर – 220 किमी, चम्पापुर – 200 किमी।

6. अयोध्या

इस पावन तीर्थ क्षेत्र की महिमा जितनी कही जाए करी जाए उतनी ही कम है। यह नगरी तीर्थंकरों की शाश्वत जन्म कल्याणक नगरी के रुप में विख्यात है। इस पावन तीर्थ क्षेत्र को शुद्ध हृदय से वंदन करते हुए इसकी यशोगाथा को अपने अति अल्प ज्ञान से वर्णित करने का दुस्साहस कर रहे हैं। यह तीर्थ क्षेत्र और इसकी वंदना सभी भव्य जीवों को मंगलकारी होवे।

1. अयोध्या के बारे में: अयोध्या, सरयू नदी के तट पर बसी एक धार्मिक एवं ऐतिहासिक नगरी है। यह उत्तर प्रदेश राज्य में स्थित है तथा अयोध्या नगर निगम के अंतर्गत इस जनपद का नगरीय क्षेत्र समाहित है। अयोध्या का प्राचीन नाम साकेत है। अयोध्या प्राचीन समय में कोसल राज्य की राजधानी रही है।

2. अयोध्या और जैन धर्म:

2.1 जैन ग्रंथों के अनुसार जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र के आर्यखण्ड में अयोध्या नगरी है, जिसे 'साकेता', 'विनीता' और 'सुकोशला' भी कहते हैं। इस आर्यखण्ड में उत्सर्पिणी–अवसर्पिणी के दोनों कालों में सुषमा–सुषमा आदि नाम से छह कालों का परिवर्तन होता रहता है। प्रत्येक के चतुर्थकाल में 24–24 तीर्थंकर जन्म लेते रहते हैं। इस नियम के अनुसार इस राजधानी अयोध्या में अतीत काल में अनंतानंत चौबीसी हो चुकी हैं और भविष्यत्काल में भी अनंतानंत चौबीसी होंगी।

2.2 वर्तमान में हुण्डावसर्पिणी काल होने से तृतीय काल के अंत में ही भगवान ऋषभदेव हुए थे और तृतीय काल में तीन वर्ष साढ़े आठ माह शेष रहने पर ही मोक्ष चले गए थे, इसी कालदोषवश ही इस बार अयोध्या में 5 तीर्थंकर जन्मे हैं, शेष 19 तीर्थंकर अन्यत्र स्थानों पर जन्मे हैं। हुण्डावसर्पिणी काल में तृतीय काल में ही प्रथम तीर्थंकर का होना, प्रथम चक्रवर्ती का मान भंग होना, अयोध्या में पाँच तीर्थंकरों का ही जन्म लेना, शेष तीर्थंकरों का अन्यत्र जन्म

लेना, नाना प्रकार के मतों का उत्पन्न हो जाना इत्यादि अप्रत्याशित कार्य घटित हो गए हैं। इस प्रकार अनादिनिधन जैनधर्म की भांति ही तीर्थंकर परम्परा भी अनादिनिधन है।

2.3 अयोध्या की पवित्र भूमि पर ही भगवान ऋषभदेव ने अपनी दोनों पुत्रियों को अक्षर और गणित विद्या से प्रारंभ करके सभी पुत्र–पुत्रियों को सम्पूर्ण विद्याओं–कलाओं में निष्णात कर दिया था। प्रजा को असि, मसि आदि छह क्रियाओं का उपदेश देकर कर्मभूमि की सृष्टि को जन्म दिया था, तब ये भगवान सरागी–गृहस्थ थे। भगवान के पुत्र 'अनंतवीर्य'' सर्वप्रथम (भगवान से पहले) मोक्ष गए हैं अनंतर 'श्री बाहुबली स्वामी' का मोक्ष हुआ है। ब्राह्मी–सुन्दरी ने भगवान के समवसरण में आर्यिका दीक्षा ली थी, जिसमें ब्राह्मी माता आर्यिकाओं में प्रमुख गणिनी थीं और भगवान के तृतीय पुत्र वृषभसेन प्रमुख गणधर हुए।

2.4 अयोध्या तीर्थ पर सभी जैन मंदिरों के निर्माण भारतगौरव आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज एवं पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी (जम्बूद्वीप रचना की पावन प्रेरिका) की प्रेरणा से सम्पन्न हुए हैं। रायगंज परिसर के बड़े मंदिर में भगवान ऋषभदेव की 31 फुट उत्तुंग विशाल खड्गासन प्रतिमा विराजमान है।

3. 18 कल्याणक की नगरीः

तीर्थंकर	कल्याणक	कौन कौन से
ऋषभदेव	2	गर्भ, जन्म
अजितनाथ	4	गर्भ, जन्म, तप और केवलज्ञान
अभिनन्दननाथ	4	गर्भ, जन्म, तप और केवलज्ञान
सुमतिनाथ	4	गर्भ, जन्म, तप और केवलज्ञान
अनंतनाथ	4	गर्भ, जन्म, तप और केवलज्ञान

4. अयोध्या के जैन मंदिर:

4.1 श्री ऋषभदेव दिगम्बर जैन मंदिर, बड़ी मूर्ति, रायगंज, अयोध्या (उत्तर प्रदेश) पिन कोड: 224123

टेलीफोन–05278–232308, 07376879723, 09450523104

मुहल्ला रायगंज में रियासती बाग के मध्य में एक भव्य जिनमंदिर का निर्माण हुआ है। इसमें मूलनायक के रूप में 31 फुट ऊँची विशाल एवं मनोज्ञ भगवान ऋषभदेव की खड्गासन प्रतिमा विराजमान हैं। सन् 1965 में आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज की प्रेरणा से और अनेक श्रद्धालु उत्साही श्रावकों के सहयोग से यह भव्य जिनमंदिर बना है, आजू–बाजू में अन्य और छह प्रतिमाएँ विराजमान हैं। इस परिसर में 2 मंदिर और हैं।

4.2 श्री दिगम्बर जैन तीन चौबीसी मंदिर, बड़ी मूर्ति, रायगंज, अयोध्या (उत्तर प्रदेश) पिन कोड: 224123

तीन चौबीसी मंदिर में तीन मंजिल वाला एक 72 दल का विस्तृत कमल है। उन दलों पर तीन चौबीसी के कुल बहत्तर तीर्थंकर भगवान की प्रतिमाएँ विराजमान हैं।

4.3 श्री दिगम्बर जैन समवसरण मंदिर, बड़ी मूर्ति, रायगंज, अयोध्या (उत्तर प्रदेश) पिन कोड: 224123

समवसरण मंदिर में भगवान ऋषभदेव के समवसरण में गंधकुटी में 4 प्रतिमाएँ हैं और मानस्तंभ, चैत्य प्रासादभूमि, उपवनभूमि, कल्पतरू भूमि, भवनभूमि आदि में 152 जिनप्रतिमाएँ विराजमान हैं।

4.4 भगवान ऋषभ देव जन्म स्थान दिगंबर जैन मंदिर, तुलसी नगर, अयोध्या (उत्तर प्रदेश) पिन कोड: 224123

4.5 श्री 1008 भगवान अजितनाथ जन्म भूमि दिगंबर जैन मंदिर, 8 फीट रोड, तुलसी नगर, अयोध्या (उत्तर प्रदेश) पिन कोड: 224123

4.6 श्री अभिनंदन नाथ जन्म भूमि दिगंबर जैन मंदिर, आवास विकास कॉलोनी, अयोध्या (उत्तर प्रदेश) पिन कोडः 224123

चौथे तीर्थंकर श्री अभिनंदननाथ जी को 18 वर्ष तक के कठोर तप के बाद पौष शुक्ल चतुर्दशी को अयोध्या में ही, उग्रवन में सरल वृक्ष के नीचे अपराह्न काल में केवलज्ञान की प्राप्ति हुई। कुबेर द्वारा तुरंत सौधर्मेन्द्र की आज्ञा से 126 किमी विस्तार के समोशरण की रचना की गई। आपका केवलीकाल एक लाख पूर्व, 7 पूर्वांग 18 वर्ष का रहा। श्री वज्रनाभि सहित आपकी सभा में 300 गणधर थे।

4.7 श्री 1008 भगवान सुमतिनाथ जन्म स्थान दिगंबर जैन मंदिर, आवास विकास कॉलोनी, अयोध्या (उत्तर प्रदेश) पिन कोडः 224123

शिखरयुक्त इस मंदिर में चार वेदियाँ हैं, यहाँ पर एक प्रतिमा वि. सं. 1224 की हैं। चौथी वेदी में भगवान ऋषभदेव की 9 फुट उत्तुंग प्रतिमा व आजू–बाजू में भरत–बाहुबली की प्रतिमा आचार्य श्री देशभूषण महाराज की प्रेरणा से सन् 1952 में विराजमान की गई हैं। मंदिर के आंगन में भगवान सुमतिनाथ की टोंक है, जिसमें भगवान सुमतिनाथ के चरण विराजमान हैं।

4.8 श्री 1008 भगवान अनंतनाथ जन्म भूमि दिगंबर जैन मंदिर, राजघाट, अयोध्या (उत्तर प्रदेश) पिन कोडः 224123

4.9 श्री भरत बाहुबली दिगंबर जैन मंदिर, आवास विकास कॉलोनी, अयोध्या (उत्तर प्रदेश) पिन कोडः 224123

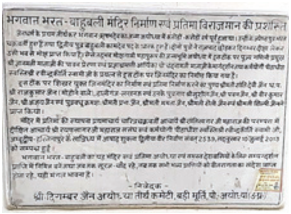

भगवान भरत-बाहुबली मंदिर निर्माण एवं प्रतिमा विराजमान की प्रशस्ति

- निवेदक -

श्री दिगम्बर जैन अयोध्या तीर्थ कमेटी, बड़ी मूर्ति, पो. अयोध्या (उ.प्र.)

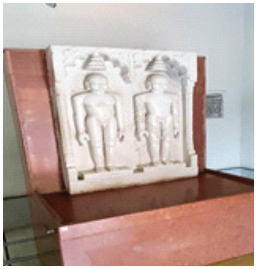

5. क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधाएँ: ठहरने और खाने की अच्छी सुविधा उपलब्ध है सुन्दर बाग–बगीचे से समन्वित रायगंज मंदिर परिसर में प्राचीन धर्मशाला के अतिरिक्त तीन नूतन धर्मशालाएँ (डीलक्स फ्लैट युक्त), आचार्य शांतिसागर निलय, आचार्य देशभूषण निलय एवं गणिनी ज्ञानमती निलय हैं तथा सुंदर भोजनशाला भी चल रही है।

प्रबन्ध व्यवस्था: श्री दिगम्बर जैन अयोध्या तीर्थक्षेत्र कमेटी

संपर्क – 05278–232308, 8005191351

6. आवागमन के साधन

6.1 रेल मार्ग: अयोध्या (स्टेशन कोडः AY), लखनऊ पंडित दीनदयाल रेलवे प्रखंड का एक स्टेशन है। लखनऊ से वाराणसी रूट पर फैजाबाद से आगे अयोध्या जंक्शन है।

कुछ महत्वपूर्ण ट्रेनें: सरयू एक्सप्रेस (14233); वाराणसी–बरेली एक्सप्रेस (14235); श्रद्धा सेतु एक्सप्रेस (22613); उत्सर्ग एक्सप्रेस (15083); अहमदाबाद – वाराणसी सिटी साबरमती एक्सप्रेस (19167); छपरा – मुम्बई लोकमान्य तिलक टर्मिनस अंत्योदय एक्सप्रेस (15101); मरुधर एक्सप्रेस (वाया अयोध्या कैंट) (14854)

6.2 सड़क मार्ग: उत्तर प्रदेश सड़क परिवहन निगम की बसें लगभग सभी प्रमुख शहरों से अयोध्या के लिए चलती हैं। राष्ट्रीय और राज्य राजमार्ग से भी अयोध्या जुड़ा हुआ है।

6.3 हवाई मार्ग: लखनऊ अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा निकटतम हवाई अड्डा है जो अयोध्या से 152 किलोमीटर दूर है। अयोध्या गोरखपुर हवाई अड्डे से 158 किलोमीटर, प्रयागराज हवाई अड्डे से 172 किलोमीटर और वाराणसी हवाई अड्डे से 224 किलोमीटर दूर है।

7. समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र– रत्नपुरी – 30 किमी, श्रावस्ती – 100 किमी, प्रयागराज – 170 किमी, वाराणसी – 220 किमी, कौशांबी – 220 किमी।

8. वार्षिक मेले – ऋषभदेव–जन्मजयन्ति, चैत्र कृ. 9 वार्षिक मेला

7. हस्तिनापुर

तीन तीन तीर्थंकरों के चार चार कल्याणक वाली यह पवित्र नगरी, मुनिराज ऋषभदेव के प्रथम आहार से भी धन्य हुई। यह नगरी हम सभी के आत्मकल्याण में निमित्त होवे इसी निर्मल भावना के साथ इस तीर्थक्षेत्र की वंदना प्रारम्भ करते हैं।

1. हस्तिनापुर के बारे में:

1.1 हस्तिनापुर, मेरठ से 37 किमी एवं दिल्ली से 100 किमी की दूरी पर स्थित है, जो मेरठ–बिजनौर रोड से जुड़ा हुआ है। हस्तिनापुर जैन श्रद्धालुओं के लिए काफी प्रख्यात है। वास्तुकला के विभिन्न अद्‌भुत उदाहरण एवं जैन धर्म के काफी दर्शनीय और पवित्र स्थल भी यहां हैं, जैसे जम्बुद्वीप जैन मंदिर, प्राचीन दिगंबर जैन मंदिर, अष्टापद जैन मंदिर एवं श्री कैलाश पर्वत जैन मंदिर आदि। जंबुद्वीप में सुमेरू पर्वत, कमल मंदिर एवं मंदिर का पूरा परिसर दर्शन योग्य है।

1.2 पवित्र एवं ऐतिहासिक स्थान होने के अतिरिक्त, हस्तिनापुर वन्यजीव के लिए भी काफी प्रख्यात है, क्योंकि यहां पास में अभ्यारण्य वन्यजीवों की विभिन्न प्रजातियों से सुसज्जित है ।

2. हस्तिनापुर और जैन धर्म:

2.1 ऐतिहासिक तीर्थक्षेत्र हस्तिनापुर अयोध्या के समान ही अत्यन्त प्राचीन एवं पवित्र माना जाता है। जिस प्रकार जैन पुराणों के अनुसार अयोध्या नगरी की रचना देवों ने की थी उसी प्रकार युग के प्रारंभ में हस्तिनापुर की रचना भी देवों द्वारा की गयी थी। अयोध्या में वर्तमान के पाँच तीर्थंकरों ने जन्म लिया तो हस्तिनापुर को शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ, अरहनाथ इन तीन तीर्थंकरों को जन्म देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इतना ही नहीं, इन तीनों तीर्थंकरों के चार–चार कल्याणक (गर्भ, जन्म, तप, केवलज्ञान) हस्तिनापुर में इन्द्रों ने मनाए

हैं। इसका अद्भुत वर्णन जैन ग्रंथों में सहजता से उपलब्ध है।

2.2 आज से लगभग पौन पल्य 66 लाख 86 हजार 529 वर्ष पूर्व हस्तिनापुर के राजा विश्वसेन की महारानी ऐरादेवी की पवित्र कुक्षि से ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दशी के दिन सोलहवें तीर्थंकर भगवान शांतिनाथ ने जन्म लिया था। पुनः राजा सूरसेन की महारानी श्रीकांता ने वैशाख शुक्ला एकम तिथि में सत्रहवें तीर्थंकर कुन्थुनाथ को जन्म दिया तथा राजा सुदर्शन की महादेवी मित्रसेना के पवित्र गर्भ से मगशिर शुक्ल 14 को 18वें तीर्थंकर भगवान अरहनाथ का जन्म हुआ था। इस प्रकार तीन बार यहाँ पर 15–15 मास तक कुबेर ने अगणित रत्नों की वृष्टि की थी अतः रत्नगर्भा नाम से सार्थक यह भूमि प्राणीमात्र को रत्नत्रय (सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान, सम्यक चारित्र) धारण करने की प्रेरणा प्रदान करती है। ये तीनों तीर्थंकर, तीर्थंकर होने के साथ साथ चक्रवर्ती और कामदेव पदवी के धारक भी थे।

2.3 प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव को एक वर्ष 39 दिन के उपवास के पश्चात् हस्तिनापुर में ही युवराज श्रेयांस एवं राजा सोमप्रभ ने इक्षुरस का प्रथम आहार दिया था। उस समय भी यहाँ पर देवों द्वारा पंचाश्चर्य प्रगट हुए थे एवं सम्राट चक्रवर्ती भरत ने अयोध्या से हस्तिनापुर जाकर राजा श्रेयांस का सम्मान करके उन्हें ''दानतीर्थ प्रवर्तक'' की पदवी से अलंकृत किया था। पुराण ग्रंथों में वर्णन आता है कि भरत ने उस प्रथम आहार की स्मृति में हस्तिनापुर की धरती पर एक स्तूप का निर्माण करवाया था। आज तो उसका कोई अवशेष देखने को नहीं मिलता है किन्तु इससे यह प्रतीत होता है कि धर्मतीर्थ एवं दानतीर्थ की प्रशस्ति का उल्लेख उसमें अवश्य रहा होगा।

2.4 इसी प्रकार से हस्तिनापुर की पावन वसुन्धरा पर रक्षाबन्धन कथानक, महाभारत की इतिहास, मनोवती की दर्शन प्रतिज्ञा की प्रारम्भिक कहानी आदि प्राचीन इतिहास प्रसिद्ध हुए हैं। इसका वर्णन प्राचीन ग्रंथों में प्राप्त होता है।

2.5 हस्तिनापुर का वर्णन करते हुए पंडित द्यानतराय जी सुंदर भक्ति लिखते हैं कि मानों वो सभी जीवों को आमंत्रण दे रहे हों कि हे भविक जनों आओ आओ, इस पवित्र तीर्थ क्षेत्र के दर्शन करो, आत्महित करो, अपने संसार सागर का अभाव करो ।

हथनापुर बंदन जइये हो ।।टेक।।
शान्ति कुंथु अर मल्ल विराजैं, पूजा करि सुख पइये हो।।
हथनापुर बंदन जइये हो ।। १।।१
श्रेयँसकुमर भयो दानेश्वर, सो दिन अब लौं गइये हो ।
हथनापुर बंदन जइये हो ।। २।। २
'द्यानत' बन्दों थानक नामी, स्वामीकी लौं लइये हो।
हथनापुर बंदन जइये हो ।। ३।।

अर्थः हे भव्य हस्तिनापुर की यात्रा करने के लिए वंदन करने के लिए जाओ। वहाँ शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ और अरहनाथ की प्रतिमाएँ विराजमान हैं, उनकी पूजा कर आनन्द व लाभ प्राप्त करो। वहाँ राजा श्रेयांसकुमार जैसे दानी हुए हैं, जिन्होंने तीर्थंकर आदिनाथ को सर्वप्रथम आहारदान दिया था, उस दिन का (अक्षय तृतीया का) गुणगान आज भी किया जाता है। द्यानतराय जी कहते हैं कि ऐसे प्रसिद्ध स्थान की वन्दना करो और प्रभु के गुणों का चिंतवन करो, भक्ति करो, उनके गुणों से लौ (लगन) लगाओ।

3. 12 कल्याणक की नगरीः

तीर्थंकर	कल्याणक	कौन कौन से
शांतिनाथ	4	गर्भ, जन्म, तप और केवलज्ञान
कुन्थनाथ	4	गर्भ, जन्म, तप और केवलज्ञान
अरहनाथ	4	गर्भ, जन्म, तप और केवलज्ञान

4. हस्तिनापुर के जैन मंदिरः

4.1 श्री दिगंबर जैन बड़ा मंदिर, मेन रोड, हस्तिनापुर, तहसील–मवाना, जिला–मेरठ (उत्तर प्रदेश)–250 404

Phone: 01233 280133, Email&info@jainbaramandirhtr.com, Website-www.jainbaramandirhtr.com

सबसे पुराना जैन मंदिर है। मुख्य मंदिर राजा हरसुख राय के तत्वावधान में 1801 में बनाया गया था।

4.2 श्री जम्बूद्वीप, हस्तिनापुर, जिला–मेरठ (उत्तर प्रदेश) –250404

जैन भूगोल का ज्ञान कराने वाली जम्बूद्वीप रचना हमारी विशाल सृष्टि की प्रतिकृति है। इसके बीचों बीच में निर्मित सुमेरुपर्वत इस रचना का मध्य केन्द्र बिंदु माना जाता है और इस सुमेरुपर्वत के कारण जम्बूद्वीप रचना के अंदर पूर्व–पश्चिम, उत्तर–दक्षिण चार प्रकार से भिन्न–भिन्न रचना के रूपों का ज्ञान होता है जिसमें पूर्व और पश्चिम की रचना पूर्व विदेह क्षेत्र और

पश्चिम विदेह क्षेत्र के नाम से जानी जाती है तथा दक्षिण दिशा में भरतक्षेत्र की प्रमुखता के साथ अन्य विजयार्थ, हिमवान् आदि पर्वत, गंगा–सिंधु आदि नदियाँ, हैमवत आदि क्षेत्र कल्पवृक्षों से सहित भोगभूमि के दृश्य चैत्यालय, देवभवन, कुण्ड, उपवन आदि दिखाये गये हैं एवं इसी प्रकार उत्तर दिशा में ऐरावत क्षेत्र की प्रमुखता के साथ ऐसी ही पृथक नाम वाली सभी रचनाएं बनी हैं।

4.3 श्री कैलाश पर्वत दिगंबर जैन मंदिर, हस्तिनापुर, जिला–मेरठ (उत्तर प्रदेश)

कैलाश पर्वत एक 131 फीट ऊंची संरचना है जिसे हस्तिनापुर में श्री दिगंबर जैन मंदिर द्वारा बनाया गया है। संपर्क सूत्रः 01233–280999, 297444

4.4 भगवान श्री शांतिनाथ नसिया जी (प्रथम नसिया) और दिगंबर जैन मंदिर, हस्तिनापुर, जिला–मेरठ (उत्तर प्रदेश) –250404

ऐसा माना जाता है कि यहां भगवान शांतिनाथ को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई थी। गंग नहर के किनारे भगवान शांतिनाथ के जैन मंदिर के साथ एक बहुत ही शांतिपूर्ण स्थान है।

4.5 श्री दिगंबर जैन नसिया जी (दूसरी और तीसरी नसिया), हस्तिनापुर, जिला–मेरठ (उत्तर प्रदेश) –250404

4.6 श्री दिगंबर जैन नसिया जी (चौथी नसिया), हस्तिनापुर, जिला–मेरठ (उत्तर प्रदेश)

यह वह स्थान है जहां माना जाता है कि भगवान मल्लीनाथ का समोशरण हुआ था। यह थोड़ा अंदर जाकर गंग नहर के करीब है।

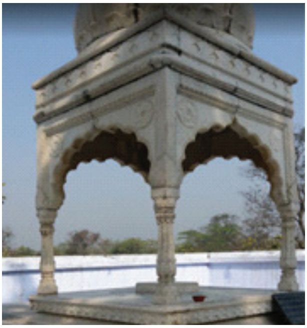

4.7 श्री तीर्थधाम चिदायतन, हस्तिनापुर, जिला–मेरठ (उत्तर प्रदेश)–250404

बड़े परिसर में विशाल मंदिर निर्माणाधीन है। इसी परिसर में भगवान शांतिनाथ जी की बहुत ही सुंदर पद्मासन प्रतिमा है।

5. क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधाएँ: हस्तिनापुर में रहने एवं खाने की बेहतर सुविधा भी उपलब्ध है। वन विभाग का रेस्ट हाउस एवं पी.डब्लू.डी. का अतिथि गृह भी यहां पर स्थित है, साथ ही जैन धर्मशाला भी है, जहां रुकने की बेहतर सुविधा उपलब्ध है।

संपर्क सूत्रः– श्री दिगंबर जैन बड़ा मंदिरः 01233–280133; jainbaramandirhtr@gmail.com, श्री दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान जम्बूद्वीपः (01233) 280184, 280994, Mob-9717331008, 9411025124

6. आवागमन के साधनः

6.1 रेल मार्गः हस्तिनापुर का सबसे नजदीकी रेलवे स्टेशन मेरठ (मेरठ सिटी–MTC) है जो कि 40 किमी की दूरी पर है। उत्तर प्रदेश और देश के लगभग तमाम शहरों से यहां पहुंचा जा सकता है।

कुछ महत्वपूर्ण ट्रेनें: स्वर्ण मंदिर मेल (12904), मेरठ नगर – लखनऊ जं राज्य रानी एक्सप्रेस (22454), नई दिल्ली – देहरादून शताब्दी एक्सप्रेस (12017), मुंबई लोकमान्य तिलक टर्मिनस – हरिद्वार वातानुकूलित सुपरफास्ट एक्सप्रेस (12171), देहरादून – नई दिल्ली जनशताब्दी एक्सप्रेस (12056), सहारनपुर – दिल्ली मेमू एक्सप्रेस विशेष (04460), कोच्चुवेली–योग नगरी ऋषिकेश सुपरफास्ट एक्सप्रेस (22659), योगा एक्सप्रेस (19031)

6.2 सड़क मार्गः उत्तर प्रदेश सड़क परिवहन निगम की बसें लगभग सभी प्रमुख शहरों से मेरठ के लिए चलती हैं। राष्ट्रीय और राज्य राजमार्ग से भी मेरठ जुड़ा हुआ है।

6.3 हवाई मार्गः हस्तिनापुर के लिए सबसे नजदीकी हवाई अड्डा, दिल्ली में स्थित है। दिल्ली एयरपोर्ट से हस्तिनापुर के लिए टैक्सी को किराए पर लेकर आ सकते है या बस से पहुंच सकते है।

7. समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र– अहिक्षेत्र–180 किमी, कंपिल जी– 270 किमी, शौरीपुर – 370 किमी, वहलना–55 किमी, बड़ागाँव–100 किमी

8. वार्षिक मेले – हस्तिनापुर तीर्थ पर वर्ष में कई मेले आयोजित होते हैं जिनमें से कार्तिक पूर्णिमा का मेला सबसे प्रमुख है जिसमें जैन समाज के अतिरिक्त जैनेतर समाज भी भारी संख्या में सम्मिलित होता है। इसी प्रकार चैत्र कृष्णा एकम् (होली मेला), अक्षयतृतीया, ज्येष्ठ बदी चतुर्दशी ये हस्तिनापुर के प्रमुख मेले हैं तथा समय–समय पर अन्य आयोजन भी वहाँ होते ही रहते हैं।

8. मिथिलापुरी (सीतामढ़ी–बिहार)

बालयति तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ भगवान और नमिनाथ भगवान के चार चार कल्याणक जिस तीर्थ क्षेत्र पर हुए हों, ऐसे पवित्र तीर्थ क्षेत्र की वंदना तो लाखों कार्य छोड़कर प्रथम में प्रथम करनी चाहिए। आइए इस पवित्र तीर्थ क्षेत्र के बारे में जानें।

1. मिथिलापुरी के बारे में:

1.1 मिथिला प्राचीन भारत में एक राज्य था। मिथिला वर्तमान में एक सांस्कृतिक क्षेत्र है, जिसमे बिहार के तिरहुत, दरभंगा, मुंगेर, कोसी, पूर्णिया और भागलपुर प्रमंडल तथा झारखंड के संथाल परगना प्रमंडल के साथ साथ नेपाल के तराई क्षेत्र के कुछ भाग भी शामिल हैं। मिथिला की लोकश्रुति कई सदियों से चली आ रही है जो अपनी बौद्धिक परम्परा के लिये भारत और भारत के बाहर भी जानी जाती रही है। इस क्षेत्र की प्रमुख भाषा मैथिली है। कल्याणक क्षेत्र के रूप में सुरसंड (सीतामढ़ी) में जैन मंदिर स्थापित किया गया है।

1.2 सुरसंड भारत के बिहार राज्य के सीतामढ़ी जिले में स्थित एक नगर पंचायत है। यह जिला मुख्यालय सीतामढ़ी से 25 किमी की दूरी पर पूर्व दिशा में तथा भारत – नेपाल के अंतरराष्ट्रीय सीमा भिट्ठामोड़ से 5 किमी की दूरी पर पश्चिम दिशा में स्थित है।

2. मिथिलापुरी और जैन धर्म:

2.1 उन्नीसवें तीर्थंकर बाल ब्रह्मचारी भगवान श्री मल्लिनाथ और इक्कीसवें तीर्थंकर भगवान नमिनाथ की जन्मभूमि "मिथिलापुरी" है। इस मिथिला नगरी में इन दोनों तीर्थंकरों के गर्भ, जन्म, तप और केवलज्ञान ये चार–चार कल्याणक हुए हैं। इस प्रकार आठ कल्याणक की भूमि होने के कारण यह स्थान हजारों वर्षों से जैन तीर्थक्षेत्र रहा है।

2.2 बाल ब्रह्मचारी तीर्थंकर भगवान श्री मल्लिनाथ ने माता प्रजावती और पिता कुम्भराज से मगशिर शुक्ला एकादशी को जन्म लिया था। इन्होंने विवाह नहीं किया और बालब्रह्मचारी रहकर दिगम्बर मुनि दीक्षा ग्रहण कर ली थी। श्री सम्मेदशिखर पर्वत से मोक्ष प्राप्त किया था। भगवान नमिनाथ ने पिता विजय और माता वर्मिला से आषाढ़ कृष्णा दशमी के दिन अश्विनी नक्षत्र में जन्म लेकर मिथिलापुरी को धन्य किया था तथा उन्होंने भी शाश्वत सिद्ध क्षेत्र श्री सम्मेदशिखर पर्वत से मोक्ष प्राप्त किया था।

2.3 'हरिवंशपुराण' में उल्लेख है कि जब बलि आदि चार मंत्रियों ने राजा पदम् से सात दिन का राज्य पाकर हस्तिनापुर में पधारे हुए आचार्य अकम्पन और उनके सात सौ मुनियों के संघ पर घोर अमानुषिक उपसर्ग किये, उस समय मुनि विष्णुकुमार के गुरु मिथिला में ही विराजमान थे और उन्होंने श्रवण नक्षत्र को कम्पित देखकर दिव्यज्ञान से जान लिया था कि मुनिसंघ पर भयानक उपसर्ग हो रहा है। यह बात उनके मुख से अचानक ही निकल गयी तब पास ही बैठे क्षुल्लक पुष्पदंत ने सुन लिया। अपने गुरु से आज्ञा लेकर वह धरतीभूषण पर्वत पर मुनि विष्णुकुमार के पास गए थे। वहां जाकर उन्होंने मुनि विष्णु कुमार को सारी घटना बता दी, तब मुनि विष्णुकुमार अपनी विक्रिया ऋद्धि से हस्तिनापुर पहुंचे और वामन का रूप बनाकर बलि से तीन पग भूमि मांगी। तब बलि ने तीन पग धरती के दान का संकल्प किया। तब विक्रिया से विशाल आकार बनाकर मुनि विष्णुकुमार ने दो पगो में ही सुमेरु पर्वत से मानुशोत्तर पर्वत की भूमि को नाप दिया। अभी एक पग लेना शेष था। भय के कारण बलि आदि मंत्री थर थर कांपने लगे, वे पैरों में गिरकर बार बार क्षमा मांगने लगे और मुनियों का उपसर्ग दूर हुआ।

3. 8 कल्याणक की नगरीः

तीर्थंकर	कल्याणक	कौन कौन से
मल्लिनाथ जी	4	गर्भ, जन्म, तप और केवलज्ञान
नमिनाथ जी	4	गर्भ, जन्म, तप और केवलज्ञान

4. मिथिलापुरी के जैन मंदिरः

4.1 श्री मिथिलापुरी दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र, जनकपुर रोड, सीतामढ़ी (बिहार) पिन–843331 Mob: 8540074584, 09155046125,

5. क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधाएः श्री मिथिलापुरी तीर्थ की पुनर्स्थापना के बाद से ही तीर्थ यात्रियों का आवागमन तीर्थ पर बढ़ा है जिन्हें भी तीर्थ की जानकारी प्राप्त हो रही है वे दर्शन हेतु मिथिलापुरी पहुँच रहे है। मन्दिर एवं यात्रियों के ठहराव हेतु कमरों का निर्माण कार्य तीव्र गति से चल रहा है। सम्पर्क सूत्र–9155046125 (सोनू जी जैन) 8540074584 (पंकज जी जैन)

6. आवागमन के साधन

6.1 रेल मार्गः सुरसंड, सीतामढ़ी जंक्शन रेलवे स्टेशन से 25 किलोमीटर की दूरी पर है। सीतामढी जंक्शन रेलवे स्टेशन पूर्व मध्य रेलवे क्षेत्र में पड़ता

है। यह जंक्शन समस्तीपुर तथा गोरखपुर रेल खंड पर स्थित है। साथ में सीतामढी से मुजफ्फरपुर तक रेल लाइन है तथा दिल्ली को जानेवाली लिच्छवी एक्सप्रेस सीतामढी से चलती है। तथा यहाँ से कोलकाता, मुंबई, सिकंदराबाद, नागपुर, जबलपुर, धनबाद, रायपुर और न्यू जलपाईगुड़ी के लिए भी ट्रेन है।

6.2 सड़क मार्ग: सीतामढी से गुजरने वाली राष्ट्रीय राजमार्ग 104 सुरसंड, भिट्ठामोड़, चोरौत होते हुए जयनगर तक जाती है। पटना से सीतामढी राष्ट्रीय राजमार्ग 77 से पहुंचा जा सकता है। पटना से सीतामढी की दूरी 105 किलोमीटर तथा मुजफ्फरपुर से 53 किलोमीटर है।

6.3 हवाई मार्ग: निकटतम हवाई अड्डा 160 किलोमीटर दूर राज्य की राजधानी पटना में है।

7. समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र – चम्पापुर–280 किमी, कुंडलपुर–220 किमी, राजगीर–240 किमी

8. वार्षिक उत्सव – ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्थी

9. वाराणसी

वाराणसी तीर्थ क्षेत्र से जुड़े हुए जैन धर्म के इतने तथ्य हैं जिन्हें समाहित करने यदि बैठें तो अकेली एक पुस्तक लिखी जाए। फिर भी यह अध्याय एक छोटा सा प्रयास है इस तीर्थ क्षेत्र से जुड़ी हुई रोचक जानकारियों के बारे में संक्षेप में बताने का।

1. वाराणसी के बारे में:

1.1 वाराणसी संसार के प्राचीनतम शहरों में से एक और भारत का प्राचीनतम शहर है। भारत के उत्तर प्रदेश राज्य का प्रसिद्ध नगर है। इसे 'बनारस' और 'काशी' भी कहते हैं। ये शहर सहस्रों वर्षों से भारत का, विशेषकर उत्तर भारत का सांस्कृतिक एवं धार्मिक केन्द्र रहा है।

1.2 वाराणसी को प्रायः 'मंदिरों का शहर', 'भारत की धार्मिक राजधानी', 'दीपों का शहर', 'ज्ञान नगरी' आदि विशेषणों से संबोधित किया जाता है। वाराणसी में चार बड़े विश्वविद्यालय स्थित हैं: बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ हाइयर टिबेटियन स्टडीज और संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय।

2. वाराणसी और जैन धर्म:

2.1 वाराणसी में प्राचीन काल से जैन संस्कृति बहुत अधिक पल्लवित एवं विकसित होती रही है। जैन धर्मानुयायियों के लिए यह एक पवित्र प्राचीन महातीर्थ है जहां की भूमि तीर्थंकरों के कल्याणकों के होने के कारण पवित्र हैं। इनके अतिरिक्त वाराणसी की भूमि पर अन्य तीर्थंकरों और महापुरुषों का निरंतर विहार भी होता रहा है। इसीलिए वाराणसी जैसे विश्व प्रसिद्ध, अति प्राचीन, पवित्र तीर्थ से संपूर्ण देश के जैनधर्म के अनुयायियों का असीम श्रद्धायुक्त भावनात्मक लगाव स्वाभाविक है। इसीलिए लाखों जैन तीर्थयात्री इस महातीर्थ के वंदन–पूजन हेतु प्रतिवर्ष आते हैं और अपने जीवन को

सार्थक मानते हैं। पुरातात्विक महत्व की तीसरी सदी तक के अनेक जैन मूर्तियों तथा इनसे संबंधित अन्य पुरावशेष आदि की उपलब्धता भी इन अवधारणाओं की सम्पुष्टि करती है कि वाराणसी सदा से श्रमण जैन संस्कृति और परम्परा का भी एक महत्वपूर्ण समृद्ध केन्द्र रहा है।

2.2 अयोध्या के बाद यह दूसरा जिला है जहां कि इतने तीर्थंकरों का जन्म हुआ हो। वाराणसी जिले में जन्मे ये चार तीर्थंकर इस प्रकार हैं:

2.2.1 सप्तम तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ, जिनकी जन्मभूमि भदैनी मुहल्ले में गंगातट पर स्थित जैनघाट है।

2.2.2 तेइसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ जिनकी जन्मभूमि है वाराणसी शहर के मध्य भेलुपुर मुहल्ला, जहां तीन भव्य जिनालय सुशोभित हैं।

2.2.3 अष्टम तीर्थंकर चंद्रप्रभ जिनकी जन्मभूमि है वाराणसी से लगभग पच्चीस किलोमीटर दूर गंगातट पर स्थित चन्द्रावती ग्राम।

2.2.4 ग्यारहवें तीर्थंकर श्रेयांसनाथ जिनकी जन्मभूमि है विश्व प्रसिद्ध सारनाथ। इसे सिंहपुरी भी कहते हैं

2.3 सप्तम तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ: जैनधर्म में चौबीस तीर्थंकरों की परंपरा में सप्तम तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ जी का जन्म अति प्राचीन काल में काशी देश की वाराणसी नगरी के भद्रवनी क्षेत्र, जिसे अब भदैनी मुहल्ला कहते हैं, में गंगातट पर स्थित इक्ष्वाकु वंशी महाराज सुप्रतिष्ठ के राजमहल में महारानी पृथ्वीषेणा की कोख से ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी के दिन अग्निमित्र नामक शुभयोग में अनेक सहस्राब्दियों पूर्व हुआ था। 'तिलोयपण्णत्ति' ग्रंथ में उनके जन्म के संबंध में लिखा है–

वाराणसीए पुडवी सुपइट्ठेहिं सुपास देवो य।
जेट्ठस्स सुक्कवार सिदिणम्मि जादो विसाहाए।।४।। ५३२

अर्थात सुपार्श्वदेव वाराणसी नगरी में माता पृथ्वी और पिता सुप्रतिष्ठ से ज्येष्ठ शुक्ला १२ के दिन विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न हुए।

2.4 इन्हीं की जन्मभूमि की स्मृति–स्वरूप भदैनी में गंगातट पर आज भी तीन (दो दिगम्बर एवं एक श्वेताम्बर) जैन मंदिर बने हुए हैं। सहस्त्राधिक श्रेष्ठ विद्वानों की परम्परा का जनक श्री स्याद्वाद महाविद्यालय भी जैनघाट स्थित श्री सुपार्श्वनाथ की जन्म भूमि स्थित जिनालय के परिसर में 19 वीं शताब्दी से चल रहा है।

2.5 वाराणसी में ही तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ के गर्भ, जन्म, तप और केवलज्ञान–ये चार कल्याणक हुए अर्थात् इन्हें इन चारों की प्राप्ति यहीं हुई। जैनधर्म में मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय और केवलज्ञान– इस तरह ज्ञान के पांच भेद हैं। तीर्थंकर का जीव जन्म से ही तीन ज्ञान का धनी होता है। प्रारंभ से ही सभी प्रकार के सुख–साधनों की संपन्नता के बावजूद वे इनसे उदासीन रहते थे, फिर भी पारिवारिक परंपरा के निर्वाह हेतु उनका यथासमय विवाह हुआ और सुयोग्य पुत्र भी हुए। पिता के बाद आप राज्य के उत्तराधिकारी बने और सुयोग्य शासक (महाराजा) बने। फिर भी आपके मन में सदा आत्मकल्याण की बात ही प्रमुखता से छायी रहती थी। एक दिन ऋतु परिवर्तन देखकर आप संसार की क्षणभंगुरता जान गए और अपने पुत्र को राज–पाट सौंपकर ज्येष्ठ शुक्ला द्वादशी की संध्या समय विशाखा नक्षत्र में एक सहस्र राजाओं के साथ सहेतुक वन में जाकर पंचमुष्ठि केशलोच कर वस्त्राभूषणादि सभी परिग्रहों का सदा के लिए त्यागकर मुनि दीक्षापूर्वक संयम ग्रहण किया।

2.6 दीक्षा के दूसरे दिन जब आप आहारार्थ विधिपूर्वक निकले, तब प्रथम बार आहारदान का सौभाग्य सोमखेट नगर के महाराजा महेन्द्रदत्त को प्राप्त हुआ। आपकी संयम साधना निरंतर बढ़ती जा रही थी।

2.7 सर्वोत्कृष्ट ज्ञान प्राप्ति के लिए सभी व्रत– उपवासों के साथ ही उत्कृष्ट ध्यान–योग, साधना आपके जीवन का अभिन्न अंग बन चुकी थीं। लोग

आश्चर्यचकित हो प्रेरणा ग्रहण करते हुए कहते कि इतने बड़े काशी राज्य के एक लोकप्रिय अधिपति बनकर भी इन्हें राज–पाट के मोह को त्यागने में तनिक भी देर न लगी और अब संयम मार्ग पर आरूढ़ हो निरंतर उग्र तपश्चरण की उनकी दृढ़ता भी कितनी बेजोड़ है। इस प्रकार नौ वर्ष की कठिन साधना के बाद फाल्गुन शुक्ला सप्तमी के दिन जब आप शिरीश वृक्ष के नीचे ध्यानारूढ़ थे, तभी विशाखा नक्षत्र में आपको केवल– ज्ञान की प्राप्ति हुई। जन–जन में खुशी की लहर दौड़ गई।

2.8 देव, इंद्र और संपूर्ण प्रजाजनों ने इस शुभ अवसर पर केवलज्ञान कल्याणक महामहोत्सव बड़े ही उत्साहपूर्वक मनाया। मति, श्रुत आदि पांच ज्ञानों में केवलज्ञान सर्वोत्कृष्ट और अंतिम ज्ञान है। इसमें इंद्रियातीत आत्मज्ञान द्वारा तीनों काल और तीनों लोक के संपूर्ण द्रव्य और उनकी समस्त पर्यायों आदि का एक साथ स्पष्ट और सर्वग्राही ज्ञान दर्पण की तरह हो जाता है। अतः जैन परंपरानुसार केवलज्ञान प्राप्ति के बाद उस महान् आत्मा को पांच परमेष्ठियों में प्रथम 'अर्हन्त' परमेष्ठी पद की प्राप्ति हो जाती है और वे सर्वज्ञ, सर्वदर्शी बन जाते हैं। चार घाती कर्मों के नाश होते ही क्षुधा तृषा आदि अठारह दोषों से रहित हो जाते हैं। तीर्थंकर भगवान सुपार्श्वनाथ की समवशरण नामक धर्मसभा के माध्यम से दिव्य ध्वनि खिरती है। जो भव्य जीवों को संसार सागर से मुक्त होने का उपाय बतलाती है। तीर्थंकर के समवशरण में देव, मनुष्य, तिर्यंच आदि सभी जीव समभावपूर्वक बैठकर भगवान की दिव्य ध्वनि को सुनते हैं।

2.9 काशी, कौशल, मथुरा, मगध आदि देशों के प्रायः सभी प्रमुख गणराज्यों में तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ का समवशरण गया, और भव्य जीव भगवान के दिव्यध्वनि रुपी अमृत से कृतकृत्य हुए। इस तरह सहस्रों मुनि, आर्यिका, श्रावक और श्राविका इनके संघस्थ बने। इनके बल आदि 95 गणधर थे। लंबे समय तक भारत के कोने–कोने में तथा देश के सीमांत प्रदेशों में भगवान का विहार हुआ। आपने झारखंड राज्य के सम्मेद शिखर जैसे परम पवित्र शाश्वत

सिद्ध तीर्थ से फाल्गुन कृष्ण सप्तमी को विशाखा नक्षत्र में निर्वाण प्राप्त किया। निर्वाण प्राप्ति की खुशी में सभी देवों और मनुष्यों ने मिलकर बड़ी धूमधाम से आपका निर्वाण महोत्सव मनाया।

2.10 जिस तरह आपने संसार के सभी प्राणियों के कल्याण हेतु तत्त्वोपदेश तथा अन्य व्यावहारिक मंगलकारी कार्यों द्वारा जन–जन के हृदय में जो स्थान बनाया, उससे आपकी लोकप्रियता और प्रभाव स्पष्ट है। देश के कोने–कोने में स्थित जिन मंदिरों में आपकी भव्य प्रतिमाएं विराजमान हैं, आपका चिह्न स्वस्तिक है।

2.11 आचार्य समंतभद्र स्वामी ने स्वयंभू स्तोत्र में तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ की स्तुति करते हुए कहा है:

सर्वस्य तत्वस्य भवान् प्रमाता, मातेव बालस्य हितानुशास्ता ।
गुणावलोकस्य जनस्य नेता मयापि भक्त्या परिणयसे।। 5।।

अर्थात: हे सुपार्श्व जिन् ! आप सब तत्वों के प्रमाता हैं। बालक को माता के समान अज्ञानी जनों को हित का उपदेश देने वाले हैं और गुणों की खोज करने वाले जनों के नेता हैं, इसलिए मैं भक्तिपूर्वक आपकी स्तुति कर रहा हूं।

3. तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ

3.1 चौबीस तीर्थंकरों की गौरवशाली परंपरा में बनारस नगरी में जन्मे तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ का व्यक्तित्व संपूर्ण देश में अत्यंत लोकप्रिय जननायक, कष्ट एवं विघ्न विनाशक आदि रूपों में पूजित और प्रभावक रहा है। नौवीं शती ईसा पूर्व काशी नरेश महाराजा अश्वसेन और महारानी वामादेवी के घर जन्मे तीर्थंकर पार्श्वनाथ, श्रमण परंपरा के एक महान प्रवर्तक थे। 'तिलोयपण्णत्ति' में उनके जन्म के संबंध में विवरण मिलता है:

हयसेण वम्मिलाहिं जादो हि वाणारसीए पासजिणो।
पूसस्स बहुल एक्कारसिए रिक्खे विसाहाए।। ४। ५४८।।

अर्थात् भगवान पार्श्वनाथ वाराणसी नगरी में पिता अश्वसेन और माता वम्मिला (वामा) से पौष कृष्णा एकादशी के दिन विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न हुए।

3.2 पूर्वभवों के नवें भव में ये विश्वभूति ब्राह्मण के मरुभूति नामक पुत्र थे, इस भव में कमठ इनका भाई था। कमठ के जीव के द्वारा आगे के भवों में इन पर अनेक उपसर्ग किये गये। मरुभूमि की पर्याय के पश्चात् से वज्रघोष नामक हाथी हुए। फिर सहस्रार स्वर्ग में देव हुए। इसके पश्चात् ये क्रम से रश्मिवेग विद्याधर, अच्युत स्वर्ग में देव, वज्रनाभि चक्रवर्ती, मध्यम ग्रैवेयक में अहमिंद्र, राजा आनंद और अच्युत स्वर्ग के प्राणत विमान में इंद्र हुए। वहाँ से च्युत होकर वर्तमान भव में ये तेईसवें तीर्थंकर हुए ।

महापुराण 73. 7–68, 109

3.3 बचपन से धार्मिक, चिंतनशील, जिज्ञासु और दयालु प्रवृति के इस महामानव का बचपन व यौवन राजसी वैभव में व्यतीत हुआ। कम समय में ही वे शास्त्र व शस्त्र दोनों विधाओं में पारंगत हो गये थे। किशोर राजकुमार के रूप में उन्होंने अपने मामा की सहायता के लिए किये युद्ध में विरोधी को बंदी बनाकर अप्रतिम शौर्य का परिचय दिया था। लेकिन उसी दौरान नवयुवा काल की एक घटना उनके जीवन की समूची दिशाधारा बदल कर रख दी। 16 वर्ष की आयु में एक दिन वे वन भ्रमण कर रहे थे, तभी उनकी दृष्टि एक तपस्वी पर पड़ी, जो कुल्हाड़ी से एक वृक्ष पर प्रहार कर रहा था। यह दृश्य देखकर पार्श्वनाथ सहज ही चीख उठे और बोले– ठहरो! उन निरीह जीवों को मत मारो। उस तपस्वी का नाम महीपाल था। अपनी पत्नी की मृत्यु के दुख में वह साधु बन गया था। वह क्रोध से पार्श्वनाथ की ओर पलटा और कहा– मैं किसे मार रहा हूं? देखते नहीं, मैं तो तप के लिए लकड़ी काट रहा हूं। पार्श्वनाथ ने व्यथित स्वर में कहा– लेकिन उस वृक्ष पर नाग–नागिन का जोड़ा है। महीपाल ने तिरस्कारपूर्वक कहा– तू क्या त्रिकालदर्शी है? और पुनः वृक्ष पर वार करने लगा। तभी वृक्ष के चिरे तने से छटपटाता, रक्त से नहाया हुआ

नाग– नागिन का एक जोड़ा बाहर निकला। एक बार तो क्रोधित महीपाल उन्हें देखकर कांप उठा, लेकिन अगले ही पल वह धूर्ततापूर्वक हंसने लगा। तभी पार्श्वनाथ के मुख से स्वतः ही 'णमोकार मंत्र' फूट उठा जिसे सुनकर नाग–नागिन की मृत्यु की पीड़ा शांत हुई और अगले जन्म में वे नाग जाति के इन्द्र–इन्द्राणी धरणेन्द्र और पद्मावती बने।

3.4 तीस वर्ष की अवस्था में एक दिन राजसभा में वे अयोध्या नरेश जयसेन के दूत से 'ऋषभदेव चरित' सुन रहे थे। यह चरित्र सुनकर उनके मन में पनप रहा वैराग्यभाव अत्यंत बल हो उठा और माता पिता की अनुमति लेकर उन्होंने पौष कृष्ण की एकादशी तिथि को अश्ववन में जाकर ''जैनेश्वरी दीक्षा'' ग्रहण कर ली। संयम और ध्यान साधना में आपको अनेकानेक भयंकर कष्टों का सामना करना पड़ा, किंतु आप उनसे किंचित विचलित हुए बिना तपश्चरण में लीन रहे और लंबी साधना के बाद उन्हें चैत्र कृष्ण चतुर्थी को सर्वोच्च केवलज्ञान की प्राप्ति हो गयी। इसकी प्राप्ति के साथ ही अर्हन्त पद प्राप्त करके वे सर्वज्ञ–सर्वदर्शी बन गए।

3.5 'कैवल्य' प्राप्ति के उपरान्त 70 वर्ष तक अखंड भारत के मालवा, अवंती, गौर्जर, महाराष्ट्र, सौराष्ट्र, अंग–नल, कलिंग, कर्नाटक, कोंकण, मेवाड़, द्रविड, कश्मीर, मगध, कच्छ, विदर्भ, पंचाल, पल्लव आदि सुदूर क्षेत्रों में आपके निमित्त अनगिनत भव्य जीवों का कल्याण हुआ। सौ वर्ष का सफल सार्थक जीवन जीने वाले तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जीवनकाल 877 से 777 ईसा पूर्व का माना जाता है। श्रावण शुक्ल की सप्तमी को श्री सम्मेद शिखर (पारसनाथ पहाड़ी, झारखंड) पर उन्हें मोक्ष प्राप्त हुआ। वर्तमान में यह स्थान जैन समुदाय का प्रमुख तीर्थस्थान है। प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालु यहां दर्शनार्थ आते हैं। आज भी बंगाल, बिहार, झारखंड और ओडिशा में लाखों लोग तीर्थंकर पार्श्वनाथ को अपना कुल देवता मानते हैं। जैन धर्म के चातुर्याम (सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह) की शिक्षा आज भी पूरी तरह प्रासंगिक है। उनके आदर्शपूर्ण जीवन

और धर्म–दर्शन की लोकव्यापी छवि आज भी संपूर्ण भारत तथा इसके सीमावर्ती क्षेत्रों और देशों में विविध रूपों में दिखलाई देती है।

3.6 ई. पूर्व दूसरी–तीसरी सदी के जैन धर्मानुयायी सुप्रसिद्ध कलिंग नरेश महाराजा खारवेल भी इन्हीं के प्रमुख अनुयायी थे। अंग, बंग, कलिंग, कुरु, कौशल, काशी, अवंती, पुण्ड, मालव, पांचाल, मगध, विदर्भ, भद्र, दशार्ण, सौराष्ट्र, कर्नाटक, कोंकण, मेवाड़, लाट, कश्मीर, कच्छ, वत्स, पल्लव और आमीर आदि तत्कालीन अनेक क्षेत्रों, राष्ट्रों और देशों का उल्लेख आगमों में मिलता है जिनमें पार्श्वनाथ ने ससंघ विहार करके जन–जन के लिए हितकारी धर्मोपदेश देकर जागृति पैदा की।

3.7 भारत के पूर्वी क्षेत्रों, विशेषकर बंगाल, बिहार, उड़ीसा आदि अनेक प्रान्तों के आदिवासी बहुल क्षेत्रों में लाखों की संख्या में बसने वाली सराक, सद्गोप, रंगिया आदि जातियों का सीधा और गहरा संबंध तीर्थंकर पार्श्वनाथ की परंपरा से है। इन लोगों के दैनिक जीवन व्यवहार की क्रियाओं और संस्कारों पर तीर्थंकर पार्श्वनाथ और उनके चिंतन की गहरी छाप है।

3.8 इस प्रकार तीर्थंकर पार्श्वनाथ तथा उनके लोकव्यापी चिंतन ने लंबे समय तक धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक क्षेत्र को प्रभावित किया है। व्यवहार की दृष्टि से उनका धर्म सहज था। आचार्य समन्तभद्र ने आपकी स्तुति करते हुए कहा है:

स सत्य विद्यातपसां प्रणायक : समग्रधीरुग्रकुलाम्बरांशुमान।
मया सदा पार्श्वजिनः प्रणम्यते विलीन मिथ्यापथदृष्टि विभ्रमः।। 5।।

अर्थात् आप सत्य विद्याओं और तपस्याओं के प्रणेता हैं, पूर्णबुद्धि युक्त सर्वज्ञ हैं तथा उग्रवंश रूप आकाश में चंद्रमा के समान हैं। आपने अपने उपदेशों के द्वारा मिथ्यादर्शन आदि अनेक कुमार्ग दृष्टियों को दूर कर सम्यग्दर्शन–ज्ञान और चारित्र्य रूप रत्नत्रय का मार्ग प्रशस्त किया है। इसलिए हे पार्श्व ! इन गुणों के कारण मैं सदा आपको प्रणाम करता हूँ।

3.9 तीर्थंकर पार्श्वनाथ का ऐसा लोकव्यापी प्रभाव व्यक्तित्व एवं चिंतन था कि कोई भी एक बार इनके या इनकी परंपरा के परिपार्श्व में आने पर उनका प्रबल अनुयायी बन जाता था। हिंदी जगत के शिखर पुरुष भारतेंदु हरिश्चंद्र ने लिखाः

तुमहि तौ पार्श्वनाथ हो पियारे तलफन लागै प्रान बगल तै छिनहु होत न न्यारै!
तुम सौ और पास नहीं कोउ मानहु करि पतियारे।
'हरीचंद्र' खोजत तुमही को वेद–पुरान पकारै ।।

3.10 प्राकृत जैन आगम और आगमेतर साहित्य में वाराणसी से संबंधित अनेक पौराणिक और ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन मिलता है। ज्ञाताधर्मकथा आगम की अनेक धर्म कथाऐं वाराणसी से संबंध रखती हैं। इसी प्रकार प्रज्ञापना सूत्र, कल्पसूत्र उपासक दशांग, उत्तराध्ययनचूर्णि, अन्तकृद्दशा, निरयावलिका तथा आवश्यक– नियुक्ति आदि प्राकृत आगमों में वाराणसी का वर्णन है। 63 शलाका महापुरुषों के अन्तर्गत चक्रवर्तियों के बारहवें ब्रह्मदत्त की कथा का उल्लेख कई जैन ग्रन्थों में है कि ये काशी निवासी थे। एक उल्लेख के अनुसार नवें चक्रवर्ती 'पद्म' ने तो काशी को सम्पूर्ण भारत की राजधानी बनाकर इसे राजनैतिक महत्त्व प्रदान किया था।

3.11 पण्डित फूलचंद जैन सिद्धांत शास्त्री जी के बिना वाराणसी का परिचय अधूरा ही रह जाएगा। जैन दर्शन के तीन सिद्धान्त ग्रन्थ प्रमुख हैं, षट्खण्डागम, कसायपाहुड तथा महाबन्ध। ये ग्रन्थ सैकड़ों वर्षों से ताड़पत्रों पर प्राकृत भाषा में लिपिबद्ध करके मंदिरों में बंद रखे थे। इनको हिन्दी में उपलब्ध कराने का मुख्य श्रेय पं० जी को ही है। इन ग्रन्थों का उनके समान अधिकारी विद्वान अन्य कोई नहीं हुआ। शास्त्री जी ने धवला ग्रंथ का, जो 2 लाख श्लोक प्रमाण है, 39 भागों में उस ग्रंथ का प्राकृत, संस्कृत मिश्रित उस ग्रंथ के संपादन का काम किया।

3.12 इस प्रकार वाराणसी प्रारम्भ से ही जैन संस्कृति का समृद्ध और प्रधान केन्द्र रहा है। वर्तमान में स्याद्वाद विद्यालय भदैनी, गणेश वर्णी शोध संस्थान नरिया, पार्श्वनाथ विद्यापीठ करौंदी, जैसी अनेक विशिष्ट संस्थाओं तथा सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के जैन दर्शन एवं प्राकृत– जैनागम विभाग तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में जैन एवं बौद्ध दर्शन विभाग, तथा अन्यान्य विभागों द्वारा इस क्षेत्र में अध्यापन अध्ययन और अनुसंधान के माध्यम से अनेक नई जानकारी सामने आ रही है।

4. 6 कल्याणक की नगरी:

तीर्थंकर	कल्याणक	कौन कौन से
सुपार्श्वनाथ	4	गर्भ, जन्म, तप और केवलज्ञान
पार्श्वनाथ	2	गर्भ, जन्म

5. श्री भदैनीजी दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र, प्रभुदास जैन घाट, भदैनीजी, वाराणसी Mob 9695338108, 8953793126

5 .1 यह क्षेत्र गंगा नदी के तट पर श्री प्रभुदास जैन घाट, जिसे भदैनी घाट भी कहा जाता है, पर स्थित है। स्याद्वाद महाविद्यालय भवन के ऊपर भगवान सुपार्श्वनाथ का मंदिर है। यह क्षेत्र तट पर होने से यहाँ का दृश्य अत्यंत मनोरम है। मंदिर छोटा है परन्तु शिखरबद्ध है। इसका निर्माण लाला प्रभुदास आरा वालों ने कराया था।

5.2 वेदी में भगवान सुपार्श्वनाथ की श्वेत पाषाण की संवत 1993 में प्रतिष्ठित पद्मासन प्रतिमा विराजमान है। इसकी अवगाहना 15 इंच है। मूलनायक प्रतिमा के अतिरिक्त 5 श्वेत पाषाण की और एक सर्वतोभर्दिका प्रतिमा विराजमान है। गर्भ गृह के द्वार पर दाएं– बाएं में मातंग यक्ष और काली यक्षी बनी हुई है। यक्ष का वाहन सिंह है और यक्षी वृषभरुढ़ा है। गर्भगृह

के बाहर कक्ष में एक क्षेत्रपाल विराजमान हैं। एक आले में चरण विराजमान हैं। मंदिर का शिखर बहुत ही सुंदर बना हुआ है। मंदिर के दोनों ओर खुली छत है। यहां से गंगा का मनोहारी दृश्य बहुत ही आकर्षक लगता है जो अवलोकनीय है। गंगा नदी के तट पर बना हुआ जिनालय स्थापत्य कला को सुशोभित कर रहा है। नीचे गर्भ गृह मंदिर में क्षेत्रपाल एवं पद्मावती मंदिर भी विराजमान है। जैनधर्म के 23 वे तीर्थंकर पार्श्वनाथ के जीवन की एक ऐतिहासिक घटना जुड़ी होने से जैन घाट पर तीर्थंकर पार्श्वनाथ के चरण चिन्ह भी विराजमान हैं।

6. श्री पार्श्वनाथ भगवान जन्मस्थली भेलूपुर, वाराणसी

6.1 भेलूपुर मंदिर 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ को समर्पित है, जो शहर के मध्य क्षेत्र से दूर भेलूपुर में स्थित है। यह मंदिर अपने नाम के अनुरूप तीर्थंकर की जन्मस्थली का स्मरण कराता है।

6.2 भेलूपुर की इसी पवित्र भूमि पर आकर आप महसूस कर सकते हैं कि इसी परिसर में कभी पार्श्वकुमार खेला करते थे, घुटनों के बल चलते थे तथा देव कुमारों के साथ क्रीड़ा किया करते थे। स्वर्ग से देवियाँ आकर छोटे से पार्श्वकुमार को माता वामा देवी से लेकर पालने में झुलाती थी, लोरियाँ गाती थी और हँसी–खुशी गोद में खिलाया करती थी। उस समय तो स्वर्ग से भी ज्यादा बनारस का वैभव झलक रहा था। धन्य है भेलूपुर की यह पवित्र भूमि–जहाँ सौधर्म इंद्र स्वयं अपने दल–बल के साथ आए थे तथा शिशु पार्श्वकुमार को ऐरावत हाथी पर बिठाकर सुमेरू पर्वत पर ले गये एवं यहाँ खूब ठाट–बाट से जन्म महोत्सव मनाकर वापस यहीं भेलूपुर महल में आकर वामा देवी को बालक सौंपकर स्वयं अपने स्वर्ग लौट गए थे।

6.3 लगभग 1400 वर्ष बाद कुमारगुप्त के राज्यकाल में भेलूपुर की इस जन्मभूमि पर एक के बाद एक तीन मंदिर बनाए गए जो कालांतर में जमीन के नीचे दब गए थे। फिर से नया मंदिर बनाने के लिए नींव हेतु आज से लगभग 35 वर्ष पहले जब यहाँ खुदाई की गई तो इन दबे हुए मंदिरों के अवशेष मिले है वे इस जन्मभूमि की प्रामाणिकता को सिद्ध करते हैं। पुरातात्विक अवशेष मंदिर के प्रांगण में सुरक्षित रखे हैं एवं गुप्तकाल

से ईसा की पाँचवीं शताब्दी तक के है। इस मंदिर के पीछे मुनियों की समाधि भी स्थित है। विशाल धर्मशाला भी यहाँ है।

7. वाराणसी के कुछ अन्य जैन मंदिरः

7.1 खड्गसेन उदयराज का दिगम्बर जैन मंदिर, भेलूपुर, वाराणसी

यह मंदिर श्री खड्गसेन उदयराज ने सन् 1868 ई. में निर्माण करवाया। यह मंदिर मौजूदा तीनों मंदिरों में सबसे पुराना है। इसमें तीन वेदियाँ हैं तथा एक पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की तीन फुट ऊँची मूर्ति विराजमान है, जो सिंघई गोत्रिय श्री फूलचन्द जी ने स्थापित की थी। आचार्य सन्मति सागर संघ का चौमासा वर्ष 1999 में हुआ था और उसी समय उनके गुरु आचार्य आदिसागर व आचार्य महावीर कीर्ति की मूर्तियाँ भी यहाँ स्थापित हुई थीं।

7.2 श्री 1008 तीर्थंकर अजितनाथ जिनालय, कश्मीरीगंज, खोजवां, वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

7.3 श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जैन मंदिर, नरिया, वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

8. उपलब्ध सुविधाएँ: वाराणसी एक अंतर्राष्ट्रीय महत्व का क्षेत्र है और पूरी तरह से विकसित है। ठहरने और खाने की अच्छी सुविधाएँ उपलब्ध है

9. आवागमन के साधन

9.1 रेल मार्ग: वाराणसी एक महत्वपूर्ण और प्रमुख रेल जंक्शन है। शहर पूरे देश के सभी महानगरों और प्रमुख शहरों से रेल सेवा से जुड़ा है।

वाराणसी स्टेशन (BSB) से कुछ महत्वपूर्ण ट्रेनें: वाराणसी – नई दिल्ली वंदे भारत एक्सप्रेस (12435); डिब्रूगढ़–नई दिल्ली राजधानी

एक्सप्रेस (20505); गोरखपुर – बान्द्रा टर्मिनस हमसफर एक्सप्रेस (19092); पाटलिपुत्र–उदयपुर सिटी हमसफर एक्सप्रेस (19670); गंगा सतलज एक्सप्रेस (13307); कुम्भ एक्सप्रेस (12369); गंगा कावेरी एक्सप्रेस (12669); सियालदह – जम्मू तवी हमसफर एक्सप्रेस (22317); काशी पटना जनशताब्दी एक्सप्रेस (15125)।

9.2 सड़क मार्गः एन.एच.–2 दिल्ली–कोलकाता राजमार्ग वाराणसी नगर से निकलता है। इसके अलावा एन.एच.–7, जो भारत का सबसे लंबा राजमार्ग है, वाराणसी को जबलपुर, नागपुर, हैदराबाद, बंगलुरु, मदुरई और कन्याकुमारी से जोड़ता है।

9.3 हवाई मार्गः लाल बहादुर शास्त्री विमानक्षेत्र शहर के केन्द्र से 25 किमी की दूरी पर स्थित है और चेन्नई, दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, खजुराहो, बैंगकॉक, बंगलुरु, कोलंबो एवं काठमांडु आदि देशीय और अंतर्राष्ट्रीय शहरों से वायु मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है। अधिकांश प्रमुख देशीय विमान सेवाएँ यहां से संचालित होती है।

9.4 स्थानीय आवागमन सुविधायेंः ट्रैवल एजेंसियों, होटल, ऑनलाइन सेवाओं आदि के माध्यम से निजी टैक्सी सेवा उपलब्ध हैं। इसके अलावा ई–रिक्शा, साइकिल रिक्शा और तीन पहिया भी आसानी से उपलब्ध हैं। लेकिन कुछ मार्गों पर, विशेष रूप से मंदिरों और बाजारों के पुराने वाराणसी इलाकों में एक तरफ ट्रैफिक बनाए रखा जाता है। और उस मार्ग पर ऑटोरिक्शा या बड़े वाहनों की अनुमति नहीं है।

10. समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र – सिंहपुरी – 10 किमी, चन्द्रपुरी – 30 किमी, श्रावस्ती – 110 किमी, प्रयागराज – 200 किमी।

10. चंपापुर (भागलपुर)

सोचिए कितनी पवित्र धरा होगी यहां कि जिस धरा को तीर्थंकर वासुपूज्य भगवान के पांचों कल्याणक कराने का सौभाग्य प्राप्त हुआ हो। वर्तमान चौबीसी का एकमात्र ऐसा तीर्थक्षेत्र है जहां से एक ही तीर्थंकर के सभी पांच कल्याणक हुए हैं। धन्य हो प्रभु वासुपूज्य आप, धन्य है यह पवित्र चंपापुर तीर्थक्षेत्र।

1. भागलपुर के बारे में: भागलपुर बिहार प्रान्त का एक शहर है। गंगा के तट पर बसा यह एक अत्यंत प्राचीन शहर है। पुराणों में और महाभारत में इस क्षेत्र को अंग प्रदेश का हिस्सा माना गया है। भागलपुर के निकट स्थित चम्पानगर महान पराक्रमी शूरवीर कर्ण की राजधानी मानी जाती रही है। यह बिहार के मैदानी क्षेत्र का आखिरी सिरा और झारखंड और बिहार के कैमूर की पहाड़ी का मिलन स्थल है। प्राचीन काल के तीन प्रमुख विश्वविद्यालयों यथा तक्षशिला, नालन्दा और विक्रमशिला में से एक विश्वविद्यालय भागलपुर में ही था, जिसे हम विक्रमशिला के नाम से जानते हैं।

2. चंपापुर और जैन धर्म:

2.1 भगवान ऋषभदेव की आज्ञा से इन्द्र ने जिन 52 जनपदों की रचना की थी, उनमें एक अंग जनपद भी था जिसकी राजधानी चम्पानगरी मानी जाती है। बारहवें तीर्थंकर भगवान वासुपूज्य की जन्मभूमि होने का तो इसे सौभाग्य प्राप्त है ही, किन्तु यहाँ उनके पाँचों कल्याणक भी हुए हैं इसलिए यह पावन सिद्धक्षेत्र भी कहलाता है। किसी तीर्थंकर के पाँचों कल्याणक एक ही जगह होने का सौभाग्य चम्पापुर नगरी को प्राप्त है ।

2.2 राजा वसुपूज्य एवं रानी जयावती से फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी के दिन तीर्थंकर वासुपूज्य का जन्म हुआ था। पाँच बाल ब्रह्मचारी तीर्थंकरों में से वासुपूज्य भगवान प्रथम बालयति हुए हैं जिन्होंने विवाह न करके संसार से

वैरागी होकर दीक्षा धारण कर ली थी। इनके पूर्व के ग्यारह तीर्थंकरों में से सभी ने विवाह करके राज्य संचालन करने के पश्चात् दीक्षा धारण की थी।

2.3 चंपापुर काफी प्राचीन और ऐतिहासिक तीर्थ क्षेत्र है। चंपापुर भगवान महावीर स्वामी के समय के छह महा जनपदों में महा जनपद के रूप में भी अस्तित्व में था। यह स्थान निम्नलिखित के कारण प्रसिद्ध है: ''भगवान महावीर स्वामी की दीक्षाकाल के दौरान तीन चातुर्मास अवधि, अंग–बंगा–मगध–वैशाली के धार्मिक प्रचार केंद्र, सती सुभद्रा और अनंतमती की विनम्रता की परीक्षा, चंपापुर हरिवंश की उत्पत्ति, श्रीपाल–मैना सुंदरी, श्री धर्म घोष मुनि, महाभारत के राजा कर्ण, राजा मुद्रक और महान वास्तुकार विश्वकर्मा की महान कहानियों से भी संबंधित है''।

2.4 भगवान वासुपूज्य ने चम्पापुर के मनोहर उद्यान में जाकर जिनदीक्षा ग्रहण की थी और वहीं उनको केवलज्ञान एवं मोक्ष हुआ जो आजकल मन्दारगिरि के रूप में माना जाता है। यह मन्दारगिरि उस काल में चम्पानगरी के ही बाह्य उद्यान का पर्वत था अत: चम्पापुर में ही सम्मिलित था। इस विषय में उत्तरपुराणग्रंथ में आता है कि वासुपूज्य भगवान के गर्भ और जन्मकल्याणक चम्पानगरी में मनाए गए और मन्दारगिरि के मनोहर उद्यान में दीक्षा एवं ज्ञान कल्याणक हुए तथा मंदारगिरि से ही भगवान ने निर्वाण पद प्राप्त किया था। उत्तरपुराण में वर्णन है–

स तैः सह विहृत्याखिलार्यक्षेत्राणि तर्पयन्।
धर्मवृष्ट्या क्रमात्प्राप्य चम्पामब्दसहस्रकम्।।50।।
स्थित्वाऽत्र निष्क्रियं मासं नद्याराजतमालिका।
सञ्ज्ञायाश्चित्तहारिण्याः पर्यन्तावनिवर्तिनि।।51।।

अग्रमन्दरशैलस्य सानुस्थानविभूषणे।
वने मनोहरोद्याने पल्यंकासनमाश्रितः।।52।।
मासे भाद्रपदे ज्योत्स्नाचतुर्दश्यापराण्हके।
विशाखायां ययौ मुक्तिं चतुर्णवतिसंयतैः।।53।।

अर्थात् भगवान ने इन सबके (मुनि, आर्यिका आदि) साथ समस्त आर्यक्षेत्रों में विहार कर उन्हें धर्मवृष्टि से संतृप्त किया और क्रम–क्रम से चम्पानगरी में आकर एक हजार वर्ष तक रहे। जब आयु में एक मास शेष रह गया, तब योग निरोध कर रजतमालिका नामक नदी के किनारे की भूमि पर वर्तमान मन्दारगिरि के शिखर को सुशोभित करने वाले मनोहर उद्यान में पर्यंकासन से स्थित हुए तथा भाद्रपद शुक्ला चतुर्दशी के दिन सायंकाल के समय विशाखा नक्षत्र में चौरानवे मुनियों के साथ मुक्ति को प्राप्त हुए।

2.5 वर्तमान में मन्दारगिरि चम्पापुर से लगभग 50 किमी. दूर स्थित है, सभी तीर्थयात्री दर्शन करने के लिए बड़ी श्रद्धा से वहाँ जाते हैं। चम्पापुर तीर्थ भागलपुर रेलवे स्टेशन से तीन किलोमीटर दूर नाथनगर में पड़ता है। जयपुर के हवामहल की शैली पर बने क्षेत्र का अप्रतिम विशाल भव्य द्वार आगत श्रद्धालुओं और भक्तों का स्वागत करता है। मंदिर के पूर्व भाग में सहस्राब्दियों पुराने दो प्राचीन कीर्तिस्तंभ विद्यमान हैं। कहते हैं कि इन स्तंभों के नीचे से सुरंग मंदारगिरि तथा सम्मेदशिखर जी की चन्द्रप्रभ टोंक तक जाती थी। ऐसे ही दो स्तम्भ मंदिर के पूर्वभाग में थे जो कालक्रम में नष्ट हो गये।

3. 5 कल्याणक की नगरीः

तीर्थंकर	कल्याणक	कौन कौन से
वासुपूज्य	5	गर्भ, जन्म, तप, केवलज्ञान और निर्वाण

4. भागलपुर के जैन मंदिरः

4.1 श्री चंपापुर दिगंबर जैन सिद्ध क्षेत्र बड़ा मंदिर, नाथनगर, भागलपुर (बिहार) पिन–812002 फोन 0641–2500522, 9472463388, 8084435602

4.1.1 आदिकाल से ही चम्पापुर अनेकानेक महत्वपूर्ण घटनाओं एवं ऐतिहासिक कथानकों का इतिहास अपने अन्दर में संजोए हुए है, जिसके कारण चम्पापुर का कण–कण पवित्र एवं पूजनीय है। यहाँ मंदिर की मूलवेदी में भगवान वासुपूज्य की लाल माणिक्य वर्ण की अति मनोज्ञ पद्मासन प्रतिमा विराजमान है। इसी मूलवेदी में एक अष्टधातु की मूर्ति तथा भगवान वासुपूज्य के प्राचीन चरण भी विराजमान हैं। चार कोनों पर चार वेदी बनी हुई हैं उनमें श्वेत पाषाण एवं अष्टधातु की मनोहारी प्रतिमाएँ हैं। एक अन्य वेदी में लालवर्ण की वासुपूज्य भगवान की एक फुट उत्तुंग पद्मासन प्रतिमा विराजमान हैं। भगवान महावीर स्वामी के 2500वें निर्वाण महोत्सव के पश्चात् चम्पापुर तीर्थ का अच्छा विकास और उद्धार हुआ है। नये जिनमंदिरों में एक ओर विदेह क्षेत्र में विद्यमान प्रथम तीर्थंकर सीमन्धर स्वामी का समवसरण मंदिर है तो दूसरी ओर काँच का भव्य कलात्मक मंदिर है।

4.1.2 मंदिर जी के पूर्व में मूलवेदी के सम्मुख 71 फुट ऊंचा गगनचुम्बी मानस्तंभ है, मानस्तंभ के तीनों ओर 24 तीर्थंकरों की 24 टोंक हैं। शुरू में भगवान बाहुबली का जिनालय एवं अंत में भगवान वासुपूज्य के प्रथम शिष्य ''मन्दर'' गणधर की चरणपादुका हैं। इसी अहाते में भगवान शांतिनाथ जिनमंदिर, भगवान महावीर जिनमंदिर एवं ध्यानस्थ मुद्रा में खड़े भगवान पार्श्वनाथ की सात फणों के सर्प वाली काले पाषाण की प्रतिमा वाला रमणीय काँच मंदिर है। इसी के पास कृत्रिम नहर से घिरे भव्य जलमंदिर में भगवान वासुपूज्य की दस टन वजन वाली सवा पन्द्रह फुट खड्गासन प्रतिमा विशाल कमल पर

विराजमान है। इस मंदिर के सामने एक बीसपंथी मंदिर भी है जिसमें मूलनायक भगवान वासुपूज्य स्वामी हैं।

4.2 श्री चंपापुर दिगंबर जैन सिद्ध क्षेत्र बीस पंथी मंदिर, नाथनगर, भागलपुर (बिहार) पिन–812002 फोन 8434126693, 9162072201

5. क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधाएँ: तीर्थयात्रियों के लिए आधुनिक सुविधासम्पन्न धर्मशाला है। जनहित में विद्यालय, चिकित्सालय एवं वाचनालय है। प्रबंधन समितिः श्री बंगाल, बिहार, उड़ीसा दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र समिति कोलकाता, (पश्चिम बंगाल) फोन नंबर – 8434126693, 9973343610

6. आवागमन के साधन

6.1 रेल मार्गः भागलपुर के लिए राजधानी पटना से सीधी ट्रेनें हैं। दिल्ली जाने के लिए विक्रमशिला, ब्रह्मपुत्र एक्सप्रेस, फरक्का एक्सप्रेस, सप्ताहिक एक्सप्रेस, गरीब रथ आदि ट्रेनें जाती हैं। इसके अलावा दिल्ली से पटना पहुंचकर स्थानीय ट्रेन से भागलपुर जाया जा सकता है। कोलकाता से इस शहर के लिए सीधी ट्रेन है। कोलकाता से आने के लिए दिल्ली हावड़ा रूट की ट्रेन लेकर लक्खीसराय स्थित कियूल जंक्शन से भी भागलपुर के लिए ट्रेन ली जा सकती है।

6.2 सड़क मार्गः भागलपुर बिहार के अन्य शहरों से सड़क के माध्यम से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है। यह राष्ट्रीय राजमार्ग 80 पर स्थित है। विक्रमशिला पुल के बन जाने से यह शहर बिहार के उत्तरी राज्यों से सीधा जुड़ गया है। भागलपुर का आंतरिक परिवहन ऑटो रिक्शा, रिक्शा, तांगा, ई–रिक्शा आदि पर निर्भर है। भागलपुर में उल्टापुल के पास बस टर्मिनल स्थित है, जहां से विभिन्न स्थानों के लिए बसें जाती है। जिसे कोयला डिपो के नाम से जानते है। यहाँ से आप नगरीय परिवहन की बस, टैक्सी अथवा ऑटो रिक्शा द्वारा चंपापुर पहुँच सकते हैं।

6.3 हवाई मार्गः जयप्रकाश नारायण हवाई अड्डा, पटना यहाँ से सबसे नजदीकी हवाई अड्डा है, जो भागलपुर स्टेशन से 120 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। गया एयरपोर्ट यहाँ से 135 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

7. समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र– शिखरजी – 205 किमी, कुंडलपुर 200 किमी, पावापुरी – 170 किमी, राजगीर – 180 किमी

11. सारनाथ

कितना सुन्दर तीर्थ क्षेत्र होगा ये जिसमें तीर्थंकर श्रेयांसनाथ भगवान के गर्भ, जन्म से लेकर उनके तप और केवलज्ञान कल्याणक हुए हों। इस तीर्थ क्षेत्र का अद्‌भुत माहात्म्य यहां वर्णित करने का एक छोटा सा प्रयास इस अध्याय में करते हैं ।

1. शहर के बारे में:

1.1 सारनाथ भारत के उत्तर प्रदेश राज्य के वाराणसी जिले के मुख्यालय वाराणसी, से लगभग 10 किलोमीटर पूर्व में स्थित प्रमुख तीर्थस्थल है।

1.2 सारनाथ में अशोक का चतुर्मुख सिंहस्तम्भ, धामेख स्तूप, चौखन्डी स्तूप, राजकीय संग्रहालय, जैन मन्दिर, चीनी मन्दिर, मूलंगधकुटीर और नवीन विहार इत्यादि दर्शनीय हैं। भारत का राष्ट्रीय चिह्न यहीं के अशोक स्तंभ के मुकुट की द्विविमीय अनुकृति है। मुहम्मद गोरी ने सारनाथ के पूजा स्थलों को नष्ट कर दिया था। सन 1905 में पुरातत्व विभाग ने यहां खुदाई का काम प्रारम्भ किया। उसी समय बौद्ध धर्म के अनुयायी और इतिहास के विद्वानों का ध्यान इधर गया। वर्तमान में सारनाथ एक तीर्थ स्थल और पर्यटन स्थल के रूप में लगातार वृद्धि की ओर अग्रसर है।

2. सारनाथ और जैन धर्म:

2.1 सारनाथ को जैन धर्म में 'सिंहपुर' कहा गया है और जैन धर्म के ग्यारहवें तीर्थंकर श्रेयांसनाथ जी का जन्म यहाँ पर हुआ था।

2.2 भगवान श्रेयांसनाथ का जन्म फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की द्वितीया को श्रवण नक्षत्र में सिंहपुरी में हुआ था। प्रभु के माता पिता बनने का सौभाग्य इक्ष्वाकु वंश के राजा विष्णुराज व पत्नी विष्णु देवी को प्राप्त हुआ था। इनके शरीर का वर्ण सुवर्ण (सुनहरा) और चिह्न गेंडा था। भगवान श्रेयांसनाथ तीर्थंकर के जन्म एवं तीन अन्य कल्याणकों के कारण यह प्राचीन काल से जैन

तीर्थ रहा है। यहाँ उनके गर्भ, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान ये चार कल्याणक हुए थे। विद्वानों का मत है कि तीर्थंकर श्रेयांसनाथ जी का जन्म स्थान होने के कारण ही इस स्थान का नाम ''सारनाथ' पड़ गया है।

2.3 तिलोयपण्णत्ति ग्रंथ में इस संबंध में निम्नलिखित उल्लेख मिलता है–

सीहपुरे सेयंसो विण्हु णरिंदेण वेणुदेवीए।
एक्कारसिए फग्गुण सिद पक्खे समणभेजादो।।४।५३६।।

अर्थात् भगवान श्रेयांसनाथ सिंहपुरी में पिता विष्णु नरेन्द्र और माता वेणुदेवी से फाल्गुन कृष्णा एकादशी के दिन श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न हुए।

2.4 भगवान श्रेयांसनाथ जी शुरु से ही वैरागी थे। लेकिन माता–पिता की आज्ञानुसार उन्होंने गृहस्थ जीवन को भी अपनाया और राजसी दायित्व को भी निभाया। श्रेयांसनाथ जी के शासनकाल के दौरान राज्य में सुख समृद्धि का विस्तार हुआ। लेकिन जल्द ही उन्होंने अपने पुत्र को उत्तराधिकारी बना वैराग्य धारण कर लिया। ऋतुओं का परिवर्तन देखकर भगवान को वैराग्य हुआ। 'विमलप्रभा' पालकी पर विराजमान होकर मनोहर नामक उद्यान में पहुँचे और फाल्गुन शुक्ल एकादशी के दिन हजार राजाओं के साथ दीक्षित हुए। माघ कृष्ण अमावस्या के दिन प्रभु केवली बने। श्रावण कृष्ण पक्ष की तृतीया तिथि को प्रभु श्रेयांसनाथ ने सम्मेद शिखर पर निर्वाण प्राप्त किया।

3. 4 कल्याणक की नगरी:

तीर्थंकर	कल्याणक	कौन कौन से
श्रेयांस नाथ जी	4	गर्भ, जन्म, तप और केवलज्ञान

4. सारनाथ के जैन मंदिर:

4.1 श्री दिगंबर जैन मंदिर (भगवान श्रेयांसनाथ जन्म स्थान), सिंहपुरी, सारनाथ, जिला – वाराणसी (उत्तर प्रदेश) पिन–221007 टेलीफोन–05278–232308

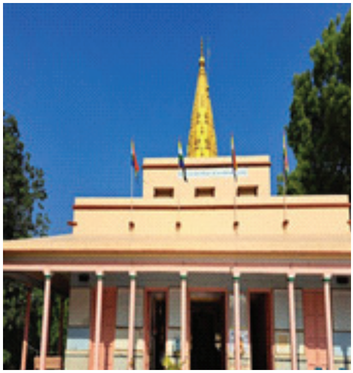

मंदिर के गर्भगृह में तीर्थंकर श्रेयांसनाथ जी की ढाई फिट ऊँची श्याम वर्ण की मनोज्ञ प्रतिमा विराजमान है। उसी वेदी में आगे एक छोटी श्वेतवर्ण की श्रेयांसनाथ की प्रतिमा है। भगवान की वेदी अत्यन्त कलापूर्ण है। मुख्यवेदी के बगल में नन्दीश्वर जिनालय का फलक है जिसमें 60 प्रतिमाएँ बनी हुई हैं यह भूगर्भ से प्राप्त हुई थीं। तीर्थंकर श्रेयांसनाथ जी का मंदिर अत्यन्त रमणीक स्थान पर स्थित है मंदिर के चारों तरफ एवं बाहर की हरियाली का दृश्य नयनाभिराम है।

4.2 श्री 1008 श्रेयांसनाथ दिगंबर जैन मंदिर, सिंहपुर, सारनाथ, जिला–वाराणसी

इस मंदिर का निर्माण 2015 से प्रारंभ हुआ था। 11 अप्रैल 2019 को वेदी निर्माण करा कर भगवान को विराजमान किया गया है। नित्य सुबह 8 से 10 बजे तक अभिषेक और पूजन होता हैं। यहाँ पर प्राचीन शास्त्रों का संग्रह भी किया गया है। निकट ही यात्रियों के रुकने के लिए धर्मशाला भी है।

5. क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधाए: रहने और भोजन की अच्छी सुविधा उपलब्ध है। टेलीफोन– : 09305686021

6. आवागमन के साधन

6.1 रेल मार्ग: नजदीकी बड़ा रेलवे स्टेशन वाराणसी कैन्ट है (6 किमी), जो सभी बड़े भारतीय शहरों से जुड़ा है। सारनाथ में खुद भी एक छोटा स्टेशन है जहाँ के लिए वाराणसी कैन्ट स्टेशन से हर दो तीन घंटे में रेलगाड़ी मिल जाती है, परन्तु कुछ ही एक्सप्रेस रेलगाड़ियाँ यहाँ रुकती हैं। वाराणसी सिटी स्टेशन से भी सारनाथ आसानी से पहुँचा जा सकता है।

6.2 सड़क मार्ग: लम्बी दूरी की बसें वाराणसी कैंट बस अड्डे तक पहुँचती हैं। यहाँ से आप नगरीय परिवहन की बस, टैक्सी अथवा ऑटो रिक्शा द्वारा सारनाथ पहुँच सकते हैं।

6.3 हवाई मार्ग: वाराणसी हवाई अड्डा (लालबहादुर शास्त्री हवाई अड्डा, बाबतपुर) यहाँ से सबसे नजदीकी हवाई अड्डा है, जो सारनाथ से 24 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। दिल्ली, कोलकाता और मुम्बई जैसे नगरों से यहाँ के लिए रोजाना उड़ाने उपलब्ध हैं। कुछ अंतर्राष्ट्रीय उड़ाने भी यहाँ उतरती हैं। सबसे अच्छी बात यह है कि आपको यहाँ उतरने के बाद मुख्य शहर वाराणसी नहीं जाना पड़ता क्योंकि वाराणसी से बाबतपुर हवाईअड्डा और सारनाथ दोनों ही जगहें लगभग एक ही दिशा में हैं और हवाईअड्डे से आप सीधे सारनाथ पहुँच सकते हैं।

7. समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र– वाराणसी – 10 किमी, चन्द्रपुरी – 20 किमी, प्रयागराज 130 किमी, रत्नपुरी – 230 किमी, अयोध्या – 220 किमी

8. वार्षिक मेले – फाल्गुन कृष्ण 11 व श्रावण शुक्ला 15 को

12. चन्द्रावती (चन्द्रपुरी)

हे चंद्रप्रभ भगवान, आपके चार चार कल्याणक से पवित्र हुआ यह तीर्थ हम सभी को भी अपने पवित्र आत्म स्वरुप के दिग्दर्शन में निमित्त होवे इसी भावना के साथ इस अध्याय को प्रारंभ करते हैं।

1. स्थान के बारे में: चंद्रावती गाँव भारत के उत्तर प्रदेश में वाराणसी जिले की वाराणसी तहसील में स्थित है। यह वाराणसी से 22 किमी दूर स्थित है।

2. चन्द्रपुरी और जैन धर्म:

2.1 वाराणसी से 22 किमी. दूर चन्द्रपुरी क्षेत्र है। सिंहपुरी से यह स्थान लगभग 20 किमी है। वर्तमान के चौबीस तीर्थंकरों में से आठवें तीर्थंकर भगवान चन्द्रप्रभ की जन्मभूमि के साथ–साथ यहाँ उनके चार कल्याणक हुए हैं।

2.2 भगवान चन्द्रप्रभ जी का जन्म पावन नगरी काशी जनपद के चन्द्रपुरी में पौष माह की कृष्ण पक्ष द्वादशी को अनुराधा नक्षत्र में हुआ था। इनके माता पिता बनने का सौभाग्य राजा महासेन और लक्ष्मणा देवी को मिला। इनके शरीर का वर्ण श्वेत (सफेद) और चिह्न चन्द्रमा था। इस संबंध में तिलोयपण्णत्ति में निम्नलिखित कथन मिलता है–

चन्दपहो चन्दपुरे जादो महसेण लाच्छेमइ आहिं।
पुस्सस्स किण्ह एयारसिए अणुराह णक्खत्ते।।४।५३३।।

अर्थात् चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र चन्द्रपुरी में पिता महासेन और माता लक्ष्मणा से पौष कृष्णा एकादशी को अनुराधा नक्षत्र में उत्पन्न हुए।

2.3 आचार्य गुणभद्र स्वामी ने उत्तरपुराण में चन्द्रप्रभ भगवान के दीक्षाकल्याणक के संबंध में लिखा है–

दिनद्वयोपवासित्वा वने सर्वर्तुकाह्वये।
पौषे मास्यनुराधायामेकादश्यां महीभुजाम्।।४५।२१६।।

–सर्वर्तुक वन में दो दिन के उपवास का नियम लेकर पौष कृष्णा एकादशी को एक हजार राजाओं के साथ दीक्षा धारण कर ली।

2.4 जम्बू द्वीप के भरतक्षेत्र में स्थित चन्द्रपुरी नगरी में आज से करीब 10 लाख वर्ष पूर्व जैनधर्म के वर्तमान चौबीसी के अष्टम तीर्थंकर भगवान् श्री चन्द्रप्रभ का जन्म हुआ था पिता इक्ष्वाकुवंशीय राजा महासेन तथा माता महारानी सुलक्षणा देवी थीं। माता के गर्भ में आने के छः मास पूर्व से लेकर जन्म होने तक इन्द्र की आज्ञा से धनकुबेर ने 15 माह तक रत्नों की वृष्टि की थी। मिति चैत कृष्ण 5 को ज्येष्ठा नक्षत्र में माता लक्ष्मणा ने रात्रि के प्रहर में हाथी–बैल आदि 16 स्वप्न देखे। पति से स्वप्नों का फल जानने के पश्चात् वे इस बात से भावगत हुई कि उनके गर्भ से तीर्थंकर का जन्म होने वाला है। अपने पूर्व भव में अहमिन्द्र नाम से विख्यात भगवान चन्द्रप्रभ ने जयन्त विमान से उतर कर इसी तिथि को माता के गर्भ में प्रवेश किया था।

चैत्र प्रथम पंचम दिन जानो, गर्भागम मंगल गुणखान।
मात लक्ष्मणा के उर आए, तजि दिवलोक चन्द्र भगवान।।
भषट नवमास रतन वरषाये, इन्द्र हुकूमतें धनद महान।
तिनके चरण कमल मैं पूजूं, अर्घ चढ़ाय करूँ नितध्यान।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णपंचम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नमः

माता ने नौ माह पश्चात् पौष कृष्ण 11 को अनुराधा नक्षत्र में मति–श्रुति एवं अवधि ज्ञानों से विभूषित पुत्र रत्न को जन्म दिया था। समस्त लोक आनंदित हो तथा क्षण भर के लिये नारकियों में भी सुख एवं शांति की अनुभूति की थी। सौधर्म इन्द्र ने मेरू पर्वत पर 1008 कलशों में क्षीर सागर के निर्मल जल से भगवान् का अभिषेक किया था।

2.5 भगवान श्री चन्द्रप्रभ 150 धनुष की ऊँचाई धारण किये हुये श्वेत वर्ण के थे। चिन्ह चन्द्रमा था। मिती पौष कृष्ण 11 को अनुराधा नक्षत्र में निर्ग्रंथ मुनि हो गये।

2.6 तीन माह की छोटी सी अवधि में ही उन्होंने फाल्गुन कृष्ण सप्तमी के दिन केवलज्ञान को प्राप्त किया और धर्मतीर्थ की रचना कर तीर्थंकर पद उपाधि प्राप्त की। देवताओं ने उत्सव मनाया। इन्द्र की आज्ञा पाकर कुबेर ने समवशरण की रचना की। भगवान की दिव्य ध्वनि से भव्य जीवों का कल्याण हुआ। भगवान के दत्त आदि 93 गणधर हुए।

2.7 भाद्रपद कृष्णा सप्तमी को भगवान श्री चन्द्रप्रभ ने ज्येष्ठा नक्षत्र में सन्ध्या समय सम्मेद शिखर पर निर्वाण (मोक्ष) प्राप्त किया। भगवान श्री चंद्रप्रभ के चरण कमल में बस यही भावना भाते हैं कि:

भवज्वलनसंभ्रान्तसत्त्वशशांतिसुधार्णवः।
देवश्चन्द्रप्रभः पुष्यात् ज्ञानरत्नाकरश्रियम्।।3।।

अन्वयार्थः संसाररूप अग्नि में भ्रमते हुए जीवों को अमृत के समुद्र के समान चन्द्रप्रभदेव हैं सो ज्ञानरूप समुद्र की लक्ष्मी को पुष्ट करें। –आचार्य शुभचंद्र विरचित ज्ञानार्णव

3. 4 कल्याणक की नगरी:

तीर्थंकर	कल्याणक	कौन कौन से
श्री चंद्रप्रभ	4	गर्भ, जन्म, तप और केवलज्ञान

4. चन्द्रावती के जैन मंदिर:

4.1 श्री चन्द्रावती दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र, चन्द्रपुरी, जिला–वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

भगवान चन्द्रप्रभ के जन्म, तप एवं केवलज्ञान कल्याणक स्थली क्षेत्र सुरम्य गंगातट पर चन्द्रावती गढ़ के भग्नावशेशों के बीच स्थित है। गंगा नदी के तट पर बना हुआ चंद्रप्रभ जिनालय स्थापत्य कला को सुशोभित कर रहा है वर्तमान में सुन्दर

जिनालय में श्वेत वर्ण के 45 सेमी पद्मासनस्थ श्री चन्द्रप्रभ स्वामी मूलनायक के रूप में विराजमान हैं। मंदिर का शिखर बहुत ही सुंदर बना हुआ है। यहां से गंगा नदी का मनोहारी दृश्य बहुत ही आकर्षक लगता है।

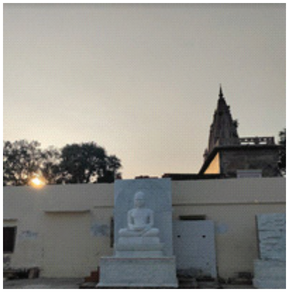

5. क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधाएँ: ठहरने और खाने की अच्छी सुविधा उपलब्ध है यात्रियों के ठहरने हेतु यहाँ दिगम्बर जैन अतिथि गृह उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त एक श्वेताम्बर धर्मशाला भी है।

प्रबन्ध व्यवस्था: श्री चन्द्रावती दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र, चंद्रावती, जिला – वाराणसी (उत्तर प्रदेश), पिन–221116 टेलीफोन–0542–2615316

6. आवागमन के साधन

6.1 रेल मार्ग: वाराणसी से 22 किमी. दूर चन्द्रावती क्षेत्र है। सिंहपुरी (सारनाथ) से यह स्थान लगभग 12 किमी. है। वाराणसी एक महत्वपूर्ण और प्रमुख रेल जंक्शन है। शहर पूरे देश के सभी महानगरों और प्रमुख शहरों से रेल सेवा से जुड़ा है।

वाराणसी स्टेशन (BSB) से कुछ महत्वपूर्ण ट्रेनें: वाराणसी – नई दिल्ली वंदे भारत एक्सप्रेस (12435); डिब्रूगढ़ – नई दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस (20505); गोरखपुर – बान्द्रा टर्मिनस हमसफर एक्सप्रेस (19092); पाटलिपुत्र – उदयपुर सिटी हमसफर एक्सप्रेस (19670); गंगा सतलज एक्सप्रेस (13307); कुम्भ एक्सप्रेस (12369); गंगा कावेरी एक्सप्रेस (12669); सियालदह – जम्मू तवी हमसफर एक्सप्रेस (22317); काशी पटना जनशताब्दी एक्सप्रेस (15125)।

6.2 सड़क मार्ग: वाराणसी से निजी टैक्सी सेवा उपलब्ध हैं।

6.3 हवाई मार्ग: लाल बहादुर शास्त्री विमानक्षेत्र 40 किमी की दूरी पर स्थित है अधिकांश प्रमुख देशीय विमान सेवाएँ यहां से संचालित होती है।

7. समीपवर्ती कल्याणक क्षेत्र– श्री सिंहपुरीजी – 18 किमी, वाराणसी – 30 किमी, अयोध्या – 235 किमी, प्रयागराज – 150 किमी

8. वार्षिक मेला – चैत्र कृष्णा 5 को

13. कम्पिल

परम पूज्य विमलनाथ भगवान के चार चार कल्याणक जिस पावन धरा से हुए हों ऐसी पावन धरा तो संसारी दुखों से,राग द्वेष से,पीड़ित जीवों को बार बार दर्शन वंदन करने योग्य है। इस पवित्र तीर्थ क्षेत्र की वंदना अनादि काल से दूषित हुई हमारी बुद्धि को विमल कर देवे इस भावना के साथ इस तीर्थ क्षेत्र का वर्णन करते हैं।

1. कम्पिल के बारे में:

1.1 कम्पिल भारत के उत्तर प्रदेश राज्य के फर्रुखाबाद जिले में स्थित एक नगर है। कम्पिल फर्रुखाबाद से 45 किमी दूरी पर स्थित है। यह बदायूँ और फर्रुखाबाद के बीच गंगा तट पर स्थित एक ऐतिहासिक नगर है जिसका प्राचीन नाम काम्पिल्य था। यह उत्तर पूर्व रेलवे लाइन पर कायमगंज रेलवे स्टेशन से लगभग 20 किलोमीटर की दूरी पर है।

1.2 कम्पिल या काम्पिल्यपुरी भारत के अतिप्राचीन वंदनीय और दर्शनीय स्थानों में से एक है। जैन शास्त्रों में तो इसका इतिहास आता ही है, वेदों में भी "काम्पिल्यपुरी" के नाम से इसकी प्रसिद्धि है। कहीं–कहीं इसका नाम भोगवती और माकन्दी भी आया है। महाभारत में इसका उल्लेख किया गया है। कम्पिल पांचाल देश की राजधानी थी।

2. कम्पिल और जैन धर्म:

2.1 वर्तमान के चौबीस तीर्थंकरों में से 13वें तीर्थंकर 1008 भगवान विमलनाथ के यहाँ चार कल्याणक हुए हैं।

2.2 पिता श्री महाराज कृतवर्मा के राजमहल एवं माता जयश्यामा के आंगन में 15 माह तक कुबेर ने रत्न वृष्टि की तथा सौधर्म इन्द्र ने कम्पिल नगरी में माघ शुक्ल चतुर्थी को आकर तीर्थंकर के जन्मकल्याणक का महामहोत्सव मनाया था। युवावस्था में श्री विमलनाथ जी का विवाह हुआ और

दीर्घकाल तक राज्य संचालन कर उन्होंने माघ शुक्ल चतुर्थी को ही अपरान्ह काल में सहेतुक वन में जैनेश्वरी दीक्षा लेकर मोक्षमार्ग का प्रवर्तन किया था। उसके बाद उसी कम्पिल के उद्यान में ही माघ शुक्ला षष्ठी को केवलज्ञान उत्पन्न होने पर समवसरण की रचना हुई थी। तब उनके दिव्यध्वनि रुपी अमृत से भव्य जीवों का संसार ताप नाश को प्राप्त हुआ।

त्रय वर्ष रहे छद्मस्था, प्रभु मौन रहे निज स्वस्था।
वदि माघ सु षष्ठी आई प्रभु केवलज्ञान उपाई।।
पहले पाटल तरु नीचे, फिर अधर गगन में पहुँचे।
जय विमलनाथ क्षेमंकर, जय त्रयोदशम् तीर्थंकर।।

ऊँ ही माघ शुल्कषष्ठयां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय नमः

2.3 कम्पिल में एक अघातिया टीला है जिसके बारे में यह अनुश्रुति है कि यहीं पर भगवान विमलनाथ ने घातिया कर्मों का नाशकर केवलज्ञान प्राप्त किया था। यह टीला किसी प्राचीन जैन मंदिर का ध्वंसावशेष है। खुदाई होने पर यहाँ कभी–कभी जैन मूर्तियाँ मिल जाती हैं। कहते हैं कि भगवान आदिनाथ, पार्श्वनाथ एवं महावीर स्वामी के समवशरण से भी यह धरती पावन हो चुकी है। महासती द्रौपदी का जन्म एवं स्वयंवर भी यहीं हुआ था जिसकी स्मृति में आज भी वहाँ ''द्रौपदी कुण्ड'' बना हुआ है।

2.4 भगवान विमलनाथ के कल्याणकों के अतिरिक्त यहाँ हरीषेण चक्रवर्ती भी हुए जिनके पिता पद्मनाभ ने नगर के मनोहर उद्यान में अनन्तवीर्य जिनेन्द्र से मुनि दीक्षा ली और दीक्षा वन में ही तप करके केवलज्ञान प्राप्त किया। आचार्य रविषेण ने हरिषेण चक्रवर्ती के संबंध में पद्मपुराण में कहा है कि– ''कांपिल्य नगर में इक्ष्वाकुवंशी राजा हरिकेतू की रानी के हरिषेण नाम का दसवाँ प्रसिद्ध चक्रवर्ती हुआ। उसने अपने राज्य की समस्त पृथ्वी को जिनप्रतिमाओं से अलंकृत किया था तथा भगवान मुनिसुव्रतनाथ के तीर्थ में सिद्धपद प्राप्त किया था।''

2.5 इसी प्रकार यहीं पर बारहवें चक्रवर्ती ब्रह्मदत्त भी हुए जिन्होंने सम्पूर्ण भरतक्षेत्र पर विजय प्राप्त कर कम्पिल को राजनीतिक केन्द्र बनाया था। भगवान नेमिनाथ और पार्श्वनाथ का अन्तर्वर्ती काल ब्रह्मदत्त का माना जाता है। विषयलम्पटी होने के कारण चक्रवर्ती ब्रह्मदत्त के नरक में जाने का उल्लेख है।

3. 4 कल्याणक की नगरी:

तीर्थंकर	कल्याणक	कौन कौन से
श्री विमलनाथ	4	गर्भ, जन्म, तप और केवलज्ञान

4. कम्पिल के जैन मंदिर:

4.1 श्री विमलनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, कम्पिलजी, जिला–फर्रूखाबाद (उत्तर प्रदेश)

4.1.1 यह 1400 वर्ष से भी प्राचीन तथा देवों द्वारा निर्मित एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसमें गंगा नदी के गर्भ से प्राप्त चतुर्थकालीन श्यामवर्णी भगवान विमलनाथ की प्रतिमा विराजमान है और दिगम्बर जैन शिल्पकला की प्राचीनता का दिग्दर्शन करा रही है। वहाँ भगवान विमलनाथ की विशाल खड्गासन प्रतिमा भी विराजमान है।

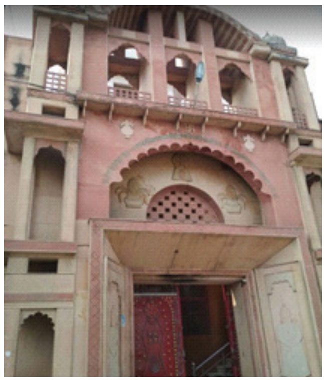

4.1.2 वर्तमान समय में कम्पिल जी तीर्थक्षेत्र पर जैन आबादी न होने से यह क्षेत्र जैनत्व स्तर पर विकास की ओर उन्मुख नहीं हो सका है किन्तु वहाँ की कार्यकारिणी ने कुछ नूतन योजनाएँ प्रारंभ की हैं ताकि तीर्थक्षेत्र का विकास और विस्तार होकर अनूठा एवं अनुपम ध्यान–आराधना का स्थल बन सके।

4.1.3 कम्पिलानगरी प्रसिद्ध स्थान सांस्कृतिक केन्द्र होने के कारण यहाँ अनेक महत्वपूर्ण धार्मिक और सांस्कृतिक घटनाएँ घटी हैं। भगवान विमलनाथ की जन्मभूमि ऐतिहासिक नगरी काम्पिल्यपुरी को शत–शत नमन।

5. क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधाएँः ठहरने और खाने की अच्छी सुविधा उपलब्ध है। यात्रियों के ठहरने हेतु यहाँ तीन दिगम्बर जैन अतिथि गृह उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त पर्यटन विभाग की ओर से पर्यटकों के लिए एक आधुनिक धर्मशाला बनी है। हिन्दुओं तथा जैनियों के ऐतिहासिक धार्मिक स्थानों से प्रभावित होकर भारत सरकार ने कम्पिल जी को पर्यटन केन्द्र

घोषित कर दिया है तथा उसके विकास हेतु सरकारी स्तर पर कई योजनाएँ चल रही हैं।

प्रबन्ध व्यवस्था

संस्था – श्री विमलनाथ दि. जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी कम्पिलजी, तहसील – कायमगंज, जिला–फर्रुखाबाद (उत्तरप्रदेश), पिन–209505 सम्पर्क: 9149379003, 8896073794

6. आवागमन के साधन

6.1 रेल मार्ग: कायम गंज रेलवे स्टेशन (स्टेशन कोड: KMJ) कम्पिलजी से 8 किमी दूर है। **कुछ महत्वपूर्ण ट्रेनें:** फर्रुखाबाद – कासगंज एक्सप्रेस (15041/15042); लखनऊ – कासगंज पैसेंजर (55325/55326)।

6.2 सड़क मार्ग कम्पिल नगर फर्रुखाबाद से 45 किमी, कायमगंज तहसील से 10 किमी तथा आगरा से 150 किमी की दूरी पर स्थित है। यह सड़क मार्ग से भली भांति जुड़ा हुआ है।

6.3 हवाई मार्ग निकटतम हवाई अड्डा दिल्ली है जो कि 300 किमी की दूरी पर है।

7. समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र– शौरीपुर बटेश्वर – 130 किमी, अहिच्छेत्र रामनगर – 100 किमी, मरसल गंज–125 किमी, मंङ्गलायतन–175 किमी।

8. वार्षिक मेले– चैत्र कृष्णा अमावस्या, अश्विन कृष्णा दो को मेले लगते है। चैत सुदी पड़वा को वार्षिक रथयात्रा का आयोजन होता है।

14. श्रावस्ती

जिनके नाम के स्मरण मात्र से पाप डरकर भाग जाते हैं, कर्मों के बंधन ढीले पड़ जाते हैं, असंभव सा लगने वाला मोक्ष मार्ग भी सम्भव लगने लगता है, ऐसे परम पूज्य श्री संभवनाथ भगवान के चार चार कल्याणक जिस तीर्थक्षेत्र से हुए हों उसकी वंदना तो बारंबार करनी चाहिए। इस पवित्र तीर्थ का वर्णन करने के कार्य को श्री संभवनाथ भगवान के चरणों में नमोस्तु अर्पित करते हुए प्रारम्भ करते हैं।

1. श्रावस्ती के बारे में:

1.1 श्रावस्ती भारत के उत्तर प्रदेश राज्य के गोंडा–बहराइच जिलों की सीमा पर स्थित जैन तीर्थ स्थान है। गोंडा – बलरामपुर से 12 मील पश्चिम में आधुनिक 'सहेत–महेत' गाँव ही श्रावस्ती है। पहले यह कौशल देश की दूसरी राजधानी थी।

1.2 अनुश्रुतियों के अनुसार सूर्यवंशी राजा श्रावस्त के नाम पर इस नगरी का नामकरण कर श्रावस्ती नाम की संज्ञा दी गयी, तब से ये इलाका श्रावस्ती के नाम से जाना जाता है।

2. श्रावस्ती और जैन धर्म:

2.1 तृतीय तीर्थंकर भगवान संभवनाथ के चार कल्याणकों से पवित्र ''श्रावस्ती'' तीर्थ उत्तर प्रदेश के बलरामपुर–बहराइच रोड पर स्थित है। अयोध्या से यह 110 किमी. है तथा लखनऊ से लगभग 160 किमी. है।

2.2 चौबीस तीर्थंकर महापुराण में वर्णित है कि भगवान संभवनाथ पूर्वभव में विदेहक्षेत्र में क्षेमपुरी नामक सुन्दर नगरी के राजा थे, उनका नाम विमलवाहन था। भगवान के जन्म के पूर्व भरतक्षेत्र की श्रावस्ती नगरी के राजमहल में दिव्य रत्नों की वर्षा होने लगी, नगर में आनन्दाश्चर्य छा गया। उस नगरी के

महाराजा दृढ़राज और महारानी सुषेणा थीं। छह मास पश्चात् स्वर्ग की आयु पूर्ण होने पर उन अहमिन्द्र का जीव सुषेणा देवी की कुक्षि में अवतरित हुआ। उस समय महारानी ने उत्तम सोलह स्वप्न देखे। इन्द्रों ने आकर तीसरे तीर्थंकर के माता पिता का सम्मान किया, प्रशंसा की और देवलोक की दिव्य वस्तुएँ भेट कीं। छप्पन कुमारिका देवियाँ आकर माता की सेवा करने लगीं।

फाल्गुन शुक्ल अष्टमी प्यारी, मात सुसेना है अवतारी।
ग्रैवेयक से आये स्वामी, माथ नवाऊँ अन्तर्यामी।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लाष्टम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय नमः

2.3 कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को तीर्थंकर संभवनाथ का जन्म हुआ और तीनों लोक हर्ष विभोर हो गये। नरक के जीवों ने भी क्षणभर साता का अनुभव किया। समस्त स्वर्गलोक मंगलवाद्यों के आनन्दमय कोलाहल से गुंजायमान हो उठा और देवगण भरतक्षेत्र में तीसरे तीर्थंकर का जन्मोत्सव मनाने हेतु हर्ष सहित श्रावस्ती नगरी में आये। मेरुपर्वतपर जन्माभिषेक के पश्चात् इन्द्र ने भक्तिपूर्वक स्तुति की।

2.4 60 लाख वर्ष पूर्व की आयु, सोने से तपा रंग, 400 धनुष ऊंचा कद था। 15 लाख वर्ष पूर्व के कुमार काल के बाद 44 लाख वर्ष पूर्व 4 पूर्वांग तक राज्य करने के बाद एक दिन राजमहल की छत से आकाश में उमड़ते–घुमड़ते बादलों का विनाश देखकर वैराग्य की भावना बलवती हो गई।

2.5 मगसिर पूर्णिमा को राजपाट त्यागकर ज्येष्ठा नक्षत्र में सहेतुक वन में अपराह्न काल में श्रावस्ती नगर के उद्यान में पंचमुष्टि केशलोंच कर कठोर तप में लीन हो गये। आपको देख एक हजार और राजाओं ने राजपाट छोड़ आप ही के साथ दीक्षा ग्रहण कर ली। तीन दीक्षापोवास के बाद महाराज श्री सुरेन्द्र दत्तजी ने गाय के दूध से बनी खीर का पहला आहार दिया। आप ने दीक्षा के साथ ही मौन धारण कर लिया था और 14 वर्षों तक कठोर तपस्या की।

2.6 फिर वह पावन दिन आया कार्तिक कृष्ण चतुर्थी जब आपको केवलज्ञान की प्राप्ति ज्येष्ठा नक्षत्र में श्रावस्ती नगरी के सहेतुक वन में शालवृक्ष के नीचे संध्या के समय हुई। अवधिज्ञान से सौधर्मेन्द्र को जानकारी मिली, तुरंत कुबेर को आज्ञा दी और ग्यारह योजन विस्तार के समवसरण की रचना कर दी। आपका एक लाख पूर्व चार पूर्वांग चौदह वर्षों का केवलीकाल रहा। प्रमुख गणधर चारुदत्त के साथ 105 गणधर, दो लाख ऋषि, 1150 पूर्वधर मुनि, 1,29,300 शिक्षक मुनि, 9400 अवधिज्ञानी मुनि, 15 हजार केवली, 29,800 विक्रियाधारी मुनि, 12,150 विपुलमति ज्ञानधारी मुनि, 12 हजार वादी मुनि, राजा सत्यवीर्य सहित 3 लाख श्रावक, धर्मश्री प्रमुख आर्यिका सहित 3 लाख 3 हजार आर्यिकायें, 5 लाख श्राविकायें समोशरण में दिव्य ध्वनि का लाभ लेती थी।

2.7 श्री सम्मेदशिखरजी के धवल कूट से चैत्र शुक्ल षष्ठी को सायंकाल में संपूर्ण योगनिरोध करके पंचमगति अर्थात् सिद्धपद को प्राप्त हुए। आपका तीर्थ प्रवर्तन काल दस लाख करोड़ सागर तथा 4 पूर्वांग वर्ष का रहा।

2.8 श्रावस्ती प्राचीन भारत की प्रसिद्ध नगरी थी। श्रावस्ती का दूसरा नाम कुणाल नगरी था। यह अचिरावती (राप्ती) नदी के किनारे बसी थी। भगवान संभवनाथ का समवसरण भी सर्वप्रथम यहीं रचा गया था, यहीं से उन्होंने धर्मतीर्थ का प्रवर्तन किया था। उत्तरापथ के प्रमुख राज–मार्ग पर स्थित होने के कारण श्रावस्ती व्यापार का एक प्रमुख केन्द्र थी। इसकी ख्याति चारों ओर फैली हुई थी। जैन आगमों में श्रावस्ती के अनेक संदर्भ मिलते हैं। यहां बड़ी संख्या में मन्दिरों, स्तूपों और विहारों का निर्माण हुआ था। मौर्य सम्राट सम्प्रति ने यहां बड़ी संख्या में मन्दिर स्तूप तथा विहार बनवाए।

2.9 यहाँ एक बहुत प्राचीन खण्डहर है जो भगवान संभवनाथ की जन्मस्थली (महल) का प्रतीक माना जाता है। पुरातत्व विभाग के अधिकार में यह खण्डहर है अतः इस स्थल पर कोई चरणपादुका आदि का निर्माण भी नहीं हो सका

है। श्रद्धावश जैन यात्री वहाँ जाकर टीले का दर्शन करते हैं और उसे भगवान संभवनाथ का प्राचीन महल मानकर मस्तक झुकाकर चले जाते हैं।

2.10 सन् 1995 में यहाँ नवीन मंदिर का निर्माण भी हुआ है जिसमें सामने बीच की वेदी में भगवान संभवनाथ के अतिरिक्त दो पद्मासन तथा दो खड्गासन प्रतिमाएँ हैं तथा तीन ओर दीवार में चौबीस तीर्थंकरों की पद्मासन प्रतिमाएँ अलग–अलग वेदियों में विराजमान हैं। मंदिर का शिखर सुन्दर नये ढंग का है जिसमें सबसे ऊपर चार दिशाओं में चार प्रतिमाएँ विराजमान हैं।

3. 4 कल्याणक की नगरी:

तीर्थंकर	कल्याणक	कौन कौन से
श्री संभवनाथ	4	गर्भ, जन्म, तप और केवलज्ञान

4. श्रावस्ती के जैन मंदिर:

4.1 श्री 1008 संभवनाथ दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र, खरगूपुर, श्रावस्ती (उत्तर प्रदेश) फोन: 271805 9415017824, 9415072418, 9415565337

4.2 श्री प्राचीन जैन मंदिर श्री संभवनाथ जी, राजगढ़ गुलहरिया, श्रावस्ती (उत्तर प्रदेश) 271805

यहाँ एक बहुत प्राचीन खण्डहर है जो भगवान संभवनाथ की जन्मस्थली (महल) माना जाता है। श्रद्धावश जैन यात्री वहाँ जाकर टीले का दर्शन करते हैं और उसे संभवनाथ का प्राचीन महल मानकर मस्तक झुकाकर चले जाते हैं।

5. क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधाएँ: ठहरने और खाने की अच्छी सुविधा उपलब्ध है यात्रियों के ठहरने हेतु यहाँ दिगम्बर जैन अतिथि गृह उपलब्ध हैं। एक श्वेताम्बर मंदिर और धर्मशाला भी है।

प्रबन्ध व्यवस्था – श्री दिगम्बर जैन श्रावस्ती तीर्थक्षेत्र कमेटी, श्रावस्ती (उत्तर प्रदेश) **सम्पर्कः** 9415017824, 9415072418, 9415565337

6. आवागमन के साधन

6.1 रेल मार्गः निकटतम रेलवे स्टेशन बलरामपुर (स्टेशन कोड– BLP) है जो श्रावस्ती से 17 किलोमीटर है। फिर भी, गोंडा रेलवे स्टेशन एक बेहतर विकल्प है।

कुछ महत्वपूर्ण ट्रेनें: (गोंडा जंक्शन–GD): मुजफ्फरपुर – आनंद विहार टर्मिनल गरीब रथ एक्सप्रेस (12211), मुंबई लोकमान्य टिळक टर्मिनस – गोरखपूर विशेष भाडे वातानुकूलित होळी विशेष (05060), चम्पारण हमसफर एक्सप्रेस (15705), आनंद विहार टर्मिनल – गोरखपुर हमसफर एक्सप्रेस (12596), मुजफ्फरपुर – पोरबंदर एक्सप्रेस (19270), अवध असम एक्सप्रेस (15909), नई दिल्ली – न्यू जलपाईगुड़ी सुपरफास्ट एक्सप्रेस (12524), श्री माता वैष्णो देवी कटड़ा – कामाख्या साप्ताहिक एक्सप्रेस (15656)

6.2 सड़क मार्ग: श्रावस्ती सड़क मार्ग द्वारा उत्तर प्रदेश के बाकी हिस्सों से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। निकटतम मेगा टर्मिनस गोंडा में है जो कि शहर श्रावस्ती से 50 किलोमीटर दूर है।

6.3 हवाई मार्ग: श्रावस्ती से निकटतम हवाई अड्डा लखनऊ है जो कि श्रावस्ती से लगभग 170 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

7. समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र– अयोध्या – 100 किमी, रतनपुरी– 130 किमी, प्रयागराज – 270 किमी,

8. वार्षिक मेले – कार्तिक पूर्णिमा गंगा स्नान पर भगवान संभवनाथ के जन्म कल्याणक का विशेष आयोजन मेले के रूप में किया जाता है। इस अवसर पर रथ यात्रा होती है। चैत्र शुक्ल षष्ठी को श्री जी का निर्वाणोत्सव बड़ी ही धूमधाम से मनाया जाता है।

15. रौनाही (रतनपुरी)

धर्मनाथ भगवान के चार– चार कल्याणकों से पवित्र हुई रतनपुरी अपने नाम को सार्थक कर रही है, सच ही है जहां साक्षात तीर्थंकर धर्मनाथ भगवान के गर्भ जन्म कल्याणक हुए हों, भगवान रत्नत्रय धारण कर अपने स्वरुप में लीन हो गए हों और केवलज्ञान उपजाने के पश्चात् भव्य जीवों पर दिव्य ध्वनि रुपी अमृत की वर्षा हुई हो। ऐसी भूमि का नाम रतनपुरी सार्थक ही है। आइए इस पवित्र तीर्थ क्षेत्र की वंदना करते हैं।

1. रतनपुरी के बारे में:

जैनधर्म के पन्द्रहवें तीर्थंकर श्री धर्मनाथ भगवान की जन्मभूमि "रतनपुरी" तीर्थ अयोध्या से 24 किमी. दूर है। श्री धर्मनाथ भगवान के जन्म से पवित्र रतनपुरी नगरी वर्तमान में अयोध्या जिले की सोहावल तहसील के सनाहा उपरहार गाँव में स्थित है। तीर्थ का एक नाम "रौनाही" भी है, इसी नाम से वर्तमान में तीर्थ की प्रसिद्धि सार्थक है।

2. रतनपुरी और जैन धर्म:

2.1 इस पवित्र भूमि पर धर्मनाथ भगवान के चार कल्याणक हुए हैं–गर्भ, जन्म, तप और केवलज्ञान। केवलज्ञान होने के पश्चात् भगवान् का प्रथम समवसरण यहीं लगा था, उनकी प्रथम दिव्यध्वनि यहीं खिरी थी और धर्मचक्र का प्रवर्तन भी यहीं से हुआ था। प्रभु का दिव्यध्वनि रुपी अमृत भव्य जीवों ने खूब पिया और अपने संसार का अभाव किया। सोचिए कितना अद्भुत दृश्य होगा जब प्रभु की दिव्यध्वनि का जीव श्रवण कर रहे होंगे। दिव्यध्वनि की महिमा बतलाते हुए पंडित श्री भागचंद जी लिखते हैं

धन्य धन्य है घड़ी आज की, जिनध्वनि श्रवण परी।
तत्त्व प्रतीति भई अब मेरे, मिथ्या दृष्टि टरी ।।टेक।।

जड़ तें भिन्न लखी चिन्मूरत, चेतन स्वरस भरी।
अहंकार ममकार बुद्धि पुनि, पर में सब परिहरी ।।1।।
पाप पुण्य विधि बंध अवस्था, भासी अति दुखभरी।
वीतराग विज्ञान ज्ञानमय, परिणति अति विस्तरी ।।2।।
चाह दाह विनसी बरसी, पुनि समता मेघ झरी।
बाढ़ी प्रीति निराकुल पद सों, 'भागचंद' हमरी ।।3।।

2.2 तीर्थंकर भगवान के जन्म में पन्द्रह माह तक रत्नवृष्टि होने से उसका "रतनपुरी" नाम सार्थक तो हुआ ही, एक कन्या मनोवती की दर्शन प्रतिज्ञा के कारण उस तीर्थ ने अपने नाम की प्रसिद्धि और भी फैला दी है। हस्तिनापुर के सेठ महारथ की पुत्री मनोवती ने एक बार दिगम्बर मुनि से नियम लिया था कि "जब मैं जिनमंदिर में भगवान के समक्ष गजमोती चढ़ाकर दर्शन करूँगी, तब भोजन करूँगी।" पीहर में तो उसका नियम अच्छी तरह पल गया किन्तु बल्लभपुर के सेठ हेमदत्त के पुत्र बुद्धिसेन से जब उसका विवाह हो गया, तब उसके नियम के पालने से समस्या उत्पन्न हो गई। एक बार वह पीहर गई हुई थी कि इधर ससुराल वालों ने उसके पति को घर से निकाल दिया पुनः बुद्धिसेन ने हस्तिनापुर आकर अपनी पत्नी मनोवती को एकान्त में सारा हाल बताया और दोनों अपने भाग्य की परीक्षा करने हेतु वन की ओर चल पड़ते हैं।

2.3 चलते–चलते चार दिन बाद ये लोग "रतनपुरी" में आ गये। मनोवती बराबर उपवास करती रही और पति को कुछ भी ज्ञात न हुआ। इसी प्रकार से उसके 7 दिन उपवास में निकल गये, तब एक दिन वह प्रभु का ध्यान लगाकर प्रार्थना करने लगी–"प्रभो! जब आपकी भक्ति से सम्पूर्ण मनोरथ सफल हो जाते हैं तब क्या मेरी छोटी–सी प्रतिज्ञा पूर्ण नहीं होगी?" कुछ देर बाद उसका पैर नीचे को धंसा और उसने शिला उठाई तो सीढ़ियों से नीचे उतरने पर उसे विशाल जिनमंदिर दिखाई दिया, वहीं पर गजमोती के पुंज देखकर मनोवती बहुत प्रसन्न हुई और उसने अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण कर आठवें

दिन अन्नजल ग्रहण किया।

2.4 इस प्रकार ''दर्शन प्रतिज्ञा'' के अचिन्त्य माहात्म्यस्वरूप मनोवती की प्रेरणा से बुद्धिसेन ने इसी ''रतनपुरी'' नगरी में एक हजार आठ शिखरों वाला विशाल मंदिर बनवाया था किन्तु वर्तमान में वहाँ उस इतिहास के कोई भी अवशेष उपलब्ध नहीं हैं, न ही वहाँ कोई जैन घर है। बस्ती में एक मंदिर है जहाँ भगवान धर्मनाथ की सफेद पाषाण की 3 फुट ऊंची पद्मासन प्रतिमा है। जिसकी प्रतिष्ठा विक्रम सं. 2007 में हुई थी।

2.5 रौनाही नाम क्यों पड़ा?– कहते हैं कि आज से 9 लाख वर्ष पूर्व मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जब लक्ष्मण और सीता के साथ वनवास को जाने लगे थे तब यहाँ आकर उन्होंने अयोध्या की सारी जनता को वापस जाने का आदेश देकर उनसे विदा ली थी इसलिए उस समय राम के वियोग के दुःख से सब लोग यहाँ इतना अधिक रोए थे कि इस स्थान का नाम ही तब से रौनाही पड़ गया।

3. 4 कल्याणक की नगरी:

तीर्थंकर	कल्याणक	कौन कौन से
श्री धर्मनाथ	4	गर्भ, जन्म, तप और केवलज्ञान

4. रतनपुरी के जैन मंदिर: यहाँ दो दिगम्बर जैन मंदिर हैं

4.1 श्री 1008 भगवान धर्मनाथ दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र रतनपुरी (रौनाही), सनाहा उपरहार, तहसील–सोहावल, जिला–अयोध्या (उ.प्र.) 224182

4.2 श्री 1008 भगवान धर्मनाथ दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र (चरण दर्शन), रतनपुरी (रौनाही), सनाहा उपरहार, तहसील –सोहावल, जिला–अयोध्या (उ.प्र.) 224182

श्री धर्मनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक स्थान

5. क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधाएँ: ठहरने और खाने की अच्छी सुविधा उपलब्ध है प्रबन्धक श्री सुरेन्द्र कुमार जैन 09935223185

6. आवागमन के साधन

6.1 रेल मार्ग: सोहावल निकटतम रेलवे स्टेशन है (स्टेशन कोडः SLW) अयोध्या जंक्शन (AY) निकटतम प्रमुख रेलवे स्टेशन है। उत्तर प्रदेश और देश के लगभग तमाम शहरों से यहां पहुंचा जा सकता है।

6.2 सड़क मार्ग: लखनऊ से अयोध्या जाते समय सोहावल अयोध्या से सिर्फ 20 किमी पहले है। मंदिर मुख्य सड़क (रोहानी थाना) से 1 किमी दूर है। यहाँ से क्षेत्र तक पक्का मार्ग है। उत्तर प्रदेश सड़क परिवहन निगम की बसें लगभग सभी प्रमुख शहरों से अयोध्या के लिए चलती हैं। राष्ट्रीय और राज्य राजमार्ग से भी अयोध्या जुड़ा हुआ है।

6.3 हवाई मार्ग: लखनऊ अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा निकटतम हवाई अड्डा है जो अयोध्या से 152 किलोमीटर दूर है।

7. समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र– अयोध्या – 20 किमी, श्रावस्ती – 110 किमी, वाराणसी – 230 किमी, प्रयागराज – 180 किमी, कौशांबी – 230 किमी,

16. काकन्दी

पुष्पदंतनाथ भगवान के चार–चार कल्याणक से पवित्र हुआ यह तीर्थ बारंबार वंदनीय है। धन्य हैं प्रभु पुष्पदंत जिनके चरण रज से यह क्षेत्र, तीर्थ क्षेत्र बना। आइए इस अध्याय के माध्यम से इस तीर्थ क्षेत्र की वंदना प्रारम्भ करते हैं इस भावना के साथ कि शीघ्रातिशीघ्र साक्षात इस काकन्दी तीर्थ की वंदना करने का सौभाग्य मिले।

1. **काकन्दी के बारे में:** जैनधर्म के नवमें तीर्थंकर "श्री पुष्पदन्तनाथ" के जन्म से पवित्र काकन्दी नगरी वर्तमान में "खुखुन्दू" नाम से भी प्रसिद्ध है। पूर्वी उत्तर प्रदेश में गोरखपुर के निकट देवरिया जिले में "खुखुन्दू" नाम का छोटा सा शहर है। खुखुन्दू देवरिया शहर से लगभग 15 किलोमीटर पूर्व में है।

2. काकन्दी और जैन धर्म:

2.1 जैन परम्परा में अत्यन्त प्राचीन काल से "काकन्दी" का नाम बड़ी श्रद्धा से लिया जाता है। यहाँ भगवान पुष्पदंत के गर्भ–जन्म कल्याणक तो हुए ही हैं तथा इसी नगर के पुष्पक वन में उनका दीक्षा कल्याणक भी हुआ था पुनः कभी किसी काल में यह पुष्पक वन ही "ककुभ" नाम से कहलाने लगा और एक अलग तीर्थधाम बन गया। धीरे–धीरे काल के थपेड़ों ने दोनों ही तीर्थों को खण्डहरों के रूप में परिवर्तित कर दिया जो प्राचीन संस्कृति को अपनी मूक वाणी में बतला रहे हैं।

2.2 पुष्करार्ध द्वीप के पूर्व दिग्भाग में जो मेरू पर्वत है उसके पूर्व विदेहक्षेत्र में सीता नदी के उत्तर तट पर पुष्कलावती नाम का एक देश है उसकी पुण्डरीकिणी नगरी में महापद्म नाम का राजा राज्य करता था। किसी दिन भूतहित जिनराज की वंदना करके धर्मोपदेश सुनकर विरक्तमना राजा दीक्षित हो गया। ग्यारह अंगरूपी समुद्र का पारगामी होकर सोलहकारण भावनाओं से

तीर्थंकर प्रकृति का बंध कर लिया और समाधिमरण के प्रभाव से प्राणत स्वर्ग का इन्द्र हो गया।

2.3 पंचकल्याणक वैभव–इस जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र की काकन्दी नगरी में इक्ष्वाकुवंशीय काश्यप गोत्रीय सुग्रीव नाम का क्षत्रिय राजा था, उनकी जयरामा नाम की पट्टरानी थी। उन्होंने फाल्गुन कृष्ण नवमी के दिन 'प्राणतेन्द्र' को गर्भ में धारण किया और मार्गशीर्ष शुक्ला प्रतिपदा के दिन पुत्र को जन्म दिया। इन्द्र ने बालक का नाम 'पुष्पदन्त' रखा। **त्रिलोयपण्णत्ति** में इस सम्बन्ध में निम्नलिखित उल्लेख आया है –दृ

रामा सुग्गीवेहिं काकंदीए य पुप्फयंत जिणो।
मग्गसिर पाड़िवाए सिदाए मूलम्मि संजनिददे।।

अर्थात – माता रामा व पिता सुग्रीव के यहाँ काकंदी नगरी में मगसिर शुक्ला को मूल नक्षत्र में भगवान् पुष्पदंत का जन्म हुआ। इन्द्रों ने वहाँ पन्द्रह माह तक रत्नवृष्टि की और उनका गर्भ–जन्म कल्याणक महोत्सव मनाया था।

2.4 पुष्पदंतनाथ राज्य करते हुए एक दिन उल्कापात से विरक्ति को प्राप्त हुए तभी लौकान्तिक देवों से स्तुत्य भगवान, इन्द्र के द्वारा लाई गई 'सूर्यप्रभा' पालकी में बैठकर मगसिर सुदी प्रतिपदा को दीक्षित हो गये। शैलपुर नगर के पुष्पमित्र राजा ने भगवान को प्रथम आहारदान दिया था। छद्मस्थ अवस्था के चार वर्ष के बाद नागवृक्ष के नीचे विराजमान भगवान को कार्तिक शुक्ल द्वितीया के दिन केवलज्ञान प्राप्त हो गया। आर्यदेश में विहार होते हुए धर्मोपदेश हुआ। सम्मेदशिखर जी से भाद्रपद शुक्ला अष्टमी के दिन शेष अघाती कर्मों का नाश कर मुक्ति श्री को प्राप्त हो गए। पुष्पक वन में दीक्षा के पश्चात् भी वर्णन आता है कि चार वर्षों के भ्रमण के पश्चात् वे पुनः विहार करते हुए काकन्दी के पुष्पक वन में पधारे थे और वहीं उन्हें ''नागवृक्ष'' के नीचे कार्तिक शुक्ला द्वितीया को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई थी अतः काकन्दी उनके चार कल्याणकों से परम पावन नगरी बन गई है। केवलज्ञान उत्पन्न

होने पर इन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने समवसरण की रचना की तब भगवान का प्रथम कल्याणकारी दिव्य उपदेश यहीं हुआ था। ककुभ ग्राम को भी वर्तमान में ''कहाऊँ'' नाम से जाना जाता है, आज काकन्दी यहाँ से 16 किमी दूर है।

2.5 यहाँ पर लगभग 1800 वर्ष प्राचीन 31 फुट ऊँचा एक मानस्तंभ बना हुआ है, जिसमें चारों ओर दिगम्बर जैन मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। इसी स्थल को भगवान पुष्पदंतनाथ का दीक्षा एवं केवलज्ञान कल्याणक तीर्थ माना जाता है। कल्याणक भूमि होने के साथ–साथ यहाँ का एक प्राचीन इतिहास भी ग्रंथों में आता है कि यह महापुरुषों की उपसर्ग एवं निर्वाणभूमि भी है। भगवती आराधना (गाथा–1559) और आराधना कथा कोष (कथा 67) के आधार पर ''भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ'' भाग–1 में काकन्दी नगरी के परिचय में अनेक ऐतिहासिक तथ्यों का उल्लेख करते हुए यहाँ से संबंधित अभयघोष मुनिराज का कथानक भी प्रस्तुत किया है। जो निम्न प्रकार है–

2.6 अभयघोष काकन्दी के राजा थे। उन्होंने एक बार एक कछुए की चारों टाँगें तलवार से काट दीं जिससे वह तड़प–तड़प कर मर गया और कुछ पुण्यवश मरकर उनका ही पुत्र हो गया। कुछ दिनों बाद अभयघोष ने चंद्रग्रहण देखकर मुनि दीक्षा ले ली। एक बार वे काकन्दी के उद्यान में तपस्या में लीन थे। उनका पुत्र चंडवेग भ्रमण करते हुए वहाँ से निकला। जैसे ही उसने मुनि अभयघोष को देखा, उसके मन में पूर्वजन्म संबंधी संस्कारों के कारण क्रोध की अग्नि भड़क उठी। उसने अपने बैर का बदला चुकाने के लिए यह उपयुक्त अवसर समझा क्योंकि वह जानता था कि ध्यान के समय मुनिराज किसी अत्याचार का प्रतिकार तो करेंगे नहीं। उसने तीक्ष्ण धार वाले शस्त्रों से निर्दयतापूर्वक उनके हाथ–पैर आदि अंगों को काटना प्रारंभ कर दिया। ध्यानलीन मुनिराज आत्मनिष्ठ थे, इस उपसर्ग को उन्होंने तीव्र वैराग्य भाव से सहन किया और धर्मध्यान से शुक्लध्यान अवस्था में आकर चार घातिया कर्मों को नष्ट कर केवल्य अवस्था प्राप्त कर ली।

2.7 अंतकृत केवली बनकर अभयघोष मुनिराज ने काकन्दी के उद्यान से मोक्षधाम को प्राप्त किया इसलिए यह नगरी ''सिद्धक्षेत्र'' के रूप में भी जानी जाती है। वृहत् समाधिमरण पाठ में लिखा है कि–

अभयघोष मुनि काकन्दीपुर महावेदना पाई।
वैरीचण्ड ने सब तन छेद्यो दुःख दीना अधिकाई।।
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता आराधन चितधारी।
तो तुमरे जिय कौन दुःख है मृत्यु महोत्सव भारी।।

3. 4 कल्याणक की नगरी:

तीर्थंकर	कल्याणक	कौन कौन से
श्री पुष्पदंत	4	गर्भ, जन्म, तप और केवलज्ञान

4. काकन्दी के जैन मंदिर:

4.1 भगवान पुष्पदंत जन्मभूमि, श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र काकन्दी, खुखुंदू, जिला–देवरिया (उ.प्र.) 274501

टेलीफोन – 09451097770, 05566–282055, 09956260218

एक सुन्दर कलात्मक विशाल जिनमंदिर है, उसमें 9 फुट उत्तुंग ग्रेनाइट पाषाण की सुन्दर प्रतिमा भगवान पुष्पदंतनाथ की विराजमान हैं।

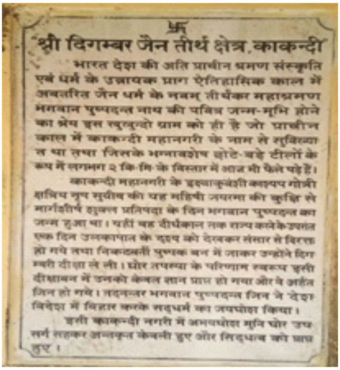

4.2 श्री दिगंबर जैन मंदिर एवं प्राचीन मानस्तंभ, कहाऊँ, तहसील – सलेमपुर, जिला – देवरिया (उत्तर प्रदेश) 274604

टेलीफोन – 0551–2500524, 2503280, 2331991, 09415211822

भगवान की तपस्थली कहाऊँ, काकन्दी से मात्र 16 किमी है। उल्कापात देखकर वैराग्य हुआ, संध्या के समय 1000 राजाओं के जिन दीक्षा ली। तीर्थंकर श्री पुष्पदन्त भगवान का केवलज्ञान कल्याणक भी यहीं हुआ था। संध्या के समय मूल नक्षत्र में नागवृक्ष के नीचे केवलज्ञान की प्राप्ति हुई थी। कहाऊँ में भारतवर्ष का प्राचीनतम पंच जिनेन्द्र मानस्तम्भ (संवत 141 तद्नुसार ई.स. 460 का है) जो तीर्थ की प्राचीनता का प्रतीक है। तीर्थ पर बने मानस्तम्भ पर ब्राह्मी भाषा में अभिलेख है जो इसकी प्राचीनता की पुष्टि करते हैं।

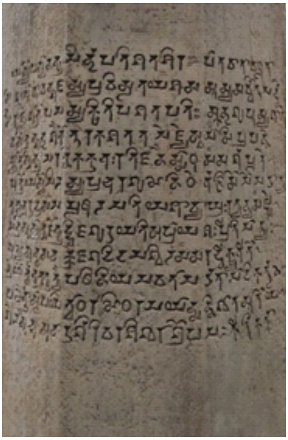

5. क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधाएँ: ठहरने और खाने की अच्छी सुविधा उपलब्ध है **प्रबन्धक संस्था** – कहाऊँ तीर्थ क्षेत्र कमेटी, गोरखपुर

संपर्क नंबरः– 05566–282055

6. आवागमन के साधन

6.1 रेल मार्ग नूनखार रेलवे स्टेशन (स्टेशन कोडः NRA) – यह खुखुन्दू से 6 किमी दूर है। रेलवे स्टेशनः– देवरियाः 17 किमी, गोरखपुरः 70 किमी।

6.2 सड़क मार्ग: खुखुन्दू देवरिया शहर से लगभग 15 किलोमीटर पूर्व में है। देवरिया से स्थानीय वाहन सेवा उपलब्ध है।

6.3 हवाई मार्ग: महायोगी गोरखनाथ हवाईअड्डा गोरखपुर, खुखुन्दू से 64 किमी की दूरी पर स्थित है। गोरखपुर हवाईअड्डे से दिल्ली, मुम्बई, प्रयागराज, बैंगलोर, कोलकाता, हैदराबाद के लिए सेवाएं उपलब्ध हैं।

7. समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र– कहाऊँ–17 किमी, अयोध्या–200 किमी, वाराणसी –200 किमी, रतनपुरी – 180 किमी

8. वार्षिक मेला– अश्विन शुक्ल एकम– भगवान पुष्पदंतजी का जन्म दिवस।

17. राजगृही

राजगृही तीर्थक्षेत्र का संपूर्ण वर्णन करने का साहस तो हममें नहीं है और इन पुद्‌गल वचनों में इतनी शक्ति भी कहां जो इस धरा को पवित्र बनाने वाले उन महापुरुषों के चारित्र का सम्पूर्ण वर्णन कर सके। उन महान तीर्थंकरों और दिगंबर मुनिराजों के चरणों में नमोस्तु करते हुए इस राजगृही की वन्दना प्रारंभ करते हैं।

1 राजगृही के बारे में:

1.1 राजगीर भारत के बिहार राज्य के नालंदा जिले में स्थित एक ऐतिहासिक नगर है। यह कभी मगध साम्राज्य की राजधानी हुआ करती थी, जिससे बाद में मौर्य साम्राज्य का उदय हुआ।

1.2 राजगृह का ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व है। वसुमतिपुर, वृहद्रथपुर, गिरिब्रज और कशग्रपुर के नाम से भी प्रसिद्ध रहे राजगृह को आजकल राजगीर के नाम से जाना जाता है। जैन धर्म के 20 वे तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ स्वामी के गर्भ, जन्म, तप, केवलज्ञान कल्याणक एवं 24 वे तीर्थंकर महावीर स्वामी की प्रथम देशना स्थली भी रहा है।

2. राजगृही और जैन धर्म:

2.1 आज से लगभग 12 लाख वर्ष पूर्व भगवान मुनिसुव्रतनाथ राजगृही नगरी में वहां के क्षत्रियवर्णी महाराज सुमित्र की महारानी सोमा की पवित्र कुक्षि से जन्मे थे, उनके वंश को पर्यायवाची शब्दों में यदुवंश और हरिवंश भी कहते थे। जब तीर्थंकर भगवान स्वर्ग से चयकर माता के गर्भ में अवतीर्ण होने को होते हैं तो इन्द्र की आज्ञा से कुबेर छः महीने पूर्व ही माता के आंगन में रत्नों की वर्षा करता है। राजगृही में आज भी पंच पहाड़ियों में दूसरा पहाड़ रत्नागिरि के नाम से प्रसिद्ध है।

2.2 भगवान मुनिसुव्रतनाथ का चिन्ह कछुआ है, इनकी आयु 30 हजार वर्ष

की थी, वैडूर्यमणि (नीलमणि) के सदृश इनका वर्ण था। भगवान की ऊँचाई 80 हाथ थी और वह श्रावण कृष्णा दूज को माता के गर्भ में अवतीर्ण हुए। तीर्थंकर भगवान के गर्भ में आने से पूर्व माता सोलह स्वप्न देखती हैं, माता सोमा ने भी सोलह स्वप्न देखे थे। उनका जन्म वैशाख कृष्णा द्वादशी को हुआ।

2.3 भगवान मुनिसुव्रतनाथ ने विवाह किया और राज्य भी किया। अनन्तर उनके वैराग्य का निमित्त इस प्रकार मिला कि उनका जो हाथी था उसे जातिस्मरण हो जाने से उसने खाना–पीना छोड़ दिया, जब भगवान के सामने यह बात आई तो उन्होंने उसके पूर्व भवों के बारे में अवधिज्ञान से जान लिया और उस हाथी को सम्बोधित किया, हाथी को भगवान का उपदेश सुनकर बोध हो गया और उसे सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हो गई। यही निमित्त था कि भगवान को वैराग्य हो गया और उन्होंने वैशाख कृष्णा दशमी को चम्पक वृक्ष के नीचे अपनी राजधानी के उद्यान में दीक्षा ले ली। दीक्षा के पश्चात् राजगृही के राजा ऋषभसेन के द्वारा खीर का प्रथम आहार कराया गया। कालान्तर में भगवान समस्त आर्यखंड में विहार करते हुए राजगृही नगरी में आये और वहीं नील वन में चम्पक वृक्ष के नीचे उन्हें केवलज्ञान प्रकट हो गया और वे सम्मेदशिखर से मोक्ष गए हैं।

2.4 इन भगवान के श्रीमल्लि नाम के प्रथम गणधर थे तथा अन्य 118 गणधर थे, 30 हजार मुनि थे, गणिनी आर्यिका श्री पुष्पदत्ता थीं जो कि 50 हजार आर्यिकाओं में गणिनी थीं, 1 लाख श्रावक, 3 लाख श्राविका आदि चतुर्विध संघ था। भगवान के शासन यक्ष वरूण देव और यक्षी बहुरूपिणी देवी थीं। विस्तार से जानकारी आप उत्तरपुराण से प्राप्त कर सकते हैं।

3. राजगृही और भगवान महावीरः

3.1 2600 वर्ष पूर्व की घटना है। महारानी त्रिशला की छोटी बहन चेलना, महाराज श्रेणिक की पट्टरानी थीं। राजा श्रेणिक उस समय राजगृही के महाराज थे। भगवान महावीर को जब वैशाख सुदी दशमी को केवलज्ञान

प्रकट हुआ तब अर्धनिमिष में इन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने समवसरण की रचना कर दी, यहीं कहीं ऋजुकूला नदी रही होगी। उसी के तट पर भगवान को केवलज्ञान हुआ था, भगवान समवसरण में विराजमान थे, बारह सभा, सारी रचना, सारा वैभव था, जब भगवान श्रीविहार करते तब समवसरण विघटित हो जाता और–**'चरण कमल तल कमल हैं नभ तें जय जयवान'** भगवान का गमन आकाश में अधर में ही होता था और देवगण उनके चरणों के नीचे दिव्य कमलों की रचना करते जाते थे उसमें दिव्य सुगन्धि निकलती थी। श्रीविहार होते होते लगभग 66 दिन पश्चात् भगवान का समवसरण राजगृही नगरी पहुंचा ऐसा हरिवंशपुराण में विस्तृत वर्णन है–**''षट्षष्टि दिवसान् प्रभू विहरन्''**।

3.2 उसके बाद अकस्मात् इन्द्र को चिन्तन चला कि भगवान की दिव्यध्वनि नहीं खिरी सो क्या कारण है? दिव्य अवधिज्ञान से उन्होंने चिन्तन किया और समझ लिया कि गणधर का अभाव है। उसकी पात्रता किसमें है? यह चिन्तन करते हुए वहीं ब्राह्मण नगर नामक एक ग्राम था वहां ब्राह्मण के वेश में पहुँचे।

3.3 वहाँ शांडिल्य नाम के ब्राह्मण की दो पत्नियां थीं स्थण्डिला और केशी, उनके तीन पुत्र थे। पहली के दो पुत्र इन्द्रभूति और वायुभूति तथा दूसरी के अग्निभूति, इनमें इन्द्रभूति बहुत विद्वान थे। 14 प्रकार की विद्याओं के पारंगत, वेद–वेदांगों के ज्ञाता, व्याकरण छन्दादि, वेदशास्त्रों (लौकिक शास्त्रों) के पारगामी, पूर्णरूपेण निष्णात थे। इनकी उपाध्यायशाला में 500–500 विद्यार्थी अध्ययन करते थे, ये तीनों ब्राह्मण गौतम गोत्रीय थे, समस्त आर्यखंड में विख्यात थे, अभिमानी थे। जैनधर्म के नाम से विद्वेष नहीं करते थे अपितु पराङ्मुख थे।

3.4 ब्राह्मण वेशधारी उस इन्द्र ने वहाँ पहुँचकर एक बहुत ही सुन्दर श्लोक पढ़ा और कहा हे विद्वान् पण्डित! हम आपसे कुछ सीखने आये हैं, चूंकि मेरे गुरू अभी मौन हैं उन्होंने मुझे यह श्लोक पढ़ाया था मगर मैं उसका अर्थ भूल

गया हूँ अतः कृपया आप उसका अर्थ बताएं। तब इन्द्रभूति ने कहा कि आप हमें वह श्लोक बताएं। यह सुनकर इन्द्र ने वह श्लोक कहा।

3.5 इन्द्रभूति गौतम श्लोक सुनकर चिन्तन करने लगे कि कहीं इसे यह न पता लग जाए कि मुझे इसका अर्थ नहीं मालूम है अतः बोले कि ठीक है मैं आपके गुरू के पास चलकर उनसे ही शास्त्रार्थ करूंगा।

3.6 इन्द्रभूति गौतम उन ब्राह्मणरूपी इन्द्र के साथ अपने–अपने भाइयों और शिष्यों के साथ पहुँचते हैं। आगे–आगे इन्द्रभूति थे पीछे उनकी शिष्य मंडली, राजगृही के निकट पहुँचते ही एकदम दूर से मानस्तम्भ देखते हैं और दर्शन से ही उनका मान गलित हो जाता है।

3.7 उन्हें सम्यग्दर्शन प्रगट हो गया और उनका सारा मिथ्याज्ञान सम्यक ज्ञान रूप परिणत हो गया उन्होंने वस्त्राभरण त्यागकर भगवान के चरणों में दिंगबर दीक्षा ले ली, दिगम्बर महामुनि बन गए। गणधर हो गए। भगवान की दिव्यध्वनि खिरी। वह महान दिन श्रावण शुक्ला एकम का था ।

3.8 **राजगृही से और भी अनेकों घटनाएं जुड़ी हैं** जैसे एक बार राजा श्रेणिक भगवान के समवसरण में जा रहे थे अकस्मात् एक मेढ़क जो कि कमल पांखुडी लेकर भगवान के समवसरण में दर्शन के लिए जा रहा था राजा के हाथी के पैर के नीचे दबकर मर गया और शुभ भावों से मरकर देव हो गया। वह राजा श्रेणिक से पहले ही समवसरण में पहुँच गया और वहाँ भक्ति में सुन्दर नृत्य करने लगा। राजा श्रेणिक ने समवसरण में पहुँचकर भगवान को नमस्कार कर उस देव के मुकुट में मेढ़क का चिन्ह देखकर प्रश्न किया तब भगवान की दिव्यध्वनि खिरी–भव्यात्मन्! यह मेढ़क अभी–अभी तुम्हारे हाथी के पैर के नीचे दबकर मरा और दर्शन के भाववश स्वर्ग में देव हुआ और इससे पूर्व का वर्णन यह है कि यह राजगृही नगरी में एक सेठ था, पत्नी के मोह में मरकर मेंढक हो गया। तो यह संसार की स्थिति है कि गृहस्थाश्रम में रहकर पत्नी आदि परिवार के मोह में मरकर तिर्यंचगति मिल

जाती है और भगवान की भक्ति से तिर्यंच को भी देव गति मिल जाती है, ऐसे अनेकों उदाहरण शास्त्रों में बहुतायत में मिल जाते हैं।

3.9 राजा श्रेणिक, रानी चेलना आदि महान जीवों का इतिहास भी इस भूमि से जुड़ा है। भगवान महावीर इस अवसर्पिणी काल के अंतिम तीर्थंकर हैं लेकिन आगे की तीर्थंकर परम्परा को उन्होंने चालू कर दिया है। उनके ही पादमूल में तीर्थंकर प्रकृति का बंध करने वाले एवं समवसरण के मुख्य श्रोता राजा श्रेणिक अगली आने वाली उत्सर्पिणी में अयोध्या नगरी में प्रथम तीर्थंकर होंगे।

3.10 उत्तरपुराण में बड़ा ही सुन्दर प्रकरण आया कि जीवन्धर कुमार भी यहाँ से तपश्चर्या करके मोक्ष गए हैं। जीवन्धर स्वामी का इतिहास बड़ा प्रसिद्ध है, क्षत्रचूड़ामणि, गद्यचिन्तामणि, जीवन्धर चम्पू आदि में इसका विस्तृत वर्णन है।

3.11 क्षत्रचूड़ामणि, आचार्य वादीभ सिंह सूरी विरचित बड़ा ही अद्भुत ग्रन्थ है इस ग्रंथ अवश्य ही स्वाध्याय करना चाहिए। आचार्य पूज्यपाद ने निर्वाण भक्ति में इस संबंध में स्पष्ट उल्लेख किया है। जो इस प्रकार है दृ

द्रोणीमती प्रवलकुण्डलमेढ्के च, वैभारपर्वततले वरसिद्धकूटे।

ऋष्यद्रिके च विपुलाद्रिवलाहके च, विन्ध्ये च पोदानपुरे वृषदिपके च।।19।।

सह्याचले च हिमवत्यपी सुप्रतिष्ठे, दण्डात्मके गजपथे पृथुसारयष्ठौ।

ये साधवो हममला: सुगतिं प्रयाता: स्थानानि तानि जगती प्रथितान्यभूवन्।।30।।

3.12 ये सब निर्वाण भूमि के नाम है जहां से साधुओं ने मुक्ति प्राप्त की है। इन निर्वाण भूमियों में राजगृह के पाँच पर्वतों में वैभारगिरि, ऋषिगिरि,

विपुलगिरि, और बलाहक भी गिने गये है। सुधर्माचार्यादि अनेक मुनि यहाँ से मोक्ष गए हैं इसलिए उसे सिद्धक्षेत्र भी कहते हैं लेकिन पहले यह जन्मभूमि है पुनः सिद्धक्षेत्र है फिर भगवान की प्रथम देशनाभूमि है। यह तीर्थ जन्मभूमि के नाम से बिहार प्रदेश में ही नहीं, पूरे भारत एवं विश्व में प्रसिद्धि को प्राप्त हो। ऐसे ये पावन तीर्थ हमारे और आपके सभी के मन को पवित्र करें, जीवन को पवित्र करें। इनकी वन्दना करके, भगवान का दिव्यध्वनि रुपी अमृत जो ग्रंथों के माध्यम से उपलब्ध है उसका स्वाध्याय करके हम सभी लोग अपने समीचीन ज्ञान को विकसित करें और अपने जीवन में मोक्षमार्ग को अल्प काल में प्रगट करें यही सबके लिए मंगल भावना है।

4. 4 कल्याणक की नगरीः

तीर्थंकर	कल्याणक	कौन कौन से
श्री मुनिसुव्रतनाथ	4	गर्भ, जन्म, तप और केवलज्ञान

5. राजगीर के जैन मंदिरः

5.1 श्री 1008 भगवान महावीर दिगंबर जैन मंदिर, (कार्यालय मन्दिर), राजगीर, जिला–नालंदा (बिहार) 803116

सम्पर्क सूत्रः–श्री कमल जैन 09661588241

5.1.1 इस मन्दिर में मूलनायक भगवान महावीर की श्वेत वर्ण पद्मासन प्रतिमा है। वेदी में सोने का काम कराया गया है जो अलौकिक छटा प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त 10 धातु की प्रतिमा एवं 2 धातु के मानस्तंभ है। गर्भ गृह की बाहरी दीवाल के आले में बायीं और पद्मावती की पाषाण की मूर्ति है। इसके शिरोभाग पर

भगवान पार्श्वनाथ विराजमान है एवं इसके दायीं ओर क्षेत्रपाल स्थित हैं। बायीं ओर की अलग वेदी में भगवान पार्श्वनाथ एवं अन्य प्रतिमायें स्थित है। दाहिनी ओर नन्दीश्वर वेदी का निर्माण हुआ है। मन्दिर शिखरबद्ध है एवं आकर्षक प्रवेशद्वार इसकी शोभा द्विगुणित करते है। इस मन्दिर का निर्वाण गिरिडीह निवासी सेठ हजारीमल किशोरीलाल जी ने कराया था और प्रतिष्ठा वि०सं० 2450 में हुयी थी।

5.1.2 इसे धर्मशाला मन्दिर के नाम से भी जाना जाता है। जैन धर्मावलम्बियों के ठहरने के लिए विशाल धर्मशाला है जहां भारत के कोने – कोने से आने वाले तीर्थ यात्री रात्रि में ठहरते है तथा प्रातः पंचपहाड़ी के दर्शन करते है।

5.2 श्री दिगंबर जैन लाल मंदिर, राजगीर, जिला–नालंदा (बिहार) 803116 सम्पर्क सूत्रः–श्री कमल जैन "प्रबंधक"दृ 09661588241,

5.2.1 कार्यालय मन्दिर के समीप सड़क के दूसरी ओर प्रसिद्ध लाल मन्दिर है, जो राजस्थानी चित्रकला के लिए मशहूर है। इसका निर्माण दिल्ली निवासी लाला धर्मदास जी ने करवाया तथा वीर सं० 2451 में इसकी प्रतिष्ठा करायी थी।

5.2.2 इसी मन्दिर में 20 वे तीर्थंकर भगवान मुनिसुव्रतनाथ स्वामी की काले वर्ण की 11 फुट ऊँची विशाल खडगासन प्रतिमा विराजमान है। इस मन्दिर में 7 वेदियाँ है। भव्य वेदियाँ आकर्षक मंडप स्थापत्य कला का नमूना पेश करते है लघु शिखर और दीवालों पर भी चित्रकारी की गयी है, जो अपनी ओर आकर्षित करती है।

5.2.3 गर्भगृह मंडप से वापस लौटने पर बायीं ओर के बरामदे में कुछ प्राचीन मूर्तियाँ व्यवस्थित ढंग से रखी गयी है।इसमें कुछ मूर्तियां व्यवहारगिरि पर्वत पर उत्खनन से प्राप्त प्राचीन जैन मन्दिर से लायी गयी है। बायीं ओर भगवान महावीर की चतुर्मुखी प्रतिमा विराजित है एवं मन्दिर के बाहर बरामदे में दायीं ओर जो वेदी बनी है उसमे 13 पाषाण और 19 धातु की प्रतिमाएं विराजमान है एवं 2 पीतल के मानस्तंभ बने हुए है।

5.2.4 गर्भगृह मन्दिरः इस मन्दिर में भगवान मुनिसुव्रतनाथ की चारों कल्याणक की चरण पादुका विराजित की गयी है एवं पालने में मुनिसुव्रतनाथ स्वामी सुशोभित है। मन्दिर की दीवारों में तीन अति प्राचीन प्रतिमाएं भी विराजित की गयी है। भूतल में स्थित यह मन्दिर ध्यान साधना के लिए सर्वथा उपयुक्त है।

5.3 विपुलाचल पर्वत (जैन मंदिर)

5.3.1 जैन धर्म के 24 वे तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की प्रथम वाणी इसी विपुलाचल पर्वत से ही खिरी थी। विपुलाचल, सोनागिरि, रत्नागिरि, उदयगिरि, वैभारगिरि यह पांच पहाड़ियाँ प्रसिद्ध हैं। इन पर 23 तीर्थंकरों का समवशरण आया था तथा कई मुनि मोक्ष भी गए हैं।

5.3.2 पहला पहाड़ (विपुलाचल):—इस पहाड़ पर चढ़ने के लिए 550 सीढ़ियाँ बनी हुयी है। विपुलाचल पर भगवान महावीर का सर्वप्रथम उपदेश हुआ था। भगवान की प्रथम समवसरण स्थली पर एक विशाल प्रथम देशना स्मारक का निर्माण हुआ है। जो भव्य एवं काफी आकर्षक है। सबसे ऊपर भगवान महावीर की चतुर्मुखी स्लेटी रंग की विशाल पद्मासन प्रतिमा

विराजित है। स्मारक के निचले हिस्से में चित्रकला प्रदर्शनी हैं। स्मारक के अतिरिक्त विपुलाचल पर 4 दिगम्बर मन्दिर भी है। रास्ते में एक टेकरी मिलती है जिसमे भगवान महावीर के चरण विराजमान है।

5.3.3 दूसरा पहाड़ (रत्नागिरि):—यह दूसरा पर्वत पहले पर्वत से 2 मील की दूरी पर है। जिसमें 1 मील की उतराई है और 1 मील की चढ़ाई है। नीचे से जाने के लिए 1292 सीढ़ियाँ बनी हुयी है। **रत्नागिरी भगवान मुनिसुव्रत नाथ स्वामी की तप एवं ज्ञान स्थली है**। यहाँ तीन दिगम्बर जैन मन्दिर है। यहाँ बाबु धर्म कुमार जी के नाम पर ब्रह्मचारिणी पंडिता चंदाबाई जी 'आरा' द्वारा निर्मित शिखरबंद मन्दिर है। जिसकी प्रतिष्ठा विक्रम संवत्–1936 में हुयी थी। इसमें भगवान मुनिसुव्रत नाथ जी की 4 फुट की कृष्ण वर्ण (काले रंग की) पद्मासन प्रतिमा स्थापित है।

5.3.4 तीसरा पहाड़ (उदयगिरि): दूसरे पर्वत (रत्नागिरि) से उतरकर 2 मील आगे उदयगिरि पर्वत मिलता है। यहाँ चढ़ाई 2 किमी की है। जिसके लिए 752 सीढ़ियाँ बनी हुयी है। ऊपर एक मन्दिर है जिसमें भगवान महावीर की एक खड्गासन प्रतिमा विराजित है जिसका वर्ण हल्का वादामी ओर अवगाहना 6 फुट है। इस मन्दिर का निर्माण श्री दुर्गा प्रसाद सरावगी 'कलकत्ता' निवासी ने वीर संवत् 2489 में कराया एवं मूर्ति प्रतिष्ठा करायी।

नीचे उतरने पर एक जलपान गृह समाज की ओर से बनाया हुआ है जहाँ यात्री विश्राम एवं जलपान दिगम्बर जैन कमेटी की ओर से निःशुल्क करने की व्यवस्था करायी गयी है।

5.3.5 चौथा पहाड़ (स्वर्णगिरि):— स्वर्णगिरि पर्वत करोड़ो मुनियों की निर्वाण भूमि है जिसमें 1064 सीढ़ियाँ तथा 2 (दो) दिगम्बर जैन मन्दिर है। यहाँ मुख्य मन्दिर में भगवान शांतिनाथ की प्रतिमा स्थापित है। बायीं ओर भगवान कुंथुनाथ और दायीं ओर भगवान अरहनाथ की प्रतिमा स्थापित है। दुसरे मन्दिर में आदिनाथ की प्रतिमा स्थापित है एवं तीसरे में भगवान शांतिनाथ स्वामी के चरण चिन्ह स्थापित है। सन् 2009 में उपाध्याय निर्भय सागर जी महाराज के सानिध्य में मूल मन्दिर में चरण चिन्ह की जगह मूर्ति स्थापित करायी गयी थी।

5.3.6 पाँचवां पहाड़ (वैभारगिरि):– यह पर्वत भगवान वासुपूज्य स्वामी को छोड़कर शेष 23 तीर्थंकरों के समवसरण स्थली है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मन्दिर में भगवान महावीर की 4 फुट अवगाहना वाली श्वेत पद्मासन मनोज्ञ मूर्ति है।

5.4 आचार्य महावीर कीर्ति दिगम्बर जैन सरस्वती भवन, राजगीर, जिला–नालंदा (बिहार) पिन कोडः 803116

इस भवन का निर्माण आचार्य विमल सागर जी महाराज के मंगल सानिध्य में सन् 1972 को सम्पन्न हुआ था। नीचे एक बड़े हॉल में आचार्य महावीर कीर्ति जी की पद्मासन प्रतिमा विराजित है। ऊपर के कमरों में एक विशाल पुस्तकालय है जिसमे जैन धर्म सम्बंधित हजारों हस्तलिखित एवं प्रकाशित पुस्तकें संग्रहित है। इसके अतिरिक्त जैन सिद्धांत 'आरा' के सौजन्य से जैन चित्रकला एवं हस्तलिखित पाण्डुलिपियाँ की प्रदर्शनी आयोजित है। कुछ प्राचीन खण्डित प्रतिमाएँ एवं अन्य पदार्थ जो उत्खनन से प्राप्त हुये थे। यहाँ संग्रहित है। ऊपरी हिस्से में वागदेवी की प्रतिमा भी स्थापित की गयी है।

सम्पर्क सूत्रः– डॉ० विरेन्द्र सिंह जी – 09097888447

6. क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधाएँ: ठहरने और खाने की अच्छी सुविधा उपलब्ध है

आवसीय सुविधाएँ:— कार्यालय मन्दिर के समीप राजगृह जी दिगम्बर जैन कार्यालय है जहाँ तीर्थ यात्रियों को ठहरने हेतु कमरा उपलब्ध कराया जाता है। यहाँ आधुनिक शैली में बने कमरे पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। यहाँ त्यागीवृति एवं मुनियों के ठहराव के लिए भी अलग से सादे कमरे एवं त्यागीवृति भवन का निर्माण किया गया है।

सम्पर्क: श्री विजय जैन जी 09386745881, श्री सुनील जैन जी 09334008611, श्री मुकेश जैन जी 09334770317, श्री रवि कुमार जैन जी 09386461769,

7. आवागमन के साधन

7.1 रेल मार्गः राजगृह जैन धर्मशाला से राजगीर स्टेशन (राजगीर–RGD) की दुरी 2 किमी, पटना से 110 किमी है। बुद्धपुर्णिमा एक्सप्रेस (14223), राजगृह एक्सप्रेस (13233), श्रमजीवी सुपरफास्ट एक्सप्रेस (12391)

7.2 सड़क मार्गः यह सिद्ध क्षेत्र कुण्डलपुर से 15 किमी, गया से 15 किमी., पावापुरी से 15 किमी, गुणावां से 15 किमी, बिहारशरीफ से 24 किमी, पटना से 110 किमी तथा मंदारगिरी से इसकी दूरी 282 किमी है।

7.3 हवाई मार्गः जयप्रकाश नारायण एयरपोर्ट, पटना 125 किमी तथा गया एयरपोर्ट 90 किमी की दूरी पर स्थित है।

8. समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र— कुण्डलपुर–18 किमी, पावापुरी – 20 किमी, चम्पापुर–180 किमी, मंदारगिरी–210 किमी

9. वार्षिक मेला— मार्गशीर्ष कृष्णा 10

18. कुण्डलपुर

वास्तव में देखा जाए तो वर्तमान में शायद ही कोई ऐसा जैन श्रावक होगा जिसने बिहार राज्य में स्थित कुण्डलपुर जी तीर्थ क्षेत्र का नाम नहीं सुना होगा। इस पवित्र तीर्थ क्षेत्र पर वर्तमान शासन नायक बालयति तीर्थंकर भगवान महावीर ने जन्म लिया था। इस पावन तीर्थ के जितनी बार दर्शन करने जाओ उतना ही कम लगता है, मन तृप्त ही नही होता यहां के दर्शन से। आइए एक बार फिर हम सभी यहां की वंदना शुरु करते हैं।

1. कुण्डलपुर के बारे में:

1.1 कुण्डलपुर राजगृही के पास नालंदा स्टेशन से 3 किमी दूरी पर है। यह भगवान महावीर का जन्म स्थान माना जाता है। कुण्डलपुर बिहार शरीफ से 13 किमी. एवं राजगृही से 16 किमी. दूर है। भगवान महावीर की जन्मभूमि के रूप में कुण्डलपुर सदियों से हमारी आस्था का केन्द्र है। तीर्थराज सम्मेदशिखरजी की यात्रा करने वाले शत–प्रतिशत धर्मावलम्बी मार्ग में भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर के दर्शन करने अवश्य ही जाते हैं।

1.2 नालंदा एक प्रशंसित महाविहार था, जो भारत में प्राचीन साम्राज्य मगध (आधुनिक बिहार) में एक बड़ा बौद्ध मठ था। यह बिहार शरीफ शहर के पास पटना के लगभग 95 किलोमीटर दक्षिणपूर्व में स्थित है और यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल है।

1.3 वैदिक शिक्षा के अत्यधिक औपचारिक तरीकों ने तक्षशिला, नालंदा और विक्रमशिला जैसे बड़े शिक्षण संस्थानों की स्थापना को प्रेरित करने में मदद की, जिन्हें अक्सर भारत के शुरुआती विश्वविद्यालयों के रूप में चिह्नित किया जाता है। नालंदा पाँचवी और छठी शताब्दी में गुप्त साम्राज्य के संरक्षण के तहत और बाद में कन्नौज के सम्राट हर्ष के अधीन विकसित हुए। गुप्त युग से विरासत में मिली उदार सांस्कृतिक परंपराओं के परिणामस्वरूप नौवीं शताब्दी तक विकास और समृद्धि की अवधि हुई। बाद की शताब्दियों में धीरे–धीरे गिरावट का समय था।

2. कुण्डलपुर और जैन धर्मः

2.1 जैन शासन की तीर्थंकर परम्परानुसार इस युग के चौबीस तीर्थंकरों में से अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्म आज से लगभग 2600 वर्ष पूर्व बिहार प्रान्त के ''कुण्डलपुर'' नगर में हुआ था। जैसा कि तिलोयपण्णत्ति ग्रंथ में कहा है–

सिद्धत्थरायपियकारिणीहिं, णयरम्मि कुण्डले वीरो।
उत्तरफग्गुणिरिक्खे, चित्तसियातेरसीए उप्पण्णो।।

अर्थात् भगवान महावीर कुण्डलपुर में महाराजा सिद्धार्थ एवं महारानी प्रियकारिणी (त्रिशला) से चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में उत्पन्न हुए।

2.2 षट्खण्डागम के चतुर्थ खण्ड एवं नवमी पुस्तक की धवला टीका में श्रीवीरसेनाचार्य ने भी कहा है–

''आषाढ़ जोण्ण पक्ख छट्ठीए कुण्डलपुर णगराहिव णाहवंश सिद्धत्थ णरिंदस्स तिसिला देवीए गब्भमागंतणेसु तत्थ अट्ठदिवसाहिय णवमासे अच्छिय चइत्त सुक्क पक्ख तेरसीए उत्तराफग्गुणी गब्भादो णिक्खंतो।''

अर्थात् कुण्डलपुर नगर के अधिप–राजा नाथवंशी सिद्धार्थ नरेन्द्र की रानी त्रिशला के गर्भ से चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को महावीर तीर्थंकर का जन्म हुआ। इसी प्रकार सम्पूर्ण प्राचीन दिगम्बर जैनागम ग्रंथों (उत्तरपुराण, हरिवंशपुराण, जयधवला, महावीर पुराण, वीरजिणिन्दचरित, वर्धमान चरित आदि) में भगवान महावीर के जन्मोत्सव का इन्द्रों द्वारा कुण्डलपुर में आकर मनाये जाने का सुन्दर वर्णन है।

2.3 2600 वर्षों में हुए कालपरिवर्तन के कारण वर्तमान में बिहार प्रान्त के नालंदा जिले में स्थित यह कुण्डलपुर नगरी भले ही अति अल्पक्षेत्र वाली होकर वैभवहीन बन गई, किन्तु यहां के कण–कण में भगवान महावीर के जन्म

की पवित्रता आज भी विद्यमान है इसीलिए यहां के दर्शन करने हेतु देश के कोने–कोने से जैन समाज के हजारों श्रद्धालु कुण्डलपुर पहुँचते हैं तथा भक्ति भाव से भगवान के दर्शन आदि करते हैं।

2.4 लगभग 2600 वर्ष पूर्व नाथवंशीय राजा सिद्धार्थ बिहार प्रदेश के कुण्डलपुर में राज्य करते थे, उनकी रानी का नाम त्रिशला (प्रियकारिणी) था। कुण्डलपुर में अवस्थित नंद्यावर्त महल उनका निवास स्थान था। यह 7 मंजिला महल अत्यंत रमणीक था।

2.5 महारानी त्रिशला ने रात्रि में क्रम से 16 स्वप्न देखे – ऐरावत हाथी, उत्तम बैल, सिंह, हाथियों द्वारा अभिषेक को प्राप्त होती हुई लक्ष्मी, दो मालाएँ, चन्द्रमा, उगता हुआ सूर्य, मछलियों का युगल, जल से भरे दो कलश, कमलों से युक्त सरोवर, समुद्र, सिंहासन, स्वर्ग से आता हुआ विमान, नागेन्द्र भवन, रत्नों की राशि और बिना धुएँ की अग्नि। प्रातःकाल महाराज सिद्धार्थ से स्वप्नों का फल पूछने पर उन्होंने अत्यन्त हर्षपूर्वक महारानी को बताया कि हे देवी! आप महान सौभाग्यशालिनी हैं क्योंकि आपके गर्भ में तीर्थंकर प्रभु का जीव अवतरित हुआ है। यह सुनकर महारानी त्रिशला को अपार हर्ष हुआ।

2.6 नव माह और सात दिन के उपरांत चैत्र शुक्ल तेरस की रात्रि में रानी त्रिशला ने सूर्य से भी अधिक तेजस्वी, तीन लोक के नाथ तीर्थंकर शिशु को जन्म दिया। तीर्थंकर भगवान के जन्म को जानकर सौधर्म इन्द्र अपने समस्त देवों के साथ कुण्डलपुर आये, पुनः ऐरावत हाथी पर चढ़कर जिनशिशु को सुमेरु पर्वत पर ले गये। वहाँ इन्द्र ने जन्माभिषेकपूर्वक भगवान का जन्मकल्याणक महोत्सव सम्पन्न किया तथा उनके 'वीर' और 'वर्धमान' दो नाम रखे, पश्चात् कुण्डलपुर में आकर भी देवों द्वारा राजा सिद्धार्थ, रानी त्रिशला एवं कुण्डलपुरवासियों के मध्य भगवान का जन्मकल्याणक महोत्सव महान हर्ष एवं उल्लास के साथ मनाया।

2.7 एक बार नंद्यावर्त महल में शिशु वर्धमान पालने में झूल रहे थे। तभी संजय और विजय नाम के दो चारणऋद्धिधारी मुनि वहाँ पधारे। जिनशिशु को देखने मात्र से ही उनके मन में स्थित सूक्ष्मशंका का तत्क्षण ही समाधान हो गया, अतः महान प्रसन्नता से उन्होंने भगवान का नाम 'सन्मति' रखा। शिशु वर्धमान इन्द्र द्वारा अंगूठे में रखे गये अमृत को चूसते हुए चंद्रमा की कलाओं के समान बढ़ने लगे।

2.8 एक दिन बालक वर्धमान अपने बहुत से देव मित्रों के साथ नंद्यावर्त महल के बगीचे में खेल रहे थे। तभी उनकी बहादुरी की परीक्षा लेने हेतु स्वर्ग से संगम नाम का एक देव विशालकाय सर्प का रूप बनाकर वहाँ आया। सभी बच्चे डरकर इधर–उधर भागने लगे किन्तु बालक वर्धमान किंचित् भी भयभीत नहीं हुए। महान वीरता का परिचय देते हुए वह उस सर्प के फण पर माँ की गोदी की भाँति खेलने लगे। तब संगम देव ने अपना असली रूप प्रगट कर दिया और वर्धमान के बल एवं धैर्य की बारम्बार प्रशंसा करते हुए उनका नाम 'महावीर' रखा।

2.9 धीरे–धीरे बालक महावीर बड़े होने लगे। उनके लिए सदैव स्वर्ग से ही भोजन, वस्त्र एवं आभूषण आदि आते थे। उन्होंने कभी भी अपने घर का भोजन नहीं किया क्योंकि सभी तीर्थंकरों के लिए यही नियम है कि वे स्वर्ग का दिव्य भोजन ही करते हैं। युवावस्था को प्राप्त करने पर एक दिन महारानी त्रिशला ने उन्हें विवाह करने के लिए समझाया परन्तु युवराज महावीर ने विवाह ना करके जैनेश्वरी दीक्षा लेकर मुक्तिरूपी कन्या का वरण करने का अपना संकल्प माँ को बताया, जिससे माता त्रिशला बहुत दुःखी हुई, किन्तु महावीर ने उन्हें समझा–बुझा कर शांत किया और देवों द्वारा लाई पालकी में बैठकर दीक्षा लेने हेतु वन में चले गये।

2.10 तीर्थंकर भगवान का दीक्षा कल्याणक महोत्सवः ब्रह्म स्वर्ग से देवर्षि लौकांतिक देवों ने मर्त्यलोक में आकर तीर्थंकर भगवान के वैराग्य की

सराहना की। स्वर्ग से देवगणों द्वारा लायी पालकी पर जिनराज आरूढ़ हुए और जन्मनगरी के पास दीक्षा वन तक मनुष्य, विद्याधर, देवतागण द्वारा विशेष उत्सव पूर्वक पालकी को अपने कंधेपर रखकर जिनराज को लाए।

2.11 तीर्थंकर प्रभु ने दीक्षा वन में रखी चंद्रकांतमणि की शिला पर विराजमान हो कर अपने वस्त्र–आभूषणों का त्याग किया, सिद्ध परमेष्ठी को नमस्कार कर पंचमुष्ठी केशलोंच किया, सर्व प्रकार के सावद्य–पाप का त्याग कर परम सामायिक चारित्र को धारण किया, व्रत, समिति, गुप्ति आदि चारित्र के भेदों को धारण कर कुछ दिनों के उपवास के साथ योगारूढ़ हुए। सौधर्म इंद्र द्वारा भक्ति–भाव से तीर्थंकर के केशों का क्षीर समुद्र में विसर्जन हुआ। देवगण ने तीर्थंकर की पूजा भक्ति की।वे अपने अपने स्वर्ग को लौटे।

"मगसिर वदी दशमी तिथि को भवभोग से निःस्पृह हुए।
लौकान्तिकादि आनकर संस्तुति कर प्रमुदित हुए।।
सुरपति प्रभू की निष्क्रमण विधि में महा उत्सव करें।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, संसार सागर से तरें।।
ऊँ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां श्रीमहावीरजिनदीक्षा कल्याणकाय नमः"। भ

2.12 दीक्षा के दो दिन के पश्चात् भगवान प्रथम पारणा के लिए निकले। कूल ग्राम के राजा कूल (अपरनाम वकुल) के यहाँ उनका प्रथम पड़गाहन (पारणा) हुआ। महामुनि को अत्यन्त प्रफुल्लित भाव से राजा एवं रानी ने खीर का आहार प्रदान किया। देवताओं ने महामुनि महावीर के इस प्रथम आहार पर आकाश से रत्न, पुष्प आदि पंचाश्चर्य की वृष्टि की। पुनः महावीर स्वामी मौनपूर्वक विचरण करते हुए सबको जैन मुनि की चर्या से परिचित कराने लगे। दिगम्बर जैन परम्परानुसार तीर्थंकर भगवान दीक्षा के बाद मौन ही रहते हैं, केवलज्ञान होने पर ही उनकी दिव्यध्वनि खिरती है।

2.13 दीक्षा के बाद विहार करते हुए एक बार भगवान कौशाम्बी नगरी में पधारे जहाँ महारानी त्रिशला (महावीर की माता) की सबसे छोटी बहन

महासती चन्दना को एक सेठानी सुभद्रा ने सिर मुंडवा कर बेड़ियों में जकड़कर रखा था। महामुनि को आया देख चन्दना के मन में उन्हें आहार देने की उत्कृट अभिलाषा जागृत हो गई। महावीर के पधारते ही चन्दना की समस्त बेड़ियाँ टूट गई, सिर पर सुन्दर केश आ गये और शरीर सुन्दर वस्त्र–आभूषणों से अलंकृत हो गया, मिट्टी का सकोरा सोने का पात्र बन गया और कोदों का भात मीठी खीर के रूप में बदल गया। चंदना ने अत्यन्त भक्तिभावपूर्वक महामुनि को आहार दान दिया, पुनः स्वर्ग से पंचाश्चर्यों की वृष्टि होने लगी। उसके बाद चन्दना का अपने माता–पिता एवं परिवार के साथ मिलन हुआ।

2.14 ''चौबीस तीर्थंकर भगवन्तों का महापुराण'' में महावीर भगवान पर मुनिदशा में हुए उपसर्ग और उनका नाम ''अतिवीर'' कैसे पड़ा इसका बड़ा ही रोचक वर्णन आया है। जिसे शब्दशः यहां उद्धृत करते हैं।

उज्जयिनी में रुद्र का उपसर्ग... और 'अतिवीर' नाम द्वारा स्तुति

अहा! अनेक लब्धियाँ प्रगट होने पर भी, प्रतिक्षण स्वानुभूति द्वारा अनन्त आत्मलब्धियों का साक्षात्कार करते हुए उन वीतरागी साधक का अन्य किन्हीं लब्धियों के प्रति लक्ष्य ही नहीं था। विचरते– विचरते वे योगिराज उज्जयिनी नगरी में पधारे और क्षिप्रावती नदी के किनारे अतिमुक्तक नाम के भयानक श्मशान में ध्यान लगाकर खड़े हो गये। परमशान्त... अडोल...अहा, जीवन्त वीतराग प्रतिमा ! वे प्रभु श्मशान में खड़े होने पर भी अपने आत्म–उद्यान में क्रीड़ा कर रहे थे। उस समय इन्द्रसभा में धीर–वीर प्रभु की प्रशंसा होने से 'भव' नाम का एक इन्द्र–यक्ष उनकी परीक्षा करने आया। ('भव' नामक यक्ष अथवा 'स्थाणु' नामक रुद्र – ऐसे दोनों नाम पुराण में आते हैं।)

ध्यानस्थ प्रभु के सर्व प्रदेशों में ऐसी परमशान्ति व्याप्त हो गई है कि वन के हिंसक पशु भी वहीं शान्त होकर बैठ गये। अद्भुत है उनकी धीरता... और अद्वितीय है उनकी वीरता ! वहाँ यक्ष ने आकर भयंकर रौद्ररूप धारण किया;

सिंह, अजगर आदि की विक्रिया द्वारा उपद्रव करके प्रभु को ध्यान से डिगाने का प्रयत्न किया; पत्थर बरसाये, अग्नि के गोले फेंके; परन्तु वे सब प्रभु से दूर ही रहे..... तीर्थंकरों का ऐसा ही अतिशय है कि उनके शरीर पर सीधा उपद्रव नहीं होता। उन्हें काँटे नहीं लगते, सर्प नहीं डस पाते, कोई प्रहार नहीं कर सकता। अहा ! जिनकी चेतना अन्तर्मुख है ऐसे वीर मुनिराज को बाह्य उपद्रव कैसे ? वीतरागी आराधना में वर्तते हुए मुनि भगवन्तों पर उपद्रव करने या उन्हें आराधना से विचलित करने का सामर्थ्य विश्व में किसी का नहीं है।

अरे, हे पामर यक्ष! हे दुष्ट रुद्र! तू इन वीतरागी मुनि पर क्या उपसर्ग करेगा? तेरे अपने ही ऊपर भयंकर क्रोध का उपसर्ग हो रहा है और उससे तू महा दुःखी है। भवदुःख से छूटने के लिये तू प्रभु की शरण में आ.... और अपने आत्मा पर होते हुए भयंकर उपद्रव को शान्त कर !

दुष्ट यक्ष अनेक उपसर्गों की चेष्टाएँ कर–करके थक गया, परन्तु महावीर मुनिराज अपनी वीरता से विचलित नहीं हुए। अरे, शान्ति के वेदन में थकावट कैसी? थकावट तो कषाय में है। 'शान्ति' कभी परास्त नहीं होगी, 'क्रोध' क्षण में परास्त हो जायेगा। अन्त में वह भव–रुद्र मोक्ष के साधक पर उपसर्ग कर–करके थक गया.... हार गया। 'विभव' ऐसे भगवान के समक्ष 'भव' कैसे टिक पाता। भवरहित ऐसे मोक्ष के साधक महावीर के सामने 'भव' हार गया। शान्तभाव के समक्ष रुद्रभाव नहीं टिक सका। अन्त में थककर उसने अपनी विचारधारा बदली कि अरे, इतना सब करने पर भी यह वीर मुनिराज तो ध्यान से किंचित् चलायमान नहीं हुए और मेरे प्रति किंचित् भी क्रोध उत्पन्न नहीं हुआ... मानों कुछ भी नहीं हुआ हो, इस प्रकार वे अपनी शान्ति में ही लीन हैं। वाह प्रभो! धन्य है तुम्हारी वीरता! सचमुच तुम मात्र 'वीर' नहीं, किन्तु अतिवीर हो। इस प्रकार 'अतिवीर' सम्बोधनपूर्वक वह यक्ष प्रभुचरणों में झुककर स्तुति करने लगा –

धन्य धन्य अतिवीर! मोक्ष के सच्चे साधक!१

इस प्रकार भगवान महावीर के **वीर, वर्धमान, सन्मति, महावीर** और **अतिवीर** ये पाँच नाम प्रसिद्ध हुए हैं।

2.15 भगवान महावीर को तपस्या करते हुए लगभग 12 वर्ष व्यतीत हो गये। एक दिन वे बिहार प्रान्त में (कुण्डलपुर के पास) जृम्भिका गाँव के निकट ऋजुकूला नदी के तट पर गहरे ध्यान में लीन थे। ध्यान की परमविशुद्धि से उन्होंने चारों घातिया कर्मों का नाश करके केवलज्ञान को प्राप्त कर लिया। यह वैशाख शुक्ला दशमी का दिन था जब महावीर अरिहंत परमेष्ठी बन गये। इन्द्र ने तत्क्षण ही कुबेर को समवसरण बनाने की आज्ञा दी। भगवान की दिव्य प्रवचन सभा 'समवसरण' कहलाती है, जिसकी 12 सभाओं में बैठकर मनुष्य, देवता, पशु–पक्षी आदि सभी भगवान की ऊँ कारमयी दिव्यध्वनि का पान करते हैं। यह समवसरण पृथ्वी से 20,000 हाथ ऊपर अधर आकाश में रहता है।

2.16 भगवान महावीर को केवलज्ञान उत्पन्न हुए 66 दिन बीत गये परन्तु उनकी दिव्यध्वनि नहीं खिरी। सौधर्मइन्द्र ने विचार किया कि गणधर का अभाव ही इसका कारण है। इन्द्र ब्राह्मण का वेश धरकर ब्राह्मण गाँव के इन्द्रभूति गौतम नामक प्रकाण्ड ज्ञानी ब्राह्मण के पास उनके आश्रम में आये एवं युक्तिपूर्वक उनसे कुछ प्रश्न पूछा, गौतम उन प्रश्नों का उत्तर नहीं दे पाये, अतः बोले कि मैं तुमसे इस विषय में बात ना करके तुम्हारे गुरु महावीर के पास चलकर ही वाद–विवाद करूँगा। इस प्रकार इन्द्र उन्हें भगवान महावीर के समवसरण में ले आये।

2.17 जैसे ही इन्द्रभूति ब्राह्मण अपने 500 शिष्यों के साथ राजगृही के विपुलाचल पर्वत पर स्थित भगवान के समवसरण में पहुँचा, उसका सारा मान भंग हो गया और वह तुरंत जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण कर महावीर के प्रथम गणधर बन गये। उसी समय केवलज्ञान होने के 66 दिन बाद श्रावण कृष्णा एकम के दिन भगवान महावीर की प्रथम दिव्यध्वनि खिरी और तब से ही यह दिवस 'वीर शासन जयंती दिवस' के रूप में प्रसिद्ध हो गया। भगवान की दिव्यध्वनि

718 भाषाओं में खिरती थी जिससे प्रत्येक प्राणी अपनी–अपनी भाषा में भगवान की देशना ग्रहण कर लेते थे। इन्द्रभूति गौतम गणधर ने भगवान की दिव्यध्वनि को द्वादशांगरूप में निबद्ध किया।

2.18 मगध के सम्राट् राजा श्रेणिक अपनी पत्नी चेलना (बाल ब्र. तीर्थंकर भगवान महावीर की गृहस्थावस्था की मौसी) के समझाने पर जैनधर्म की ओर आकृष्ट हुए और धीरे–धीरे जैनधर्म के शाश्वत एवं सर्वोदयी सिद्धान्तों को जानकर भगवान महावीर के अनुयायी बन गये। समवसरण के मुख्य श्रोता हुए।

2.19 जिनेन्द्र भक्ति का महात्म्य राजा श्रेणिक के जीवन से भली प्रकार समझा जा सकता है। पूर्व में जैनधर्म और जैन साधुओं के प्रति विद्वेषभाव रखकर एक बार श्रेणिक ने एक मरा हुआ सर्प ध्यान करते हुए महामुनिराज के गले में डाल दिया और उसी समय इस दुष्कृत्य के प्रभाव से 33 सागर की सातवें नरक की आयु का बंध कर लिया परन्तु बाद में मुनिराज की क्षमाशीलता को देखकर उन्हें अत्यन्त पश्चाताप हुआ। भगवान महावीर के समवसरण में दिगम्बर साधुओं और सच्चे मोक्षमार्ग की महानता को जानकर उन्होंने स्वयं को भगवान के चरण कमलों में समर्पित कर दिया। इस भक्ति के प्रभाव से उनकी सातवें नरक की 33 सागर की आयु घटकर प्रथम नरक की (मध्यम आयु) 84 हजार वर्ष की रह गई। इतना ही नहीं सोलहकारण भावनाओं को भाकर उन्होंने तीर्थंकर प्रकृति का बंध कर लिया और आने वाली भविष्यत काल की चौबीसी में वह 'महापद्म' नाम के प्रथम तीर्थंकर होंगे।

2.20 भगवान महावीर ने 30 वर्षों तक सम्पूर्ण आर्यखण्ड में असंख्य जीवों को धर्म का उपदेश प्रदान किया। 72 वर्ष की आयु में वह एक बार (अन्त समय में) पावापुरी पधारे और वहाँ स्थित कमल सरोवर के मध्य में विशाल रत्नमयी शिला पर खड्गासन मुद्रा में विराजमान हो गये। अब तक समवसरण विघटित हो चुका था। विशुद्ध ध्यान की अवस्था में उन्होंने शेष चार अघातिया कर्मों का भी नाश कर दिया और कार्तिक कृष्णा अमावस्या की प्रातःकाल वह सिद्धपरमेष्ठी

बन पावापुरी सरोवर के ठीक ऊपर सिद्धशिला पर जाकर विराजमान हो गये। संसार परिभ्रमण का नाश कर वे सिद्धभगवान अब अनन्तकाल तक मोक्ष में विराजमान रहेंगे।

3. 3 कल्याणक की नगरी:

तीर्थंकर	कल्याणक	कौन कौन से
श्री महावीर भगवान	3	गर्भ, जन्म और तप

4. कुण्डलपुर के जैन मंदिर:

4.1 कुण्डलपुर तीर्थ के नंद्यावर्त महल परिसर में वंदनीय एवं दर्शनीय स्थलों की जानकारी, जिला–नालंदा (बिहार) 803111

4.1.1 भगवान महावीर जिनमंदिर–तीर्थ का प्रमुख आकर्षण भगवान महावीर का मूलनायक मंदिर है। जो नीचे से ऊपर (शिखर) तक 72 फुट ऊँचाई वाला है। इसमें जमीन से 25 फुट की ऊँचाई पर बने मंदिर के अंदर भगवान महावीर की खड्गासन प्रतिमा विराजमान है। उत्तरमुखी इस मंदिर में जाने के लिए नीचे से ऊपर तक 40 सीढ़ियाँ बनी हैं ।

4.1.2 भगवान ऋषभदेव जिनमंदिर–महावीर स्वामी के इस जन्मभूमि तीर्थ पर महावीर मंदिर के दायीं ओर प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की चौदह फुट पद्मासन प्रतिमा इस मंदिर में विराजमान हैं। इनके दर्शन–वंदन

करने वालों को युग–युग तक जैनधर्म की प्राचीनता एवं भगवान महावीर से पूर्ववर्ती तीर्थंकरों के इतिहास का परिचय प्राप्त करने में यह जिनमंदिर निश्चित रूप से सहायक होगा।

4.1.3 श्री नवग्रहशांति जिनमंदिर–भगवान महावीर मंदिर के बायीं ओर नव तीर्थंकर भगवन्तों की प्रतिमाएँ अलग–अलग कमलों पर विराजमान की गई हैं।

4.1.4 त्रिकाल चौबीसी जिनमंदिर–भारत की धरती पर जन्मे अनंत तीर्थंकरों में से भूतकाल के चौबीस, वर्तमानकाल के चौबीस एवं भविष्यत्काल के चौबीस इस प्रकार त्रिकाल चौबीसी के ७२ भगवन्तों से

समन्वित यह त्रिकाल चौबीसी जिनमंदिर तीन मंजिल ऊँचा बना है।

4.1.5 नंद्यावर्त महल एवं शांतिनाथ जिनालय: इन्द्रों द्वारा सजाए गये जिस सात मंजिले नंद्यावर्त महल में भगवान महावीर का जन्म हुआ था, उस नंद्यावर्त महल का निर्माण भी तीर्थ परिसर में हुआ है। सात मंजिल के स्वरूप को दर्शाने वाले इस महल में भगवान महावीर का पालना एवं उनके जीवन से संबंधित प्राचीन कलाकृतियों का दिग्दर्शन कराया गया है। महल के सबसे ऊपर वाली मंजिल में एक जिनालय है जिसमें भगवान

शांतिनाथ, चन्द्रप्रभ एवं पार्श्वनाथ की भव्य प्रतिमाएँ विराजमान हैं। इसी महल के नाम पर इस नवविकसित तीर्थस्थल का नाम है–नंद्यावर्त महल। भगवान महावीर की जन्मस्थली कुण्डलपुर का विशेष दर्शनीय यह नंद्यावर्त महल युग–युग तक जन–जन का कल्याण करता हुआ महावीर स्वामी का यश दिग्दिगन्तव्यापी फैलाएगा, इसमें कोई संदेह नहीं है

4.1.6 भगवान महावीर स्वामी कीर्तिस्तंभ– 36 फुट ऊँचे इस कीर्तिस्तंभ का निर्माण पुराने मंदिर परिसर में कराया गया है। इसमें ऊपर दो मंजिलों के चैत्यालयों में भगवान महावीर की 8 प्रतिमाएँ विराजमान हैं तथा नीचे की मंजिल में महावीर स्वामी का जीवनचरित्र आदि उत्कीर्ण है। जिनधर्म की कीर्तिपताका को फहराने वाला यह कीर्तिस्तंभ सदैव कुण्डलपुर की यशवृद्धि करता रहेगा।

4.1.7 प्राचीन दिगम्बर जैन मंदिर

4.1.8 उपर्युक्त धार्मिक एवं ऐतिहासिक निर्माण के साथ कुण्डलपुर के इस नवविकसित तीर्थ स्थल पर भगवान महावीर की दीक्षा मुद्रा वाली (पिच्छी–कमण्डलु सहित) (6 फुट खड्गासन) प्रतिमा एवं उनके कौशाम्बी में हुए ऐतिहासिक आहार वाली प्रतिमा (महावीर स्वामी की आहार लेते हुए एवं आहार देते हुए सती चन्दना की) स्थापित हैं तथा अतिथि भवन (तीन मंजिली धर्मशाला), पानी की टंकी, तीर्थ परिसर का मुख्य द्वार आदि निर्माणाधीन हैं।

5. क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधाएँ: ठहरने और खाने की अच्छी सुविधा उपलब्ध है।

प्रबन्ध व्यवस्था: श्री कुण्डलपुर दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र कमेटी

सम्पर्क: 8002831990, 9525478865

बिहार राज्य पर्यटन विकास निगम ने नालंदा, राजगीर आदि के दौरे का आयोजन अपने मुख्यालय के पर्यटक भवन से किया है, बीरचंद पटेल पथ, पटना –1 Ph. 0612–2222622, 2225411

6. आवागमन के साधन

6.1 रेल मार्ग: नजदीकी रेलवे स्टेशन नालंदा (स्टेशन कोडः NLD) रेलवे स्टेशन जो कि कुंडलपुर से 5 किमी कि दूरी पर है।

कुछ महत्वपूर्ण ट्रेनें: बुद्धपुर्णिमा एक्सप्रेस (14223), राजगृह एक्सप्रेस

(13233), श्रमजीवी सुपरफास्ट एक्सप्रेस (12391)

6.2 सड़क मार्ग: नालंदा सड़क से राजगीर 12 किमी, गया 95 किमी, पटना 90 किमी, बिहार शरीफ 13 किमी आदि के साथ जुड़ा हुआ है।

6.3 हवाई मार्ग: निकटतम हवाई अड्डा पटना में है जो कि 90 किमी की दूरी पर है।

7. समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र– राजगिरी–18 किमी, पावापुर–16 किमी, चम्पापुर–मन्दारगिरजी–200 किमी, चम्पापुरी–250 किमी, शिखरजी–200 किमी, कोल्हुआ पहाड़–130 किमी।

8. वार्षिक मेला – महावीर जन्म कल्याणक (चैत्र शुक्ला त्रयोदशी) पर

19. गिरनार

इस पवित्र तीर्थ क्षेत्र का वर्णन आचार्य श्री पद्मनंदी रचित पद्मनंदी पंचविंशतिका जी के श्लोक से करते हैं

अरिष्ट–संकर्तन–चक्र–नेमिता–
मुपागतो भव्य–जनेषु यो जिनः।
अरिष्टनेमिर्जगतीतिविश्रुतः,
स ऊर्जयन्ते जयतादितः शिवम् ।।22।।

अन्वयार्थः संसार में अरिष्टनेमि नाम से प्रसिद्ध जो भगवान, भव्य जनों के अशुभ कर्मों के नाश करने में चक्र की धार के समान हैं तथा जो गिरनार पर्वत से मोक्ष को पधारे हैं – वे श्री अरिष्टनेमि भगवान, इस लोक में सदा जयवन्त रहें ।

1. गिरनार के बारे में:

1.1 भारत के गुजरात राज्य के जूनागढ़ जिले स्थित पहाड़ियाँ गिरनार नाम से जानी जाती हैं। यह जैनों का सिद्ध क्षेत्र है। यहाँ से नेमिनाथ भगवान ने मोक्ष प्राप्त किया है। यह अहमदाबाद से 327 किलोमीटर की दूरी पर जूनागढ़ के 10 मील पूर्व भवनाथ में स्थित हैं। यह एक पवित्र स्थान है जो जैन धर्मावलंबियों के लिए एक महत्वपूर्ण तीर्थ है। हरे–भरे गीर वन के बीच पर्वत–श्रृंखला धार्मिक गतिविधि के केंद्र के रूप में कार्य करती है।

1.2 इन पहाड़ियों की औसत ऊँचाई 3,500 फुट है। सर्वोच्च चोटी 3,666 फुट ऊँची है। एशियाई सिंहों के लिए विख्यात 'गीर वन राष्ट्रीय उद्यान'श्इसी पर्वत के जंगल क्षेत्र में स्थित है।

2. गिरनार और जैन धर्मः

2.1 गुजरात प्रान्त में स्थित गिरनार पर्वत एक निर्वाणक्षेत्र के रूप में सुप्रसिद्ध तीर्थ है। षट्खण्डागम सिद्धान्तशास्त्र की आचार्य वीरसेन कृत धवला

टीका में इसे क्षेत्र मंगल माना है। इसे ऊर्जयन्त गिरि भी कहते हैं।

नेमिनाथ गिरनारी वन्दू, यादव कुल के भानू।
कोड़ि बहत्तर मुनीश्वर बन्दू, सात सौ फणविर बन्दूजी।।

2.2 ऊर्जयन्त क्षेत्र पर बाईसवें तीर्थंकर नेमिनाथ के तीन कल्याणक हुए थे–दीक्षा, केवलज्ञान और निर्वाण। जिस क्षेत्र पर किसी तीर्थंकर का एक भी कल्याणक हो वह कल्याणक क्षेत्र या तीर्थक्षेत्र कहलाता है और जहाँ किसी तीर्थंकर के तीन कल्याणक हुए हों वह क्षेत्र तो वस्तुतः अत्यन्त पवित्र बन जाता है अतः गिरनार क्षेत्र अत्यन्त पावन तीर्थभूमि है। भगवान नेमिनाथ का निर्वाणस्थल होने से इसे सिद्धक्षेत्र कहा जाता है।

2.3 इसी पर्वत पर भगवान नेमिनाथ के तीन कल्याणकों का वर्णन तिलोयपण्णत्ति नामक ग्रंथ में विस्तारपूर्वक दिया गया है।

बहुलट्ठमी पदोसे आसाढ़े जम्मभम्मि उज्जंते।
छत्तीसाधिय पणसयसहिदो णेमीसरो सिद्धो।।

अर्थात् भगवान नेमीश्वर आषाढ़ कृष्णा अष्टमी के दिन प्रदोषकाल में अपने जन्म नक्षत्र के रहते 536 मुनियों के साथ ऊर्जयन्त गिरि से सिद्ध हुए। भगवान का निर्वाण होने पर असंख्य देवों, इन्द्रों और मनुष्यों ने निर्वाणकल्याणक महोत्सव मनाया। तब से इस पर्वत की ख्याति एक प्रसिद्ध सिद्धक्षेत्र के रूप में हो गई है।

2.4 इस पवित्र तीर्थक्षेत्र की महिमा अवचनीय है, पण्डित श्री द्यानतराय जी अपने एक भजन में बहुत ही सुन्दर वर्णन कर रहे हैं

गिरनारिपै नेमि विराजत हैं ।।टेक।।

काउसग्ग लम्बित भुज दोऊ, वन गज पूजा साजत हैं। गिरः।। १।। १
नासादृष्टि विलोक सिंह मृग, बैर जनमके भाजत हैं। गिरः ।। २।। २
'द्यानत' सो गिरि वन्दत प्रानी, पुन्य बहुत उपराजत हैं। गिरः ।। ३।। ३

अर्थः गिरनार पर्वत पर श्री नेमिनाथ स्वामी तप में लीन विराजमान हैं।

कायोत्सर्ग मुद्रा में हाथी के संमान, दोनों हाथ भुजाएँ लटकाए हुए वे अत्यन्त सुशोभित होते हैं। उनकी नासाग्र दृष्टि को देखकर, सिंह और मृग आदि वन्यजीवों के जन्मजात वैर भी तिरोहित हो जाते हैं, समाप्त हो जाते हैं, दूर हो जाते हैं। द्यानतराय जी कहते हैं कि जो इस पर्वत पर उनकी बन्दना करता है वह बहुत पुण्य उपार्जित करता है।

2.5 गिरनार पर्वत का नाम लेते ही महासती राजुल का नाम भी स्मृति में आ जाता है जब भगवान नेमिनाथ जूनागढ़ से गिरनार की ओर राजुलमती से ब्याह करने के लिए चले तो वहाँ पहुँचते हुए मार्ग में बाड़े में बंद पशुओं की करुण चीत्कार ने उन्हें द्रवित कर दिया तब वे वैराग्य उत्पन्न हो जाने से विवाह बंधन में न बंधकर गिरनार पर्वत पर जाकर दीक्षा ले घोर तपश्चरण में लीन हो गए तब महासती राजुल ने भी भगवान नेमिनाथ के पथ का अनुसरण करते हुए आर्यिका दीक्षा ग्रहण कर इसी पर्वत पर घोर तपश्चरण किया था।

2.6 इस क्षेत्र पर भगवान नेमिनाथ के अतिरिक्त प्रद्युम्न, शम्बुकुमार, अनिरुद्ध कुमार आदि 72 करोड़ 700 मुनियों ने ऊर्जयन्त गिरि से सिद्धिपद प्राप्त किया। ऊर्जयन्त गिरि से अनेक मुनि मोक्ष गए हैं इसका वर्णन हरिवंशपुराण में भी आता है। इस संबंध में आचार्य जिनसेन ने मुनियों के कुछ नाम देकर यह भी सूचित किया है कि इन मुनियों आदि के निर्वाण के कारण ही ऊर्जयन्त को निर्वाण क्षेत्र माना जाने लगा और अनेक भव्यजन तीर्थयात्रा के लिए आने लगे। आचार्य गुणभद्रकृत उत्तरपुराण में प्रद्युम्न आदि मुनियों के संबंध में ऊर्जयन्त गिरि से निर्वाणप्राप्ति के साथ जिन कूटों से उन्होंने निर्वाण प्राप्त किया था उसकी भी सूचना दी गई हैं।

2.7 इसी पर्वत से गजकुमार मुनि ने निर्वाण की प्राप्ति की। हरिवंशपुराण में वर्णित कथा में गजकुमार मुनि के मुक्तिस्थान का उल्लेख नहीं किया गया किन्तु हरिषेणकृत वृहत्कथाकोष में स्थान का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। इस

प्रकार गिरनार पर्वत से करोड़ों मुनियों को निर्वाण प्राप्त हुआ अतः वह निर्वाणक्षेत्र या सिद्धक्षेत्र है।

2.8 भगवान नेमिनाथ जिस स्थान से मुक्त हुए थे वह स्थान अत्यन्त पवित्र और लोकपूज्य था। उस स्थान के गौरव को सदाकाल के लिए अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए इन्द्र ने वङ्का से सिद्धशिला का निर्माण किया और उस पर भगवान के चरण चिन्ह उत्कीर्ण किए। इस आशय की सूचना आचार्य जिनसेन ने 'हरिवंशपुराण' (सर्ग 65, श्लोक 14) में दी है। उन्होंने लिखा है–

'ऊर्जयन्तगिरौ वङ्की वङ्कोणालिख्या पाविनीम्।
लोके सिद्धिशिलां चक्रे जिनलक्षणपङ्क्तिभिः।।''

2.9 इसके अतिरिक्त आचार्य दामनन्दी कृत पुराणसारसंग्रह एवं आचार्य समन्तभद्र स्वामी रचित स्वयंभूस्तोत्र में इस बात का उल्लेख किया गया है। इन्द्र ने जिस प्रकार भक्तिवश वङ्का से भगवान के चिन्ह अंकित किए थे उसी प्रकार उसने भक्तिवश गिरनार पर्वत पर भगवान नेमिनाथ की भव्य मूर्ति भी स्थापित की थी जिसका वर्णन आचार्य मदनकीर्ति यतिपति ने ''शासन चतुस्त्रिंशतिका'' में किया है।

2.10 गिरनार पर अनेक पौराणिक और ऐतिहासिक घटनाएं घटित हुई हैं, जिनका विशेष महत्व है। चतुर्थ श्रुतकेवली गोवर्धनाचार्य गिरनार की यात्रा के लिए गए थे। अंतिम श्रुतकेवली भद्रबाहु ने भी यहाँ की यात्रा की थी। इनके पश्चात् एक महत्वपूर्ण घटना का गिरनार के साथ संबंध है, जिसके द्वारा जैन वाङ्मय का इतिहास जुड़ा हुआ है। वह घटना इस प्रकार है: गिरनार की चन्द्रगुफा में स्थित धरसेनाचार्य नन्दिसंघ की प्राकृत 'पट्टावली' के अनुसार आचारांग के पूर्ण ज्ञाता थे। उन्हें इस बात की चिंता हुई कि उनके पश्चात् श्रुतज्ञान का लोप हो जाएगा, उस समय महिमानगरी में मुनि सम्मेलन हो रहा था। उन्होंने मुनि सम्मेलन को अपनी चिन्ता व्यक्त करते हुए एक पत्र लिखा फलस्वरूप दो मुनि पुष्पदंत और भूतबलि विद्या ग्रहण हेतु उनके पास पहुँचे,

तब आचार्यश्री ने उनकी परीक्षा लेकर उन्हें सिद्धान्त सीखने योग्य समझकर ग्रंथ पढ़ा दिया जिसके फलस्वरूप षट्खण्डागम नामक महान ग्रंथ की रचना हुई।

2.11 इस प्रकार सिद्धान्त ग्रंथों की विद्याभूमि गिरनार ही है। परमपूज्य पुष्पदंत और भूतबलि जी ने गिरनार की धरा पर, जहाँ भगवान नेमिनाथ को मुक्ति प्राप्त हुई थी, मंत्र सिद्धि की थी। आचार्य कुन्दकुन्द भी गिरनार की वंदना करने आए थे ऐसा वर्णन ज्ञान प्रबोध एवं पाण्डवपुराण ग्रंथ में आता है।

2.12 गिरनार जी और नेमिनाथ भगवान का हृदय में विचार आते ही यह सुंदर भाव आता है कि –

अब मोहि तारि लै नेमिकुमार ।। टेक।।

चहुँगत चौरासी लख जौंनी, दुखको वार न पार ।। अब. ।।१।। १

करम रोग तुम वैद अकारन, औषध वैन उचार।। अब. ।।२।।

'द्यानत' तुम पद–यंत्र धारधर, भव– ग्रीषम–तप–हार।। अब. ।।३।। ३

अर्थः हे नेमिनाथ मुझको अब तार लो मुझको पार लगा दो। – चारों गति की चौरासी लाख योनियों के दुःखों का कोई पार नहीं है। कर्मरोग के निवारण के लिए आप सहजरूप से, बिना कारण के कुशल वैद्य हैं। आपके वैन (वचन), वाणी, दिव्यध्वनि ही, उसका उपचार है। द्यानतराय जी कहते हैं कि मैं आपके चरण कमलरूपी मंत्र को धारण करूँ जो भव भव के ताप को दूर करनेवाले हैं।

3. 3 कल्याणक की नगरीः

तीर्थंकर	कल्याणक	कौन कौन से
श्री नेमिनाथ भगवान	3	तप, केवलज्ञान, निर्वाण

4. गिरनार जी के कुछ जैन मंदिरः

4.1 श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र, गिरनारजी, जिला– जूनागढ़ (गुजरात)–362001

4.1.1 श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र गिरनार पर्वत के ऊपर पाँच टोंके हैं। लगभग दो मील की चढ़ाई चढ़ने पर दिगम्बर मंदिर और धर्मशाला से कुछ

पहले राजुल गुफा है। इस गुफा से आगे बढ़ने पर दिगम्बर जैन धर्मशाला है इसके आगे अहाते में 3 मंदिर और एक छतरी है। एक मंदिर में 4 फुट ऊँची खड्गासन भगवान बाहुबली की प्रतिमा है। पास में एक छतरी में कुन्दकुन्दाचार्य के चरण हैं,

सामने दीवार में पंच परमेष्ठी की 5 मूर्तियाँ बनी हैं। छतरी के पास में एक जिनमंदिर है। अहाते के प्रांगण में बड़ा मंदिर बना हुआ है। दिगम्बर मंदिर से थोड़ा आगे बढ़ने पर गोमुखी गंगा है, एक गोमुख से जलधारा निकलते रहने से जल के कई कुण्ड बन गए हैं। गोमुख के पृष्ठ भाग में एक वेदी पर तीर्थंकरों के 24 चरण चिन्ह बने हुए हैं। यह प्रथम टोंक कहलाती है।

4.1.2 इस गोमुख गंगा के निकट ही सहस्राम्रवन (भगवान नेमिनाथ की दीक्षा भूमि) को मार्ग जाता है। यहाँ से कुछ आगे चलने पर राखंगार के दुर्ग का द्वार मिलता है। द्वार के बायीं ओर नेमिनाथ का विशाल और दर्शनीय मंदिर है। 900 सीढ़ी चढ़कर द्वितीय टोंक है जहाँ अनिरुद्ध कुमार के चरण हैं, इसके निकट ही अम्बा देवी का विशाल मंदिर है। तीसरी टोंक शम्बुकुमार की है। तीसरी टोंक से 1500 सीढ़ियां चढ़ने और उतरने पर चौथा टोंक है। इस पर्वत पर चढ़ने के लिए सीढ़ियाँ नहीं हैं, खड़ा पहाड़ है। चढ़ाई कठिन है किन्तु यात्री साहस व परिश्रम से थोड़ा कष्ट सहकर चढ़ सकते हैं। पर्वत की चोटी पर शिला में प्रद्युम्न कुमार के चरण बने हैं, चरणों के निकट ही 1 फुट ऊंची मूर्ति बनी हुई है। पाँचवी टोंक पर भगवान नेमिनाथ के चरण हैं, चरणों के पीछे भगवान नेमिनाथ की भव्य दिगम्बर प्रतिमा विराजमान हैं।

4.1.3 यहाँ से गये हुए मार्ग से ही वापस लौटकर सहस्राम्रवन (प्रथम टोंक) के लिए सीढ़ियाँ जाती हैं। इस दीक्षावन में एक छतरी के नीचे चरण बने हैं।

4.2 श्री दिगम्बर जैन समोशरण मंदिर, गिरनारजी, जिला–जूनागढ़ (गुजरात) पिन–362001

Phone: 0285–2627108, www.girnarnirmalsagar.com

4.3 श्री बंडी लाल जी दिगंबर जैन मंदिर और धर्मशाला, तलेटी, गिरनारजी, जिला–जूनागढ़ (गुजरात) पिन–362001

Mob. 09924071724

5. क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधाएँ: ठहरने और खाने की अच्छी सुविधा उपलब्ध है। नीचे तलहटी में दिगम्बर जैन धर्मशाला में एक जिनालय है, धर्मशाला में अनेक कमरे हैं और यात्रियों की सुविधा हेतु समुचित व्यवस्था है। परमपूज्य आचार्यश्री निर्मलसागर महाराज की प्रेरणा से गिरनार तीर्थ का विकास हुआ है। वर्तमान में भी वहाँ ''निर्मलध्यान केन्द्र'' नामक संस्था के द्वारा नवनिर्माण आदि कार्य चल रहे हैं। पहाड़ के ऊपर प्रथम टोंक पर बनी धर्मशाला में 6 कमरे हैं। इसी प्रकार जूनागढ़ में भी ऊपर कोट के निकट क्षेत्र की एक धर्मशाला है इसमें भी यात्री हेतु सभी सुविधाएं हैं।

जूनागढ़ में धर्मशालाओं की सूचीः 1. गिरनार दर्शन धर्मशाला, रुपायतन रोड, जूनागढ 0285–2657099 / 199 / 9409685999

2. कुची भवन, रूपायतन रोड, भवनाथ रोड, जूनागढ़ 0285–2655360

3. नेमिजिन धर्मशाला, तलेटी पासे, तलेटी रोड, जूनागढ़ 0285–2620251

4. दिगंबर जैन धर्मशाला (निर्मल सागर), रूपायतन रोड, जूनागढ़ 0285–2627108

5. राजेंद्र भवन, भारती आसराम पासे, भवनाथ तलेटी रोड, जूनागढ़ 0285–2622259

6. कंतबा संकुल, तलेटी पासे, तलेटी रोड, जूनागढ़ 7016440402

7. बाबू नो वंडो (जूनागढ़ शहर) (शेठ आनंदजी कल्याणजी पेढ़ी), जगमाल चौक पासे, ऊपरकोर्ट रोड, जूनागढ़ 0285–2650179

8. सेठ श्री देवचंद लक्ष्मीचंद तलेटी पेढ़ी, गिरनार तलेटी, बांकीलाल दिगंबर धर्मशाला के सामने, गिरनार, जूनागढ़ 0285–2620059

6. आवागमन के साधन

6.1 रेल मार्गः निकटतम रेलवे स्टेशन जूनागढ़ जंक्शन (स्टेशन कोड – JND) है। जूनागढ़ रेलवे स्टेशन से गिरनार तलेटी के लिए एक निजी ऑटो रिक्शा ले सकते हैं – स्थानीय लोग तलेटी को ''भवनाथ तलेटी'' के रूप में संदर्भित करते हैं।

कुछ महत्वपूर्ण ट्रेनें: वेरावल–ओखा एक्सप्रेस (19251), सोमनाथ सुपरफास्ट एक्सप्रेस (22957), वेरावल–अहमदाबाद इंटरसिटी एक्सप्रेस (19120), वेरावल –जबलपुर एक्सप्रेस (वाया इटारसी) (11463), तिरुवनंतपुरम सेंट्रल–वेरावल एक्सप्रेस (16334), सोमनाथ सुपरफास्ट एक्सप्रेस (22958), अहमदाबाद– वेरावल इंटरसिटी एक्सप्रेस (19119), सौराष्ट्र जनता एक्सप्रेस (19218)

6.2 सड़क मार्गः जूनागढ़ और गिरनार तलेटी सड़क मार्ग से अच्छे से जुड़ा हुआ है। जूनागढ़ से गिरनार तलेटी 8 किमी की दूरी पर है।

6.3 हवाई मार्गः निकटतम हवाई अड्डा राजकोट में है जो कि 100 किमी की दूरी पर है। मुंबई और बेंगलुरु से सीधी उड़ानें उपलब्ध हैं।

20. भद्दलपुर तीर्थ (भद्रिकापुरी)

आचार्य समंतभद्र स्वामी भगवान श्री शीतलनाथ का स्मरण करते हुए लिखते हैं कि

न शीतलाश्चन्दन चन्द्ररश्मयो न गांगमम्भो नचहार यष्टयः।
यथामुनेस्ते•नघ वाक्यरश्मयः शमाम्बुगर्भाः शिशिरा विपश्चिताम्।।

''हे अनघ! शान्तिरूप जल से युक्त आपकी वचन रूपी किरणें विद्वानों के लिये जितनी शीतल हैं, उतनी शीतल न चन्द्रमा की किरणें हैं, न चन्दन है, न गंगा नदी का पानी है और न मणियों का हार ही है। आपके वचनों को शीतलता में संसार का संताप एक क्षण में दूर हो जाता है।''– आचार्य समंतभद्र

1. भद्दलपुर (इटखोरी) के बारे में:

इटखोरी प्रखंड, राज्य की राजधानी रांची से डेढ़ सौ किलोमीटर, जिला मुख्यालय चतरा से पैंतीस किलोमीटर, प्रमंडलीय मुख्यालय हजारीबाग से पचास किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित है।

2. भद्दलपुर (इटखोरी) और जैन धर्म:

2.1 वहाँ पर भगवान शीतलनाथ के गर्भ, और जन्म, ये दो कल्याणक हुए हैं तथा सम्मेदशिखर से उन्होंने मोक्ष प्राप्त किया है। भगवान शीतलनाथ अवसर्पिणी काल के दुखमा–सुषमा चौथे काल में उत्पन्न शलाकापुरुष एवं दसवें तीर्थंकर है।

2.2 जंबूद्वीप भरतक्षेत्र के मलय देश में भद्रपुर नगर के इक्ष्वाकुवंशी राजा दृढ़रथ इनके पिता तथा रानी सुनंदा माता थी। मां के गर्भ में इनके आने के छः मास पहले से ही राजा दृढ़रथ के घर रत्नवृष्टि होने लगी थी। ये सोलह स्वप्नपूर्वक चैत्र कृष्ण अष्टमी की रात्रि के अंतिम पहर में मां के गर्भ में आये थे। उस समय पूर्वाषाढ़ नक्षत्र था। गर्भवास के नौ मास व्यतीत होने पर माघ कृष्ण द्वादशी के दिन विश्वयोग में इनका जन्म हुआ था। देवों ने इन्हें सुमेरु

पर्वत पर ले जाकर इनका अभिषेक किया और इनका यह नाम रखा।

"तिथि माघ कृष्णा द्वादशी, प्रभु जन्मते बाजे बजे।
देवों के आसन कंप उठे, सुर इंद्र थे हर्षित तबे।।
सुरशैल पर पांडुकशिला पे जन्म अभिषव था हुआ।
जिन जन्म कल्याणक जजत मेरा जन्म पावन हुआ।।

ऊँ ह्रीं माघकृष्णाद्वादश्यां श्रीशीतलनाथजिनजन्म कल्याणकाय नमः अर्घ्यं....."

2.3 इनका जन्म तीर्थंकर पुष्पदंत के बाद नौ करोड़ सागर का समय व्यतीत हो जाने पर हुआ था। जन्म के पूर्व पल्य के चौथाई भाग तक धर्म–कर्म का विच्छेद रहा। इनके शरीर की कांति स्वर्ण के समान थी। आयु 1 लाख पूर्व और शरीर नब्बे धनुष ऊँचा था।

3. 2 कल्याणक की नगरी:

तीर्थंकर	कल्याणक	कौन कौन से
श्री शीतलनाथ भगवान	2	गर्भ और जन्म

4. भद्दलपुर (इटखोरी) के जैन मंदिर:

4.1 श्री 1008 शीतलनाथ भगवान दिगम्बर जैन मंदिर, भद्दलपुर, इटखोरी, जिला–चतरा (झारखंड) पिन–825408

प्राकृतिक सुंदरता से परिपूर्ण नदियों का कल कल बहता हुआ जल, उसके समीप देवाधिदेव 1008 श्री शीतल नाथ भगवान की जन्म तप कल्याणक भूमि।

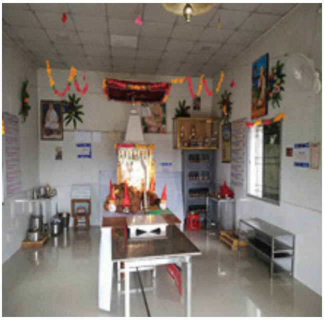 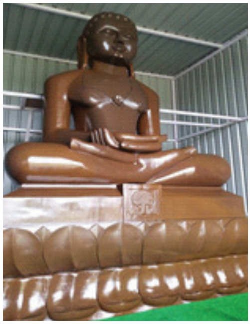

5. क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधाएँ: ठहरने और खाने की अच्छी सुविधा उपलब्ध है

प्रबन्ध व्यवस्था: बिहार स्टेट दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी

6. आवागमन के साधन

6.1 रेल मार्ग: नजदीकी ट्रेन स्टेशन गया जंक्शन (स्टेशन कोड– GAYA) है जो कि 70 किमी कि दूरी पर है।

कुछ महत्वपूर्ण ट्रेनें: गया–आनंद विहार टर्मिनल गरीब रथ एक्सप्रेस (22409), बीकानेर–सियालदह वातानुकूलित दूरन्तो एक्सप्रेस (12260), जम्मू तवी–सियालदह हमसफर एक्सप्रेस (22318), गोड्डा–नई दिल्ली साप्ताहिक हमसफर एक्सप्रेस (12349), नई दिल्ली–राँची राजधानी एक्सप्रेस (20840), नई दिल्ली–भुवनेश्वर राजधानी एक्सप्रेस (22824), हावड़ा–नई दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस (12301), पश्चिम बंगाल संपर्क क्रांति एक्सप्रेस (12330)

6.2 सड़क मार्ग: इटखोरी रांची से 150 किमी, चतरा से 35 किमी, हजारीबाग से 50 किमी की दूरी पर है। यह सड़क मार्ग से भली भांति जुड़ा हुआ है।

6.3 हवाई मार्ग: निकटतम हवाई अड्डा गया 90 किलोमीटर की दूरी पर है।

7. समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र—कोल्हुआ पहाड़–80 किमी, पावापुरीजी–150 किमी, राजगिरि–150 किमी, सम्मेदशिखरजी–130 किमी, कुंडलपुरजी–160 किमी, चम्पापुर–180 किमी।

21. कोल्हुआ पहाड़

भगवान शीतलनाथ के तप कल्याणक और केवलज्ञान कल्याणक से पवित्र हुआ यह तीर्थ हम सभी को संसार के भयंकर राग द्वेष रुपी ताप से शीतलता प्रदान करें, इसी भावना के साथ इस तीर्थ क्षेत्र का वर्णन प्रारंभ करते हैं।

1. कोल्हुआ पहाड़ (हंटरगंज) के बारे में:

1.1 समुद्र तल से 1750 फीट की ऊंचाई पर स्थित हंटरगंज प्रखंड से 6 किलोमीटर दूर कोल्हुआ पहाड़ झारखंड के चतरा के सबसे प्रसिद्ध आकर्षणों में से एक है। कोल्हुआ पहाड़ी की ऊँचाई 1575 फीट है। कोल्हुआ पहाड़ी को अक्ष लोचन के नाम से भी जाना जाता है। अक्ष लोचन चोटी से संपूर्ण चतरा के बेहतरीन दृश्य दिखाई देते हैं जो पर्यटकों को मंत्र–मुग्ध कर देते हैं। हंटरगंज प्रखंड जिला मुख्यालय चतरा से 35 किलोमीटर की दूरी पर है।

1.2 गया से कोल्हुआ पहाड़ 67 किमी है। इसे जैनी पहाड़ या पारसगिरि भी कहते हैं। गया से घंघरी, हंटरगंज व दंतारगांव होकर इस तीर्थ पर जाया जा सकता है। दंतारगांव में जैन धर्मशाला है, वहाँ से डेढ़ किमी चलकर पर्वत की चढ़ाई आरंभ होती है, जो लगभग 3 किमी. है। मार्ग पगडंडी का ही है। डोभी से चतरा जाने वाले मार्ग से 15 किमी की दूरी पर घंघरी ग्राम है। यहां से 5 किमी का कच्चा एवं सुन्दर मार्ग दन्तार को गया है।

2. कोल्हुआ पहाड़ (हंटरगंज) और जैन धर्म:

2.1 यहाँ तीर्थंकर शीतलनाथ जी के दो कल्याणक हुए–तप व केवलज्ञान। सघन वृक्षों व हरियाली से आच्छादित ये पर्वत प्रकृति सौन्दर्य से भरपूर कल्याणक क्षेत्र है। पर्वत पर उपलब्ध जैन शिलालेख, मूर्तियां, मंदिर आदि क्षेत्र की प्राचीनता एवं संस्कृति की गौरव परम्परा का मूक यशोगान कर रहे हैं।

2.2 उत्तर पुराण के रचयिता आचार्य श्री गुणभद्र ने लिखा है कि:–

शीतलो यस्य सधरमह कर्मधर्माश्वाभिशुभि: संतप्तनाम;
शशिवासौ शीतल: शीतलोस्तु नं.. 56/1

अर्थात् कर्म रूपी सूर्य की किरणों से पीड़ित प्राणियों के लिए जिसका अनुकरणीय धर्म चन्द्रमा के समान शीतल है; जो शांति की स्थापना करता है, वह शीतलनाथ भगवान हम सभी के लिए शीतल रहे, शांतिदूत बनें।

2.3 आयु का चतुर्थ भाग प्रमाण कुमारकाल व्यतीत होने पर उन्हें अपने पिता का राज्य मिला और प्रमुख सिद्धि प्राप्त करने के बाद, उन्होंने प्रजा का पालन किया। किसी एक दिन भगवान शीतलनाथ घूमने के लिये एक वन में गये थे। जब वे वन में पहुंचे थे तब वन में वृक्ष हिम ओस से आच्छादित थे। पर थोड़ी देर बाद सूर्य का उदय होने से वह हिम–ओस अपने आप नष्ट हो गई थी। यह देखकर उनका हृदय विषयों की ओर से सर्वथा हट गया। उन्होंने संसार के सब पदार्थों को हिम के समान क्षण भंगुर समझकर उनसे राग भाव छोड़ दिया और वन में जाकर तप करने का दृढ़ निश्चय कर लिया। उसी समय लौकान्तिक देवों ने आकर इनके उक्त विचारों का समर्थन किया जिससे उनकी वैराग्य धारा और भी अधिक वेग से प्रवाहित हो उठी। आप पुत्र के लिये राज्य सौंपकर देव निर्मित शुक्र प्रभा पालकी पर सवार हो सहेतुक वन में पहुंचे और वहां माघ कृष्ण द्वादशी के दिन पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में शाम के समय एक हजार राजाओं के साथ दीक्षित हो गये। आपके दीक्षा लेते ही मनः पर्यय ज्ञान प्राप्त हो गया था।

"हिमनाश देखा नाथ के मन में विरक्ति छा गई।
वदि माघ बारस पालकी शुक्रप्रभा तब आ गई।।
सुरपति सहेतुक बाग में लेकर गये प्रभु चौक पे।
सिद्धम नमः कह लोच कर दीक्षा ग्रही पूजूँ अबे।।
ऊँ ह्रीं माघकृष्णाद्वादश्यां श्रीशीतलनाथजिनदीक्षा कल्याणकाय नमः अर्घ्यं......"

2.4 भगवान शीतलनाथ दो दिन के उपवास के बाद आहार के विकल्प की पूर्ति के लिए अरिष्ट नामक नगर में गये। वहां राजा पुनर्वसु ने बड़ी प्रसन्नता से नवधा भक्ति पूर्व उन्हें आहार दिया। उत्तम एवं सुपात्र दान के प्रभाव से

राजा पुनर्वसु के घर पर देवों ने पञ्चाश्चर्य प्रकट किये। शीतलनाथ प्रभु ने तीन वर्ष तक मुनिदशा में रहकर आत्मध्यान द्वारा परमात्म साधना की । पौष कृष्ण चतुर्दशी के दिन शाम के समय पूर्वा– बाढ़ नक्षत्र में उन्हें दिव्य आलोक केवल ज्ञान प्राप्त हुआ। उसी समय देवों ने आकर ज्ञान कल्याणक उत्सव मनाया। इंद्र की आज्ञा से कुबेर ने समवसरण की रचना की उसके मध्य में स्थित होकर आपके दिव्य ध्वनि रुपी अमृत से भव्य जीवों का हित हुआ।

2.5 इनकी समवसरण सभा में इक्यासी गणधर, चौदह सौ पूर्वधारी, उनसठ हजार दो सौ शिक्षक, सात हजार दो सौ अवधिज्ञानी, सात हजार केवलज्ञानी, बारह हजार विक्रिया धारी, सात हजार पाँच सौ मनःपर्ययज्ञानी कुल एक लाख मुनि, धारण आदि तीन लाख अस्सी हजार आर्यिकाएँ, दो लाख श्रावक और तीन लाख श्राविकाएँ, असंख्यात देव देवियां और संख्यात तिर्यंच थे।

2.6 सम्मेद शिखर जी में अश्विन शुक्ला अष्टमी के दिन पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में शाम के समय अघातिया कर्मों का नाश कर स्वतन्त्र्य सदन मोक्ष महल को प्राप्त हुए।

3. **2 कल्याणक की नगरी:** यहाँ तीर्थंकर शीतलनाथ जी के दो कल्याणक हुए

तीर्थंकर	कल्याणक	कौन कौन से
श्री शीतलनाथ जी	2	तप व ज्ञान

4. कोल्हुआ पहाड़ के जैन मंदिरः

4.1 श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र, कोल्हुआ पहाड़, ग्राम/पोस्ट–दन्तार, तह.–जोरी, जिला–चतरा (झारखंड) पिन–825401

टेलीफोन – 9001342105, 9304286186

5. क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधाएँ:

यहां दिगम्बर जैन भवन है।

6. आवागमन के साधन

6.1 रेल मार्ग: नजदीकी ट्रेन स्टेशन गया जंक्शन (स्टेशन कोड–GAYA) है जो कि 70 किमी कि दूरी पर है।

कुछ महत्वपूर्ण ट्रेनें: गया–आनंद विहार टर्मिनल गरीब रथ एक्सप्रेस (22409), बीकानेर–सियालदह वातानुकूलित दूरन्तो एक्सप्रेस (12260),

जम्मू तवी–सियालदह हमसफर एक्सप्रेस (22318), गोड्डा–नई दिल्ली साप्ताहिक हमसफर एक्सप्रेस (12349), नई दिल्ली–राँची राजधानी एक्सप्रेस (20840), नई दिल्ली–भुवनेश्वर राजधानी एक्सप्रेस (22824), हावड़ा–नई दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस (12301), पश्चिम बंगाल संपर्क क्रांति एक्सप्रेस (12330)।

6.2 सड़क मार्ग: चतरा मुख्यालय से 35 किलोमीटर दूर स्थित है। गया शहर से 32 कि.मी. दक्षिण स्थित डोभी गांव से चतरा जाने से सड़क मार्ग पर 26 कि.मी. घंघरी गांव है। यहाँ से 9 कि.मी. वाहन पक्की सड़क दन्तार गांव तक जाती है।

6.3 हवाई मार्ग: नजदीकी एयरपोर्ट बोधगया एयरपोर्ट है।

7. समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र– सम्मेदशिखरजी–180 किमी, पावापुरी–140 किमी, राजगिरि–120 किमी, कुंडलपुर–130 किमी, चम्पापुर–300 किमी

22. पावापुरी

इस पावन तीर्थ क्षेत्र का वर्णन पण्डित श्री द्यानतराय जी विरचित भक्ति से प्रारम्भ करते हैं।

पावापुर भवि वंदो जाय ।।टेक।।
परम पूज्य महावीर गये शिव,
गौतम ऋषि केवलगुन पाय
सो दिन अब लगि जग सब मानैं,
दीवाली सम मंगल काय
कातिक मावस निस तिस जागे,
'द्यानत' अद्भुत पुन्य उपाय

पंडित श्री द्यानतराय जी बड़ा सुंदर वर्णन करते हैं पावापुरी जी का, मानो कि वो हम सभी जीवों को पुकार रहे हों कि हे भाई इस पावन तीर्थ क्षेत्र की वंदना करने आओ। आइए इस अध्याय में पावापुरी जी के बारे में जानते हैं।

1. पावापुरी के बारे में: पावापुरी, जिसे पावा भी कहा जाता है, भारत के बिहार राज्य के नालंदा जिले में राजगीर और बोधगया के समीप स्थित एक स्थान है। जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर ने निर्वाण यहीं से प्राप्त किया था। पावापुरी के मुख्य मंदिरों में से एक यहाँ का जलमंदिर है जहां से कि बाल ब्रह्मचारी तीर्थंकर भगवान महावीर ने मोक्ष पद की प्राप्ति की थी। संपूर्ण शहर कैमूर की पहाड़ी पर बसा हुआ है।

2. पावापुरी और जैन धर्म:

2.1 इस पवित्र तीर्थ की चर्चा इस सुंदर भजन से प्रारंभ करना उचित लगता है, पण्डित द्यानतराय जी लिखते हैं कि

देखे धन्य घरी, आज पावापुर महावीर ।।टेक।।
गौतमस्वामि चंदना मेंढ़क, श्रेणिकसुखकर धीर ।। देखे.।। १।।
चार ओर भवि कमल विराजैं, भक्ति फूल सुख नीर ।। देखे.।। २।।
'द्यानत' तीरथनायक ध्यावै, मिट जावै भव भीर ।। देखे. ।। ३।।

प्राचीन भक्तियों में जो आनंद भरा होता था वह शब्दों में पिरो पाना असंभव सा लगता है, बिल्कुल ऐसा ही असंभव सा कार्य इस पवित्र तीर्थ क्षेत्र पावापुरी जी की महिमा को शब्दों में पिरोना है, किंतु धर्म के लोभी हम अल्पज्ञ जीव फिर भी यह दुस्साहस कर रहे हैं।

2.2 लगभग 2600 वर्ष पूर्व प्राचीन काल में पावापुरी मगध साम्राज्य का हिस्सा था। जिसे मध्यम वापा या अपापुरी कहा जाता था। भगवान महावीर स्वामी, भगवान पार्श्वनाथ तीर्थंकर के ढाई सौ वर्ष बाद हुए थे। इनकी आयु बहत्तर वर्ष की थी। ये हरिवंशी और काश्यपगोत्री थे। वीर–वर्धमान चरित के अनुसार ये कर्मरूपी साधुओं को नाश करने से महावीर और निरंतर बढ़ने वाले गुणों के आश्रय होने से वर्धमान कहलाये थे। महावीर नाम के संबंध में यह भी कहा गया है कि संगम नामक देव ने इनके बल की परीक्षा लेकर इन्हें यह नाम दिया था। यह देव सर्प के रूप में आया था। जिस वृक्ष के नीचे वे खेल रहे थे उसी वृक्ष के तने से वह लिपट गया। इन्होंने इस सर्प के साथ निर्भय होकर क्रीड़ा की। इस निर्भयता से प्रसन्न होकर देव ने प्रकट होकर इन्हें ''महावीर'' कहा था।

2.3 पद्मपुराण के अनुसार इन्होंने अपने पैर के अग्र भाग से अनायास ही सुमेरु पर्वत को कंपित कर इंद्र द्वारा यह नाम प्राप्त किया था। तीव्र तप चरण करने से ये लोक में ''महतिमहावीर'' नाम से विख्यात हुए थे। संजय और विजय नाम के चारण ऋद्धिधारी मुनियों का संशय इनके दर्शन मात्र से दूर हो जाने से उनके द्वारा इन्हें ''सन्मति'' नाम दिया गया था। आठ वर्ष की अवस्था में इन्होंने श्रावक के बारह व्रत धारण कर लिये थे। ये समचतुरस्रसंस्थान और वज्रवृषभनाराचसंहनन के धारी थे। एक हजार आठ शुभ लक्षणों से इनका शरीर अलंकृत तथा अप्रमाण महावीर्य से युक्त था। ये विश्वहितकारी कर्णसुखद् वाणी बोलते थे।

2.4 तीस वर्ष की अवस्था में ही इन्हें वैराग्य हो गया था। लौकांतिक देवों के द्वारा स्तुति किये जाने के पश्चात् इन्होंने माता–पिता से आज्ञा प्राप्त की और ये चंद्रप्रभा पालकी में बैठकर दीक्षार्थ खंडवन गये थे। इनकी पालकी सर्वप्रथम भूमिगोचरी राजाओं ने, पश्चात् विद्याधर राजाओं ने और फिर इंद्रों ने उठाई थी। खंडवन में पालकी से उतरकर वर्तुलाकार रत्नशिला पर उत्तर की ओर मुखकर इन्होंने बेला का नियम लेकर मार्गशीर्ष मास के कृष्णपक्ष की दशमी के दिन अपराह्न काल में उत्तराफाल्गुन और हस्त नक्षत्र के मध्यभाग में संध्या के समय निर्ग्रंथ मुनि होकर संयम धारण किया।

2.5 मुनि दीक्षा लेते ही इन्हें मनपर्ययःज्ञान प्राप्त हुआ। कूलग्राम नगरी में राजा कूल ने इन्हें परमान्न खीर का आहार देकर पंचाश्चर्य प्राप्त किये। उज्जयिनी के अतिमुक्तक श्मशान में महादेव रुद्र ने प्रतिमायोग में विराजमान इनके ऊपर अनेक प्रकार से उपसर्ग किये किंतु वह इन्हें विचलित नहीं कर सका था।

2.6 एक दिन ये वत्स देश की कौशांबी नगरी में आहार के लिए आये थे। राजा चेटक की पुत्री चंदना जैसे ही इन्हें आहार देने के लिए तत्पर हुई, उसके समस्त बंधन टूट गये तथा केश, वस्त्र और आभूषण सुंदर हो गये। यहाँ तक कि उसका मिट्टी का सकोरा स्वर्णपात्र बन गया और आहार में दिया गया कोंदों का भात चावलों में बदल गया। उसे पंचाश्चर्य प्राप्त हुए।

2.7 छद्मस्थ अवस्था के बारह वर्ष व्यतीत करके एक दिन जृंभिक ग्राम के समीप ऋजुकूला नदी के तट पर मनोहर वन में सालवृक्ष के नीचे शिखा पर प्रतिमायोग में विराजमान हुए। परिणामों की विशुद्धता से वैशाख मास के शुक्लपक्ष की दशमी तिथि की अपराह्न बेला में उतरा–फाल्गुन नक्षत्र में शुभ चंद्रयोग के समय इन्हें केवलज्ञान प्राप्त हुआ और ये अनंतचतुष्टय के धारक हो गये। सौधर्मेंद्र ने इनका ज्ञानकल्याणक मनाया।

2.8 समवसरण में तीन प्रहर बीत जाने पर भी इनकी दिव्यध्वनि न खिरने पर सौधर्मेंद्र ने इसका कारण गणधर का अभाव जाना। वह इस पद के योग्य गौतम इंद्रभूति विप्र को ज्ञातकर वृद्ध ब्राह्मण के वेश में उसके पास गया तथा उनसे उसने निम्न गाथा का अर्थ स्पष्ट करने के लिए कहा।

त्रैकाल्यं द्रव्यषट्कं सकलगतिगणाः सत्पदार्था नवैव
विश्वं पंचास्तिकाया व्रतसमितिचिदः सप्ततत्त्वानि धर्माः।
सिद्धेर्मार्गः स्वरूपं विधिजनितफलं जीवषट्कायलेश्या
एतान् यः श्रद्धाति जिनवचनरतो मुक्तिगामी स भव्यः।।

2.9 गौतम इस गाथा का अर्थ ज्ञात न कर सकने से इनके पास आये। वहाँ मानस्तंभ पर दृष्टि पड़ते ही गौतम का अज्ञान दूर हो गया। अपने अज्ञान की निवृत्ति से प्रभावित होकर गौतम अपने पाँच सौ शिष्यों के साथ इनके शिष्य हो गये। श्रावण कृष्णा प्रतिपदा के दिन पूर्वाह्न काल में समस्त अंगों और पूर्वों को जानकर गौतम ने रात्रि के पूर्वभाग में अंगों की और पिछले भाग में पूर्वों की रचना की तथा वे इनके प्रथम गणधर हुए।

2.10 महापुराण और वीरवर्द्धमान चरित के अनुसार शेष दस गणधरों के नाम हैं: वायुगति, अभिभूति, सुधर्म, मौर्य, मौंद्रय, पुत्र, मैत्रेय, अंधवेला तथा प्रभास। हरिवंशपुराण के अनुसार ये निम्न प्रकार हैं इंद्रभूति, अग्निभूति, वायुभूति, शुचिदत्त, सुधर्म, मांडव्य, मौर्यपुत्र, अकंपन, अचल, मेदार्य और प्रभास। इस प्रकार इनके कुल ग्यारह गणधर थे। इनके संघ में तीन सौ ग्यारह अंग और चौदहपूर्वधारी संयमी, नौ हजार नौ सौ शिक्षक, तेरह सौ अवधिज्ञानी, सात सौ केवलज्ञानी, नौ सौ विक्रियाऋद्धिधारी, पाँच सौ मनःपर्ययज्ञानी और चार सौ अनुत्तरवादी कुल मुनि चौदह हजार, चंदना आदि छत्तीस हजार आर्यिकाऐं, एक लाख श्रावक, तीन लाख श्राविकाएं तथा असंख्यात देव–देवियाँ और संख्यात तिर्यंच थे।

2.11 इनके विहार–स्थलों के नाम हरिवंशपुराण में बताये गये हैं। वे नाम हैं काशी, कौशल, कौशल्य, कुबंध्य, अस्वष्ट, साल्व, त्रिगतं, पंचाल, भद्रकार, पटच्चर, मौक, मत्स्य, कनीय, सूरसेन और वृकार्थक, समुद्रतटवर्ती कलिंग, कुरुजांगल, कैकेय, आत्रेय, कंबोज, बाह्लीक, यवन, सिंध, गांधार, सौवीर, सूर, भीरू, दशेरुक, वाडवान, भरद्वाज और क्वाथतोय तथा उत्तर दिशा के तार्ण, कार्ण और प्रच्छाल। इन्होंने इन स्थलों में विहार करते हुए अर्धमागधी भाषा में द्रव्य, तत्त्व, पदार्थ, संसार और मोक्ष तथा उनके कारण एवं उनके फल का प्रमाण, नय और निक्षेप आदि द्वारा उपदेश किया था।

2.12 अंत में ये राजगृह नगर के निकट विपुलाचल पर्वत पर स्थिर हुए। वीरवर्धमानचरित के अनुसार इन्होंने छः दिन कम तीस वर्ष तक विहार करने के बाद चंपानगरी के उद्यान में दिव्यध्वनि और योगनिरोध कर प्रतिमायोग धारण किया तथा कार्तिक मास की अमावस्या के दिन स्वाति नक्षत्र के रहते प्रभातवेला में उनका निर्वाण हुआ। महापुराण और पद्मपुराण के अनुसार निर्वाण स्थली पावापुर का मनोहर वन है।

2.13 महावीर भगवान पहले ऐसे तीर्थंकर थे जिनका मोक्ष समतल जमीन पर हुआ था, निर्वाण होने के कुछ दिन बाद ही राजा नन्दिवर्धन ने मन्दिर का निर्माण करवाया, इसकी नींव स्वर्ण ईंटों से रक्खी गयी।

2.14 जल मंदिर में प्रवेश करते ही मनुष्य सारे बाह्य वातावरण को भूल कर प्रभु भक्ति में अपने आप को खो देता हे। ऐसा शुद्ध व पवित्र वातावरण है यहाँ का। भगवान महावीर के निर्वाण के पश्चात एक दिन बाद उनके प्रथम शिष्य हुए गौतम गणधर स्वामी का भी निर्वाण नवादा के समीप गुणावाँ जी पर हुआ। यहाँ भी एक विशाल सरोवर के मध्य में जल मन्दिर स्थित है जहाँ गौतम गणधर स्वामी के चरणचिह्न स्थापित हैं ।

3. 2 कल्याणक की नगरी: यहाँ तीर्थंकर महावीर स्वामी के दो कल्याणक हुए

तीर्थंकर	कल्याणक	कौन कौन से
श्री महावीर स्वामी	2	ज्ञान, मोक्ष

4. पावापुरी के जैन मंदिर:

4.1 श्री जल मंदिर, पावापुरी, जिला–नालंदा (बिहार) पिन–803115

4.1.1 जल मंदिर बिहार के पावापुरी शहर में स्थित है। जल मंदिर के नाम से ही पता चलता है कि मंदिर खिले कमलों में भरे जलाशयों के बीच में स्थित होगा। जल मंदिर में मुख्य पूज्यनीय वस्तु भगवान महावीर की चरण पादुका है। भगवान महावीर को यहीं मोक्ष की प्राप्ति हुई थी। मंदिर का निर्माण विमान के आकार में किया गया है और जलाशय के किनारों से मंदिर तक लगभग 600 फीट लम्बा पुल बनाया गया है।

4.1.2 कार्तिक अमावस्या की मध्य रात्रि में भगवान महावीर का निर्वाण हुआ था। इसी उपलक्ष्य में हर साल दीपोत्सव पर यहां जैन श्रद्धालुओं की अपार भीड़ उमड़ती है। मान्यता है कि भगवान महावीर की निर्वाण भूमि जलमंदिर, जहां पर अभी भगवान की चरण पादुका उनके दो शिष्यों गौतम स्वामी और सुधर्मा स्वामी के साथ अवस्थित है वहां भगवान महावीर की चरण पादुका का छत्र

दिवाली की मध्य रात्रि को हिलता–डुलता है और इस को जो भी जैन श्रद्धालु देखते हैं उनका जीवन धन्य हो जाता है। इस दृश्य को ही देखने के लिए हजारों श्रद्धालु यहां रात भर टकटकी लगाये रहते हैं।

4.2 श्री दिगम्बर जैन समोशरण मंदिर, पाण्डुकशिला मन्दिर, पावापुरी, जिला–नालंदा (बिहार) पिन–803115

यह जलमन्दिर के पश्चिम तरफ स्थित है। यहाँ भगवान महावीर स्वामी के चरण पाण्डुकशिला में स्थापित है। इस पाण्डुकशिला परिसर में परम पूज्य आर्यिका 105 श्री ज्ञानमति माता जी के सौजन्य से भगवान महावीर स्वामी की साढ़े ग्यारह फुट लाल

पाषण की प्रतिमा बिहार स्टेट दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमिटी के निर्देशन में स्थापित करवाई गयी है। यह वही स्थान है जहां भगवान महावीर ने अपने धर्म का अंतिम उपदेश दिया था। अतः इसे भगवान महावीर

स्वामी की अन्तिम देशना स्थली के नाम से भी जाना जाता है।

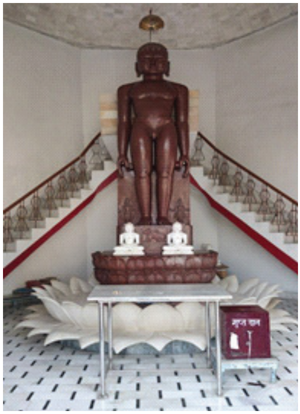

4.3 श्री दिगम्बर जैन मंदिर, पावापुरी, जिला–नालंदा (बिहार) पिन–803115

जलमन्दिर के पूर्व दिशा की तरफ दिगम्बर जैन मंदिर है यहाँ बाहर से आने वाले जैन तीर्थ यात्रियों को ठहरने हेतु विशाल धर्मशाला है। जहाँ यात्रियों के लिए सभी तरह के कमरें उपलब्ध है। इस मन्दिर में 9 वेदियाँ है सभी वेदियों में सोने की कारीगरी एवं शीशे का काम मन्दिरो में किया गया है। मन्दिर के बाहर धर्मशाला के प्रांगण में विशाल सफेद संगमरमर से निर्मित विशाल मानस्तम्भ है।

5. क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधाएँ: क्षेत्र पर रहने और भोजन की अच्छी व्यवस्था है।

6. आवागमन के साधन

6.1 रेल मार्ग: हालांकि राजगीर के पास एक रेलवे स्टेशन है, लेकिन निकटतम सुविधाजनक रेलवे स्टेशन पटना जंक्शन (स्टेशन कोड – PNBE) है जो कि 90 किमी की दूरी पर है।

कुछ महत्वपूर्ण ट्रेनें: आनंद विहार टर्मिनल–जयनगर गरीब रथ एक्सप्रेस (12436), आनंद विहार टर्मिनल – भागलपुर गरीब रथ एक्सप्रेस (22406), नई दिल्ली–राजेंद्र नगर टर्मिनल तेजस राजधानी एक्सप्रेस (12310), नई दिल्ली –हावड़ा राजधानी एक्सप्रेस (12306), नई दिल्ली–हावड़ा दुरंतो एक्सप्रेस (12274), पटना–शालीमार वातानुकूलित दुरन्तो एक्सप्रेस (22214), बाबा बैद्यनाथ

धाम देवघर हमसफर एक्सप्रेस (22460), बांद्रा टर्मिनस–सहरसा हमसफर एक्सप्रेस (22913), आनंद विहार टर्मिनल – मधुपुर हमसफर एक्सप्रेस (12236)

6.2 सड़क मार्ग: पटना, राजगीर, गया या बिहार के किसी भी शहर से टैक्सी या बस से पावापुरी आया जा सकता है।

6.3 हवाई मार्ग: निकटतम हवाई अड्डा पटना 100 किमी पर है।

7. समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र– कुण्डलपुर–25 किमी, राजगीर–40 किमी, मंदार गिरी–300 किमी, चम्पापुरी–250 किमी, सम्मेद शिखरजी–225 किमी, कोल्हुआ पहाड़–145 किमी।

8. वार्षिक मेला– कार्तिक अमावस्या को

23. प्रयागराज

सुनकर वाणी जिनवर की, म्हारे हर्ष हिये न समाय जी ।।टेक ।।
काल अनादि की तपन बुझानी, निज निधि मिली अथाह जी ।।१।।
संशय, भ्रम और विपर्यय नाशा, सम्यक् बुद्धि उपजाय जी ।।२।।
नर–भव सफल भयो अब मेरो, 'बुधजन' भेटत पाय जी ।।१।।

ठीक ऐसे ही भाव हुए होंगे भव्य जीवों के जब भगवान ऋषभदेव जी की दिव्यध्वनि सुनी होगी। यह तीर्थ क्षेत्र भगवान आदिनाथ (ऋषभदेव) की दीक्षा और केवलज्ञान कल्याणक स्थली है, आइए मन वचन काय पूर्वक प्रभु को नमन कर वंदना प्रारम्भ करते हैं।

1. प्रयागराज के बारे में:

1.1 प्रयागराज भारत के उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में स्थित एक नगर, प्रयागराज जिला का प्रशासनिक मुख्यालय तथा प्रसिद्ध तीर्थस्थान है। इसका प्राचीन नाम 'प्रयाग' है। यह तीन नदियों– गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम पर स्थित है। समागम–बिंदु को त्रिवेणी के रूप में जाना जाता है।

1.2 प्रयागराज में कई महत्त्वपूर्ण राज्य सरकार के कार्यालय स्थित हैं, जैसे इलाहाबाद उच्च न्यायालय, प्रधान (एजी ऑफिस), उत्तर प्रदेश राज्य लोक सेवा आयोग (पी.एस.सी), राज्य पुलिस मुख्यालय, उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का क्षेत्रीय कार्यालय एवं उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद कार्यालय। प्रयागराज भारत के सबसे पुराने शहरों में से एक है।

2. प्रयागराज और जैन धर्म:

2.1 भारतदेश की वसुन्धरा पर शाश्वत तीर्थ अयोध्या और सम्मेदशिखर के समान ही कर्मयुग की आदि से प्रयाग तीर्थ का प्राचीन इतिहास रहा हैं। आज से करोड़ों वर्ष पूर्व जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव ने अयोध्या में जन्म लेकर राज्य संचालन किया। पुनः संसार से वैराग्य हो जाने पर उन्होंने जिस सिद्धार्थ नामक वन में जाकर वटवृक्ष के नीचे जैनेश्वरी दीक्षा धारण की

थी, वही स्थान प्रयाग के नाम से प्रसिद्धि को प्राप्त हुआ, ऐसा जैन ग्रंथों में वर्णन आता है। हरिवंशपुराण में कहा है:

एवमुक्त्वा प्रजा यत्र, प्रजापतिमपूजयत्।
प्रदेशः स प्रयागाख्यो, यतः पूजार्थयोगतः।।

अर्थात जहाँ दीक्षा के समय भगवान से सान्त्वना को प्राप्त करके प्रजा ने और सुर–असुरों ने भी भगवान की विशेष पूजा की, उसी पूजा के निमित्त से उस स्थल का "प्रयाग" यह नाम प्रसिद्ध हुआ।

2.2 जैन रामायण पद्मपुराण में आया है:

"प्रकृष्टो वा कृतस्त्यागः प्रयागस्तेन कीर्तितः"

अर्थात् – उत्कृष्ट रूप से त्याग करने से उस स्थल का नाम "प्रयाग" पड़ गया। इस कथन के अनुसार करोड़ों वर्ष पूर्व उस प्रयाग तीर्थ पर जिस वटवृक्ष के नीचे भगवान ने दीक्षा धारण की थी, पुनः एक हजार वर्ष तक तपश्चरण करके उसी वटवृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त किया था। आज भी वह "अक्षयवटवृक्ष" के नाम से प्रयाग में विद्यमान है। पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से फरवरी 2001 में उक्त ऋषभदेव दीक्षा तीर्थ का अभूतपूर्व निर्माण हुआ है। दीक्षा तपोवन, समवसरण रचना, कैलाश पर्वत, गुफा मन्दिर, कीर्तिस्तम्भ इत्यादि वंदनीय स्थल हैं। 14 फुट ऊँची पद्मासन की विशाल प्रतिमा त्रिकाल चौबीसी की 72 जिनालयों में जिन प्रतिमाएं विराजमान है। समवसरण मंदिर भी दर्शनीय है, तथा पवित्र रचना का मॉडल स्थापित है।

3. 2 कल्याणक की नगरी: यहाँ तीर्थंकर ऋषभ देव जी के दो कल्याणक हुए

तीर्थंकर	कल्याणक	कौन कौन से
श्री ऋषभ देव भगवान	2	तप, ज्ञान

4. प्रयागराज के जैन मंदिरः

4.1 श्री भगवान ऋषभदेव ज्ञानस्थली तीर्थ, 56/62, चाहचन्द, जीरो रोड़, प्रयागराज (उ. प्र.)–211 003

4.2 तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ, वाराणसी–प्रयागराज रोड, अंदावा, प्रयागराज, (उत्तर प्रदेश)–211019

सम्पर्क– 0532–2567067, 09415367215, 9936352111

4.2.1 प्रयाग का जो प्राचीन जैन इतिहास लुप्तप्राय हो गया था, युगादि का वही प्राचीन नगर प्रयाग जैन तीर्थ के रूप में पुनः नई सहस्राब्दि का वरदान बनकर अपने इतिहास से संसार को परिचित करा रहा है। जैन समाज की साध्वी पूज्य गणिनी प्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमति माताजी की प्रेरणा प्राप्त कर दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप–हस्तिनापुर (मेरठ–उत्तर प्रदेश) नामक संस्था के द्वारा 2001 में इलाहाबाद–बनारस हाइवे पर ''तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली–प्रयाग दिगम्बर जैन तीर्थ'' का अभूतपूर्व निर्माण हुआ है।

उक्त संस्थान के द्वारा 4 फरवरी सन् 2000 को राजधानी दिल्ली में ''भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव'' का प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने उद्घाटन किया था। फरवरी 2001 में तीर्थ की प्रणेत्री पूज्य गणिनी माताजी के ससंघ सानिध्य एवं अनेक राजनेताओं, समाजनेताओं की गरिमामयी उपस्थिति में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा तथा भगवान ऋषभदेव का मस्तकाभिषेक महोत्सव सम्पन्न हुआ। तब से तपस्थली तीर्थ पर निरन्तर साधु संघों एव श्रद्धालु भक्तों के आवागमन का तांता लगा रहता है।

4.2.2 **भगवान ऋषभदेव दीक्षा कल्याणक तपोवनः** तीर्थ परिसर के इस प्रथम मंदिर में धातु से निर्मित 15 फुट ऊँचें वटवृक्ष के नीचे भगवान ऋषभदेव की सवा पाँच फुट उत्तुंग खड्‌गासन (पिच्छी–कमंडलु सहित) प्रतिमा कर्मयुग की प्रथम दीक्षा का इतिहास दर्शा रही है। सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्रस्वरूप रत्नत्रय त्रिवेणी की स्मृति में ही मानो प्रयाग में गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों का संगम पाया जाता है।

4.2.3 इस तपोवन के सामने तमाम भक्तगण अपने बच्चों का मुंडन संस्कार करवाकर उनमें धर्म, विद्याबुद्धि एवं सदाचार के संस्कार आरोपित करते हैं। यह तपोवन सभी दर्शनार्थियों के हृदय में तप–त्याग की भावना उत्पन्न करे यही मंगल भावना है।

4.2.4 **केवलज्ञान कल्याणक समवसरण रचनाः** जिस पुरमितापुर के उद्यान में भगवान ऋषभदेव को केवलज्ञान हुआ था उसे प्रयाग का ही पूर्वतालपुर माना जाता है। उसी इतिहास को दर्शाने के लिए तपोवन के समान ही दूसरे कमलाकार भवन में समवसरण की रचना निर्मित है।

4.2.5 **श्री अष्टापद कैलाश पर्वतः** तपस्थली परिसर के बीचोंबीच में विशाल कैलाशपर्वत का निर्माण हुआ है। जैन शास्त्रों के अनुसार कैलाश पर्वत के अष्टापद शिखर पर भगवान ऋषभदेव ने अंतिम तपस्या करके समस्त कर्मों

से रहित मोक्ष अवस्था प्राप्त किया था। वर्तमान में वह कैलाश मानसरोवर के नाम से चीन देश की सीमा में है। अतः भारत में उसकी प्रतिकृति का दिग्दर्शन कराने हेतु प्रथम बार इस पर्वत का निर्माण प्रयाग में किया गया है, जो उत्तर प्रदेश के पर्यटन केन्द्र का एक आकर्षक स्थल है।

4.2.6 पर्वत पर सामने से ही त्रिकाल चौबीसी के 72 जिनमंदिरों एवं भगवन्तों के दर्शन से जहाँ जैन श्रद्धालु सम्राट भरत चक्रवर्ती द्वारा निर्मित 72 मंदिरों के पौराणिक इतिहास को स्मरण करने लगते हैं, वहीं समस्त संप्रदाय के बन्धु, पर्वत से निकलते झरने, झील एवं पशु–पक्षियों के प्राकृतिक सौंदर्य को देखकर फूले नहीं समाते हैं। 108 फुट लम्बे, 72 फुट चौड़े और 50 फुट ऊँचे कैलाश पर्वत के अष्टापद शिखर पर 14 फुट उत्तुंग लालवर्णी भगवान ऋषभदेव की पदमासन प्रतिमा के दर्शन से भक्तगण मनवांच्छित फल की प्राप्ति करते हैं।

4.2.7 **गुफा मंदिर:** कैलाश पर्वत के नीचे गोलाकार गुफा मंदिर है, जिसमें 3.25 फुट की पद्मासन धातु निर्मित भगवान ऋषभदेव की अतिशयकारी प्रतिमा विराजमान है। भक्तों के लिए पूजा–अर्चना एवं ध्यान साधना का यह पावन स्थल सदैव भगवान के नाम स्मरण से गुंजायमान रहता है।

4.2.8 **भगवान ऋषभदेव कीर्तिस्तम्भ:** कैलाश पर्वत एवं समवसरण रचना के ठीक सामने 31 फुट ऊँचा ठोस पत्थर से निर्मित कीर्तिस्तम्भ अपने आप में एक अनूठी कृति है। उसमें सबसे ऊपर के चार चैत्यालयों में प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की सवा फुट की पद्मासन प्रतिमा विराजमान है तथा उसके नीचे चार मंदिरों में अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर की 1 फुट पद्मासन प्रतिमा है। इस कलात्मक कीर्तिस्तम्भ में ऋषभदेव जी का चित्रमय चरित्र, उनके परिचय के शिलालेख एवं जैनधर्म के मूल सिद्धान्तों का उल्लेख है।

4.2.9 इसी प्रकार से कैलाश पर्वत के दूसरी ओर तपोवन के सामने 21 फुट ऊँचा अखण्ड धर्मध्वज है, जिसमें स्वस्तिक चिन्ह से समन्वित केसरिया ध्वज सदैव अहिंसा धर्म एवं विश्व शांति की कीर्तिपताका को फहरा रहा है।

5. क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधाएँ:

5.1 क्षेत्र पर रहने और भोजन की अच्छी व्यवस्था है। प्रयागराज रेलवे स्टेशन से लगभग 1.5 किमी पर एक धर्मशाला है जिसमें 20 कमरे और 1 बड़ा हॉल है। Phone no. 0532–2400263

.2 तपस्थली तीर्थ निर्माण के साथ–साथ परिसर में ''गणिनी ज्ञानमती निलय'' के नाम से आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट की दोमंजिली सुन्दर धर्मशाला है तथा तीन धर्मशालाएं भी निर्मित हैं। पानी की सुविधा हेतु क्षेत्र पर बड़ी टंकी है। शुद्ध जल के लिए कुँआ एवं जेटपम्प की व्यवस्था है तथा आगन्तुक यात्रियों के लिए शुद्ध भोजन की भी समुचित व्यवस्था है। बिजली–पानी की सुविधा के साथ फौव्वारे, झरने एवं विद्युत प्रकाश आदि के दृश्य प्रतिदिन दर्शनार्थियों के लिए सुलभ रहते हैं।

6. आवागमन के साधन

6.1 रेल मार्ग: भारतीय रेल द्वारा जुड़ा हुआ, प्रयागराज जंक्शन (PRYJ) उत्तर मध्य रेलवे का मुख्यालय है। ये अन्य प्रधान शहरों जैसे कोलकाता, दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, हैदराबाद, इंदौर, लखनऊ, छपरा, पटना, भोपाल, ग्वालियर, जौनपुर, जबलपुर, बंगलुरु जयपुर एवं कानपुर से भली भांति जुड़ा हुआ है।

कुछ महत्वपूर्ण ट्रेनें: आनंद विहार टर्मिनल–जयनगर गरीब रथ एक्सप्रेस

(12436), आनंद विहार टर्मिनल – भागलपुर गरीब रथ एक्सप्रेस (22406), नई दिल्ली–रांची गरीब रथ एक्सप्रेस (12878), गया–आनंद विहार टर्मिनल गरीब रथ एक्सप्रेस (22409), नई दिल्ली–वाराणसी वंदे भारत एक्सप्रेस (22436); नई दिल्ली– राजेंद्र नगर टर्मिनल तेजस राजधानी एक्सप्रेस (12310), भुवनेश्वर –नई दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस (टाटानगर के रास्ते) (22823), बलिया–आनन्द विहार टर्मिनल क्लोन स्पेशल (04055), बाबा बैद्यनाथ धाम देवघर हमसफर एक्सप्रेस (22460)।

6.2 सड़क मार्गः प्रयागराज दिल्ली–कोलकाता मार्ग के बीच स्थित है। यह सड़क मार्ग द्वारा भारत के कई प्रमुख स्थानों से जुड़ी हुई है।

6.3 हवाई मार्गः प्रयागराज हवाई अड्डा या बमरौली हवाई अड्डा प्रयागराज में स्थित है। यह प्रयागराज शहर से 12 किमी की दूरी पर है, और यहां से घरेलू उड़ानों का परिचालन होता है।

7. समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र– तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली–13 किमी, कौशाम्बी–60 किमी, प्रभाषगिरि–80 किमी, वाराणसी–110 किमी, अयोध्या–170 किमी, काकंदी–300 किमी,

8. वार्षिक मेले– ऋषभदेव दीक्षा कल्याणक– चैत्रवदी 9 से 11 तक वार्षिक महोत्सव, माघ कृष्ण 14– ऋषभदेव निर्वाण कल्याणक, माघ शुक्ल 13 – तीर्थक्षेत्र प्रतिष्ठापना दिवस।।

24. कौशाम्बी

कौशांबी नगरी भी सामान्य सी नगरी थी जैसे अन्य सभी नगर होते हैं, लेकिन इस सामान्य नगरी को विशेष बनाने का श्रेय छटवे तीर्थंकर पद्मप्रभ भगवान को जाता है जिनके दो– दो कल्याणक इस कौशांबी की वसुधा पर हुए हैं। चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की चरण रज ने भी इस तीर्थ क्षेत्र की महिमा को और बढ़ा दिया। आइए इस पवित्र तीर्थ क्षेत्र की वंदना करते हैं।

गरभ अगाऊ धनपति आय, करी नगरसोभा अधिकाय ।
बरखे रतन पंदरै मास, नमौं पदमप्रभु सुखकी रास ।। ६ ।।

(स्वयंभू स्त्रोत पद्यानुवाद द्यानतराय जी)

1. **कौशाम्बी के बारे में:** कौशाम्बी ऐतिहासिक एवं धार्मिक नगरी है। यह सोलह महाजनपदों में से एक, वत्स साम्राज्य की राजधानी थी। यह यमुना नदी पर प्रयागराज में गंगा के साथ अपने संगम के लगभग 56 किलोमीटर दक्षिण–पश्चिम में स्थित था।

2. **कौशाम्बी और जैन धर्म:**

2.1 यहाँ तीर्थंकर पद्मप्रभ जी के दो कल्याणक हुए: गर्भ व जन्म। इस तीर्थ पर कई शुभ घटनाएँ हुईः महावीर स्वामी मुनि अवस्था में आहार चर्या के लिए निकले, जंजीरों से जकड़ी चंदनबाला के बंधन स्वत: खुल गये और चंदनबाला ने नवधाभक्ति पूर्वक मुनिराज महावीर का आहार करवाया। चाणक्य को इसी स्थान पर चन्द्रगुप्त मौर्य की प्राप्ति हुई थी। इन्हीं सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य ने बाद में दिगंबर मुनि दीक्षा लेकर अपने अंत समय में श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) से समाधि मरण पूर्वक अपनी देह का त्याग किया था और अपनी मुनष्य पर्याय को सफल किया था। प्रयाग विश्वविद्यालय ने यहाँ खुदाई करवाई थी: बड़ी मात्रा में जैन प्रतिमाएं मिली जो आज प्रयाग संग्रहालय में रखी हैं।

2.2 **प्राचीन वत्स देश की राजधानी कौशांबी गढ़ का इतिहासः** प्राचीन भारत वर्ष के 16 राज्य थे। वत्स देश उनमें एक था। कौशांबी वत्स देश की राजधानी आधुनिक इलाहाबाद से 60 किलोमीटर दक्षिण– पश्चिम पक्की सड़क पर यमुना नदी के किनारे स्थित थी। वत्स देश में ही गंगा यमुना के संगम पर तीर्थंकर ऋषभदेव ने तप किया था और केवलज्ञान प्राप्त किया था। इसी वत्स देश की राजधानी कौशांबी में छठे तीर्थंकर पद्मप्रभ के गर्भ और जन्म कल्याणक हुए।

2.3 जम्बू द्वीप के भरत क्षेत्र में कौशांबी नगरी में इक्ष्वाकु वंशी काश्यप गोत्री महाराजा धरण और महारानी सुसीमा के आंगन में कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी की पुण्य बेला मघा नक्षत्र में अनुपम लावण्य युक्त बालक का जन्म हुआ। राजभवन में शहनाइयां बज उठी। आनंद भेरी गूंजने लगी, जिधर देखो उधर नृत्य, गान, वादित्र, बधाई आदि नाना प्रकार के उत्सव होने लगे। भगवान के अवयवों के साथ उनका रूप सौंदर्य बढ़ने लगा। मति, श्रुत, अवधि ज्ञान स्फुरायमान होने लगे। बाल प्रभु शैशव से प्रौढ़ता की ओर आने लगे। जन्मोत्सव के समय इंद्र ने प्रभु के अंगूठे में अमृत स्थापित कर दिया था। श्री सुमतिनाथ तीर्थंकर के 90 हजार करोड़ सागर काल व्यतीत होने के अनंतर आपका उदय हुआ। इनका 250 धनुष उन्नत शरीर था। साढ़े सात लाख पूर्व (आयुष्य का चौथाई भाग) कुमार काल में व्यतीत हो गया। कुमार पद्मप्रभ को भी अनेकों रूप सुंदरियों के बाहुपाश में बांध दिया गया अर्थात् अति रूपवान कन्याओं के साथ विवाह कर दिया।

2.4 महाराज धरण पद्मप्रभ को राज्य प्रदान कर स्वयं तप साधना में रत हो गए। पद्म कुमार ने अपनी न्याय प्रियता, प्रजावात्सल्यता, कुशल व्यवहार से प्रजा को संतानवत अपना लिया। उनके राज्य में आठ प्रकार का भय सर्वथा नष्ट हो गया था। धान्य, धन, सर्व प्रकार मंगल, प्रजा को सुख शांति, सर्वत्र अमन–चैन था। पशु पक्षियों को भी किसी प्रकार का कष्ट नहीं था।

2.5 एक दिन राजा प्रभु महल में भ्रमण पर थे। उनकी दृष्टि जंजीरों से बंधे गज पर पड़ी। उसकी दयनीय दशा ने दयालु प्रभु को द्रवित कर दिया पूर्व भव का चित्र चलचित्र की भांति उनके नयन पथ पर प्रत्यक्ष सा हो गया। उसी क्षण वे काम और दुखःद भोगों से विरक्त हो गए। वैराग्य भाव जागृत हो गया। जन्म मरण का कारण ही नहीं रहेगा तो फिर दुख कहां? अब मुझे शीघ्र आत्म हित साधन करना चाहिए। इस प्रकार प्रभु संसार शरीर और भोगों की असारता का चिंतन करते हुए परम वैराग्य को प्राप्त हो दीक्षा धारण करने में तत्पर हुए।

2.6 उसी समय लौकांतिक देवों ने उनके वैराग्य की अनुमोदना करते हुए स्तुति की। देवों ने आकर दीक्षा कल्याणक महाभिषेक किया। पद्म प्रभु ने अपने पुत्र को राज्यभार समर्पित किया। कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी के दिन शाम को चित्रा नक्षत्र में एक हजार राजाओं के साथ कौशांबी के राजउद्यान पभोसा जाकर मनोहर वन में परम आदर से जैनेश्वरी दीक्षा धारण की। तदुपरांत दो दिन का उपवास किया था। 2 दिनों के पश्चात वर्धमान नगर में आहार के विकल्प की पूर्ति के निमित्त पधारे। राजा सोमदत्त ने अपनी सती साध्वी भार्या सहित विधिवत् पडगाहन कर नवधा भक्ति से प्रासुक क्षीरान्न आदि का आहार देकर पुण्य किया।

2.7 भगवान घोर तप करने लगे। दीक्षा के छह माह बाद विहार करते हुए भगवान पुनः दीक्षा वन पभोषा आए वही प्रभास गिरी पर ध्यान लगाकर शुक्ल ध्यान के द्वारा उन्हें केवलज्ञान प्राप्त हुआ। चैत्र शुक्ल पूर्णमासी के दिन मध्याह्न समय चित्रा नक्षत्र में इंद्रों ने केवल ज्ञान कल्याणक महोत्सव मनाया।

2.8 एक महीने का योग निरोध कर सम्मेदाचल की मोहन कूट से 1000 मुनियों के साथ फागुन कृष्णा चौथ के दिन चित्रा नक्षत्र में सायं काल में शेष कर्मों का नाश कर मोक्ष पद प्राप्त कर लिया।

2.9 आज कौशांबी नगरी कई गांव में बंट गई है। गांवो के नाम कौशम, गढ़वा, कौशल इनाम, कोसम खिराज और पभोषा। वही पभोषा यमुना के जल मार्ग से 10 किमी पर स्थित है जो अति प्राचीन काल में कौशांबी का राज्य उद्यान था। यहीं तीर्थंकर पद्मप्रभ के तप और केवलज्ञान कल्याणक हुए थे और तदुपरांत आरंभ हुई थी तीर्थंकर पद्मप्रभ की पदयात्रा जो सम्मेद शिखर में जाकर समाप्त हुई जहां उनका मोक्ष कल्याणक हुआ।

2.10 इसी कौशांबी के वन मे द्वारिका के भस्म होने पर श्री कृष्ण और बलराम भटक रहे थे। यही श्री कृष्ण प्यास से व्याकुल हुए और एक पेड़ की छांव में लेट गए। बलराम जल लाने गए। जरत्कुमार वन मे आखेट के लिए घूम रहा था। उसने हिरण समझ श्री कृष्ण को बाण से वेध दिया। तत्काल श्री कृष्ण ने प्राण छोड़ दिए। अत्यंत मोह के वश होकर बलदेव, श्री कृष्ण के मृत शरीर को लेकर छः माह तक फिरते रहे और अंत में तुंगीगिरि पर जाकर उनका संस्कार किया।

2.11 23वें तीर्थंकर पार्श्व प्रभु का भी समोशरण कौशांबी में आया था और यहां के निवासियों को उनके उपदेशामृत पान करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। केवल ज्ञान के पूर्व भ्रमण करते हुए मुनिराज महावीर भी कौशांबी गढ़ कई बार आए थे और उनका समोशरण भी यहां लगा। चंदनबाला का उद्धार भी कौशांबी में ही हुआ था। मगध सम्राट संप्रति ने यहां भी भगवान महावीर की स्मृति में एक स्तंभ बनवाया था जो आज भी यहां पर है और भगवान महावीर की यशोगाथा का बखान करता है। जैन मंदिरों की यहां भरमार थी। आज भी यहां के खंडहरों में जैन मूर्तियां मिलती हैं।

3. 2 कल्याणक की नगरी:

तीर्थंकर	कल्याणक	कौन कौन से
श्री पद्मप्रभ भगवान	2	गर्भ, जन्म

4. कौशांबी के जैन मंदिर:

4.1 श्री कौशाम्बी जी दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र, ग्राम/कस्बा: कोसम खिराज, तहसील:–मंझनपुर, जिला: कौशाम्बी, (उत्तर प्रदेश)–212214

यहां सन 1834 ई. में निर्मित एक दिगंबर जैन मंदिर और धर्मशाला है। दो वेदियां है। एक में भगवान पद्मप्रभ की प्रतिमा और चरण है। एक शिला फलक में खड्गासन प्रतिमा अंकित है। यह मूर्ति भूगर्भ से निकली थी। इस मूर्ति के आगे 8 इंच लंबे दो चरण है जिनके बीच में कमल उत्कीर्ण है। यह संभवतः संवत् 567 का है। मूलवेदी में सर्वतोभद्र पद्मप्रभु की प्रतिमा विराजमान है।

5. क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधाएँ: ठहरने और खाने की अच्छी सुविधा उपलब्ध है प्रबंधकः– महेंद्र प्रसाद जैन, मो. न.:– 9670672390

6. आवागमन के साधन

6.1 रेल मार्गः कौशांबी रेल मार्ग द्वारा भारत के कई प्रमुख शहरों से जुड़ा हुआ है। भरवारी (स्टेशन कोडः BRE) और सिराथू (स्टेशन कोडः SRO) मुख्य रेलवे स्टेशन है।

6.2 सड़क मार्गः यह जगह सड़क मार्ग द्वारा भारत के कई प्रमुख स्थानों से जुड़ी हुई है। सबसे निकट प्रयागराज शहर है। कौशांबी प्रयागराज जिले का ही भाग था, जो 4 अप्रैल 1997 को नया जनपद बना दिया गया।

6.3 हवाई मार्गः कौशांबी का सबसे निकटतम हवाई अड्डा प्रयागराज विमान क्षेत्र है जो कि 60 किमी की दूरी पर है। अधिकांश प्रमुख देशीय विमान सेवाएँ यहां से संचालित होती है।

7. समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र– प्रयागराज–60 किमी, पभौसा–15 किमी, अयोध्या–220 किमी, रोनाही–230 किमी

8. वार्षिक मेले – फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी

25. प्रभाषगिरि

पद्‌मप्रभ भगवान के दीक्षा और केवलज्ञान कल्याणक जिस तीर्थ क्षेत्र से हुए हों उसके दर्शन मात्र से ही जीवों को असीम आनन्द की प्राप्ति होती है। आइए उस असीम आनन्द की अनुभूति करें इस भावना के साथ कि हम भी शीघ्र उस अक्षय अविनाशी सुख को प्राप्त करेगें जो भगवान पद्‌मप्रभ वर्तमान में सिद्धालय में भोग रहे हैं।

1. प्रभाषगिरि–पभोसा के बारे में: प्रयागराज से लगभग 60 किलोमीटर दूर स्थित है एक बेहद प्राचीन, खूबसूरत और धार्मिक स्थल प्रभास गिरी पर्वत। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है एक ऐसा स्थान जहां प्रभास नाम का पहाड़ है। यह क्षेत्र कौशाम्बी जिले की मंझनपुर तहसील के पभोसा गांव में स्थित है। यह मंझनपुर से 20 किमी दूर स्थित है। कौशाम्बी ऐतिहासिक एवं धार्मिक नगरी है जो कि सोलह महाजनपदों में से एक, वत्स साम्राज्य की राजधानी थी।

2. प्रभाषगिरि–पभोसा और जैन धर्म:

2.1 यह कल्याणक क्षेत्र है। छठे तीर्थंकर भगवान पद्‌मप्रभ के दीक्षा और केवलज्ञान कल्याणक का स्थान है। पभोसा कौशाम्बी का ही भाग माना जाता है। यहाँ एक विशाल दिगम्बर जैन मंदिर है। कुछ प्राचीन मूर्तियाँ भी जो खेतों से मिली थीं, यहाँ विराजमान हैं।

2.2 भगवान श्री सुमतिनाथ जी के निर्वाण के दीर्घ काल के पश्चात छठे तीर्थंकर श्री पद्‌मप्रभ जी का जन्म हुआ। कौशाम्बी नरेश महाराज धर की पट्टमहिषी सुसीमा देवी की रत्नकुक्षी से कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी के शुभ दिन प्रभु ने जन्म लिया।

2.3 युवावस्था में पद्‌मप्रभ विवाहित और राज्यारुढ हुए। निष्काम भाव से उन्होने प्रजा का पालन किया। किसी समय दरवाजे पर बंधे हुए हाथी की दशा सुनने से उन्हें अपने पूर्व भवों का ज्ञान हो गया जिससे भगवान को

वैराग्य हो गया। वे देवों द्वारा लाई गई 'निवृत्ति' नाम की पालकी पर बैठ मनोहर नाम के वन में गये और कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी के दिन दीक्षा ले ली। मात्र छह मास की तपश्चर्या से चार घाती कर्मों का क्षय कर उन्होंने केवलज्ञान प्राप्त किया। प्रथम पीयूष वर्षिणी मे ही चतुर्विध तीर्थ की स्थापना करके प्रभु ने संसार के लिए कल्याण का द्वार उद्‌घाटित किया। शेष चार अघातिया कर्मों का नाश कर मार्गशीर्ष कृष्ण एकादशी के दिन प्रभु ने निर्वाण पद प्राप्त किया।

2.4 भगवान के धर्म परिवार मे सुव्रत आदि एक सौ सात गणधर, तीन लाख तीस हजार श्रमण, चार लाख बीस हजार श्रमणियां, दो लाख छिहत्तर हजार श्रावक एवं पांच लाख पांच हजार श्राविकाएं थी।

2.5 भगवान महावीर का भी इस नगरी के साथ घनिष्ट संबंध रहा है। भगवान महावीर केवलज्ञान प्राप्ति के पूर्व भी इस नगरी में विचरे हैं। प्रभु महावीर ने एक बार कठिन अभिग्रह लिया था कि वे उसी के हाथों आहार लेंगे जिसका सिर मुँड़ा हुआ हो, पैरों में बेड़ियाँ हों, एक पैर दरवाजे के बाहर व एक पैर अन्दर हो, आँखों में अश्रु–धारा बह रही हो, राजकुमारी हो व छाजड़े में बाकले लिये बहराने के लिए खड़ी हो। इस अभिग्रह के पूर्ण हेतु प्रभु विचरते रहे। प्रभु द्वारा आहार न लेने के कारण भक्तजन अति व्याकुल थे। सती चन्दनबाला का भाग्योदय

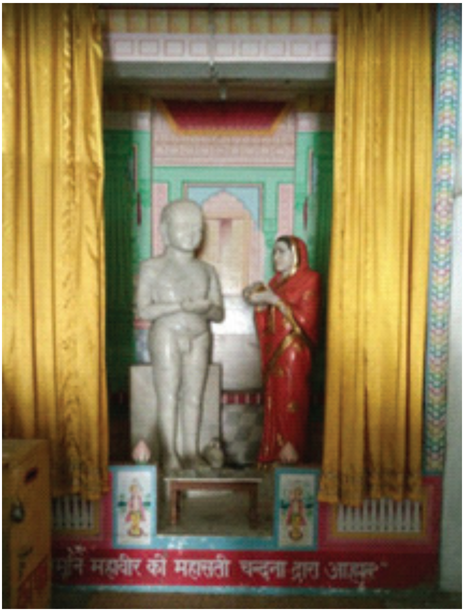

होने वाला था। उसे सेठानी द्वारा कठिन दण्ड देकर खाने के लिए बाकले दिये गये। किसी मुनिराज को आहार देकर खाने के लिये उक्त प्रकार खड़ी राह

देख रही थी कि मुनिराज महावीर को आते देख फूली न समाई। प्रभु की दृष्टि भी इस अबला पर पडी, परंतु अश्रु–धारा न रहने के कारण प्रभु का अभिग्रह पूर्ण न हो रहा था। अतः ज्यों ही जाने लगे, सती चन्दनबाला की आँखों से अश्रु–धारा बहने लगी। प्रभु ने अपना अभिग्रह पूर्ण हुआ देखकर आहार ग्रहण किया। प्रभु का अभिग्रह पूर्ण होते ही देव दुंदुभियाँ बजने लगीं व इन्द्रादि देवों ने रत्नों व पुष्पों की वर्षा की। सती की बेड़ियाँ टूटीं, शरीर नाना प्रकार के आभूषणों से सजा पाया।

2.6 सती चन्दन बाला ने भी प्रभु के पास यही दीक्षा ग्रहण की व प्रभु की प्रथम शिष्या बनने का सौभाग्य उसे प्राप्त हुआ।। मुनि श्री कपिल केवली की भी यह जन्म भूमि हैं। इस प्रकार इस पावन भूमि का इतिहास अत्यन्त ही गौरवशाली है

3. 2 कल्याणक की नगरीः

तीर्थंकर	कल्याणक	कौन कौन से
श्री पद्मप्रभ भगवान	2	तप, ज्ञान

4. प्रभाषगिरि–पभोसा के जैन मंदिरः

4.1 श्री पदमप्रभ दिगंबर जैन अतिषय तीर्थ क्षेत्र प्रभाषगिरी, पभोसा, जिला–कौशांबी (उत्तर प्रदेश) – 212214

मूलनायक श्री पद्मप्रभ भगवान की प्रतिमा अतिशययुक्त है। यह दिन के बढ़ने–घटने के साथ रंग बदलती दिखाई देती है। यह क्षेत्र दीर्घकाल तक जैनों का एक प्रमुख केन्द्र रहा है। यहाँ के राजा उदयन के समय

में जैनधर्म बहुत उन्नति पर था। यहाँ आसपास में जैन पुरातत्त्व संबंधी सामग्री और मूर्तियाँ बहुतायत से मिली हैं।

4.2 श्री पद्मप्रभ दिगंबर जैन अतिशय तीर्थ क्षेत्र प्रभाषगिरी, पभोसा, जिला–कौशांबी (उत्तर प्रदेश) 212214, फोन: 9984681782

5. क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधाएँ: ठहरने और खाने की अच्छी सुविधा उपलब्ध है कहने पर या पूर्व सूचना पर भोजन का इंतजाम कर दिया जाता है। प्रबंधक: – श्री फूल चंद जैन (09984681782)

6. आवागमन के साधन

6.1 रेल मार्ग: कौशांबी रेल मार्ग द्वारा भारत के कई प्रमुख शहरों से जुड़ा हुआ है। भरवारी (स्टेशन कोड: BRE) और सिराथू (स्टेशन कोड: SRO) मुख्य रेलवे स्टेशन है।

6.2 सड़क मार्ग: यह जगह सड़कमार्ग द्वारा भारत के कई प्रमुख स्थानों से जुड़ी हुई है। सबसे निकट प्रयागराज शहर है। कौशांबी जिला प्रयागराज जिले का ही भाग था, जो 4 अप्रैल 1997 को नया जनपद बना दिया गया। यह क्षेत्र प्रयागराज से 65 किमी0 है। यहाँ मनौरी, मूरतगंज, सिराथू होकर जा सकते है। नजदीक का गाँव गिराजु 3 किमी है।

6.3 हवाई मार्ग: कौशांबी का सबसे निकटतम हवाई अड्डा प्रयागराज विमान क्षेत्र है जो कि 60 किमी की दूरी पर है।

7. समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र– कौशाम्बी–15 किमी, अयोध्या–200 किमी, प्रयागराज 65 किमी, तपस्थली–78 किमी, वाराणसी–205 किमी

8. वार्षिक मेले– प्रतिवर्ष चैत्री पूर्णिमा को मेला भरता है तब जगह–जगह से यात्री इकट्ठे होकर प्रभु–भक्ति का लाभ लेते हैं।

26. शौरीपुर

नेमिनाथ भगवान के गर्भ और जन्म कल्याणक से पवित्र हुई शौरीपुर की वसुधा, भव्य जीवों को जन्म मरण से मुक्त होने की प्रेरणा देती है। आइए वंदना करते हैं इस अद्भुत भव्य तीर्थक्षेत्र का।

1. **शौरीपुर के बारे में:** श्री नेमिनाथ भगवान की यह गर्भ और जन्म कल्याणक भूमि है। यह सिद्ध क्षेत्र और कल्याणक क्षेत्र दोनों ही है। जैनधर्म के बाइसवें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ की जन्मस्थली "शौरीपुर" उत्तर प्रदेश के आगरा जिले में है। यह तीर्थ यमुना तट पर बसा हुआ है। शौरीपुर बटेश्वरनाथ से 4 किमी की दूरी पर जंगलों में स्थित है।

2. शौरीपुर और जैन धर्म:

2.1 शौरीपुर में माता शिवादेवी और पिता समुद्रविजय से श्रावण शुक्ला षष्ठी में श्री नेमिजिनेन्द्र उत्पन्न हुए थे। हरिवंशपुराण में भी कथन आया है–

जिनस्य नेमिस्त्रिदिवावतारतः, पुरैव षण्मासपुरस्सरा सुरैः।
प्रवर्तिता तज्जननावधिगृहे, हिरण्यवृष्टिः पुरुहूतशासनात्।।

अर्थ – भगवान् नेमिनाथ के गर्भावतरण से छह माह पहले से लेकर जन्म पर्यंत पन्द्रह मास तक इन्द्र की आज्ञा से शौरीपुर निवासी राजा समुद्रविजय के घर देवों ने रत्नों की वर्षा की थी। उपर्युक्त उल्लेखों से स्पष्ट है कि बाइसवें तीर्थंकर श्री नेमिनाथ ने शौरीपुर नगर में राजा समुद्रविजय के यहाँ जन्म लिया, इसके उपलक्ष्य में इन्द्रों और देवों ने भगवान के गर्भ और जन्म कल्याणकों का महान् उत्सव शौरीपुर में मनाया था। भगवान के इन दो कल्याणकों के कारण यहाँ की भूमि अत्यन्त पावन हो गई, जिससे आज यह तीर्थक्षेत्र के रूप में विख्यात है।

2.2 नेमिनाथ भगवान के इन दो कल्याणकों के अतिरिक्त यहाँ पर कई अन्य मुनियों को केवलज्ञान और निर्वाणप्राप्ति के उल्लेख भी पौराणिक

साहित्य में उपलब्ध होते हैं। यह स्थल सिद्धक्षेत्र के रूप में प्रसिद्धि को प्राप्त हुआ है क्योंकि यहाँ से अनेक मुनियों ने निर्वाणधाम को प्राप्त किया था। शौरीपुर में गन्धमादन नामक पर्वत पर रात्रि के समय सुप्रतिष्ठ नामक मुनिराज ध्यानमुद्रा में विराजमान थे। सुदर्शन नामक एक यक्ष ने पूर्व जन्म के विरोध के कारण मुनिराज पर घोर उपसर्ग किया। मुनिराज अविचल रहे, अनन्तर उन्हें केवलज्ञान की प्राप्ति हो गई। हरिवंशपुराण में वर्णन आया है कि कुछ समय पश्चात् शौरीपुर नरेश अन्धकवृष्णि और मथुरा नरेश भोजकवृष्णि ने इन्हीं केवली भगवान् के निकट मुनि दीक्षा ले ली।

2.3 इसी प्रकार से आराधना कथा कोष में एक कथा आई है– अमलकण्ठपुर के राजा निष्ठसेन के पुत्र धन्य ने भगवान नेमिनाथ के उपदेश से मुनिदीक्षा धारण कर ली। एक दिन विहार करते हुए मुनि "धन्य" शौरीपुर पधारे, वहाँ यमुनातट पर वे ध्यानारूढ़ हो गये। शौरीपुर का राजा शिकार से लौटा, शिकार न मिलने के कारण वह मन में बड़ा खिन्न हो रहा था। मुनिराज को देखते ही उसे लगा कि हो न हो, इस नग्न मुनि के कारण ही मुझे सारे दिन भटकने पर भी शिकार नहीं मिल पाया। यह सोचकर अपने निराशाजनक क्रोध के कारण उस मूर्ख ने उन वीतराग मुनि को तीक्ष्ण बाणों से बींध दिया। मुनि धन्य शुक्ल ध्यान द्वारा कर्मों को नष्ट कर सिद्धपद को प्राप्त हुए। उस समय इन्द्रों ने उनका निर्वाण महोत्सव मनाया।

2.4 "अलसत्कुमार" नाम के मुनि ने भी शौरीपुर से मोक्षपद प्राप्त किया तथा भगवान महावीर के समय "यम" मुनिराज भी अन्तःकृत केवली होकर यहीं से मोक्ष गए हैं। यह स्थान दानी कर्ण की जन्मभूमि है। प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान् आचार्य प्रभाचन्द्र के गुरु आचार्य लोकचन्द्र यहीं हुए थे। आचार्य प्रभाचन्द्र ने जैन न्याय के सुप्रसिद्ध ग्रंथ प्रमेयकमल मार्तण्ड की रचना यहीं पर की थी इस प्रकार की अनुश्रुति है।

2.5 श्री शौरीपुर की प्राचीन समृद्धि निर्विवाद है। इतिहास रत्न डा. ज्योतिप्रसाद के अनुसार 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में कर्नल टॉड और उसी सदी के अन्तिम चरण में जनरल कनिंघम और उनके सहयोगी कार्लायल ने यहाँ के खण्डहरों का सर्वेक्षण किया था और सिद्ध किया था कि प्राचीन काल में यह नगरी अत्यन्त समृद्धशाली थी। यहाँ पर अनेक बार हीरे के नग तथा ऐतिहासिक मुद्राएं आदि मिलने की बात सुनी व लिखी गई हैं। अनेक दिगम्बर जैन मूर्तियाँ और चिन्ह यहाँ प्राप्त हुए हैं। मध्यकाल में 19वीं सदी तक यहाँ दिगम्बर जैन भट्टारकों की गद्दी रही है। उनकी धार्मिक चर्चाओं और सिद्धियों से जनता बहुत प्रभावित थी।

2.6 **बटेश्वर तीर्थ:** वर्तमान में शौरीपुर और बटेश्वर दो अलग–अलग तीर्थ हैं। यह शौरीपुर से मात्र 3 किमी. दूर है तथा यहाँ ग्राम पंचायत का मुख्यालय है। बटेश्वर के दिगम्बर जैन मंदिर के विषय में कहा जाता है कि जब शौरीपुर यमुना नदी के तट से अधिक कटने लगा और बीहड़ हो गया, तब उक्त भट्टारक ने बटेश्वर में विशाल मंदिर और धर्मशाला बनवाई। इस मंदिर में भगवान् अजितनाथ की पांच फुटी ऊँची कृष्ण पाषाण की सातिशय पद्मासन प्रतिमा विराजमान है। उसकी प्रतिष्ठा संवत् 1224 वैशाख वदी 7 को परिमाल राज्य में आल्हा ऊदल के पिता जल्हड़ ने करायी थी।

2.7 यह जनश्रुति यहाँ की प्रसिद्ध है कि उपर्युक्त अजितनाथ की विशाल प्रतिमा जी महोबा से पालकी में विराजमान होकर आकाशमार्ग से बटेश्वर पधारी थी। यहाँ अनेक प्राचीन मूर्तियाँ भी विराजमान हैं। इनमें भगवान श्री शांतिनाथ की सं. 1150 की प्रतिष्ठित एक खड्गासन मूर्ति भी है, जिसकी छवि बड़ी मनोहारी है।

3. 2 कल्याणक की नगरी:

तीर्थंकर	कल्याणक	कौन कौन से
श्री नेमिनाथ	2	गर्भ, जन्म

4. शौरीपुर के जैन मंदिरः

4.1 श्री दिगंबर जैन मंदिर सिद्ध क्षेत्र, शंखध्वज जिनालय, शौरीपुर, बटेश्वर, तहसीलः बाह, जिला–आगरा (उ.प्र.)–283104

यहाँ पर मूलनायक श्री नेमिनाथ जी की प्राचीन प्रतिमा पर ध्यान से देखने पर छाती पर सर्प की आकृति सी दिखाई देती है।

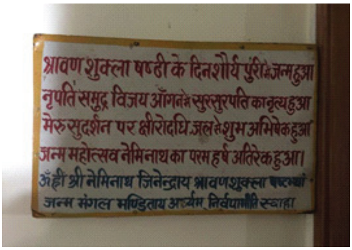

4.2 श्री दिगंबर जैन मंदिर सिद्ध क्षेत्र बरुआ मठ, शौरीपुर, बटेश्वर, तहसीलः बाह, जिला–आगरा (उ. प्र.)–283104

यहाँ पर नेमिनाथ जी की खड्गासन प्रतिमा है।

4.3 श्री 1008 नेमिनाथ जिनालय, श्री दिगंबर जैन मंदिर सिद्ध क्षेत्र, शौरीपुर, बटेश्वर, तहसीलः बाह, जिला–आगरा (उ. प्र.)–283104

ये मंदिर नवीन है। नेमिनाथ भगवान की प्राचीन प्रतिमा जी है।

5. क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधाएँः ठहरने और खाने की अच्छी सुविधा उपलब्ध है निकट ही सर्वसुविधायुक्त विशाल धर्मशाला व एक हॉल है। जहाँ भोजनशाला की सुविधा भी उपलब्ध है। कहने पर या पूर्व सूचना पर भोजन का इंतजाम कर दिया जाता है। मो. न.:– 09412158607

6. आवागमन के साधन

6.1 रेल मार्गः फिरोजाबाद रेल स्टेशनः 35 कि.मी., आगरा छावनी (AGC)–70 कि.मी.

कुछ महत्वपूर्ण ट्रेनें: आगरा छावनी–AGC–गतिमान एक्सप्रेस (12050); नई दिल्ली–रानी कमलापति (हबीबगंज) शताब्दी एक्सप्रेस (12002); मुम्बई छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस–हजरत निजामुद्दीन राजधानी एक्सप्रेस (22221); हजरत निजामुद्दीन–एम. जी. आर. चेन्नै सेन्ट्रल राजधानी एक्सप्रेस (12434), एम. जी. आर. चेन्नै सेन्ट्रल–हजरत निजामुद्दीन गरीब रथ एक्सप्रेस

(12611); हजूर साहिब नान्देड–जम्मू तवी हमसफर एक्सप्रेस (12751); दुर्ग – हजरत निजामुद्दीन हमसफर एक्सप्रेस (22867); मुंबई लोकमान्य तिलक टर्मिनस –हरिद्वार वातानुकूलित सुपरफास्ट एक्सप्रेस (12171); नागपुर–अमृतसर वातानुकूलित सुपरफास्ट एक्सप्रेस (22125); अम्बिकापुर–हजरत निजामुद्दीन विशेष भाड़ा वातानुकूलित स्पेशल (04043)।

6.2 सड़क मार्गः यह पवित्र स्थान आगरा से 71 किलोमीटर की दूरी पर आगरा–बाह रोड पर स्थित है। तीर्थयात्रियों को आगरा–फतेहाबाद (35 किमी) – फरेरा रोड (30 किमी) – शौरीपुर (6 किमी) के मार्ग का पालन करना होगा, बटेश्वर तीर्थ शौरीपुर तीर्थ से 2 किमी दूर है। दूसरा मार्ग आगरा–फिरोजाबाद–शिकोहाबाद–बटेश्वर है, जो लगभग 100 किलोमीटर है। शिकोहाबाद बटेश्वर से 27 किलोमीटर दूर है।

6.3 हवाई मार्गः सबसे निकटतम हवाई अड्डा आगरा विमान क्षेत्र है।

7. समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र– अहिक्षेत्र–200 किमी, कंपिल–130 किमी, फिरोजाबाद–35 किमी, आगरा–70 किमी, मथुरा चौरासी–110 किमी

8. वार्षिक मेले – प्राचीन मेला कार्तिक शुक्ल 14 से मार्ग शीर्ष कृष्ण एकम् तक।

27. अहिक्षेत्र (अहिच्छत्र)

आइए, दिगंबर आचार्य कुमुदचंद्र जी रचित कल्याणमंदिर स्त्रोत में उद्धृत इस श्लोक के द्वारा भगवान पार्श्वनाथ के चरणों में नमन करके इस पावन तीर्थ क्षेत्र की वंदना प्रारम्भ करते हैं।

नूनं न मोह–तिमिरावृतलोचनेन, पूर्वं विभो! सकृदपि प्रविलोकितो•सि।
मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः, प्रोद्यत्प्रबन्ध गतयः कथमन्यथैते।। ३७।।

(~ कल्याण मंदिर स्त्रोत)

भावार्थ– भगवन्! मैंने मिथ्यात्व के उदय से अन्धे होकर कभी भी आपके दर्शन नहीं किये। यदि दर्शन किये होते तो आज ये दुःख मुझे दुःखी कैसे करते? क्योंकि आपके दर्शन करने वालों को कभी कोई भी अनर्थ दुःख नहीं पहुँचा सकते।

1. **अहिक्षेत्र के बारे में:** अहिक्षेत्र उत्तर प्रदेश के बरेली जिले की आँवला तहसील में स्थित है। आँवला स्टेशन से अहिक्षेत्र क्षेत्र सड़क द्वारा 18 किमी है। आँवला से अहिक्षेत्र तक पक्की सड़क है। इसका पोस्ट ऑफिस रामनगर है।

2. **अहिक्षेत्र और जैन धर्म:**

2.1 अहिक्षेत्र आजकल रामनगर गाँव का एक भाग है। इसको प्राचीन काल में संख्यावती नगरी कहा जाता था। एक बार भगवान पार्श्वनाथ मुनिदशा में विहार करते हुए संख्यावती नगरी के बाहर उद्यान में पधारे और वहाँ प्रतिमायोग धारण करके ध्यानलीन हो गये। संयोगवश संवर नामक एक देव विमान द्वारा आकाश मार्ग से जा रहा था। ज्यों ही विमान पार्श्वनाथ के ऊपर से गुजरा कि वह वहीं रुक गया। घोर तपस्वी ऋद्धिधारी मुनि को कोई सचेतन या अचेतन वस्तु लाँघकर नहीं जा सकती।

2.2 संवरदेव ने इसका कारण जानने के लिए नीचे की ओर देखा। भगवान पार्श्वनाथ को देखते ही जन्म–जन्मान्तरों के बैर के कारण वह क्रोध से भर

गया। विवेक शून्य हो वह अपने पिछले जीवन में भगवान के हाथों हुए अपमान का प्रतिशोध लेने को आतुर हो उठा और अनेक प्रकार के भयानक उपद्रव कर उन्हें त्रास देने का प्रयत्न करने लगा। किन्तु स्वात्मलीन मुनिराज पार्श्वनाथ पर इन उपद्रवों का रंचमात्र भी प्रभाव नहीं पड़ा। न वे ध्यान से चल–विचल हुए और न उनके मन में आततायी के प्रति दुर्भाव ही आया।

2.3 तभी नागकुमार देवों के इन्द्र धरणेन्द्र और उसकी इन्द्राणी पद्मावती के आसन कम्पित हुए। वे पूर्व जन्म में नाग–नागिन थे। संवरदेव तापसी था। पार्श्वनाथ उस समय राजकुमार थे। जब पार्श्वनाथ सोलह वर्ष के किशोर थे, तब गंगा–तट पर सेना के साथ हाथी पर चढ़कर वे भ्रमण के लिए निकले। उन्होंने एक तपस्वी को देखा, जो पंचाग्नि तप कर रहा था। कुमार पार्श्वनाथ अपने अवधिज्ञान के नेत्र से उसके इस विडम्बनापूर्ण तप को देख रहे थे। इस तपस्वी का नाम महीपाल था और यह पार्श्वनाथ का नाना था। पार्श्वनाथ ने उसे नमस्कार नहीं किया। इससे तपस्वी मन में बहुत क्षुब्ध था। उसने लकड़ी काटने के लिए अपना फरसा उठाया ही था कि भगवान पार्श्वनाथ ने मना किया 'इसे मत काटो, इसमें जीव हैं।' किन्तु उनके मना करने पर भी उसने लकड़ी काट डाली। इससे लकड़ी के भीतर रहने वाले सर्प और सर्पिणी के दो टुकड़े हो गये। परम करुणाशील पार्श्व प्रभु ने असह्य वेदना में तड़पते हुए उन सर्प–सर्पिणी को णमोकार मंत्र सुनाया। मंत्र सुनकर वे अत्यन्त शांत भाव के साथ मरे और नागकुमार देवों के इन्द्र और इन्द्राणी के रूप में धरणेन्द्र और पद्मावती हुए।

2.4 महीपाल अपनी सार्वजनिक अप्रतिष्ठा की ग्लानि में अत्यन्त कुत्सित भावों के साथ मरा और ज्योतिष्क जाति का देव बना। उसका नाम अब संवर था। उसी देव ने अब मुनि पार्श्वनाथ से अपने पूर्व बैर का बदला लिया। धरणेन्द्र और पद्मावती ने आकर प्रभु के चरणों में नमस्कार किया और भगवान का उपसर्ग दूरकर अपनी भक्ति का परिचय दिया। भगवान पार्श्वनाथ तो इन

उपद्रवों, रक्षाप्रयत्नों और क्षमा–प्रसंगों से निर्लिप्त रहकर आत्मध्यान में लीन थे। भगवान आत्म–ध्यान में विचरण करते हुए निरन्तर शुक्ल–ध्यान में आगे बढ़ रहे थे। उनके कर्म नष्ट हो रहे थे। आत्मा की विशुद्धि बढ़ती जा रही थी। तभी उन्हें लोकालोक–प्रकाशक केवलज्ञान प्राप्त हो गया। सारे उपसर्ग स्वतरू ही समाप्त हो गये। उन्हें तभी केवलज्ञान उत्पन्न हो गया। वह चैत्र कृष्णा चतुर्थी का दिन था।

2.5 इन्द्रों और देवों ने आकर समवसरण में भगवान के केवलज्ञान कल्याणक की पूजा की। उस समय संवरदेव ने भी प्रभु के चरणों में जाकर अपने पापों का प्रायश्चित किया। भगवान पार्श्वनाथ का वहाँ पर प्रथम जगत्कल्याणकारी उपदेश हुआ। उक्त घटना का चित्रण आचार्य समंतभद्र ने अपने स्वयंभू स्तोत्र के 'पार्श्वनाथ–स्तवन' में किया है–

तमालनीलैः सधनुस्तडिद्गुणैः, प्रकीर्णभीमाशनिवायुवृष्टिभिः।
वलाहवैर्वैरिवशैरुपद्रुतो, महामना यो न चचाल योगतः।।1।।
बृहत्फणामण्डलमण्डपेन यं स्पुरित्तडित्पिङ्गरुचोपसर्गिणम्।
जुगूह नागो धरणो धराधरं विरागसन्ध्यातडिदम्बुदो यथा।।1।।

अर्थात् तमालवृक्ष के समान नीले, इन्द्रधनुष तथा बिजली से युक्त और भयंकर वङ्का, वायु और वृष्टि को सब ओर फेंकने वाले मेघों से, जो कि पूर्व जन्म के बैरी देव के द्वारा लाये गये थे, पीड़ित होने पर भी महामना पार्श्व देव ध्यान से विचलित नहीं हुए। उस समय धरणेन्द्र नामक नाग ने चमकती हुई बिजली के समान पीत कान्ति को लिए हुए अपने विशाल फणा मंडल का मण्डप बनाकर भगवान पार्श्वनाथ को उसी प्रकार ढक लिया, जिस प्रकार कृष्ण संध्या में बिजली से युक्त मेघ पर्वत को ढक लेते हैं।

2.6 भगवान पार्श्वनाथ संबंधी इस घटना का एक सांस्कृतिक महत्व भी है। इस घटना ने जैन कला को–विशेषतः जैन मूर्तिकला को बड़ा प्रभावित किया। भगवान की प्रतिमाओं का निर्माण इस घटना के कारण ही कुछ भिन्न शैली में

होने लगा। चौबीस तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ अपने आसन, मुद्रा, ध्यान आदि की दृष्टि से सभी एक समान होती हैं। उनकी पहचान और अन्तर उनके आसन पर अंकित किये गये चिन्ह द्वारा ही होती है। केवल भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमाएँ अन्य तीर्थंकर–प्रतिमाओं से एक बात में निराली हैं। अरहंत दशा की प्रतिमा होते हुए भी उनके सिर पर सर्प–फण रहता है, जो हमें सदा ही कमठ द्वारा घोर उपसर्ग करने पर नागेन्द्र द्वारा पार्श्वनाथ के ऊपर सर्प–फण के छत्र तानने का स्मरण दिलाता रहता है।

3. अहिक्षेत्र – एक अतिशय क्षेत्र

3.1 नागेन्द्र द्वारा भगवान के ऊपर छत्र लगाया गया था, इस कारण इस स्थान का नाम संख्यावती के स्थान पर अहिच्छत्र हो गया। साथ ही भगवान के केवलज्ञान कल्याणक की भूमि होने के कारण यह पवित्र तीर्थक्षेत्र हो गया। भगवान पार्श्वनाथ के सिर पर धरणेन्द्र द्वारा सर्प फण लगाने और भगवान के केवलज्ञान उत्पन्न होने के पश्चात् लगता है यहाँ की मिट्टी में ही कुछ अलौकिक अतिशय आ गया। यहाँ पर पश्चाद्वर्ती काल में अनेक ऐसी चमत्कारपूर्ण घटनाएँ घटित होने का वर्णन जैन साहित्य में अथवा अनुश्रुतियों में उपलब्ध होता है।

3.2 इन घटनाओं में आचार्य पात्रकेशरी की घटना तो सचमुच ही विस्मयकारी है। आचार्य पात्रकेशरी का समय छठी–सातवीं शताब्दी माना जाता है। वे इसी पावन नगरी के निवासी थे। उस समय नगर के शासक अवनिपाल थे। उनके दरबार में पाँच सौ ब्राह्मण विद्वान थे, जो प्रायरू तात्त्विक गोष्ठी किया करते थे। पात्रकेशरी इनमें सर्वप्रमुख थे। एक दिन यहाँ के पार्श्वनाथ मंदिर में ये विद्वान गोष्ठी के निमित्त गये। वहाँ एक मुनि, जिनका नाम चारित्रभूषण था, आचार्य समंतभद्र विरचित देवागम स्तोत्र का पाठ कर रहे थे। पात्रकेशरी ध्यानपूर्वक उसे सुन रहे थे। उनके मन की अनेक शंकाओं का समाधान स्वतः होता गया। उन्होंने पाठ समाप्त होने पर मुनिराज से स्तोत्र दुबारा पढ़ने का अनुरोध किया। मुनिराज ने दुबारा स्तोत्र पढ़ा।

3.3 पात्रकेशरी उसे सुनकर अपने घर चले गये और गहराई से तत्त्व–चिन्तन करने लगे। उन्हें अन्य दर्शनों की अपेक्षा जैन दर्शन सत्य लगा। किन्तु अनुमान प्रमाण के संबंध में उन्हें अपनी शंका का समाधान नहीं मिल पा रहा था। इससे उनके चित्त में कुछ उद्विग्नता थी। तभी पद्मावती देवी प्रगट हुई और बोली–'विप्रवर्य! तुम्हें अपनी शंका का उत्तर कल प्रातः पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा द्वारा प्राप्त हो जायेगा।' दूसरे दिन पात्रकेशरी पार्श्वनाथ मंदिर में पहुँचे। जब उन्होंने प्रभु की मूर्ति की ओर देखा तो उनके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। पार्श्वनाथ प्रतिमा के फण पर निम्नलिखित कारिका लिखी हुई थी–

अन्यथानुपपन्नत्वं यत्र तत्र त्रयेण किम्।
नान्यथानुपपन्नत्वं यत्र तत्र त्रयेण किम्।।

कारिका को पढ़ते ही उनकी शंका का समाधान हो गया। उन्होंने जैनधर्म को सत्य धर्म स्वीकार कर उसे अंगीकार कर लिया। तत्पश्चात् वे जैन मुनि बन गये।

3.4 अपनी प्रकाण्ड प्रतिभा के कारण जैन दार्शनिक परम्परा के प्रमुख आचार्यों में उनकी गणना की जाती है। – आराधना कथाकोश, कथा– पात्रकेशरी के पश्चाद्वर्ती सभी दार्शनिक जैन आचार्यों ने अपने ग्रंथों में और जैन राजाओं ने शिलालेखों में इस घटना का बड़े आदरपूर्वक उल्लेख किया है। वादिराज सूरि के 'न्यायविनिश्चयालंकार' नामक भाष्य में उल्लेख है कि यह श्लोक पद्मावती देवी ने तीर्थंकर सीमंधर स्वामी के समवसरण में जाकर गणधरदेव के प्रसाद से प्राप्त किया था। श्रवणबेलगोल के 'मल्लिषेण प्रशस्ति' नामक शिलालेख (नं. 54⁄67) में, जो शक सं. 1050 का है, लिखा है–

महिमा सपात्रकेसरिगुरोः परं भवति यस्य भक्त्यासीत्।
पद्मावतीसहाया त्रिलक्षण–कदर्थनं कर्तुम्।।

उन पात्रकेशरी गुरु का बड़ा माहात्म्य है जिनकी भक्ति के वश होकर पद्मावती देवी ने 'त्रिलक्षण–कदर्थन' की रचना में उनकी सहायता की। यह

ज्ञातव्य है कि उपर्युक्त श्लोक के आधार पर ही आचार्य पात्रकेशरी ने 'त्रिलक्षणकदर्थन' नामक महत्त्वपूर्ण दार्शनिक ग्रंथ की रचना की थी।

3.5 पार्श्वनाथ भगवान के चरण कमल में बस यही हम सबकी भावना है कि

देवेन्द्रवंद्य! विदिताखिल वस्तुसार!
संसारतारक! विभो ! भुवनाधिनाथ ! ।
त्रायस्व देव! करुणा – हृद! मां पुनीहि,
सीदन्त – मद्य भयद–व्यसनाम्बुराशेः ।।४१।।४१
(कल्याण मंदिर स्त्रोत)

भावार्थ – हे भगवन्! आप हर एक तरह से समर्थ हैं इसलिए आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे इस दुःख – समुद्र में डूबने से बचाइये और हमेशा के लिए कर्म–मैल से रहित कर दीजिये ।

4. 2 कल्याणक की नगरीः

तीर्थंकर	कल्याणक	कौन कौन से
श्री पार्श्वनाथ स्वामी	2	तप, ज्ञान

5. अहिक्षेत्र के जैन मंदिरः

5.1 श्री अहिक्षेत्र पार्श्वनाथ अतिशय तीर्थ क्षेत्र दिगंबर जैन मंदिर, राम नगर, जिला – बरेली (उ. प्र.) – 243303

यह एक प्राचीन शिखरबन्द मंदिर है। उसमें एक वेदी तिखालवाले बाबा की है। इस वेदी में श्यामवर्णी भगवान पार्श्वनाथ की एक मूर्ति है तथा उनके आगे भगवान के चरण विराजमान हैं। भगवान

पार्श्वनाथ की यह श्यामवर्णी हरितपन्ना की सातिशय प्रतिमा पद्मासन मुद्रा में विराजमान है। इसकी अवगाहना साढ़े ६ इंच है। प्रतिमा अत्यन्त सौम्य और प्रभावक है। इस प्रतिमा के पादपीठ पर कोई लेख नहीं है। सर्प का लांछन अवश्य अंकित है और सिर पर फण–मण्डल है। वेदी के नीचे सामने वाले भाग में दो सिंह आमने–सामने मुख किये हुए बैठे हैं। प्रतिमा के आगे भगवान के श्रीचरण स्थापित हैं जिनका आकार 1 फुट 5.5 इंच है। उन पर निम्नलिखित लेख

उत्कीर्ण है– श्रीमूलसंघे नन्द्याम्नाये बलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये दिगम्बराम्नाये अहिच्छत्रनगरे श्री पार्श्व जिनचरणा प्रतिष्ठापिताः। श्रीरस्तु। प्रतिमा का निर्माणकाल 10–11वीं शताब्दी अनुमान किया जाता है।

सड़क से कुछ आगे चलने पर वह विशाल पक्का कुआँ या वापिका है।

5.2 श्री अहिक्षेत्र पार्श्वनाथ दिगंबर जैन ज्ञान तीर्थ, राम नगर, जिला – बरेली (उ.प्र.)–243303

फोन: 05824–236453, 08006593365

5.3 श्री अहिक्षेत्र पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर, राम नगर, जिला–बरेली (उ.प्र.)

मंदिर के निकट ही रामनगर गाँव है। वहाँ भी एक शिखरबंद मंदिर है। इस मंदिर में फणमण्डित भगवान पार्श्वनाथ की श्यामवर्ण पद्मासन प्रतिमा है। इसकी अवगाहना 4 फुट है। प्रतिमा अत्यन्त मनोज्ञ है। फणावली में 'अन्यथानुपपन्नत्वं.....' श्लोक भी लिखा हुआ है। इस मूर्ति की प्रतिष्ठा वी.सं. 2481 वैशाख शुक्ला 7 गुरुवार को श्री महावीर जी में हुई थी। मूलनायक के अतिरिक्त दो पाषाण की और दो धातु की प्रतिमाएँ भी हैं। मंदिर के बाहर उत्तर की ओर

आचार्य पात्रकेशरी के चरण बने हुए हैं। चरणों की लम्बाई 11 इंच है। ऐसा विश्वास है कि आचार्य पात्रकेशरी इसी स्थान पर बने हुए मंदिर में देवी पद्मावती द्वारा प्रतिबोध पाकर जैनधर्म में दीक्षित हुए थे।

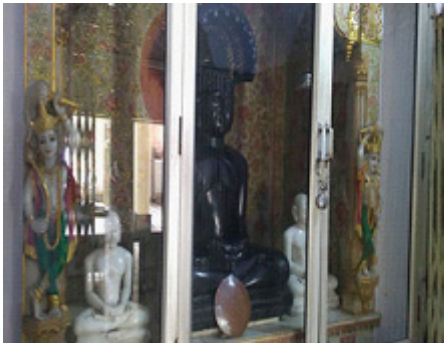

5.4 श्री अहिक्षेत्र पार्श्वनाथ दिगंबर जैन तीस चौबीसी मंदिर, राम नगर, जिला – बरेली (उ.प्र.) 243303

विशाल तीस चौबीसी मंदिर में 11 शिखर हैं बीच में मुख्य मूर्ति भगवान पार्श्वनाथ की है। उसकी ऊँचाई 13.5 फुट है। इन पर 108 फण हैं। मंदिर में 10 कमल हैं। प्रत्येक कमल पर 72 पंखुड़ियाँ हैं। कमल की प्रत्येक पंखुड़ी

पर एक–एक भव्य पाषाण की मूर्ति विराजमान है। मध्यलोक के ढाईद्वीप संबंधी पाँच भरत क्षेत्र, पाँच ऐरावत क्षेत्र में होने वाले चौबीस–चौबीस तीर्थंकरों के भूत, भविष्य एवं वर्तमान की

720 मूर्तियाँ हैं। मंदिर के शिखरों पर तथा अंदर कमलों पर सुनहरे कलश लगे हैं। जम्बूद्वीप रचना की प्रेरणास्रोत पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा सन् 1993 में दी गई प्रेरणानुसार इस मंदिर का निर्माण हुआ है।

6. क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधाएँ: ठहरने और खाने की अच्छी सुविधा उपलब्ध है सर्वसुविधायुक्त विशाल धर्मशाला व एक हॉल है। भोजनशाला की सुविधा भी है।

7. आवागमन के साधन

7.1 रेल मार्ग: रेवती बहोड़ा खेडा (स्टेशन कोडः RBK) निकटतम रेलवे स्टेशन है जो कि सात किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। अहिछत्र बरेली रेलवे स्टेशन (स्टेशन कोडः BE) से 55 किमी दूर है।

कुछ महत्वपूर्ण ट्रेनें: आनंद विहार टर्मिनल – मुजफ्फरपुर गरीब रथ एक्सप्रेस (12212), बनारस – आनंद विहार टर्मिनल गरीब रथ एक्सप्रेस (22541), कानपुर सेंट्रल – काठगोदाम गरीब रथ एक्सप्रेस (12209), सहरसा – अमृतसर गरीब रथ एक्सप्रेस (12203), आनंद विहार टर्मिनल – लखनऊ जं. वातानुकूलित डबल डेकर एक्सप्रेस (12584), डिब्रूगढ़ – नई दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस (मोराणहाट होकर) (20503), नई दिल्ली – लखनऊ वातानुकूलित सुपरफास्ट एक्सप्रेस (12430), काशी विश्वनाथ एक्सप्रेस (15127)

7.2 सड़क मार्ग: अहिछत्र बरेली बस स्टैंड से 60 किमी दूर है। अहिछत्र पहुंचने के लिए टैक्सी तथा ऑटो इत्यादि की सुविधा है। बरेली राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित होने के साथ साथ मुख्य शहरों जैसे आगरा,

लखनऊ, दिल्ली, नैनीताल आदि से सीधे जुड़ा है।

7.3 हवाई मार्ग: बरेली से सबसे नजदीक हवाई अड्डा पंतनगर है। यह बरेली से मात्र 40 किमी. दूर है। दूसरा हवाई अड्डा – इंदिरा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय विमानक्षेत्र दिल्ली है जो कि 250 किलोमीटर की दूरी पर है।

8. समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र– कम्पिलजी–120 किमी, शोरीपुर बटेश्वर –200 किमी, हस्तिनापुर–225 किमी, बड़ागाँव–190 किमी।

9. वार्षिक मेले – यहाँ चैत्र मास की कृष्ण पक्ष की अष्टमी से द्वादशी तक एक विशाल मेले का आयोजन होता है जिसमें प्रतिदिन सामूहिक पूजन, विधान, रथयात्रा आदि के अतिरिक्त रात्रि को विशेष सांस्कृतिक एवं प्रश्नमंच इत्यादि कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। श्रावण शुक्ला सप्तमी को भगवान पार्श्वनाथ का निर्वाण कल्याणक महोत्सव जोर–शोर से मनाया जाता है। पौष कृष्णा एकादशी को, पार्श्वनाथ जयंती के रूप में मनाया जाता है। उपर्युक्त तीनों मेलों में हजारों की संख्या में भारतवर्ष के कोने–कोने से यात्रीगण आकर धर्मलाभ प्राप्त कर अपना आत्मकल्याण करते हैं।

28. अष्टापद – कैलाश पर्वत

अनादिनिधन जैन धर्म की वर्तमान चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव (जिनके अन्य दो नाम आदिनाथ और वृषभनाथ भी विख्यात हैं) के निर्वाण से धन्य हुआ कैलाश पर्वत भव्य जीवों को मंगलकारी है। सोचिए कितना अद्भुत दृश्य होगा जब भगवान ऋषभदेव शुक्लध्यान ध्याकर अन्तिम चौदहवां गुणस्थान भी पार करके सिद्धालय में विराज गए होंगे। तीनों लोकों के जीवों ने प्रभु के निर्वाण कल्याणक को अति हर्षोल्लास से मनाया होगा। धन्य हो प्रभु आदिनाथ आप धन्य है आपका पुरुषार्थ, हम भी शीघ्र शुक्लध्यान ध्याकर चौदह गुणस्थान पार कर आपके ही समान सिद्धालय के वासी हों इसी भावना के साथ इस पवित्र तीर्थ क्षेत्र की वन्दना प्रारंभ करते हैं ।

माघ कृष्ण चौदस के दिन, कैलाश गिरि ने यश पाया।
आठों कर्म विनाशे प्रभु ने, अष्टम वसुधा को पाया।।
तीर्थंकर से परिणय करके, मुक्तिरमा भी धन्य हुई।
जय जय आदीश्वर नारों की, पावन धरा अनन्य हुई।।

ऊँ ह्रीं माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री आदिनाथजिनेन्द्राय नमः

1. अष्टापद के बारे में:

1.1 भारत की प्राचीनतम संस्कृति–श्रमण संस्कृति के आदि पुरुष, असि, मषि, कृषि, विद्या, वाणिज्य, एवं शिल्प रूप छह शिक्षाओं के उपदेष्टा, प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ को भारत के सभी धर्मों एवं प्राचीन ग्रंथो में अत्यंत आदरणीय स्थान प्राप्त है। ऋषभदेव एवं वृषभदेव भी उनके ही नाम है। विभिन्न धर्मों में उनकी अर्चना भिन्न–भिन्न रूप में की गई है। शाश्वत नगरी अयोध्या में इक्ष्वाकुवंशी महाराज नाभिराय के घर जन्मे आदिनाथ का निर्वाण (मोक्ष) हिमालय की पर्वत श्रृंखलाओं में स्थित कैलाश पर्वत पर हुआ था।

1.2 अनादिनिधन जैनधर्म में दो शाश्वत तीर्थक्षेत्र माने गये हैं– 1. अयोध्या 2. सम्मेदशिखर। अयोध्या तीर्थ को जहाँ अनन्तानन्त तीर्थंकरों की जन्मभूमि होने का गौरव प्राप्त है वहीं सम्मेदशिखर अनन्तानन्त तीर्थंकरों की निर्वाणभूमि

के नाम से जाना जाता है। वर्तमान में हुण्डावसर्पिणी कालदोषवश केवल 5 तीर्थंकरों ने अयोध्या नगरी में जन्म लिया और शेष तीर्थंकर अलग–अलग स्थानों पर जन्मे, इसी प्रकार बीस तीर्थंकर सम्मेदशिखर से मोक्ष गए और शेष चार तीर्थंकर अलग–अलग स्थानों से मोक्ष गए जिनमें से प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव ने कैलाशपर्वत से मोक्ष प्राप्त किया। इस पवित्र पर्वतराज को अष्टापद के नाम से भी जाना जाता है।

1.3 पण्डित श्री दौलतराम जी लिखते हैं किः

देखो जी आदीश्वर स्वामी, कैसा ध्यान लगाया है।
कर ऊपर कर सुभग विराजे, आसन थिर ठहराया है।।
जगत विभूति भूति सम तजकर, निजानंद पद ध्याया है।
सुरभित श्वासा आशा वासा, नाशा–दृष्टि सुहाया है।।1।।
कंचन वरण चले मन रंच न, सुरगिरि ज्यों थिर थाया है।
जास पास अहि मोर मृगी हरि, जाति विरोध नसाया है।।2।।
शुद्ध उपयोग हुतासन में जिन, वसुविधि समिध जलाया है।
यामलि अलकावलि सिर सोहे, मानो धुँआ उड़ाया है।।3।।
जीवन मरण अलाभ लाभ जिन, सबको साम्य बनाया है।
सुर नर नाग नमहि पद जाके, 'दौल' तास जस गाया है।।4।।

अर्थ – हे भाई, देखो! भगवान आदिनाथ स्वामी ने कैसा अद्भुत ध्यान लगा रखा है। एक हाथ के ऊपर दूसरा हाथ सुंदरतापूर्वक विराजमान है और आसन स्थिरता पूर्वक जमा हुआ है। श्री आदिनाथ स्वामी जगत की विभूति को राख के समान त्यागकर निजानन्द स्वरूप का ध्यान कर रहे है। उनकी श्वास सुगंधित है, उन्होंने दिशारूपी वस्त्र धारण कर रखे है अर्थात् वे नग्न दिगम्बर मुद्रा में है और नासादृष्टिपूर्वक विराजमान हैं। उनके शरीर का वर्ण कंचन जैसा है, उनका मन ध्यान से रंचमात्र भी चलायमान नहीं है, सुमेरु पर्वत की

तरह अचल है। उनके पास सर्प–मोर, हिरन–शेर आदि जन्मजात विरोधी जीवों की भी शत्रुता समाप्त हो गयी है। श्री आदिनाथ स्वामी ने शुद्धोपयोगरूपी अग्नि में अष्टकर्मरूपी ईंधन को जला दिया है। तथा उनके सिर पर काली लटें इस प्रकार सुशोभित हो रही हैं, मानो उसी का धुआं उड़ रहा हो। कविवर दौलतराम जी कहते है कि जो जीवन और मरण, हानि और लाभ तथा तृण और मणि आदि सबको समान दृष्टि से देखते हैं, मैं भी उन श्री आदिनाथ स्वामी का यशोगान करता हूँ।।

2. अष्टापद और जैन धर्मः

2.1 हिमालय को गौरीशंकर, कैलाश, बद्रीविशाल, नंदा, द्रोणगिरी, नारायण, नर, त्रिशूली, इन आठ पर्वत श्रेणियों के कारण अष्टापद भी कहते है और निर्वाणकाण्ड के अनुसार अष्टापद आदिश्वर स्वामी भी कहा है। यहाँ से असंख्यात मुनि तपस्या कर मोक्ष गए है। श्रीमद्भागवत के अनुसार यहीं ऋषभदेव के पिता नाभिराय और माता मरुदेवी ने ऋषभदेव का राज्याभिषेक कर बद्रिकाश्रम में घोर तप किया था और यहीं उनकी समाधि हुई थी। यह स्थान आज भी मानसरोवर कैलाश के मार्ग के नाम से विद्यमान है।

2.2 इसी अष्टापद कैलाश पर भरत चक्रवर्ती, जिनके नाम पर अपने देश का नाम भारत पड़ा है, 24 तीर्थंकरों के मंदिर का निर्माण कराया था। यही भूमि भरत–बाहुबली, बाली, महाबली, नागकुमार की साधना स्थली रही है। श्रीनगर (गढ़वाल), जहां परम पूज्य आचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज का चातुर्मास योग संपन्न हुआ था, में एक अत्यंत प्राचीन शिखरबद्ध मंदिर विद्यमान है। अब तो इस प्रदेश में मुनिराजों के आगमन का सतत प्रवाह बना हुआ है। इससे स्पष्ट होता है की यह क्षेत्र जैन संस्कृति का सर्वोच्च स्थान रहा है, जो आज भी पुकार–पुकार कर इस क्षेत्र में जैन संस्कृति एवं उनके प्राचीन वैभव को प्रकट करता है। तीर्थ क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र और फिर इनसे भी पूज्य सिद्ध क्षेत्र एवं निर्वाण भूमियों (निर्वाण क्षेत्र) के प्रति हमारी श्रद्धा सर्वविदित है।

2.3 भगवान ऋषभदेव के मोक्षगमन के पश्चात् उनके पुत्र सम्राट् भरत चक्रवर्ती ने भगवान ऋषभदेव की निर्वाणभूमि कैलाश पर्वत पर त्रिकाल चौबीसी (भूत, वर्तमान एवं भविष्यत्कालसंबंधी चौबीसों तीर्थंकर) की बहत्तर रत्न प्रतिमाएँ बनवाकर बहत्तर जिन मंदिरों में विराजमान की थीं ऐसा वर्णन ग्रंथों में आता है। इसका बड़ा ही मनोहारी वर्णन पंडित श्री द्यानतराय जी अपने एक भजन के द्वारा करते हैं।

फूली बसन्त जहँ आदीसुर शिवपुर गये ।।टेक।।
भारतभूप बहत्तर जिनगृह, कनकमयी सब निरमये ।। फूली. ।।
तीन चौवीस रतनमय प्रतिमा, अंग रंग जे जे भये ।
सिद्ध समान सीस सम सबके अद्‌भुत शोभा परिनये ।। फूली.।। १।।
बाल आदि आहूठ–कोड़ मुनि, सबनि मुकति सुख अनुभये ।
तीन अठाई फागनि खग मिल, गावैं गीत नये नये ।। फूली. ।।२।।
वसु जोजन वसु पैड़ी गंगा, फिरी बहुत सुरआलये।
'द्यानत' सो कैलास नमौं हौं, गुन कापै जा वरनये ।। फूली.।।

अर्थः अहा ! कैलाश पर्वत जहाँ से भगवान आदीश्वर मोक्ष को पधारे, वहाँ सर्वत्र बसन्त ऋतु अपने पूरे यौवन पर है। अर्थात् बसन्त ऋतु के पुष्प सर्वत्र लहलहाने व महकने लगे हैं। शीतल सुमधुर बयार सर्वत्र मन्द मन्द फैलकर ऋतुराज के आगमन की सूचना दे रही है और वातावरण को सुवासित व नयनाभिराम कर रही हैं। वहाँ इस भरत खण्ड के राजा भरत के द्वारा निर्मित तीन चौबीसी के श्रेष्ठ, सुन्दर, स्वर्णमय बहत्तर जिन चौत्यालय सुशोभित हो रहे हैं। तीन चौबीसी की रत्नजड़ित बहत्तर प्रतिमाएँ, विभिन्न रंगों में अत्यन्त शोभायमान हैं। सब सिद्धों की एकसमान प्रतिमाएँ होने से अद्‌भुत सुन्दर लगती हैं। वहाँ से बालि आदि साढ़े तीन करोड़ मुनि मुक्त होकर अनन्त सुख का अनुभव कर रहे हैं। तीनों अठाइयों में से फाल्गुन मास की अठाई

(अष्टाह्निका पर्व) के समय भाँति–भाँति के पक्षीगण प्रफुल्लता से भरकर, हुलसित होकर चहचहा रहे हैं, गीत गा रहे हैं। जहाँ आठ योजन में आठ पैड़ियाँ हैं, जहाँ से गंगा का उद्गम है तथा जहाँ पर अनेक देवताओं का निवास हैं, द्यानतराय जी भगवान आदीश्वर की निर्वाणभूमि कैलाश को बार–बार नमन करते हैं, जिसका पूर्णरूपेण वर्णन करने की सामर्थ्य किस में है अर्थात् किसी में नहीं हैं।

2.4 उत्तरपुराण में पृष्ठ 10 पर आचार्य श्री गुणभद्र ने सगर चक्रवर्ती द्वारा अपने पुत्रों से कैलाशपर्वत के चारों ओर खाई खोदने का वर्णन करते हुए कहा है–

राज्ञाप्याज्ञापिता यूयं कैलासे भरतेशिना। गृहाः कृता महारत्नैश्चतुर्विंशतिरर्हताम्।।१०७।।

तेषां गङ्गां प्रकुर्वीध्वं परिखां परितो गिरिम्। इति ते॰पि तथा कुर्वन् दण्डरत्नेन सत्वरम्।।१०८।।

अर्थात् राजा सगर ने अपने पुत्रों द्वारा कोई कार्य मांगने पर सोचा कि अभी धर्म का एक कार्य बाकी है। उन्होंने हर्षित होकर आज्ञा दी कि ''भरत चक्रवर्ती ने कैलाशपर्वत पर महारत्नों से अरहन्त देव के चौबीस मंदिर बनवाएँ हैं, तुम लोग उस पर्वत के चारों ओर गङ्गा नदी को उन मंदिरों की परिखा बना दो।'' उन राजपुत्रों ने भी पिता की आज्ञानुसार दण्डरत्न से वह काम शीघ्र ही कर दिया। करोड़ों–करोड़ों वर्ष पूर्व निर्मित उन जिनमंदिरों का जीर्णोद्धार आज से नौ लाख वर्ष पूर्व अयोध्या के महाराजा दशरथ ने करवाया था ऐसा कथन जैन रामायण (पद्मपुराण) में आता है।

2.5 पद्मपुराण के बाईसवें सर्ग में आचार्य रविषेण ने लिखा है–

ये भरताद्यैर्नृपतिभिरुद्धाः कारितपूर्वा जिनवरवासाः।
भङ्गमुपेतान् क्वचिदपि रम्यान् सो॰नयदेतानभिनवभावान्।। १७९।।
इन्द्रनुतानां स्वयमपि रम्यान् तीर्थंकराणां परम्निवासन्।
रत्नसमूहैः स्रदुरुभासः संततपूजामघटयदेषः।।१८०।।

अर्थात् भरतादि राजाओं ने जो पहले जिनेन्द्र भगवान के उत्तम मंदिर बनवाए थे वे यदि कहीं भग्नावस्था को प्राप्त हुए थे तो उन रमणीय मंदिरों को राजा दशरथ ने मरम्मत कराकर पुनः नवीनता प्राप्त कराई थी। यही नहीं, उसने स्वयं भी ऐसे जिनमंदिर बनवाए थे जिनकी कि इन्द्र स्वयं स्तुति करता था तथा रत्नों के समूह से जिनकी विशाल कान्ति स्फुरायमान हो रही थी। भगवान ऋषभदेव के मोक्षगमन के पश्चात् उस पर्वत से अनेक मुनि मोक्ष गए हैं ऐसा वर्णन पुराण ग्रंथों में आता है।

2.6 पंडित भैया भगवती दास जी विरचित निर्वाणकाण्ड में आता है कि–

बाल महाबाल मुनि दोय, नागकुमार मिले त्रय होय।
श्री अष्टापद मुक्ति मंझार, ते वंदौं नित सुरत संभार।।१६।।

3. अष्टापद से संबंधित अद्भुत कथाएँ

3.1 पद्मपुराण ग्रंथ में आचार्य श्री रविषेण ने बालि मुनि की कथा का बड़ा ही रोमांचकारी वर्णन किया है कि महामुनि बालि दुर्धर तप करते हुए कैलाश पर्वत पर ध्यानस्थ थे। एक समय दशानन अर्थात् रावण नित्यलोक नगर के राजा की पुत्री रत्नावली से विवाह कर लंका की ओर जा रहा था। मार्ग में कैलाश पर्वत के ऊपर से उड़ते हुए उसका पुष्पक विमान वायुमार्ग में एकाएक अकारण ही स्तम्भित हो गया।

3.2 विमान को कीलित देख रावण ने अपने मंत्री मारीच से इसका कारण पूछा तब मारीच ने कहा–हे स्वामी! यह अत्यन्त पवित्र कैलाशगिरि है। यहाँ पर ही प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का निर्वाण कल्याणक हुआ था। इस पर जिनेन्द्र भगवान के अनेक अतिशययुक्त मंदिर हैं तथा देखिए, पर्वत पर कोई महाऋद्धि के धारक मुनिराज ध्यानारूढ़ कायोत्सर्ग खड़े हैं। अतएव चलिए, नीचे उतरकर चौत्यालयों की वंदना करें तथा मुनिराज को नमस्कार कर आगे बढ़ें अथवा विमान को पीछे लौटाकर किसी अन्य मार्ग से होकर

चलें। यदि हठपूर्वक यहाँ से जाने का उद्यम किया जायेगा तो विमान खण्ड–खण्ड होकर पृथ्वी पर गिर पड़ेगा।''

3.3 यह सुनकर गर्वोन्मत्त रावण नीचे उतरकर कैलाशगिरि की सुरम्यता का अवलोकन करने लगा। कुछ दूर आगे जाने पर महामुनि बालि को देख वह बैरभाव के कारण उनको यद्वा–तद्वा कहते हुए पर्वत को उखाड़कर समुद्र में फेंकने के अभिप्राय से अपना विराट रूप धारण कर क्रोधावेश में पर्वत की तली में घुसा और हुंकार कर दोनों बाहुओं से गिरिराज कैलाश को उठाने लगा। गिरि के किंचित् चलायमान होने से उस पर रहने वाले पशु–पक्षी आकुलित हो उठे, वनक्रीड़ा कर रहे देवगण आश्चर्यचकित हो आकाश में उड़ गए और बड़े–बड़े पेड़ गिरने लगे।

3.4 तब धीर–वीर, क्रोधरहित, पूर्ववत् निश्चल खड़े महामुनि सोचने लगे कि इस पर्वतराज पर भरत चक्रवर्ती के द्वारा निर्मित अनेक उत्तम चैत्यालय हैं, जहाँ निरन्तर सुर–असुर एवं विद्याधर वन्दना को आते हैं। कदाचित् पर्वत के चलायमान होने से वे जिनालय नष्ट न हो जाएं तथा पर्वत पर रहने वाले असंख्य जीवों की प्राण हानि न हो जाये, इस हेतु महामुनि बालि ने अपने चरण का अंगुष्ठ किंचित् दबाया तब तो दशानन मानो भार से दबने लगा और करुण रुदन करने लगा तब उसकी रानी ने महामुनि को करबद्ध नमस्कार कर पति के प्राणों की भिक्षा माँगी और उन परम दयालु महामुनि ने अपना अंगुष्ठ किंचित् ढीला कर दिया। तब रावण का गर्व चूर–चूर हो गया और उसने मुनि से बार–बार क्षमायाचना कर उनकी तीन प्रदक्षिणा लगाकर स्तुति की। महामुनि बालि ने जो दशानन पर किंचित् क्षोभ किया था अतएव गुरु के निकट जाकर उसका प्रायश्चित किया फिर घोर तपस्या कर कर्म शत्रुओं को परास्त कर उस पर्वत से उसी भव में निर्वाण पद प्राप्त किया।

3.5 तात्पर्य यह है कि नौ लाख वर्ष पूर्व तक कैलाशपर्वत पर नर–नारी उन मंदिरों के दर्शन हेतु सम्मेदशिखर की भाँति जाते रहते थे और रत्न

प्रतिमाओं का सम्पूर्ण इतिहास तब तक मौजूद था। वर्तमान में यद्यपि कैलाशपर्वत पर कहीं भी वे प्राचीन अवशेष नहीं पाए जा रहे हैं फिर भी उन मंदिरों और मूर्तियों का इतिहास आगम में वर्णित है इसीलिए हमें सहज रूप से स्वीकार है। वह कैलाशपर्वत आज भी यद्यपि हमारे लिए सम्मेदशिखर पर्वत के समान ही पूज्य है किन्तु आज उसके साक्षात् दर्शन न होने से श्रद्धालु उस प्रथम निर्वाणस्थल की वंदना के पुण्य से वंचित इसलिए रहते हैं क्योंकि पहुँच पाना अत्यन्त कठिनाई भरा है।

3.6 वस्तुतः आज भी उस प्रथम निर्वाणभूमि कैलाशपर्वत के प्रति जन–जन की आस्था, श्रद्धा व अटूट भक्ति है। हम भी उस पवित्र पर्वतराज कैलाशपर्वत की परोक्ष वन्दना कर प्रत्यक्ष वन्दना की सदैव मन में भावना रखें और यह तीर्थ सभी श्रद्धालुओं की श्रद्धा का केन्द्र बना रहकर अल्पकाल में ध्रुव अचल अनुपम सिद्धगति की प्राप्ति में निमित्त होवे ऐसी मंगल भावना है।

4. निर्वाणभूमि कैलाशपर्वत

तीर्थंकर	कल्याणक	कौन से
भगवान ऋषभदेव	1	निर्वाण

5. अष्टापद जैन मंदिरः

श्री अष्टापद दिगंबर जैन सिद्ध क्षेत्र, बद्रीनाथ,
जिला–चमोली (उत्तराखंड) 246422
टेलीफोन–फोनः 01381–222334
मो.: 09758556285
Email - mahaveertrust@rediffmail.com - **Website** - www.asthapadtirth. org, www.adinathnirvan.org

6. क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधाएँ: प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ की निर्वाण स्थली की अनकृति रचना करने की कल्पना सर्वप्रथम श्री देवकुमारसिंहजी कासलीवाल एवं प्रदीप कुमार सिंह जी कासलीवाल एवं श्री कैलाशचंदजी चौधरी, इंदौर के विचारों में आई। सभी के सहयोग से करीब 50000 वर्ग फीट भूखंड पर 6 नवीन अतिथि ग्रह, दो हॉल, 24 तीर्थंकर भगवन के चरण चिन्हों का प्रार्थना भवन, भोजनशाला भवन, मुख्य द्वार, कर्मचारी निवास, पूजन–द्रव्य कक्ष एवं वी आई पी भवन आदि का निर्माण हो चुका है। यहाँ वर्ष में 6 माह तो बर्फ ही गिरती रहती है। बर्फ पर चलना और कई दुर्घटनाओं की स्थिति में भी साहस के साथ बार–बार जाकर योजना को क्रियान्यवित करने हेतु निरंतर प्रत्नशील रहने के कारण ही आज यह योजना साकार रूप धारण कर सकी है।

फोन: 01381–222334 मो.: 09758556285

प्रबंधक: श्री जिनेन्द्रकुमार जी जैन मो. : 09584796141

7. आवागमन के साधन

7.1 रेल मार्गः बद्रीनाथ का नजदीकी रेलवे स्टेशन हरिद्वार और देहरादून रेलवे स्टशन है, जो बद्रीनाथ धाम से करीब 317 किमी और 328 किमी की दूरी पर स्थित है।

कुछ महत्वपूर्ण ट्रेनें:

(देहरादून–DDN): नंदा देवी वातानुकूलित सुपरफास्ट एक्सप्रेस (12402), नई दिल्ली – देहरादून शताब्दी एक्सप्रेस (12017), कुम्भ एक्सप्रेस (12370), उपासना एक्सप्रेस (12327), देहरादून – नई दिल्ली जन शताब्दी एक्सप्रेस (12056), देहरादून – अमृतसर एक्सप्रेस (14631) (हरिद्वार–HW): नई दिल्ली – देहरादून शताब्दी एक्सप्रेस (12017), हरिद्वार – मुंबई लोकमान्य तिलक टर्मिनस वातानुकूलित सुपरफास्ट एक्सप्रेस (12172), नंदा देवी वातानुकूलित सुपरफास्ट एक्सप्रेस (12402), कुम्भ एक्सप्रेस (12370), योग नगरी ऋषिकेश – कोच्चुवेली सुपरफास्ट एक्सप्रेस (22660), उपासना एक्सप्रेस (12327), देहरादून – नई दिल्ली जन शताब्दी एक्सप्रेस (12056), देहरादून – अमृतसर एक्सप्रेस (14631)

7.2 सड़क मार्गः श्री बद्रीनाथ यात्रा के लिये हरिद्वार, ऋषिकेश, व कोटद्वार से बसे एवं निजी टैक्सियां उपलब्ध है। बद्रीनाथ मार्ग पर देहरादून या हरिद्वार की ओर से ऋषिकेश पहुंचकर और नैनीताल, भूवाली, रानीखेत, द्वारहाट, व आदिबद्री की ओर से कारण प्रयाग पहुँच कर यात्रा की जा सकती है।

दिल्ली से हरिद्वार 220 कि.मी., ऋषिकेश से देहरादून 45 कि.मी., ऋषिकेश से हरिद्वार 24 कि.मी., ऋषिकेश से बद्रीनाथ 24 कि.मी.।

7.3 हवाई मार्गः बद्रीनाथ का सबसे करीबी एयरपोर्ट देहरादून का जॉली ग्रांट है, जहां से बद्रीनाथ की दूरी करीब 305 किमी. है।

8. समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र– हस्तिनापुर–400 किमी, अहिक्षेत्र–433 किमी,

29. जैन कल्याणक क्षेत्र प्रश्नोत्तरी

1. निम्न में से कौन से तीर्थंकर भगवान का मोक्ष कल्याणक सम्मेद शिखर जी से नहीं हुआ है?

(अ) अजितनाथ भगवान (ब) पार्श्वनाथ भगवान

(स) शांतिनाथ भगवान (द) महावीर भगवान

2. तीर्थंकरों का शाश्वत जन्म क्षेत्र किस तीर्थ को कहा जाता है?

(अ) अयोध्या (ब) चम्पापुर

(स) सम्मेद शिखर जी (द) हस्तिनापुर

3. वर्तमान चौबीसी के कितने तीर्थंकर शिखर जी से मोक्ष गए हैं?

(अ) 18 (ब) 20 (स) 10 (द) 15

4. तीर्थंकर जन्म से ही कितने ज्ञान के धारी होते हैं?

(अ) तीन (ब) दो (स) चार (द) एक

5. इनमें से कौन सा चिह्न धर्मनाथ भगवान का है?

(अ) सेही (ब) वज्रदंड (स) बकरा (द) हिरण

6. श्री रयणसार जी ग्रंथ के रचयिता कौन हैं?

(अ) आचार्य श्री रविषेण (ब) आचार्य कुंदकुंद देव

(स) आचार्य श्री कुमुदचंद्र (द) मुनिराज पद्मसिंह

7. दिगंबर आचार्य श्री मानतुंग जी ने निम्न में से किसकी रचना की थी?

(अ) भक्तामर स्तोत्र (ब) कल्याण मंदिर स्त्रोत

(स) छहढाला (द) हरिवंशपुराण

8. इनमें से कौन सा चिह्न अजितनाथ भगवान का है?

(अ) बैल (ब) हाथी (स) घोड़ा (द) बंदर

9. निम्न में से किन तीर्थंकर भगवान के पांचों कल्याणक एक ही तीर्थ क्षेत्र से हुए हैं?

(अ) आदिनाथ भगवान (ब) वासुपूज्य भगवान

(स) संभवनाथ भगवान (द) मल्लिनाथ भगवान

10. शिखर जी में अभिनन्दननाथ भगवान की टोंक का क्या नाम है?

(अ) आनंद कूट (ब) संवर कूट

(स) सिद्धवर कूट (द) सुवीर कूट

11. कितने तीर्थंकर बाल ब्रह्मचारी थे?

(अ) 1 (ब) 2 (स) 5 (द) 8

12. जब तीर्थंकर प्रभु गर्भ में आते हैं तो तीर्थंकर की माता को कितने स्वप्न दिखाई देते हैं?

(अ) 10 (ब) 16 (स) 21 (द) 30

13. इनमें से कौन सा चिह्न मुनिसुव्रतनाथ भगवान का है।

(अ) कछुआ (ब) कलश (स) मगरमच्छ (द) शंख

14. निम्न में से कौन सम्मेद शिखर जी से मोक्ष जाने वाले प्रथम तीर्थंकर हैं?

(अ) आदिनाथ भगवान (ब) अजितनाथ भगवान

(स) संभवनाथ भगवान (द) अभिनंदननाथ भगवान

15. नेमिनाथ भगवान की जन्मकल्याणक स्थली कौन सी है?

(अ) शौरीपुर (ब) शिखर जी

(स) गिरनार जी (द) अयोध्या

16. कंपिल जी में विमलनाथ भगवान के कितने कल्याणक हुए हैं?

(अ) 01 (ब) 02 (स) 03 (द) 04

17. वीर शासन जयंती किस उपलक्ष्य में मनाई जाती है?

(अ) महावीर भगवान की प्रथम बार दिव्य ध्वनि खिरी थी

(ब) महावीर भगवान को मोक्ष हुआ था

(स) महावीर भगवान पर मुनिदशा में हुआ उपसर्ग दूर हुआ था

(द) महावीर भगवान का जन्म हुआ था

18. महावीर भगवान पर मुनिदशा में देवकृत उपसर्ग किस स्थान पर हुआ था?

(अ) उज्जयिनी (ब) पावापुरी (स) शिखर जी (द) चंपापुर

19. निम्न में से कौन से तीर्थंकर, तीर्थंकर होने के साथ साथ चक्रवर्ती और कामदेव नहीं थे?

(अ) शांतिनाथ भगवान (ब) कुंथुनाथ भगवान

(स) अरहनाथ भगवान (द) मल्लिनाथ भगवान

20. नीलांजना के निधन के निमित्त से किन्हें वैराग्य हुआ था?

(अ) आदिनाथ भगवान (ब) अजितनाथ भगवान

(स) शांतिनाथ भगवान (द) वासुपूज्य भगवान

21. मल्लिनाथ भगवान को मुनिदीक्षा लेने के कितने दिन पश्चात् केवलज्ञान हो गया था?

(अ) 6 दिन (ब) 12 वर्ष (स) 1000 वर्ष (द) 100 वर्ष

22. केवलज्ञान होने के पश्चात् अरिहंत भगवान क्षुधा तृषा आदि कितने दोषों से रहित हो जाते हैं?

(अ) 10 (ब) 12 (स) 29 (द) 18

23. आदिनाथ भगवान को मुनिदशा में प्रथम आहार किसने दिया था?

(अ) राजा श्रेयांश (ब) राजा श्रेणिक

(स) भरत चक्रवर्ती (द) सती चंदनबाला

24. गौतम गणधर स्वामी किन तीर्थंकर भगवान के मुख्य गणधर थे?

(अ) आदिनाथ भगवान (ब) महावीर भगवान

(स) अजितनाथ भगवान (द) मल्लिनाथ भगवान

उत्तर:

1(द)	2(अ)	3(ब)	4(अ)	5(ब)	6(ब)
7(अ)	8(ब)	9(ब)	10(अ)	11(स)	12(ब)
13(अ)	14(ब)	15(अ)	16(द)	17(अ)	18(अ)
19(द)	20(अ)	21(अ)	22(द)	23(अ)	24(ब)

30. जैन भजन / पाठ

इस अध्याय में कुछ अति भावपूर्ण भजन और पाठ आदि दिए गए हैं इनका प्रतिदिन सुमिरन करने लायक है ।

30.1 आराधना पाठ

मैं देव नित अरहंत चाहूँ, सिद्ध का सुमिरन करौं।
मैं सूर गुरु मुनि तीन पद ये, साधु पद हिरदय धरौं।।
मैं धर्म करुणामयी चाहूँ, जहाँ हिंसा रंच ना।
मैं शास्त्र ज्ञान विराग चाहूँ, जासु में परपंच ना।।(1)

चौबीस श्री जिनदेव चाहूँ, और देव न मन बसैं।
जिन बीस क्षेत्र विदेह चाहूँ, वंदितैं पातक नसैं।।
गिरनार शिखर समेद चाहूँ, चम्पापुरी पावापुरी।
कैलाश श्री जिनधाम चाहूँ, भजत भाजैं भ्रम जुरी।।(2)

नव तत्त्व का सरधान चाहूँ, और तत्त्व न मन धरौं।
भषट् द्रव्य गुण परजाय चाहूँ, ठीक तासौं भय हरौं।।
पूजा परम जिनराज चाहूँ, और देव नहिं कदा।
तिहुँकाल की मैं जाप चाहूँ, पाप नहिं लागे कदा।।(3)

सम्यक्त्व दर्शन ज्ञान चारित, सदा चाहूँ भाव सों।
दशलक्षणी मैं धर्म चाहूँ, महा हरख उछाव सों।।
सोलह जु कारण दुख निवारण, सदा चाहूँ प्रीति सों।
मैं नित अठाई पर्व चाहूँ, महामंगल रीति सों।।(4)

मैं वेद चारों सदा चाहूँ, आदि अन्त निवाह सों।
पाये धरम के चार चाहूँ, अधिक चित्त उछाह सों।।
मैं दान चारों सदा चाहूँ, भुवनवशि लाहो लहूँ।
आराधना मैं चार चाहूँ, अन्त में ये ही गहूँ।।(5)

भावना बारह जु भाऊँ, भाव निरमल होत हैं।
मैं व्रत जु बारह सदा चाहूँ, त्याग भाव उद्योत हैं।।
प्रतिमा दिगम्बर सदा चाहूँ, ध्यान आसन सोहना।
वसुकर्म तैं मैं छुटा चाहूँ, शिव लहूँ जहँ मोह ना।।(6)

मैं साधुजन को संग चाहूँ, प्रीति तिनही सों करौं।
मैं पर्व के उपवास चाहूँ, और आरम्भ परिहरौं।।
इस दुखद पंचमकाल माहीं, सुकुल श्रावक मैं लह्यो।
अरु महाव्रत धरि सकौं नाहीं, निबल तन मैंने गह्यो।।(7)

आराधना उत्तम सदा चाहूँ, सुनो जिनराय जी।
तुम कृपानाथ अनाथ ध्यानत, दया करना न्याय जी।।
वसुकर्म नाश विकास, ज्ञान प्रकाश मुझको दीजिये।
करि सुगति गमन समाधिमरन, सुभक्ति चरनन दीजिये।।(8)

रचयिता – पं. श्री द्यानतराय जी

30.2 हे जिन तेरे मैं शरणै आया।

तुम हो परमदयाल जगतगुरु, मैं भव भव दुःख पाया।। हे जिन तेरे मैं शरणै आया।।

मोह महा दुठ घेर रह्यौ मोहि, भवकानन भटकाया।
नित निज ज्ञान चरन निधि विसर्यो, तन धनकर अपनाया ।।1।। हे जिन...।।

निजानंद अनुभव पियूष तज, विषय हलाहल खाया।
मेरी भूल मूल दुखदाई, निमित मोहविधि थाया ।।2।। हे जिन...।।

सो दुठ होत शिथिल तुमरे ढिग, और न हेतु लखाया।
शिवस्वरूप शिवमगदर्शक तू, सुयश मुनीगन गाया ।।3।।हे जिन...।।

तुम हो सहज निमित जगहित के, मो उर निश्चय भाया।
भिन्न होहुँ विधि तैं सो कीजे, 'दौल' तुम्हें सिर नाया ।।4।। हे जिन...।।

अर्थ:

हे जिनदेव! मैं आपकी शरण में आया हूँ। मैंने जन्म–जन्मान्तरों में अनेक दुख पाए हैं। आप परम दयालु हैं, कृपालु हैं। मुझे अति दुष्ट मोह ने घेरकर इस संसार–समुद्र में बहुत भटकाया है, जिसके कारण मैं अपने ज्ञान और आचरणरूपी निधि–संपत्ति को भी भूल गया और तन – धन को ही महत्त्वपूर्ण मानकर इन्हें ही अपनाता रहा, उनमें ही रत रहा।

अपने आत्मा के आनन्द की अमृत–सरीखी अनुभूति को छोड़कर, हलाहल विष का सेवन करता रहा। मेरी यह भूल अत्यन्त दुःखमयी है, जिसके लिए मैंने मोहनीय कर्म को निमित्त ठहराया है।

वह दुष्ट आपके ही समीप शिथिल हुआ है, आपके अतिरिक्त अन्य कोई इसका आधार हेतु नहीं है। आप साक्षात् मोक्ष–स्वरूप को/मोक्ष–मार्ग को दिखाने वाले हैं, मुनिजन सदैव आपका यशगान करते हैं, स्तुति करते हैं, वंदना–स्मरण करते हैं।

आप जगत के कल्याण के लिए सहज निमित्त कारण हो, यह मुझे निश्चय हो गया है। दौलतराम जी शीश नमाकर (झुकाते हुए) कहते हैं कि ऐसा कीजिए जिससे मैं कर्म–श्रृंखला से सर्वथा अलग हो सकूँ, छूट सकूँ।

रचयिताः पंडित श्री दौलतराम जी

30.3 निरखत जिनचन्द्र–वदन, स्वपदसुरुचि आई।।

निरखत जिनचन्द्र–वदन, स्वपदसुरुचि आई ।।
प्रकटी निज आनकी, पिछान ज्ञान भानकी ।
कला उदोत होत काम, जामिनि पलाई ।।(1)
शाश्वत आनन्द स्वाद, पायों विनस्यो विषाद ।
आन में अनिष्ट इष्ट, कल्पना नसाई ।। (2)
साधी निज साधकी, समाधि मोह व्याधिकी ।
उपाधि को विराधिकैं, आराधना सुहाई ।।(3)
धन दिन छिन आज सुगुनि, चिंतें जिनराज अबै ।
सुधरे सब काज 'दौल', अचल ऋद्धि पाई ।।(4)

अर्थः

चन्द्रमा के समान सुन्दर जिनेन्द्र के रूप के दर्शन से स्वपद की रुचि जागृत हुई है अर्थात् पुद्गल से भिन्न अपने चौतन्य स्वरूप की बोधि हुई है ।

स्व की व पर–अन्य की पहचान व अनुभूतिरूपी ज्ञान सूर्य के उदित होते ही कामनाओं –इच्छाओंरूपी रात्रि भाग गई और निजस्वरूप की बोधि हुई है।

अपने अखण्ड व नित्य आत्मानुभूति के स्वाद से सब प्रकार के विषाद मिट गये हैं और पर अर्थात् पुद्गल के प्रति हो रही इष्ट व अनिष्ट की सारी कल्पनाएँ नष्ट हो गई हैं ।

अपने आत्म–स्वभाव की साधना से, चिंतन से मोहरूपी व्याधि समाधि में अंतर्लीन हो गई है, समा गई है । सभी उपाधियों को छोड़कर, स्वभाव की आराधना भली लगने लगी है ।

आज का यह क्षण, यह दिन अत्यंत शुभ है, धन्य है, गुण सहित है कि जिनराज के स्वरूप का चिंतन होने लगा है। दौलतराम जी कहते हैं कि मैंने यह अचल व स्थायी सिद्धि पा ली है, अब मेरे सभी कार्य सिद्ध हो जायेंगे, सुधर जायेंगे, ठीक हो जायेंगे ।

रचयिताः पंडित श्री दौलतराम जी

30.4 तुम्हारे दर्श बिन स्वामी, मुझे नहीं चैन पड़ती है। छवि वैराग्यमय तेरी, मेरी नजरों में पड़ती है।।टेक।।

निराभूषण विगत दूषण, परम आसन मधुर भाषण।
नजर नैनों की नासा की, अनी पर से गुजरती है ।।1।।
नहीं कर्मों का डर हमको, कि जब लग ध्यान चरणों में।
तेरे दर्शन से सुनते हैं, करम रेखा बदलती है ।।2।।
मिले गर स्वर्ग की संपत्ति, अचंभा कौन सा इसमें?
तुम्हें जो नैन भर देखे, गति दुर्गति की टलती है ।।3।।
हजारों मूर्तियाँ हमने, बहुत सी अन्य मत देखीं।
शांत मूरत तुम्हारी सी, नहीं नजरों में चढ़ती है ।।4।।
जगत सिरताज हो जिनराज, सेवक को दरश दीजे।
तुम्हारा क्या बिगड़ता है, मेरी बिगड़ी सुधरती है ।।5।।

भावार्थः–

हे प्रभु! आपके दर्शन के बिना मुझे संसार में सदा अशान्ति भासित होती है। आपकी वैराग्यमय मुद्रा सदा आंखो के सामने दिखाई देती हैं।।टेक।।

हे प्रभु ! आप समस्त आभुषण और दोषों से रहित हो, तथा आप समवशरण में सर्वोच्च आसन पर विराजमान होकर भव्य जीवों को दिव्य ध्वनि प्रदान करते हो। मेरी भावना है कि आप मुझे नजर भर देखें पर आप तो सदा आपनी नासाग्र दृष्टि से विराजमान ही हैं ।। 1।।

हे प्रभु ! जब तक आपके चरणों में मेरा ध्यान रहता है तब तक मुझे कोई कर्मादि का भय नहीं रहता है क्योंकि ऐसा सुना जाता हैं कि आपके दर्शन करने से कर्म दशा बदल जाती हैं ।।2।।

हे प्रभु ! आपके दर्शन करने के पुण्य के फल मे स्वर्ग की सम्पत्ति भी मिले तो इसमें क्या आश्चर्य है क्योंकि जो आपकी सौम्य वीतरागी मुद्रा एक बार देखता है उसकी दुर्गति नही होती है ।।3।।

हे प्रभु ! हमने अन्य मत की हजारों प्रतिमायें देखी है परन्तु आपकी शान्त और सौम्य मुद्रा के आतिरिक्त अन्य कोई भी मूरत हमें नही भाती है ।।4।।

हे प्रभु ! आप जगत श्रेष्ट हो। मेरी भावना है कि आप मुझे दर्शन दें क्योकि इसमें आपको तो कोई हानि नही है, लेकिन मेरी दुर्गति का नाश होता है ।।5।।

रचयिताः कवि सेवक जी

30.5

और सब थोथी बातैं, भज ले श्रीभगवान टेक
प्रभु बिन पालक कोइ न तेरा, स्वारथमीत जहान
परवनिता जननी सम गिननी, परधन जान पखान ।
इन अमलों परमेसुर राजी, भाषैं वेद पुरान ।। १।। और.।।
जिस उर अन्तर बसत निरंतर, नारी औगुन खान ।
तहां कहां साहिबका बासा, दो खांडे इक म्यान ।। २।। और.
यह मत सतगुरुका उर धरना, करना कहिं न गुमान ।
'भूधर' भजन न पलक विसरना, मरना मित्र निदान ।। ३।। और.

अर्थः

हे आत्मन् ! तू भगवान का भजन कर, इसके अतिरिक्त सारे क्रिया–कलाप, सारी

बातें सारहीन हैं, निस्सार हैं। इस जगत में प्रभु के अलावा कोई भी तेरा अपना हितकारी मित्र, तेरा निर्वाह करनेवाला, पालनेवाला नहीं है। तू परस्त्री को अपनी माता के समान और पराये धन को पाषाण के समान जान। काम और परिग्रह के त्याग के आचरण से परमात्मा की सी चर्चा होती है ऐसा धर्मग्रन्थों, आगमों, पुराणों में कहा गया है जिसके हृदय में निरन्तर कामवासना रहती है वह हृदय ही सब दुर्गुणों की खान है अर्थात् कामवासना अवगुणों की खान है। जिसके हृदय में कामवासना रहती हैं, उसके हृदय में प्रभु का स्मरण नहीं होता। प्रभु की आराधना और कामवासना ये दोनों एकसाथ एक स्थान पर नहीं रह सकते जैसे कि एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह पातीं। श्री सत्गुरु का यह उपदेश अपने हृदय में धारण कर और उसका कहीं भी, कभी भी अभिमान मत करना। भूधरदास जी कहते हैं कि मृत्यु तो एक दिन अवश्य आयेगी ही, तू एक पल के लिए भी प्रभु के स्मरण – भजन से च्युत न होना अर्थात् प्रभु विस्मरण मत करना।

रचयिताः पंडित श्री भूधरदास जी

31. संदर्भ सूची

1. श्री तिलोयपन्नति
2. श्री पद्मपुराण
3. श्री हरिवंशपुराण
4. श्री महापुराण
5. श्री उत्तरपुराण
6. श्री षट्खंडागम
7. श्री भगवती आराधना
8. श्री पद्मनंदी पंचविंशतिका
9. श्री जंबूद्वीपपण्णत्तिसंगहो
10. श्री वीरवर्द्धमान चरित्र
11. श्री निर्जरासार
12. श्री सद्बोध मार्तंड
13. श्री आराधना कथा कोष
14. श्री कल्याण मंदिर स्तोत्र
15. श्री भक्तामर स्तोत्र
16. श्री स्वयंभू स्त्रोत
17. श्री मंगलाष्टक स्त्रोत
18. श्री चौबीसी पुराण – पंडित श्री पन्नालाल जी साहित्याचार्य
19. श्री चौबीस तीर्थंकर भगवन्तों का महापुराण – ब्र. हरिलाल जी जैन
20. द्यानत विलास
21. दौलत विलास

22. भूधर भजन सौरभ
23. समाधिमरण पाठ
24. जिनभारती संग्रह
25. निर्वाणकाण्ड
26. दक्षिण भारत में जैन धर्म – सिद्धांतचार्य पंडित कैलाश चंद शास्त्री
27. श्रवणबेलगोल और दक्षिण के अन्य जैन तीर्थ – श्री राजकृष्ण जैन
28. दिगम्बर जैन तीर्थ निर्देशिका – श्री हंसमुख गांधी इंदौर
29. भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ
30. वाराणसी जैन तीर्थ, भंवरलाल नाहटा
31. www.jainkosh.org
32. www.Jinswara.com
33. www.jainpuja.com
34. www.jain24.com
35. https://www.facebook.com.AhichetraGyanteerth
36. www.channelmahalaxmi.com
37. www.jainfoundation.in
38. www.facebook.com
39. www.shouripurjaintirth.org
40. www.girnardarshan.com

32. आभार

इस पुस्तक को तैयार करने में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अनेक लोगों ने सहयोग किया है उनके अथक परिश्रम और निस्वार्थ सहयोग की वजह से ही इस पुस्तक का कार्य पूर्ण हो सका है। यद्यपि सभी का उल्लेख कर पाना संभव नहीं है फिर भी कुछ नामों के निश्चित रूप से उल्लेख की आवश्यकता है।

1. श्री राम कुमार जैन, खतौली
2. श्री समीर जी, राजकोट
3. श्री मोक्ष जैन, दिल्ली
4. सुश्री आयुशी जैन, सुसनेर
5. श्री नीरज कुमार जैन, नोएडा
6. श्री अम्बर कोठारी, इंदौर
7. सुश्री समीक्षा जैन, पुणे
8. प्रो. फूलचन्द जैन प्रेमी, वाराणसी
9. डॉ. अनेकांत कुमार जैन, दिल्ली
10. सुश्री अनन्या जैन, दिल्ली
11. श्री प्रतीक कुमार, मुंबई
12. श्री सचिन जैन, बड़ौत
13. श्री रवि जैन, पटना
14. डॉ. मनोज कुमार जैन, दिल्ली
15. श्री प्रदीप अग्रवाल, जयपुर
16. श्री धीरज पोद्दार, जयपुर
17. डॉ. प्रकाश चंद जैन, दिल्ली

18. श्री सुनील कुमार चक्रबर्ती, फरीदाबाद
19. श्री जितेंद्र कुमार शर्मा, मथुरा
20. श्री नरेंद्र कुमार, सीकर
21. श्री दीपक कुमार गुप्ता, गाजियाबाद
22. श्री विकास जी, दिल्ली
23. सुश्री वी ए वराडे, दिल्ली
24. श्री सुरेश कुमार, दिल्ली
25. श्री मनीष जैन, वाराणसी
26. श्री हरीश कुमार गुप्ता, दिल्ली

33. लेखकों का परिचय

सीमा जैन संस्कृत विषय की अध्यापिका हैं तथा वर्तमान में पूर्वी दिल्ली के एक सीनियर सेकन्डेरी स्कूल में पिछले 28 वर्षों से अध्यापन का कार्य कर रही हैं। उन्हे कई बार दिल्ली संस्कृत अकादमी के द्वारा पुरस्कृत किया जा चुका है। सीमा जैन ने दिल्ली विश्वविद्यालय से बीए तथा बीएड की पढ़ाई की है। जैन धर्म के संस्कार इन्हे विरासत में मिले हैं। इनकी माता जी ने सन 2000 में तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मति सागर जी से दीक्षा ली तथा आर्यिका पद पर रहते हुए सन 2006 में सल्लेखना पूर्वक समाधिमरण को प्राप्त किया था। लेखिका सहज से ही धार्मिक स्वभाव की हैं जैन धर्म के प्रति असीम रूचि और श्रद्धा है। निरन्तर धर्म प्रभावना के कार्यों में तत्पर रहती हैं।

धीरज जैन जनगणना कार्यालय, गृह मंत्रालय, भारत सरकार में संयुक्त निदेशक के रूप में कार्यरत हैं। वह देश में होने वाली पहली डिजिटल जनगणना की तैयारी के काम से जुड़े हुए हैं। धीरज जैन ने आईआईटी रुड़की से अनुप्रयुक्त गणित में मास्टर डिग्री और एम.फिल किया है। उनकी पुस्तक "भारत में जैनियों की जनसंख्या – जनगणना 2011 से एक परिप्रेक्ष्य" में जैन समाज से जुड़े कई सकारात्मक पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। यह पुस्तक युवा जैन आबादी में नकारात्मक वृद्धि को भी रेखांकित करती है।

विशेष: जिनदर्शन, निजदर्शन अर्थात् सम्यक दर्शन में निमित्त होता है और प्रत्येक श्रावक का यह कर्तव्य होता है कि वह देश–विदेश के किसी भी कोने में हो प्रतिदिन देवदर्शन करने अवश्य जाए। बस इसी कर्तव्य को पूरा करने में सहायता प्रदान करने हेतु वर्तमान में सीमा और धीरज, भारत एवं विदेशों में स्थित सभी जैन मंदिरों की एक डिजिटल निर्देशिका पर काम कर रहे हैं। पोर्टल www.jainmandir.org पर सभी जैन मंदिरों का एक व्यवस्थित और संरचित डेटाबेस है जिसका उद्देश्य प्रत्येक जैन श्रावक को निकटतम जैन मंदिर का विवरण प्रदान करके दैनिक "जिन दर्शन" में मदद करना है।

वर्तमान में लगभग 8500 से भी अधिक जैन मंदिरों की जानकारी, कुछ प्राचीन दुर्लभ जैन ग्रंथ आदि इस वेबसाइट पर अपलोड किए जा चुके हैं जिससे हजारों की संख्या में साधर्मी जीव लाभान्वित हो रहे हैं ।

24 तीर्थंकर, 120 कल्याणक, 24 तीर्थक्षेत्र

क्रमांक	राज्य	ज़िला	कल्याणक स्थान	कल्याणकों की संख्या
1	झारखंड	गिरिडीह	श्रीसम्मेदशिखरजी	20
2	उत्तर प्रदेश	अयोध्या	अयोध्या	18
3	उत्तर प्रदेश	मेरठ	हस्तिनापुर	12
4	बिहार	सीतामढ़ी	मिथिलापुरी	8
5	उत्तर प्रदेश	वाराणसी	वाराणसी	6
6	बिहार	भागलपुर	चम्पापुर व मंदारगिरि	5
7	उत्तर प्रदेश	वाराणसी	सारनाथ (सिंहपुरी)	4
8	उत्तर प्रदेश	वाराणसी	चन्द्रावती (चन्द्रपुरी)	4
9	उत्तर प्रदेश	फर्रुखाबाद	कम्पिल	4
10	उत्तर प्रदेश	श्रावस्ती	श्रावस्ती	4
11	उत्तर प्रदेश	अयोध्या	रौनाही (रत्नपुरी)	4
12	उत्तर प्रदेश	देवरिया	काकंदी	4
13	बिहार	नालंदा	राजगीर (राजगृही)	4
14	बिहार	नालंदा	कुण्डलपुर (कुण्डग्राम)	3
15	गुजरात	जूनागढ़	गिरनार	3
16	झारखंड	चतरा	भोंदल (भद्दिलपुरी)	2
17	झारखंड	चतरा	कोल्हुआ पहाड़	2
18	बिहार	नालंदा	पावापुरी	2
19	उत्तर प्रदेश	प्रयागराज	प्रयागराज	2
20	उत्तर प्रदेश	कौशाम्बी	कौशाम्बी	2
21	उत्तर प्रदेश	कौशाम्बी	प्रभासगिरि	2
22	उत्तर प्रदेश	आगरा	शौरिपुर	2
23	उत्तर प्रदेश	बरेली	अहिच्छत्र	2
24	उत्तराखंड	चमोली	कैलाश पर्वत	1